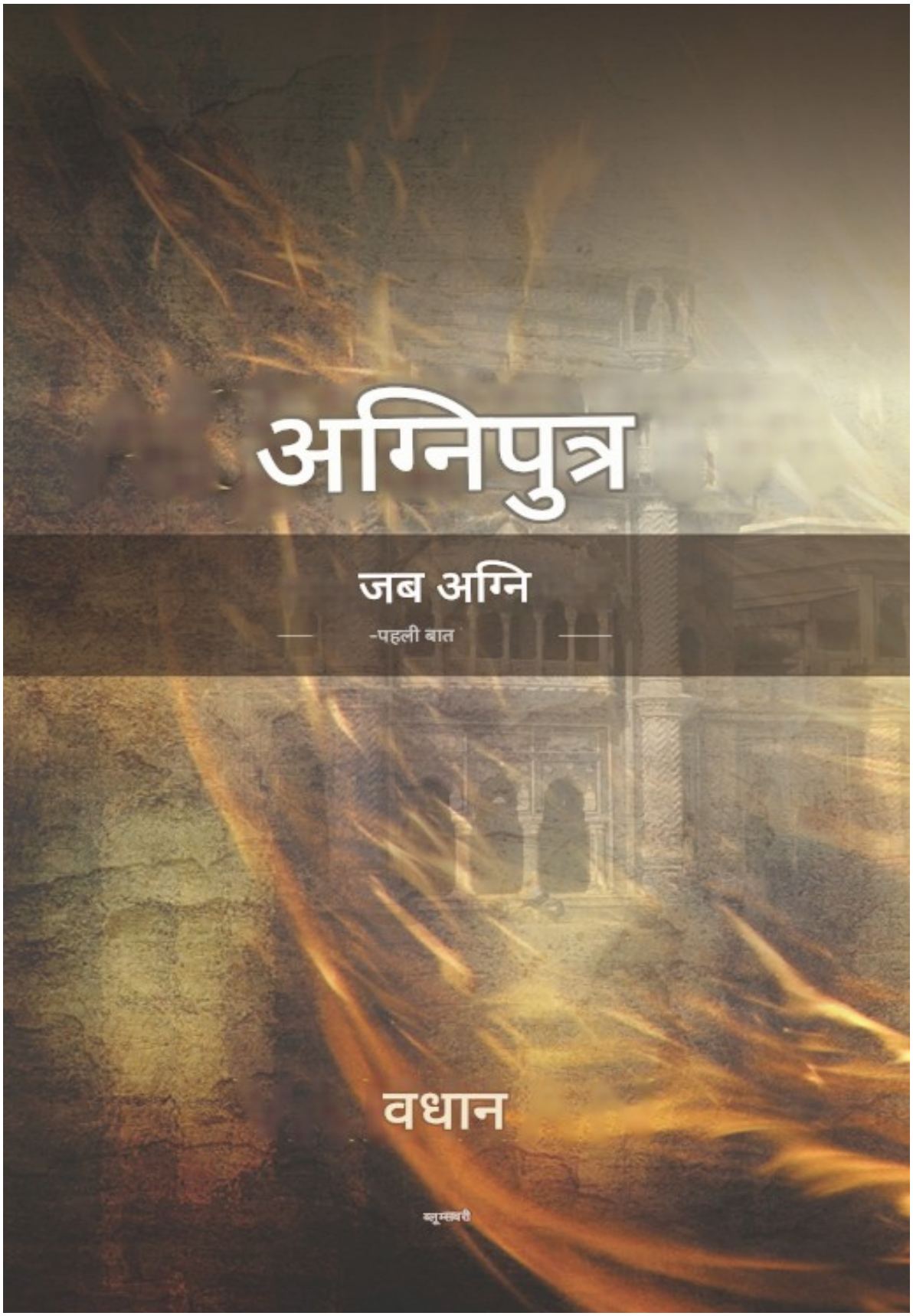
अग्निपुत्र
जब अग्नि
-पहली बात
वधान

AGNIPUTR

जब अग्नि ने पहली बार बात की

© B. Sai Chandravadhan, 2016
पहली बार 2016 में प्रकाशित
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट धारक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या कोई भी सूचना भंडारण या पुनर्प्राप्ति प्रणाली शामिल है, पुनरुत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
इस प्रकाशन में दी गई सामग्री के परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा की गई कार्रवाई या कार्रवाई न करने से होने वाली किसी भी हानि के लिए ब्लूम्सबरी इंडिया या लेखक/संपादक कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं कर सकते हैं।
ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, लंदन, ऑक्सफोर्ड, न्यूयॉर्क, सिडनी
ई-आईएसबीएन: 978-81-93315-06-4
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1
ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित। डीडीए कॉम्प्लेक्स एलएससी, भवन संख्या 4, दूसरी मंजिल, पॉकेट 6 और 7, सेक्टर सी, वसंत कुंज, नई दिल्ली 110070
मणिपाल डिजिटल सिस्टम्स द्वारा निर्मित।
इस पुस्तक की सामग्री पूरी तरह से इसके लेखकों की अभिव्यक्ति और राय है, न कि प्रकाशकों की।
प्रकाशक किसी भी प्रकार से लेखक द्वारा व्यक्त की गई किसी भी राय या विचार के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।
इस पुस्तक को तैयार करने में सर्वोत्तम प्रयास किए गए हैं, फिर भी प्रकाशक सामग्री की सटीकता या पूर्णता के संबंध में किसी भी प्रकार का कोई प्रतिनिधित्व या वारंटी नहीं देते हैं और न ही किसी प्रकार की कोई जिम्मेदारी लेते हैं, और विशेष रूप से व्यापारिक योग्यता या किसी विशेष उद्देश्य के लिए उपयुक्तता की किसी भी निहित वारंटी को अस्वीकार करते हैं।
प्रकाशक का मानना है कि इस पुस्तक की सामग्री किसी भी प्रकार से दूसरों के मौजूदा कॉपीराइट/बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन नहीं करती है। हालांकि, यदि किसी स्रोत का विधिवत उल्लेख नहीं किया गया है, तो आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रकाशक को लिखित रूप में सूचित किया जा सकता है।

रानी गारू को, रानी।

मैं आपको हमेशा याद करूंगा, नानामा। हमेशा।

अंतर्वस्तु

स्वीकृतियाँ
खंड-ए: सूत्रम
खंड-बी: शीला
खंड-सी: सूर्य
Fragment-D: AGNIPUTR

आभार

इस पुस्तक को साकार करने में योगदान देने वाले सभी अद्भुत लोगों को धन्यवाद।
इनमें प्रमुख वे महान वैदिक विद्वान हैं जिन्होंने अग्नि के वचन का संकेत दिया था।
उन अद्भुत क्वांटम वैज्ञानिकों को जिन्होंने मुझे उप-परमाणु अंतरिक्ष की कल्पना करने के लिए प्रेरित किया और माया को दूर करने में मेरी मदद की।
मेरे साहित्यिक एजेंट सुहैल माथुर को, जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित करवाने के लिए बहुत मेहनत की।
पॉल और उनकी ब्लूम्सबरी की टीम को धन्यवाद, जिनके बिना यह पुस्तक कभी अस्तित्व में नहीं आ पाती।
मेरे बच्चों को, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए शानदार विचार दिए।
सबसे अच्छी बात तो आखिर में, मेरी पत्नी जो मेरी सबसे बड़ी आलोचक है। मुझे सही करने के लिए मेरी हर खामी निकालने के लिए धन्यवाद!

‘बेचैन सपनों में मैं अकेला चलता रहा
पत्थरों से बनी संकरी गलियों में
एक स्ट्रीट लैंप के प्रभामंडल के नीचे
मैंने ठंड और नमी से बचने के लिए अपना कॉलर ऊपर कर लिया
जब मेरी आँखों में नियॉन लाइट की चमक चुभ गई
जिसने रात को चीर दिया
और सन्नाटे की आवाज़ को छू लिया’

– ‘साउंड ऑफ साइलेंस’ (साइमन और गारफंकेल)

खंड-ए

सूत्रम

अध्याय 1

1940 - गुडेम, भारत के आंध्र प्रदेश का एक गाँव।

वह अकेला आदमी समाधि, यानी एक मकबरे को घूर रहा था।

वह एक कंकालनुमा व्यक्ति था, जिसने अपने धड़ के निचले हिस्से पर एक गंदी, काली लुंगी लपेटी हुई थी। उसके चपटे होंठ सूखे और धूप में तपती टहनी की तरह रूखे थे। उसने अपनी सूखी जीभ से उन्हें गीला करने की कोशिश की, लेकिन कोई खास असर नहीं हुआ। वह खुद को अघोरा तांत्रिक समझता था। एक जादूगर। वह अपना जीवन सड़ते हुए शवों के बीच बिताता था। कभी-कभी वह उन्हें खाता था, कभी-कभी उनके साथ यौन संबंध बनाता था, और कभी-कभी उनके माध्यम से आत्माओं को बुलाता था।

ढांचा क्षण भर के लिए कांप उठा। यह हल्की सी सिहरन से कहीं अधिक था, लेकिन हल्की सी कंपकंपी भी नहीं थी। यह कंपन भूकंप जैसा ही था, बस फर्क इतना था कि यह स्थानीय था, समाधि के आसपास ही। मानो किसी भूगर्भीय विस्फोट का धीमा प्रतिरोध हो। भूकंप के बाद जो गड़गड़ाहट हुई, वह दबी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे पृथ्वी के बहुत नीचे चट्टानें आपस में टकरा रही हों। मानो स्वयं पृथ्वी अपने दांत पीस रही हो।

समाधि की नींव में हल्की सी दरार पड़ गई। पलक झपकते ही वह दरार बिजली की लकीर की तरह टेढ़ी-मेढ़ी होकर संरचना के शीर्ष तक पहुंच गई।

तांत्रिक को इस घटना को लेकर कुछ बुरा आभास हो रहा था। उसने अपने जीवन में कभी ऐसा कुछ नहीं किया था जैसा उसने अभी किया था। उसे अपने प्रयोग का परिणाम शीघ्र प्रकट होने की उम्मीद थी, लेकिन पल भर में नहीं। एक पैर से दूसरे पैर पर भार डालते हुए वह अपने त्रिशूल पर झुक गया। उसकी सूक्ष्म दृष्टि टूटी हुई समाधि पर टिकी थी। उस पर 'राजा रघुराम सूर्य' लिखा हुआ था।

धरती फिर से कांप उठी। इस बार भूकंप पहले से कहीं अधिक तीव्र था। पूरा स्मारक कक्ष हिल गया। तांत्रिक का संतुलन लगभग बिगड़ गया। एक क्षण बाद ही वह कक्ष और भी ज़ोर से कांप उठा, मानो इस बात से क्रोधित हो कि वह व्यक्ति ज़मीन पर नहीं गिरा।

अचानक, धरती पर ज़बरदस्त लहरें उठीं। एक सुनामी जैसी। ज़मीन हिल उठी और समाधि चकनाचूर हो गई। सूर्य राजाओं की समाधियों वाला विशाल स्मारक कक्ष एक क्रोधित घोड़े की तरह झुक गया और हिलने लगा।

घबड़ाहट।

ईश्वर का आगमन हिंसक नहीं होना चाहिए था। कम से कम नेल्लोर-ओंगोल जनजातियों के पवित्र ग्रंथ, नल्लाकोलाइनूल में तो हिंसक आगमन की भविष्यवाणी नहीं की गई थी। उसमें केवल इतना कहा गया था कि ईश्वर उस सर्वव्यापी, कहीं भी न होने वाली जगह से प्रकट होंगे।

या फिर इसका उल्टा था?

यह सब गुरु की करतूत थी। गुरु ने ही उसे इस मुसीबत में घसीटा था। धिक्कार है उसे! तांत्रिक शुरू से ही इसमें शामिल नहीं होना चाहता था। लेकिन, वह गुरु की मीठी आवाज़ का विरोध नहीं कर सका और न ही उन सुखों का जो वादा किया गया था। तांत्रिक को पैसों से कोई खास लगाव नहीं था। लेकिन गुरु ने जिस स्त्री का प्रस्ताव रखा! कितनी पवित्र! कितनी ताजगी भरी! वह उसके ठंडे शरीर का आनंद लेना चाहता था।

सबसे पहले, गुरु ने उसे एक आदमी को ज़हर देने का आदेश दिया। उसे मृत व्यक्ति के पेट से बालों का गोला निकालने के लिए कहा गया। आदमी के दाह संस्कार के बाद उसे निकालना आसान था। हैरानी की बात यह थी कि चिता की तेज़ गर्मी से बालों का गोला नष्ट नहीं हुआ था। गुरु ने उसे आदेश दिया था कि वह गोले को आटे से ढककर मृत व्यक्ति की समाधि पर रख दे। कुछ ही क्षण पहले उसने बालों के आटे के गोले को ठंडे संगमरमर के पत्थर पर रखा था।

अंतिम निर्देश यह था कि वह ईश्वर के आगमन की प्रतीक्षा करे।

वह भय से कांप रहा था। मशालें एक-एक करके बुझती जा रही थीं। हॉल में अंधेरा बढ़ता जा रहा था, हवा अचानक भारी होती जा रही थी, मानो विनाश अपने निराशा के आवरण को फैला रहा हो।

जब धरती फिर से काँपी, तो त्रिशूल उसके हाथों से फिसल गया। तांत्रिक पीछे हटने लगा, उसकी निगाहें टूटी हुई समाधि पर टिकी हुई थीं, मानो उसे डर हो कि कोई प्रेत उसे तोड़कर अंदर घुस आएगा और उसे खा जाएगा। अचानक, समाधि कक्ष के छिले हुए हिस्से से पत्थर एक धीमी सी आवाज़ के साथ उसकी पचास फुट ऊँची छत पर जा गिरे, मानो किसी धनुष से तीर चलाए गए हों।

तांत्रिक चीख उठा। मदद के लिए पुकार। लेकिन कोई नहीं आया।

कुछ पत्थर छत में धंस गए। कुछ अन्य पत्थर एक धीमी चाप बनाकर नीचे की ओर लुढ़क गए। कुछ पत्थर दरार वाली ज़मीन में फंस गए जबकि अन्य चौड़ी होती दरारों में लुढ़क गए। सेब के आकार का एक बड़ा टुकड़ा तांत्रिक के कंधे पर जा गिरा, जिससे त्वचा फट गई और खून बहने लगा।

चीखते हुए वह आदमी दोनों हाथों से अपना सिर ढककर ज़मीन पर गिर पड़ा। मकबरे की दरार से बिजली कड़कती हुई निकली और कुछ पल के लिए उस तबाह कमरे में रोशनी भर गई।

वह उथल-पुथल और हलचल उतनी ही अचानक रुक गई जितनी अचानक वह शुरू हुई थी।

तांत्रिक घुटनों के बल उठा। उसके हाथ नीचे की ओर झटके और उसने अपनी गिरी हुई लुंगी उठाई, जिससे उसके सिकुड़े हुए जननांग दिख रहे थे। उसने अपने उलझे हुए बालों को जितना हो सके हटाया और बेढंगे तरीके से रेंगते हुए अपना त्रिशूल ढूंढ लिया। उसने उस ठंडे धातु के औजार को ऐसे पकड़ा जैसे पागल हो चुकी इस दुनिया में वही एकमात्र सहारा हो।

कुछ क्षण पहले जहाँ समाधि थी, वहाँ दरारें और छेद मिलकर एक गहरी खाई का रूप ले चुके थे। तांत्रिक दबे पांव उस खाई की ओर बढ़ा और त्रिशूल पर झुककर उस गहरी खाई में झाँका।

निश्चित रूप से, वह कोई 'भगवान' नहीं था!

एक चमकता हुआ, हरे रंग का, पारदर्शी गोला, जो बलगम के एक विशालकाय पिंड जैसा दिखता था, खाई के भीतर गहराई में स्थित था। तांत्रिक कोई महान गणितज्ञ नहीं था, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि यह जमीन में लगभग सौ फीट नीचे था, और एक अर्ध-ढके जादुई गोले की तरह विकिरण कर रहा था।

तांत्रिक की रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। आटे का गोला भला इसमें कैसे बदल गया... ये क्या चीज़ है! आखिर ये क्या है?

फुसफुसाहट बहुत धीमी थी। जैसे कोई पिल्ला ठंड की रात में असहाय होकर रो रहा हो।

'सूत्रम'

यह आवाज़ गहराई में छिपी किसी चीज़ से नहीं आई थी। किसी कारणवश, उसे आभास हुआ कि यह गुरु की आवाज़ है। तांत्रिक तेज़ी से घूम गया।

कुछ मशालें अभी भी टिमटिमाती हुई रोशनी बिखेर रही थीं।

उसने धुंधली रोशनी में आंखें सिकोड़कर देखा।

वह तबाह हो चुके हॉल में अकेला था।

'सूत्रम'।

क्या यही सूत्रम था? पीड़ा का देवता। सभ्यताओं, संसारों का संहारक। उनका विनाश निश्चित था। सबका। पूरी दुनिया का। अब प्रलय से पीछे हटना नामुमकिन था। तांत्रिक ने ऐसा नहीं चाहा था। इस तरह नहीं। उसे धोखे से एक ऐसी काली विद्या का अभ्यास करने के लिए मजबूर किया गया था जिससे सच्चे तांत्रिक भी भयभीत होते थे।

'गुरु कौन है? उसका उद्देश्य क्या है?'

भीषण गर्मी तांत्रिक को बुरी तरह झुलसा रही थी। उसकी बगलें और हथेलियाँ पसीने से तर थीं, जबकि खाई के किनारे झुके रहने के कारण उसके पैर काँप रहे थे। गर्म हवा के झोंके उसे सहला रहे थे।

वह ऐसे उछल पड़ा जैसे उसे बंदूक से गोली मारी गई हो।

वह चीख उठा, एक भयानक कांव-कांव की आवाज।

हुक अदृश्य थे, कम से कम नंगी आंखों से तो नहीं, लेकिन जब वे उसकी त्वचा में धंसे तो तेजाब की तरह जलन पैदा कर रहे थे। तांत्रिक को गड्ढे में घसीटा जा रहा था।

सोचो। कुछ करो। अभी!

उसने अपने त्रिशूल को टूटे हुए फर्श की एक दरार में घुसा दिया और अपनी जान बचाने के लिए उस औजार को कसकर पकड़ लिया।

अपनी तमाम पीड़ाओं के बावजूद, तांत्रिक उस चीज़ को घूरने से खुद को रोक नहीं पा रहा था जो कभी टेनिस बॉल के आकार की थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि कैसे एक आटे की गेंद, जिसके भीतर एक मृत व्यक्ति का विषैला रक्त और आंतरिक अंग भरे हुए थे, एक दुनिया का विनाशक बन सकती है। वह यह भी

नहीं समझ पा रहा था कि उस गोले की हरी त्वचा के नीचे फड़फड़ाते हुए हजारों मेंढक के बच्चे जैसे जीव क्या थे।
उसे इस बात का पूरा यकीन था कि वह उसका चारा बनने वाला है।
गुरु का इरादा था कि वह सूत्रम का पहला भोजन बने, एक बलि का मेमना।
तांत्रिक ने अपनी मूर्खता पर खुद को कोसा। वह कभी भी उस चीज़ को वश में नहीं कर सका जिसे गुरु 'ईश्वर' कहते थे। अंततः, गुरु ने उसे व्यर्थ ही समझा।
उसने कुछ भजन और मंत्रों का जाप किया। वे बातें जो उसने बहुत पहले सीखी थीं। वे सुनने में तो प्रभावशाली लगते थे, किसी मूर्ख को भी प्रभावित करने के लिए काफी थे। लेकिन उनका उस कण पर कोई असर नहीं हुआ।
मैं कोई नहीं हूँ, कुछ भी नहीं हूँ!
उसके विशाल भूरे बालों के गुच्छे एक विशालकाय लॉबस्टर की मूंछों की तरह इधर-उधर लहरा रहे थे। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि वे वास्तव में मूंछें नहीं बल्कि जांचने वाले यंत्र थे, एंटीना-सह-भोजन यंत्र जो पहले पोषण की तलाश करते थे और फिर उसे चूसकर भीतर की शक्ति को ऊर्जा प्रदान करते थे।
यह राहत की बात थी कि उसे ईश्वर की ओर खींचने वाले हुक कमजोर थे, वरना वह निश्चित रूप से गड्ढे में गिर जाता। ऐसा लग रहा था मानो उस चीज़ को अपने अदृश्य तंतुओं का इस्तेमाल करना आता ही नहीं था।
यह सीख जाएगा।
आने वाले दिनों में यह और भी शक्तिशाली हो जाएगा।
लेकिन अब तक नहीं।
यही एकमात्र सहारा था जो तांत्रिक को पता था। उसने दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए फिर से ज़ोर लगाया, जब तक कि वह हुकों से मुक्त नहीं हो गया। हुक उसके शरीर के टुकड़ों को चिपकाए हुए ग्लोब्यूल में वापस चले गए। वह आदमी ज़मीन पर गिर पड़ा। चारों ओर खून ही खून था। उसका खून। जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था। उसके होंठ इतने खिंचे हुए थे कि वे फट गए और खून उसके मुंह और ठुड्डी पर फैल गया। उसकी पीड़ा स्मारक कक्ष में गूंज उठी।
जब तक उसकी आवाज बैठ न गई।
जब तक कि उसका गला जवाब न दे गया।
जब वह अंधेरे गड्ढे से रेंगकर बाहर निकला, तब भी वह एक घायल जानवर की तरह सिसक रहा था।
तांत्रिक ने लकड़ी के दरवाजे खोल दिए और लड़खड़ाते हुए दूसरे गलियारे में चला गया। वह उस बड़े कमरे को ऐसे पार कर रहा था जैसे कोई शराबी सड़क पार कर रहा हो, जब तक कि वह खुले मैदान में नहीं जा गिरा।
उसने धुएं से भरी हवा में सांस ली। फिर भी, उसने गहरी सांस ली, कम से कम जितनी वह ले सकता था।

पृष्ठभूमि में महल विशालकाय रूप में दिखाई दे रहा था, मानो कोई विशाल पक्षी अपने शिकार पर झपटने वाला हो। उस अंधेरे ढांचे के चारों ओर गुडेम नामक शिकारियों का गाँव बसा हुआ था।

पूरा गाँव शोक में डूबा हुआ था। युवा राजा रघुराम सूर्या का निधन हो गया था। अफवाह थी कि उनके अपने भाई ने उन्हें जहर देकर मार डाला था। भावी राजा रघुराम, विशेषकर युवा महिलाओं के बीच, बहुत लोकप्रिय थे। हाल ही में, राजा रघुराम एक समर्पित पति और पिता बन गए थे। उनकी हत्या ने उनके शासन के अधीन दो हजार गाँवों के लोगों में उथल-पुथल मचा दी थी। और इसका कारण भी था। उनका भाई बिल्कुल पागल था। कोई भी उसे सत्ता की बागडोर संभालते नहीं देखना चाहता था।

उस क्षण ग्रामीणों ने अपने दुःख को भुलाकर एक अधिक मूलभूत प्रवृत्ति को अपना लिया था। जीवन रक्षा। गुडेम में अभी-अभी भूकंप आया था। काली, चाँद रहित रात चीखों से गूंज रही थी। क्षितिज पर जलते घरों की लालिमा किसी धुंधली तस्वीर पर लापरवाही से गिरी लाल लकीर की तरह लग रही थी। धुएँ के काँपते हुए स्तंभ रात में ऊपर उठे और आशा की तरह हमेशा के लिए गायब हो गए।

तांत्रिक को एहसास हो गया था कि उसके पास बहुत कम समय बचा है। उसका दिल शरीर के छेदों से खून पंप कर रहा था। उसकी दृष्टि पहले ही धुंधली हो चुकी थी और उसे सांस लेने में भी बहुत कठिनाई हो रही थी। हर कदम उठाना उसके लिए एक संघर्ष था। वह लड़खड़ाते हुए महल के प्रवेश द्वार से अंदर गया, पचास फुट ऊंचे द्वार पर पहरा दे रहे दो बेचैन तेंदुओं की उसे कोई परवाह नहीं थी।

खून और जलते हुए मांस की गंध।

उत्तेजित और भूख से व्याकुल होकर, जानवर महल के द्वार से गुजरते ही उस पर टूट पड़े। उसने बिल्लियों पर मुश्किल से ही ध्यान दिया, क्योंकि वह जानता था कि जंजीरों के कारण वे उसके पास नहीं आ सकतीं। तांत्रिक ने प्रार्थना की घंटी से बंधी मजबूत रस्सी पर छलांग लगाई। उसने अपने घायल शरीर के पूरे वजन का इस्तेमाल करते हुए उस विशाल घंटी को हिला दिया।

ज़मींदार, एक लंबा, मजबूत शरीर वाला व्यक्ति, जिसने गहरे रंग का कुर्ता और सफेद धोती पहन रखी थी, महल की पहली मंजिल पर बने उभरे हुए कमरे, अंबारी में, अपील की घंटी बजने पर प्रकट हुआ।

वह बहुत चिंतित था। उसके पहले बेटे की मृत्यु तीन दिन पहले ही हुई थी। पहले ही एक भूकंप ने गाँव को तबाह कर दिया था। ये अपशगुन के संकेत थे। ज़मींदार ने अपने सफेद बालों को झटकते हुए नीचे खड़े व्यक्ति पर अपनी झुर्रीदार लेकिन कठोर निगाहें गड़ा दीं।

'राजाह गारू,' उस व्यक्ति ने तेलुगु में चिल्लाते हुए कहा, 'कृपया राजाह गारू, मुझे आपसे बात करनी है। यह अत्यंत आवश्यक है।'

ग्रामीणों और पहरेदारों की भीड़ के शोर और चीख-पुकार के बीच भी तांत्रिक की आवाज जमींदार तक ऐसे पहुंची मानो उसने मेगाफोन से चिल्लाया हो। उसने अपनी आवाज सुनाने के लिए जादू-टोने की शक्ति का अंतिम अंश भी इस्तेमाल कर लिया था।

देखते ही देखते घायल व्यक्ति के चारों ओर भीड़ जमा हो गई। लोग उसे घूरते रहे, जबकि तांत्रिक अपने खून में लथपथ ऐसे तड़प रहा था जैसे कोई सांप अपनी केंचुली से बाहर निकल रहा हो। खून हर जगह फैला हुआ था, ज़मीन पर लाल नदी की तरह चमक रहा था। जमा हुई भीड़ बेशक भयभीत थी, फिर भी उनकी आँखों में न तो सहानुभूति थी, न ही दया। इसके बजाय, वे आपस में फुसफुसा रहे थे।

'क्या यह वही तांत्रिक नहीं है जो हमेशा राजकुमार भरतराम के साथ रहता है?' महल के रसोईघर की कर्मचारी, छोटी कद की, जहरीली आँखों वाली एक महिला ने अपनी साड़ी के पल्लू की तहों के पीछे से फुसफुसाते हुए कहा, जिसे उसने अपने मुँह के पास पकड़ रखा था।

‘लगता है ये कमीना ही है। आखिर हुआ क्या? ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने इसमें छेद कर दिए हों,’ उसके पति ने कहा, जो उससे कुछ इंच ही लंबा था। वह किले में पहरेदार था।

'जिस किसी ने भी यह किया है, मैं उसका सम्मान करती हूँ!' महिला ने घोषणा की।

‘अब उसे क्या चाहिए?’ उस आदमी ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा।

‘पता नहीं, लेकिन मैं उस कमीने की मदद नहीं करूंगी, उसने पहले ही बहुत नुकसान कर दिया है। क्या आपको पता है कि वह हमारी मुर्गियां चुराता था? मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि राजकुमार भरतराम को पता चल सकता था। जब वह गुस्से में होता है तो मैं उस पागल राजकुमार के पास जाने की हिम्मत नहीं करती,’ महिला ने अपने पति से शिकायत की।

‘मुर्गी? क्या तुम पागल हो गई हो, औरत? छोटे बच्चे गायब हो रहे थे, और कुछ बूढ़े लोग श्मशान घाटों के आसपास बैठकर शराब पीते थे। मुझे लगता है उस कमीने ने इंसानी मांस खाया था। गांव वालों को खेतों में अक्सर इंसानी हड्डियां मिलती थीं, यहां तक कि छोटे बच्चों की भी।’

‘काश वो नरक में सड़ जाए,’ भयंकर आँखों वाली छोटी कद की महिला ने गुस्से से कहा। अन्य नौकरों और पहरेदारों ने भी सहमति में सिर हिलाया। महल की दीवारों पर लगी विशाल मशालों की दहकती लपटों से उनके बीच पड़े खून से लथपथ आदमी पर पहरेदारों और महल के कर्मचारियों की धुंधली परछाइयाँ पड़ रही थीं।

तांत्रिक को कानाफूसी वाली गपशप की ज्यादा परवाह नहीं थी। वैसे भी उनमें से अधिकतर सच ही होती थीं।

‘राजा गारू,’ वह कर्कश स्वर में चिल्लाया, ‘मैंने आपको गंभीर क्षति पहुंचाई है...गंभीर क्षति, देखिए, मैंने आपके बेटे को मार डाला है।’

वहाँ जमा भीड़ में सन्नाटा छा गया। ज़मींदार अंबारी पर एकदम स्थिर हो गया। कुछ ही सेकंड बाद, उन्होंने अपने शासक के लिए रास्ता साफ कर दिया, जो तेज़ी से नीचे उतर रहा था।

‘क्या? तुमने क्या कहा लांजा कोडका?’

'हां, मैंने सोचा था कि मैं उसकी मौत का इस्तेमाल...शक्तियां हासिल करने के लिए कर सकता हूं!'

‘नी अम्मा कडुपु माडा!’ जमींदार गुस्से से आग बबूला हो गया। उसका गोरा चेहरा चुकंदर की तरह लाल हो गया था जब उसने वह घिनौना अपशब्द बोला।
लेकिन हे महाराज, स्थिति और भी बदतर है। आपका स्मारक कक्ष अब सूत्रम् का प्रेतवाधित स्थल बन गया है। आपको इसे नष्ट करना होगा, हे महाराज। कृपया...
ज़मींदार ने तांत्रिक की बात मुश्किल से सुनी। वह गुस्से से आग बबूला हो गया। वह उस आदमी को जलते हुए देखना चाहता था। कोड़ों से पीटा हुआ। जिंदा खाल उतारी हुई। 'तुमने मेरे बेटे को मार डाला, ओरे, चांटिगा, पत्र ना थुपाकी!'
कुछ ही क्षणों में, एक नौकर विनचेस्टर .20 बोर रिपीटर शॉटगन लेकर उसके पास दौड़ा। ज़मींदार ने बंदूक और कारतूस छीन लिए। उसने एक शिकारी की तरह बड़ी कुशलता से नलीदार मैगज़ीन में छह कारतूस भरे और पहला कारतूस बैरल में डाल दिया। उसने बंदूक तानकर तान्त्रिक के पैरों पर निशाना साधा। ज़मींदार का इरादा उसे तुरंत मारने का नहीं था।
'राजा गारु, अगर आप मुझे मारना चाहते हैं तो मार डालिए। कृपया पहले मेरी बात सुन लीजिए।'
‘पिंजारी मुंडा कोडका...’ जमींदार ने कंधे पर बंदूक रखे हुए धीरे से बड़बड़ाया। बेचारे आदमी के आसपास जमा भीड़ हट गई।
'पहले हमें उनकी बात सुननी चाहिए।'
वक्ता सात वर्ष से अधिक आयु का एक लड़का नहीं था। उसने लंबा कुर्ता और पायजामा पहना हुआ था। उसकी झुकी हुई आँखें चमकीली थीं, आग की रोशनी में मानो उनमें एक अलग ही चमक थी। उसका पतला लंबा चेहरा आग के दीयों की रोशनी में गंभीर लग रहा था। वह काउंट ड्रैकुला के युवा रूप जैसा दिखता था।
“अधि काधु नाना सूर्य प्रसाद, इस निकम्मे कीड़े के बेटे ने तुम्हारे पिता की हत्या करने की बात कबूल कर ली है,” जमींदार ने अपने पोते को समझाने की कोशिश की।
‘दादा जी, पहले इनकी बात सुन लेते हैं,’ लड़के ने पीठ पीछे हाथ बांधकर खड़े होते हुए फिर कहा। सात साल के बच्चे के हिसाब से वह काफी लंबा था, लगभग पाँच फीट। उसकी आवाज़ में एक ऐसा अधिकार था जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था, यहाँ तक कि उसके दादाजी भी नहीं, जिनसे उसे यह गुण मिला था।
"चेप्पी चावु," बूढ़े जमींदार ने खून बह रहे आदमी पर बंदूक ताने हुए गुस्से से कहा।
तांत्रिक ने घबराकर अपने खून से लथपथ होंठों को गीला किया और सोचने लगा कि अब कहाँ से शुरू करे। उसे पता था कि उसके पास बहुत कम समय है। उसने मुँह से टपकता खून थूका और बोला।
‘सूत्रम को रोकने का केवल एक ही तरीका है। आपको अग्निपुत्र का उपयोग करना सीखना होगा।’
‘अग्निपुत्र?’ लड़के ने सिर हिलाते हुए कहा, ‘रुको...यह क्या है...?’
तांत्रिक ने कर्कश स्वर में कहा, 'इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है।'

वह जमीन पर गिर पड़ा, उसकी मौत हो गई थी।

अध्याय दो

आज

वह जोर से नहीं हंसा।

दरअसल, उसकी हंसी गले से निकलने वाली छोटी-छोटी फुफकार जैसी थी, जिससे उसके आसपास बैठे लोग चिढ़ जाते थे। लोग उसे कई नामों से पुकारते थे। 'गुरु', 'जादूगर', 'अघोरी', 'तांत्रिक' और भी कई अपमानजनक नाम। लेकिन वह खुद को तांत्रिक कहलाना पसंद करता था। उसके लंबे, लहराते बाल थे जिन्हें उसने हाल ही में धोकर एक जूड़ा बनाया था। उसका धड़ राख से सना हुआ था और दिसंबर की कड़ाके की ठंड के बावजूद उसने सिर्फ गोछी पहनी हुई थी। उसके माथे से लेकर चपटी नाक तक लाल रंग की एक लकीर थी। ढलते अंधेरे में वह किसी पराई सभ्यता के अकेले प्रतिनिधि की तरह रहस्यमय लग रहा था।

उसने अपने काले नाखून से एक कबूतर का गला काट दिया, जिसे उसने बड़े प्यार से अपने हाथ में पकड़ रखा था। तांत्रिक ने कबूतर की गर्दन को बस इतना पीछे झुकाया कि खून की कुछ बूँदें चपटी धातु पर गिरें और उस पर एक छोटा सा पोखर बन जाए। फिर हल्के से धक्का देकर उसने कबूतर की गर्दन तोड़ दी और इस तरह उसकी तड़पती हुई पीड़ा का अंत कर दिया।

उसने चम्मच की तरह एक बेलनाकार धातु की पट्टी का इस्तेमाल करके धातु की प्लेट पर फैले खून के घेरे को चौड़ा किया। तांत्रिक मानो संसार से विमुख होकर किसी विकृत कला की आलोचना कर रहा था। उसने कपड़े के थैले से कुछ सूखे पत्ते निकाले और उन्हें खून में डाल दिया।

देखने वालों को कुछ खास बदलाव नहीं दिखा, लेकिन तांत्रिक ने गहरी सांस ली...और फिर जोर से गुर्राया। उसने थाली को उलट दिया, जिससे खून और सूखे पत्ते नीचे प्यासी ज़मीन पर गिर गए।

'यह वाकई अद्भुत है, मैं कहता हूँ, यह वाकई अद्भुत है,' उसने धीमी और मधुर आवाज़ में कहा। उसकी आवाज़ इतनी कोमल और नरम थी कि वह किसी पुजारी या विक्रेता की आवाज़ जैसी लग रही थी।

'यह बात मुझे अभी-अभी पता चली है। अभी-अभी, मैं कहता हूँ। पीड़ा का देवता कई साल पहले फँस गया था, हाँ, मैं कहता हूँ वह फँस गया था,' उसने तिरस्कार से सिर हिलाया, 'मुझे लगा कि मैं असफल हो गया। मैं कहता हूँ, मुझे यही लगा था। हमें इसे मुक्त करना होगा वरना इसका कोई उपयोग नहीं है, है ना? मैं कहता हूँ इसका कोई उपयोग नहीं है। लेकिन ध्यान से सुनो, क्योंकि किसी देवता को उसके फँसने से मुक्त करने से पहले हमें उसे नियंत्रित करना होगा, हमें उसे लगाम लगानी होगी वरना वह हमें नष्ट कर देगा। वह बहुत शक्तिशाली है। मैं कहता हूँ कि वह उससे कहीं अधिक शक्तिशाली है जितना मैंने, उसके निर्माता के रूप में, कभी सोचा था। क्या तुम्हें लगता है यह भाग्य का खेल है? मुझे नहीं लगता। क्या तुम्हें लगता है यह संयोग है? नहीं, मैं कहता हूँ नहीं। मेरा आदेश ही उसका उद्देश्य बन गया और इस प्रकार वह वास्तविकता बन गया, क्या तुम समझते हो? मैं कहता हूँ तुम नहीं समझते।'

तांत्रिक ने फिर से आह भरी, जिससे वहाँ मौजूद कई लोगों ने भौंहें चढ़ा लीं, जिनमें से कुछ उसके बकवास से तंग आ चुके थे। करण किरोमल ध्यान से देख रहा था। वह जानता था कि तांत्रिक अभी चुप नहीं हुआ है। अंत में तांत्रिक अपनी योजना बताएगा। तब तक उन्हें चुपचाप उसकी बकवास सुननी ही होगी। इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं था। तांत्रिक हमेशा से ऐसा ही था। वह बड़बड़ाता और चिल्लाता, ऐसी जानकारी उगलता जिसका करण को कोई मतलब समझ नहीं आता था। फिर भी, अंत में वह उसे संक्षेप में बता देगा कि उसे क्या करना है।

करण बूढ़े थे, लगभग अस्सी वर्ष के। उनका जन्मदिन बस कुछ ही महीनों में आने वाला था। उनमें अब उतनी ऊर्जा नहीं थी कि वे ज़रूरी काम कर सकें। वे अपने भतीजे गोविंद किरोमल पर निर्भर थे। गोविंद उनके परिवार, उद्योगों और पार्टी के राजनीतिक भविष्य का सारा काम संभालते थे। उस समय, चाचा और भतीजा ज़मीन पर पालथी मारकर बैठे थे।

सर्दियों में खेतों में कड़ाके की ठंड थी, लेकिन उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। अगर वे तांत्रिक को जयपुर स्थित अपनी सौ साल से भी अधिक पुरानी हवेली में लाते, तो यह बेहद खतरनाक साबित होता।

तीस साल पहले, राजस्थान उनके लिए किसी से कम नहीं था। करण किरोमल को चुनौती देने की हिम्मत किसी में नहीं थी। उन दिनों, तांत्रिक उनके घर नियमित रूप से आते थे, हालांकि अगर करण के बड़े भाई, स्वर्गीय घनश्यामलाल किरोमल को इस बारे में पता चलता, तो वे उसे बुरी तरह पीट देते। लेकिन, हाल के दिनों में, राज़ छुपाना मुश्किल हो गया था, खासकर मीडिया से। ज़रा सा भी शक उनके भतीजे का करियर तबाह कर सकता था।

गोविंद किरोमल ने गला साफ करते हुए पूछा, 'आपको यह कैसे पता चला?' उन्होंने तांत्रिक के अवलोकन को चुनौती देते हुए यह सवाल किया।

वह आदमी गोविंद को देर तक घूरता रहा। मानो कोई भूखी जंगली बिल्ली झपट्टा मारने के लिए तैयार हो। अचानक, वह ज़ोर-ज़ोर से हंस पड़ा।

‘वह मुझसे पूछता है कि मुझे कैसे पता चला, करण, क्या मुझे उसे बताना चाहिए?’ उसने पूछा। जवाब का इंतजार किए बिना, उसने आगे कहा।

“क्योंकि गोविंद किरोमल, तुम इससे बंधे हुए हो। मैं नहीं कहता। खून कहता है। क्या तुम खून की बूंदों को पढ़ सकते हो, किरोमल? मैं पढ़ सकता हूँ। मैं कहता हूँ, बेवकूफी भरे सवाल मत पूछो, बस सुनो।”

चाचा ने भतीजे को कोहनी मारी और सिर हिलाकर कहा, 'चुप रहो'।

करण की कोई संतान नहीं थी, लेकिन उनके बड़े भाई के सात पुत्र थे। गोविंद तीसरे पुत्र थे; न तो इतने बड़े कि अपने पिता के साथ राजनीति में शामिल हो सकें, और न ही इतने छोटे कि जागीर के प्रबंधन के कठिन काम से बच सकें, जो काम उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। इसलिए, जब गोविंद ने अपने चाचा को बेहतर विकल्प पाया, तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। करण गोविंद को उस बेटे की तरह प्यार करते थे जो उन्हें कभी नहीं मिल सका। जल्द ही, गोविंद करण किरोमल के राजनीतिक और कानूनी उत्तराधिकारी बन गए।

गोविंद को अपने चाचा से काफी लाभ मिला था। उस समय उनके चाचा देश के दूसरे सबसे शक्तिशाली सरकारी अधिकारी थे, भारत के गृह मंत्री। राजनीतिक दृष्टि से, शायद वे सबसे शक्तिशाली थे।
थाली को दोनों तरफ से साफ करके तांत्रिक ने औजार को जमीन पर रख दिया। सिर हिलाते ही उसने अपने आसपास मौजूद सभी लोगों की स्थिति का जायजा लिया। करण, गोविंद, उसका दाहिना हाथ शिरो, शिरो के गुंडे, उसे उन सबकी स्थिति जानना जरूरी था। यह उसके आने वाले कार्य के लिए महत्वपूर्ण था।
दोनों राजनेता उसके सबसे करीब थे, इतनी नज़दीक कि उन्हें छू सकें। चाचा आँखें बंद करके ध्यान लगाने का दिखावा कर रहे थे, जबकि भतीजा मोबाइल फोन में व्यस्त था। बाकी क्रू मेंबर उनके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे ताकि कोई भी ताक-झांक न कर सके।
बिना किसी चेतावनी के, तांत्रिक ने गोविंद पर झपट्टा मारा और उसका दाहिना हाथ शिकंजे में जकड़ लिया। इससे पहले कि राजनेता कुछ समझ पाता, उसने अचानक कहीं से चाकू निकालकर गोविंद किरोमल के दाहिने हाथ की छोटी उंगली काट दी।
गोविंद एक चीख उठा जो दर्द भरी कराह में बदल गई। उसने अपना हाथ पकड़ लिया और सदमे से कटे हुए हाथ को घूरने लगा। शिरो और उसके साथी तांत्रिक पर टूट पड़े। उन्होंने पहले ही कई तरह के हथियार निकाल लिए थे, जिनमें देसी पिस्तौलें, चाकू वगैरह शामिल थे, और उनमें से एक के पास मध्यम आकार का भाला भी था। उनके गुंडों को इससे बेहतर बहाना नहीं चाहिए था कि तांत्रिक ने उनके मालिक की उंगली काट दी थी। उनका पूरा इरादा था कि वे उसे उसी दिन दफना देंगे। हो सके तो जिंदा ही।
तांत्रिक ने कटी हुई उंगली से नज़रें नहीं हटाईं। उसने कलाई को हल्के से झटका दिया, मानो किसी चिपकी हुई मक्खी को भगा रहा हो। गुंडे पतझड़ की हवा में पत्तों की तरह उड़ गए। उनमें से एक भी नहीं उठा।
तांत्रिक ने अपने काम के परिणाम की जाँच करने की ज़हमत भी नहीं उठाई। इसके बजाय, उसने पीले रंग के चाक से धातु की थाली पर चार भाग बनाए। उसने अपने सूती थैले से कुछ सूखे पत्ते निकाले और उन्हें एक भाग में रख दिया। दूसरे भाग में उसने एक डोरी रखी। तीसरे भाग में उसने गोविंद की कटी हुई उंगली रखी, जबकि चौथे भाग में उसने एक सूखा कौवे का पैर रखा। उसने अपनी बनाई हुई चम्मच को उंगली के आसपास जमा हुए खून में डुबोया और उसे थाली के बाकी तीन भागों में छिड़क दिया, साथ ही मन ही मन मंत्र बुदबुदाता रहा।
करण किरोमल अपनी निगाहें कौवे के पैर के निशान से हटा नहीं पा रहे थे। एक मुरझाया हुआ पंजा कांप रहा था। बूढ़ा आदमी बुखार से कांप उठा। पत्तियाँ हरी हो गईं, मानो उसी दोपहर अचानक उनमें जीवन आ गया हो।
तांत्रिक ने दूसरे भाग से धागा निकाला। उसने बड़ी कुशलता और प्रयास से धातु के टुकड़े को तब तक मोड़ा जब तक वह पैर के अंगूठे के नाखून के आकार का नहीं हो गया। उसने धागे को मुड़े हुए धातु के टुकड़े के चारों ओर पहले एक दिशा में और फिर दूसरी दिशा में इस प्रकार लपेटा कि धागा एक ताबीज के ऊपर आड़ा-तिरछा लिपट गया।

तांत्रिक गोविंद के पास आया। उसने मंत्री की बाईं कलाई पर ताबीज़ बाँध दिया। दर्द से बेहाल गोविंद ने अपना सिर घुमाकर तांत्रिक को गुस्से से देखा। तांत्रिक ने गोविंद की घायल दाहिनी बांह को टटोलना शुरू किया। मंत्री ने विरोध किया और अपनी बांह को शरीर में और कसकर मोड़ लिया। गृह मंत्री के लगातार विरोध को अनसुना करते हुए तांत्रिक ने जबरदस्ती हाथ छुड़ाया और गोविंद की उंगलियों को सीधा किया। वे सभी पाँचों!

तांत्रिक ने घोषणा की, "तुम संसार के राजा बनोगे। यह मत भूलना। भयंकर खतरे मंडरा रहे हैं और सभी शक्तिशाली राजाओं की तरह तुम्हें भी इन खतरों का सामना करना होगा, मैं कहता हूँ, तुम्हें इनका सामना करना ही होगा। याद रखना गोविंद किरोमल, जो ताबीज अब तुम्हारी भुजा पर है, वह अब तक का मेरा सबसे शक्तिशाली ताबीज है। तुम जिससे भी मिलोगे, उस पर तुम्हारा अधिकार होगा। यहाँ तक कि तुम्हारे तथाकथित उच्च अधिकारी भी तुम्हारे गुलाम होंगे और तुम्हारे आदेशों का पालन करेंगे। लेकिन ताबीज हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहना चाहिए। नहीं, मैं कहता हूँ, नहीं। इसका उद्देश्य यह नहीं है। उचित समय आने पर तुम्हें इसे सूत्रम को अर्पित करना होगा। तब मैं एक यज्ञ करूँगा, मैं कहता हूँ, एक मानव यज्ञ, और इस प्रकार पीड़ा के देवता आज्ञा का पालन करेंगे।"

गोविंद, जो तब तक अपनी बिल्कुल नई छोटी उंगली पर टकटकी लगाए हुए था, तांत्रिक की ओर मुड़ा।

'यह मानव बलि कौन है?'

'एक अत्यंत शक्तिशाली व्यक्ति है। मैं आपको उस व्यक्ति तक पहुंचा दूंगा।'

गोविंद ने संक्षेप में सिर हिलाया।

'अब जाओ गोविंद किरोमल, मैं कहता हूँ जाओ, क्योंकि तुम्हारे लिए खुशखबरी इंतजार कर रही है।'

अध्याय 3

सत्यनारायण राघव कासावरी, जिन्हें उनके दोस्त एसआरके कहते हैं, एलुरु रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर झांकते हुए मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने देखा कि ट्रेन तीन मिनट के लिए रुकने पर उनके भाई और पिता डिब्बों में झांक रहे थे।

दो बैग कंधे पर टांगे हुए वह सीमेंट के चबूतरे पर चढ़ गया। जब तक उसका भाई विश्वनाथ दौड़ता हुआ उसके पास पहुँचा, तब तक वह कुली की सेवाएँ लेने से विनम्रतापूर्वक इनकार कर चुका था।

‘अन्नाया,’ उसने चिल्लाकर कहा।

‘हे भगवान, तुम तो बड़े हो गए!’ शाहरुख खान ने अपने छोटे भाई को गले लगाते हुए कहा।

‘और तुम पहले से भी ज़्यादा शाहरुख खान जैसे दिख रहे हो,’ उनके भाई ने हांफते हुए कहा। तभी उनके पिता जगन्नाथ कासावरी भी उनके साथ आ गए।

'हाय पिता।'

XXX

बाद में, घर पर, भरपेट नाश्ता करने के बाद, शाहरुख खान अपने पिता के साथ अपने मेयदा के बैठक कक्ष में शामिल हुए। एलुरु में एक से अधिक मंजिलों वाले किसी भी मकान को मेयदा कहा जाता था, जिसका अर्थ धनी व्यक्ति का घर होता था।

शाहरुख खान को आज भी अपने बचपन का एलुरु याद है, जब वहां मुट्ठी भर ही मेयदा हुआ करते थे। उनमें सबसे बड़ा तो 'सूर्य-निलयम' था, जो सूर्य राजपरिवार का घर था। वह सचमुच एक भव्य मेयदा था, जो एक पूरी गली में फैला हुआ था और दो समानांतर गलियों को जोड़ता था। प्रवेश एक गली से होता था और निकास दूसरी गली से। आजकल तो उनके पास भी, यानी कासावरी परिवार के पास, एक छोटा सा मेयदा है, जो सौ वर्ग गज जमीन में बना हुआ है।

‘काम कैसा चल रहा है?’ उसके पिता जानना चाहते थे।

'हमेशा की तरह दिलचस्प। मुझे कई अन्य लोगों के साथ सेना के वैज्ञानिक अनुसंधान विभाग में तैनात किया गया है। सैन्य खुफिया विभाग अब वैज्ञानिकों से कई बातें समझना चाहता है।'

'कैसा?'

'खैर पिताजी, यह गोपनीय जानकारी है, राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित मामला है, इत्यादि। लेकिन आम तौर पर, यह आतंकवादियों के व्यवहार के पैटर्न के बारे में है।'

‘व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उन्हें भौतिकविदों की आवश्यकता कब से पड़ने लगी? वैसे, तुम्हारी वो गंभीर चेहरे वाली बॉस कैसी है? मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा।’

‘शीला? शीला पीतांबर। ओह हाँ, वह ठीक है। अभी भी ज्यादा मुस्कुराती नहीं है और अगर मैं उसकी जगह होती, तो मैं भी नहीं मुस्कुराती।’

Jaganath nodded gravely.

'हां, आपने मुझे बताया था कि उन्होंने 2005 में मुंबई की बाढ़ में अपने पति को खो दिया था और 26/11 के दौरान अपने माता-पिता को। इन सब के बाद बिल्कुल अकेले रहना कितना भयानक होगा। उन्हें किसी से मिलना-जुलना शुरू करना चाहिए, शादी कर लेनी चाहिए। शायद फिर से जीवन की शुरुआत करनी चाहिए।'

‘शीला? मुझे नहीं लगता कि वह अब भी इंसान बची है। मुझे उस आदमी के लिए दुख होगा जो उससे शादी करेगा।’

जगन्नाथ ने दार्शनिक अंदाज में अपनी भौहें ऊपर उठाईं।

‘पिताजी, सेवानिवृत्ति का जीवन आपको कैसा लग रहा है?’

जगन्नाथ ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'तुम्हारी माँ को यह बिल्कुल पसंद नहीं है कि मैं टीवी पर समाचार देखता हूँ।'

ठीक उसी क्षण उसकी मां अंदर आई और अपनी साड़ी के पल्लू से अपने हाथ पोंछ रही थी।

‘क्या तुमने उसे तस्वीर दिखाई?’ उसने अपने पति से पूछा।

‘हां...मैं करने ही वाला था...मैं…’

अनुकुना, मुझे पता था। मेरा मुकाबला तो खबरों से है, ये सरासर अपमान है। उसे अपने घर के लिए जो करना होता है, वो याद नहीं रहता, लेकिन उसे दुनिया के बाकी हिस्सों में जो कुछ भी हो रहा है, वो सब पता होना चाहिए।'

तब तक उसने दीवार पर लगे कैबिनेट के एक दराज से एक लिफाफा निकाल लिया था।

‘ये रही तस्वीर, इनका नाम श्री शैलजा है। मुझे लगता है आपको याद होगा। ये हमारी दूर की रिश्तेदार हैं। जब आप छोटे थे तो इन्हें एस 2 कहकर बुलाते थे।’

शाहरुख खान ने फीकी मुस्कान के साथ लिफाफा ले लिया।

‘जाओ इसे खोलो। तुम उस लड़की को देख लो जिसके साथ तुम अपना बाकी जीवन बिताने वाले हो,’ उसके पिता ने कहा।

शाहरुख खान को पहले से ही पता था कि वह कैसी दिखती है। आखिर, कुछ मिनट पहले जब उनकी मां ने उन्हें उसकी तस्वीर सौंपी, तब तक की पूरी घटना इसी तरह रची गई थी ताकि वह उससे शादी कर सकें। वह उससे तब से प्यार करते थे जब वह पंद्रह साल के थे और वह बारह साल की थी।

‘मैं इसे बाद में देख लूंगा…’ कहकर उसने लिफाफा एक तरफ रख दिया।

शाहरुख खान ने सीएसआईआर (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद) में काम किया, जो विश्व का सबसे बड़ा सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित अनुसंधान केंद्र है। परिषद ने कई सरकारी परियोजनाओं के

लिए अपने वैज्ञानिकों को ऋण पर दिया था। इस प्रकार, वे भारतीय सेना की खुफिया शाखा, रॉ (अनुसंधान और विश्लेषण विंग) को सौंपे गए वैज्ञानिकों की टीम का हिस्सा थे।

अपने पिता से कही गई उसकी कुछ बातें सच थीं, हालांकि उनका संबंध उसके मुख्य विशेषज्ञता क्षेत्र से नहीं था। वह नवस्थापित पीएडी (पैरानॉर्मल एक्टिविटीज डिवीजन) में कार्यरत था। विशेष रूप से, वह भूत-प्रेत देखने से लेकर राक्षसी उपस्थिति तक, अज्ञात और तथाकथित अलौकिक गतिविधियों के वैज्ञानिक प्रमाण एकत्र करता था और उनका वैज्ञानिक स्पष्टीकरण खोजने का प्रयास करता था।

उनका यह संदेह कि पीएडी किसी का निजी एजेंडा था, इस तथ्य से और भी पुख्ता हो गया कि आधिकारिक भारत धर्मनिरपेक्ष था, जिसका अर्थ यह था कि वह किसी एक धर्म या धार्मिक मान्यताओं के समूह को नहीं मानता था। भूत-प्रेत की खोज धार्मिक अंधविश्वासों पर आधारित थी। 'आत्माओं' में विश्वास किए बिना 'आत्माओं की दुनिया' को छुआ भी नहीं जा सकता था। यदि उनका संदेह सही साबित हुआ, तो समझिए कि जनता का बहुत सारा धन किसी की निजी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था।

उन्होंने अपनी बॉस शीला से कई बार पूछा था कि यह विभाग आखिर क्यों बनाया गया है। जवाब हमेशा यही होता था, 'अपने काम से मतलब रखो'। शाहरुख खान को शक था कि शायद शीला को इसका जवाब नहीं पता था।

क्वांटम यांत्रिकी के अलावा, शाहरुख खान एक पक्के तत्वमीमांसावादी भी थे। हालांकि क्वांटम यांत्रिकी एक विज्ञान है और दूसरी दर्शनशास्त्र की एक शाखा, यह कभी-कभी व्यक्ति को अस्तित्व के अन्य पहलुओं की जांच करने के लिए प्रेरित करती है।

वह अपने काम से खुश था। वह वही करता था जो उसे पसंद था। उसने भारत के कोने-कोने में घूमकर तथाकथित अलौकिक गतिविधियों की जाँच की थी, हालाँकि उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि उसके पास मौजूद डेटा बहुत कम और लगभग बेकार था। फिर भी, किसी अज्ञात कारण से, रॉ (RAW) उसके शोध के लिए धन मुहैया कराता था और उसे शिकायत करने की कोई वजह नहीं थी। उसकी बस यही इच्छा थी कि वह बदले में कुछ योगदान दे सके।

कुछ महीने पहले, श्री, जो उनके जीवन का प्यार थीं, ने उन्हें ईमेल किया था कि उनके माता-पिता उनके लिए एक उपयुक्त वर की तलाश शुरू कर चुके हैं। वह जानते थे कि वह उनकी पहली पसंद नहीं थे। हालाँकि उनके परिवार रिश्तेदार थे, लेकिन एक अनबन, जिसके बारे में किसी को पता नहीं था कि वह कब शुरू हुई और किस मकसद से, ने उन्हें एक-दूसरे से दूर रखा था।

उन्हें एहसास हो गया था कि अब आगे बढ़ने का समय आ गया है, वरना वे उसे खो देंगे। उन्होंने एक सरल योजना बनाई जो छोटे शहर के माता-पिता के डर का फायदा उठाती थी। स्कूल के दोस्तों की बदौलत यह योजना एकदम सटीक बैठ गई। कुछ ही दिनों में उनकी सगाई होने वाली थी। शाहरुख खान अपने पुराने दोस्तों के साथ एक शाम बिताने के लिए उत्सुक थे। उन्हें उन सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद करना था।

ड्रिंक्स का बिल उसने दिया।

XXX

होटल मनोरमा के बार में बैठने की नई व्यवस्था थी, बेहतर फर्नीचर था और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सड़ी-गली और बासी हवा की गंध की जगह सेंट्रल एयर कंडीशनिंग और रूम फ्रेशनर लगे हुए थे। बारटेंडर वास्तव में मिलनसार था और उसने एक साफ-सुथरी वर्दी पहनी हुई थी। देर रात बार में ग्राहक कम थे और नशे में थे। एक-एक करके वे बगल के रेस्तरां में चले गए, जो उसी परिसर का हिस्सा था, और वहां उन्होंने मसालेदार आंध्र भोजन का आनंद लिया।

उनकी मेज के आसपास का माहौल खुशनुमा था, आधे खाली बीयर के मग, आकर्षक व्हिस्की और कॉकटेल के गिलास, मिर्च चिकन और मांस से सजी प्लेटें, ज़ोरदार हंसी और तेज़ बातचीत। समूह का सबसे निराशावादी और सबसे कम सफल सदस्य, वैलानेनी, जमकर पी रहा था।

'हेलो...तुम, मुझे एक और बड़ा वाला लाओ और वो भी दुगनी जल्दी,' उसने एक वेटर पर चिल्लाते हुए कहा।

उनके सामने बैठे शाहरुख खान ने वलानेनी को देखकर मुस्कुरा दिया।

'यार, ये तो तुम्हारा नौवां राउंड है, क्या तुम सच में ऐसा सोच रहे हो?'

वालनेनी ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'हाँ, मैं ठीक हूँ... मैं कोई वैज्ञानिक नहीं हूँ, लेकिन मैं आधी रात को शराब के नशे में भी उस श्मशान घाट पर चल सकता हूँ।'

'तुम्हारे के लिए अच्छा है।'

संतोष, वलनेनी, शिवप्रसाद, नारायण प्रसाद, मेहर प्रसाद, ये सभी स्कूल के दोस्त थे, और सभी नशे में थे।

'क्या आपके पिता को पता है कि आप शराब भी पीते हैं?' शिवप्रसाद ने शाहरुख खान से पूछा।

'हां, वो बढ़िया है।'

क्या S2 को पता है?

'हां, जब तक हमारी शादी नहीं हो जाती, उसे कोई आपत्ति नहीं है। उसने साफ कह दिया था कि यह सिर्फ शादी होने तक ही सीमित है। उसके बाद शराब पीना बंद।'

संतोष ने बनावटी पीड़ा जताते हुए कहा, 'हमने क्या कर दिया?'

शाहरुख खान मुस्कुराए।

'हाँ, लेकिन कब तक? शादी के बाद तो मैंने भी यही सोचा था। क्या मैं शराब नहीं पी रहा? एक बार जब औरतें किसी के जाल में फंस जाती हैं, तो वो बहुत सख्त हो सकती हैं, मैं आपको बता दूं,' नारायण प्रसाद ने अपने बनावटी अमेरिकी लहजे में अफसोस जताया। जिस सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट कंपनी में वह काम करते थे, उसके एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में छह महीने अमेरिका में रहने के बाद, उनका अमेरिकी लहजा पूरी तरह से अमेरिकी बन गया था।

'हाँ, बदमाश, बेवकूफ...' मेहर ने उसकी नकल की।

‘खैर, अंत भला तो सब भला…’ संतोष ने निष्कर्ष निकाला।
शाहरुख खान ने उदारतापूर्वक कहा, 'आप लोगों का धन्यवाद।'
‘अरे यार, शांत हो जाओ,’ नारायण प्रसाद ने धन्यवाद को टालते हुए कहा। ‘यह तो बहुत आसान था। हम उनके घर गए और मैंने उन्हें बताया कि वलनेनी एस 2 के साथ भाग जाना चाहती है। अरे बाप रे, उसकी माँ तो बुरी तरह घबरा गई। भगवान के लिए, वह औरत दिल का दौरा पड़ने के कगार पर थी। तभी मेहर बड़ी ही शांत और समझदार बनकर आगे आई और अपने पिता को इशारा किया, क्यों न उसकी शादी आपसे करवा दें? आप जानते हैं, सरकार के साथ काम करने का मौका तो मिलेगा ही। ये बूढ़े लोग, मैं आपको बता दूँ, यहाँ के लोग बड़े ही अजीब हैं। सरकारी नौकरी वाले दामादों से तो उन्हें बहुत अरुचि होती है, आप जानते हैं, सुरक्षा, स्थिरता, ये सब। खैर, आप दोनों रिश्तेदार हैं। आपको बस लड़की को मंज़ूरी देनी थी, बात खत्म।’
‘हाँ, बदमाश, बेवकूफ…’, मेहर ने गंभीर भाव से सिर हिलाते हुए कहा।
वलानेनी की तिरस्कार भरी मुस्कान और भी गहरी हो गई। 'हाँ,' वह चिल्लाया, 'और बेचारा बूढ़ा वलानेनी ही असली खलनायक है। मैं हमेशा बलि का बकरा बनता हूँ। सिर्फ़ मैं ही नहीं। मेरे पूरे परिवार के साथ यही हाल है, मेरे उस कमीने दादा और शैतान की पूजा करने वालों के साथ उसके संबंध की वजह से। हम सब शापित हैं।'
दोस्तों ने असहज निगाहों से एक-दूसरे को देखा।
‘वालू हमेशा भूतों और राक्षसों की बातें करता रहता है, क्या तुम्हें पता है?’ शिवप्रसाद ने पूछा। ‘उसने अनगिनत बार कसम खाकर कहा है कि उस गाँव में हमारे बीच एक राक्षस रहता है, उसका नाम क्या है?’
'गुडेम, इसे गुडेम कहा जाता है,' वालेनेनी नशे में चिल्लाया।
गांव का जिक्र होते ही बार में मौजूद कुछ लोगों ने दबे पांव उनकी तरफ देखा।
संतोष ने शाहरुख खान को आँख मारी। ‘मुझे हर साल एक अजीब अनुभव होता है। आपको पता ही होगा कि मेरी दादी रीति-रिवाजों को लेकर कितनी सख्त थीं और त्योहारों के दौरान जब तक सारे रीति-रिवाज पूरे नहीं हो जाते, किसी को भी टीवी देखने की इजाज़त नहीं थी। उन्हें गुज़रे दस साल हो गए हैं और अब क्या ही हो, त्योहारों के दौरान हममें से कोई भी तब तक टीवी नहीं देख सकता जब तक सारे रीति-रिवाज पूरे नहीं हो जाते। वो बंद हो जाता है।’
‘तुम्हें यह मज़ाकिया लगता है? ज़रा यह सुनो,’ मेहर बीच में बोली। ‘हर अमावस्या की रात हमारे बूढ़े माली का दावा है कि उसे दर्शन होते हैं। उसकी ताज़ा भविष्यवाणी यह है कि हम पर एक भयानक खतरा मंडरा रहा है और उसे रोकने के लिए स्वयं भगवान एलुरु में अवतार लेंगे।’
सब लोग हंस रहे थे। सिवाय एक के।
वलानेनी ने धीमी, रहस्यमयी आवाज़ में कहा, 'गुडेम के अंधकार से तो भगवान भी हमें नहीं बचा सकते।' उसने उन सभी को निराशा भरी निगाहों से देखा, उसकी आँखें कोयले की तरह जल रही थीं।

‘गुडेम में किसी को भी रात भर रुकने की इजाज़त नहीं है, यहाँ तक कि वहाँ से गुज़रने वाले ट्रक भी नहीं रुकते। लगभग साठ साल पहले एक बड़ा भूकंप आया था और उसके बाद से इस क्षेत्र में कोई भूकंपीय गतिविधि दर्ज नहीं हुई है। भूकंपमापी यंत्रों पर भी झटके दर्ज नहीं हुए। सूर्य स्मारक परिसर के पास कार या मोटरसाइकिल चलाकर देखिए, गाड़ियाँ अचानक बंद हो जाती हैं। किसी ने भी इसका कोई स्पष्टीकरण देने की कोशिश नहीं की है। दोस्तों, गुडेम का राक्षस सिर्फ़ एक किंवदंती नहीं है। स्मारक हॉल के अंदर कुछ है। एक भयानक चीज़ जो लोगों को पागल कर देती है। इसे बंद कर दिया गया है और शायद चाबी कहीं फेंक दी गई है।’

एकदम सन्नाटा छा गया। शाहरुख खान बेहद खुश थे। ज़ाहिर है, उन्हें गुडेम की पुरानी कहानियाँ तो पता ही थीं। ज़िले में हर कोई उस जगह के बारे में जानता था। यहाँ काम और मौज-मस्ती को एक साथ करने का मौका था। एक और शहरी किंवदंती को तोड़ने का मौका।

संतोष ने झुंझलाते हुए कहा, 'अरे, ऐसा कैसे हो सकता है? यह कहानी तो काफी समय से चल रही है। अगर इसमें कुछ सच्चाई होती, तो क्या आपको लगता है कि किसी ने इस बारे में कुछ नहीं किया होता?'

शाहरुख खान ने कहा, 'मैं सहमत हूं।'

वलनेनी ने भयंकर गुस्से से भौंहें चढ़ाईं। ‘मेरी दादी ने मुझे बचपन में यह कहानी सुनाई थी। जमींदार के सबसे बड़े बेटे रघुराम की हत्या उसके भाई ने कर दी थी, जो एक अघोरा तांत्रिक के साथ मिला हुआ था। मरा हुआ बेटा जमींदार का उत्तराधिकारी था। जमींदार रघुराम के सात साल के बेटे सूर्य प्रसाद का संरक्षक बन गया। जब वह लगभग चौदह साल का हुआ, तो उसके पैर काम करना बंद कर दिए। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। अपाहिज सूर्य प्रसाद 1970 के दशक में रहस्यमय तरीके से गायब हो गया। उसके गायब होने के बाद गुडेम में सारी बुराई रुक गई। अब तक। लेकिन अब फिर से शुरू हो गई है। लोग गायब हो रहे हैं। कुछ मर चुके हैं। कुछ पूरी तरह से पागल हो गए हैं। कहते हैं कि सूर्य राक्षस फिर से शिकार कर रहे हैं।’

शाहरुख खान ने पूछा, 'क्या सूर्या परिवार का कोई भी सदस्य अब वहां नहीं रहता?'

‘सूर्य प्रसाद का एक बेटा है। वह गुड़गांव में बहुत दूर रहता है। मुझे नहीं लगता कि उस कमीने को अपने शैतान पूजा वाले अतीत के बारे में भी पता है।’

दोस्तों ने वैलानेनी की बातें अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनीं।

'आपको इसके बारे में इतनी जानकारी कैसे है?' शाहरुख खान ने पूछा।

‘कैसे? साथी, तुम्हारा मतलब क्या है, कैसे? मेरे दादाजी सूर्य अपंग के साथ गायब हो गए। मेरे दादाजी अपनी व्हीलचेयर चलाते थे। यह बात तो पूरी दुनिया जानती है।’

‘हां...हां, मुझे माफ करना वालू... मैं यह बात बिल्कुल भूल गया था। तो, यह कोई पुरानी बात है, है ना? क्यों न इसे जाने ही दें?’

वालनेनी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उनका गुस्सा साफ झलक रहा था।

‘यह कोई पुरानी कहानी नहीं है, ठीक है? यह सब फिर से हो रहा है,’ उसने अचानक कहा।

‘बकवास! सदियों से कुछ नहीं हुआ है,’ मेहर ने कहा। अब तक वह चुप था, वलानेनी के कुख्यात षड्यंत्र सिद्धांतों को सुनने में संतुष्ट था। लेकिन अब बहुत हो गया था।

“ठीक है, कभी-कभार कोई जानवर या एक-दो लोग लापता हो जाते हैं और ये सब स्मारक परिसर के आसपास ही देखे जाते हैं। लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। गुडेम एक छोटा सा गाँव है, हर किसी को स्मारक हॉल के पास से गुजरना पड़ता है। बिजली न होने का मतलब बस इतना है कि ट्रांसफार्मर खराब है और प्रशासन इस बारे में कुछ नहीं कर रहा है। दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की एक श्रृंखला ने एक महान परिवार को बर्बाद कर दिया और अब हालात सुधर गए हैं। मेरे चाचा अभी भी रघुराम सूर्या के यहाँ काम करते हैं। वे गुडेम के पुराने किले में रहते हैं। वे उस जगह की देखभाल करते हैं। पिछली बार जब मैंने उन्हें वलनेनी के षड्यंत्र सिद्धांतों के बारे में बताया था, तो वे बहुत हँसे थे,” शिवप्रसाद ने कहा।

‘लेकिन रघुराम की हत्या तो चालीस के दशक में हुई थी!’ शाहरुख खान ने पूरी तरह से हैरान होकर कहा।

'वो वाला नहीं, उसका पोता। गुड़गांव में रहने वाले वर्तमान सूर्या का नाम उसके दादा के नाम पर रखा गया है।'

'अरे हां!'

‘ठीक है...ठीक है!’ वलनेनी झल्लाया। ‘शायद मैं पागल हूँ। तुम तो बड़े होशियार हो। बताओ, सूर्य प्रसाद कहाँ गए? आखिरी बार उन्हें मेरे दादाजी के साथ व्हीलचेयर में सूर्य स्मारक हॉल में प्रवेश करते देखा गया था। पूरा गाँव इस बात का गवाह है। उसके बाद उन्हें किसी ने नहीं देखा। स्मारक हॉल में उनके साथ एक और आदमी था। सूर्य प्रसाद का निजी अंगरक्षक। वह उस रात बच गया, लेकिन वह बिल्कुल पागल है, और उसकी आँखें भी चली गई हैं। यह सत्तर के दशक की बात है। समझाओ कि गुडेम में किले को छोड़कर बाकी जगह बिजली क्यों नहीं है? मैं तुम्हें वैज्ञानिक सबूत दे रहा हूँ, श्रीमान वैज्ञानिक, तुम जाकर खुद देख लो।’

शाहरुख खान कुछ सेकंड तक चुपचाप वलानेनी को देखते रहे। वह आदमी स्पष्ट रूप से नशे में था और बार-बार वही बात दोहरा रहा था।

‘ठीक है...दोस्तों, चलो रेस्टोरेंट चलते हैं, मुझे बहुत भूख लगी है,’ शिवप्रसाद ने इरादे से ज़्यादा ज़ोर से कहा।

‘मुझे रात का खाना नहीं चाहिए। मुझे उन दोस्तों से कोई वास्ता नहीं रखना जो मुझ पर विश्वास तक नहीं करना चाहते। यह मेरा अभिशाप है, मैं इससे निपट लूंगी!’ वलानेनी ने कसम खाते हुए कहा।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

वे बस उसके जाने का इंतजार करते रहे।

अध्याय 4

उस रात कसावरी का मैदान हीरे की तरह चमक रहा था। एलुरु में सर्दियाँ कड़ाके की ठंड वाली नहीं होती थीं, और न ही एलुरुवासियों ने कभी बर्फ देखी थी, हालाँकि यह बताया जाता है कि सुदूर अतीत में कभी एक अप्रत्याशित ओलावृष्टि हुई थी, जिसके बाद ऐसा दोबारा कभी नहीं हुआ।

शाहरुख खान और एस 2 की सगाई सुबह 3 बजे हुई थी। सुबह होने से पहले की ठंडी हवा को 'गोधुला वेला' माना जाता है, जो एक शुभ समय होता है जब प्रकृति में सामंजस्य होता है। हालांकि, पड़ोसियों के अधिकारों के प्रति जगन्नाथ की संवेदनशीलता को देखते हुए, हल्का संगीत और विशेष रोशनी की व्यवस्था की गई थी। यह बात थोड़ी हास्यास्पद थी कि उनके सभी पड़ोसी रेशमी वस्त्र और गहनों से सजे उनके घर पर ही मौजूद थे।

शाहरुख खान ने सफेद रेशमी कमीज और रेशमी धोती पहनी हुई थी। उन्होंने सोने की कई चेन, कंगन और अंगूठियां पहनी हुई थीं। उनके कुछ दोस्त उनके आसपास खड़े थे।

'अब समय हो गया है बेटे, चलो चलते हैं,' जगन्नाथ ने शाहरुख खान के कमरे में कदम रखते हुए कहा।

शाहरुख खान ने आखिरी बार शीशे में खुद को देखा और बाहर निकल गए। उनका बैठक कक्ष अब एक अस्थायी समारोह कक्ष बन चुका था। सारा फर्नीचर सामने के आंगन में रखा था और कमरा फूलों और झालरों से सजा हुआ था। वे पारंपरिक लकड़ी की चपटी सीट, पीते पर बैठ गए।

लगभग चार घंटे बाद समारोह समाप्त हुआ। जब नवविवाहित जोड़ा सामने के आंगन में निकला तो उनका स्वागत सर्दियों की धूप ने किया। वे थके हुए और खुश होकर एक आरामदायक सोफे पर बैठ गए।

सैलाजा मशाल की रोशनी की तरह चमक रही थी। वह एक सुंदर लड़की थी जिसके लहराते हुए गहरे भूरे बाल कमर तक लटकती चोटी में बंधे थे। उसका गेहूं जैसा रंग, थोड़ी मंगोलॉयड जैसी दिखने वाली मटमैली आंखें, गोल चेहरा और भरे हुए होंठ उसे कुछ हद तक अरबी रूप देते थे।

जगन्नाथ एक हट्टे-कट्टे आदमी के साथ उस युवा जोड़े के पास पहुंचा।

'बेटा, श्री चेलापथी राजू गारू से मिलो, ये हमारे मंडल पंचायत अध्यक्ष हैं। ये अठारह गांवों का प्रशासन संभालते हैं। इन्होंने तुम्हें आशीर्वाद देने के लिए समय निकाला है।'

तब तक शाहरुख खान अपनी मंगेतर के साथ खड़े हो चुके थे।

'कृपा करके बताइए,' उस व्यक्ति ने बुलंद आवाज में कहा, 'आपके पिता बहुत दयालु हैं। भगवान आपका भला करे, मेरे बेटे। मुझे बताइए आप क्या करते हैं?'

गोल लाल नाक और उभरी हुई आंखों वाला वह मासूम सा दिखने वाला लड़का शाहरुख खान के बगल में बैठ गया।

मैं सीएसआईआर में कार्यरत एक वैज्ञानिक हूं। मैं फिलहाल एक परियोजना के लिए सेना की खुफिया एजेंसी में प्रतिनियुक्ति पर हूं।

‘अद्भुत, सचमुच अद्भुत। अब मुझे बताओ कि सीयस्स्रा क्या है?’
‘मुझे बिल्कुल पता नहीं था... ओह, सीएसआईआर का मतलब है वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद। यह भारत का राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास संगठन है।’
‘क्या वेतन अच्छा नहीं था?’ पंचायत प्रमुख जानना चाहता था।
‘यह काफी अच्छा है, आप क्यों पूछ रहे हैं?’
तो फिर आप इतने बेताब क्यों थे कि आपने सेना में भर्ती होने का फैसला किया?
शाहरुख खान ने पंचायत प्रमुख को घूरते हुए कहा, 'मैंने सेना में भर्ती नहीं हुआ हूं। परिषद सेना के साथ मिलकर कुछ शोध कार्य कर रही है। इसलिए मैं परिषद की ओर से सेना के साथ काम कर रहा हूं।'
शर्मिंदगी छिपाने के लिए वह आदमी जबरदस्ती हंसने लगा।
‘बेशक... मैं तो बस तुम्हारी परीक्षा ले रहा था, है ना?’ उसने झट से कह दिया।
सचमुच? ‘कोई बात नहीं महोदय। मुझे पता था। आप बहुत बुद्धिमान लगते हैं। वैसे, आप किन-किन गांवों पर शासन करते हैं?’
वह आदमी फिर से जोर से हंस पड़ा, गर्व से उसका सीना काफी फूल गया था।
उन्होंने जरा भी विनम्रता दिखाए बिना कहा, ‘मैं सिर्फ पंचायत अध्यक्ष हूं। मैं निर्वाचित हूं। मैं कोई राजा नहीं हूं।’ उन्होंने आगे कहा, ‘थोतला, थाडे, गुडेम आदि जैसे गांव मेरे नियंत्रण में आते हैं।’
शाहरुख खान की दिलचस्पी बढ़ गई।
‘गुडेम, तुमने कहा था, वही जगह जिसके बारे में कहा जाता है कि वहां भूत रहते हैं!’
इस बार उस आदमी की हंसी किसी तोप के गोले दागने जैसी थी।
“ये तो बस एक किंवदंती है मेरे प्यारे बेटे, बस एक किंवदंती। मेरी माँ गुडेम की रहने वाली थीं, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे। इसलिए, एक तरह से देखा जाए तो गुडेम मेरा गाँव है। मैंने वहाँ बहुत समय बिताया है। मैंने वहाँ भूत या राक्षस नहीं देखे। बकवास, सब बकवास!”
लेकिन महोदय, मेरा एक मित्र कहता है कि वहाँ रहने वाले सूर्य राजपरिवार के सभी सदस्य नष्ट हो गए, एक पुत्र की मृत्यु हो गई, दूसरा पागल हो गया, एक अपाहिज हो गया और वे सब शैतान की पूजा करते हैं, चाहे इसका जो भी अर्थ हो। अभी भी, वाहनों में बिजली की समस्या है और यहाँ तक कि ट्रक भी गाँव में नहीं रुकते। मुझे यकीन है कि ये सभी पुख्ता तथ्य हैं। क्या ये महज़ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की एक श्रृंखला है या आपको लगता है कि ये आपस में जुड़ी हुई हैं?
पंचायत अध्यक्ष ने काफी देर तक शाहरुख खान को घूरकर देखा। फिर वे शान से उठे और जगन्नाथ को इशारा किया।
प्रोफेसर गारू, आपने अपने बेटे को वैज्ञानिक बनाकर बिल्कुल सही फैसला किया। वो मुझसे इतने सवाल पूछ रहा है कि मेरा सिर चकरा रहा है। खैर, मुझे काम निपटाना है; क्या हम नाश्ता कर सकते हैं?
‘जी हां राजू गारू, कृपया इधर आइए।’

पीछे मुड़े बिना, मुखिया जगन्नाथ की ओर चल पड़ा।
‘यह सब क्या था?’ शैलजा ने शाहरुख खान को हल्के से धक्का देते हुए पूछा।
‘मुझे अभी पता नहीं है, लेकिन मैं पता लगाने का इरादा रखता हूं,’ युवक ने संकोच से कहा, उसकी निगाहें मुखिया की दूर जाती पीठ पर टिकी हुई थीं।
चेलापति राजू के चेहरे के भाव ने सब कुछ बयां कर दिया। बिना एक शब्द कहे ही सब कुछ साफ हो गया। आतंक।

अध्याय 5

वह एक सुस्त दोपहर थी। एक शानदार दोपहर के भोजन के साथ दिन के उत्सव का समापन हुआ। श्री शैलजा और उनके माता-पिता घर जा चुके थे, और बाकी मेहमान भी चले गए थे। शाहरुख खान आरामकुर्सी पर ऊंघ रहे थे, तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखकर उन्हें नींद से जगा दिया।

'तो तुम कब जाने की योजना बना रहे हो?' जगन्नाथ ने अचानक अपने बेटे से पूछा।

'क्या बात है, पिताजी?'

जगन्नाथ ने एक सोफा खींचा और अपने बेटे के बगल में बैठ गया। 'सुनो बेटे, जितनी जल्दी हो सके वहां से निकल जाओ। मुझे नहीं पता तुमने आज सुबह पंचायत अध्यक्ष से क्या कहा, लेकिन वो बहुत घबरा गए थे। उनके हाथ...कांप रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुमसे कहूँ कि गुडेम के बारे में फिर कभी सोचना भी मत। ये सलाह नहीं थी बेटे, ये चेतावनी थी। तुम जानते हो कि ये लोग अगर चाहें तो बहुत क्रूर हो सकते हैं। उस मनहूस गाँव में जो भी करना चाहते हो, भूल जाओ।'

लेकिन पिताजी, अगर गुडेम में कुछ गड़बड़ है तो...

'हम सभी गुडेम के बारे में जानते हैं, यह हमारे लिए एक कांटे की तरह है, लेकिन हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते, बेटे। यह मत सोचो कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्राचीन मान्यताओं को मिटा सकते हैं। वे तुम्हारी सोच से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।'

शाहरुख खान ने आह भरी। 'पिताजी, मैं बस गुडेम के बारे में सच्चाई देखना चाहता हूँ।' उन्होंने अपने पिता में एक बदलाव देखा, एक घबराहट जिसे वे छिपा नहीं पा रहे थे।

'साथी, मैंने तुम्हारे लिए परसों के लिए चेन्नई की ट्रेन टिकट बुक कर दी हैं। इससे पहले मुझे कोई टिकट नहीं मिल पाई। वहाँ से दिल्ली के लिए विमान पकड़ लेना। इन तीन दिनों में मैं नहीं चाहती कि तुम घर से बाहर निकलो।'

शाहरुख खान ने झुंझलाहट में हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, 'पिताजी, मैं यही तो अपना पेशा करता हूँ। अलौकिक गतिविधियाँ मेरा कार्यक्षेत्र हैं। मैं आपको बता सकता हूँ कि 99 प्रतिशत मामलों में यह सब बकवास होता है... बेतुका होता है। मैं इस मामले को सुलझा सकता हूँ ताकि उस बदहाल गाँव में कम से कम कुछ सुधार तो हो सके।'

जगन्नाथ की आवाज़ कुछ और तेज़ हो गई, वह हमेशा की तरह एक ऐसे शिक्षक थे जो अपने फैसलों में किसी भी तरह की दखलअंदाज़ी बर्दाश्त नहीं करते थे। 'साथी, तुम सही कह रहे हो, यह एक मनहूस गाँव है, इसे छोड़ दो। तुम्हारी शादी तीन महीने में है। एक नई ज़िंदगी शुरू करो। अपने काम पर ध्यान दो।'

शाहरुख खान हंसते हुए बोले, 'पापा, मैं अपने काम पर ध्यान दे रहा हूं। चिंता मत कीजिए; मुझे कुछ नहीं होगा।'

‘बस एक वादा कर लो, बेटा। प्लीज़, बस एक बार।’ शाहरुख खान को अपने पिता की आवाज़ का लहजा पसंद नहीं आया। बूढ़ा आदमी सख्त, अनुशासनप्रिय और अच्छा इंसान था, लेकिन वह गिड़गिड़ाने वाला नहीं था। शाहरुख खान ने अपने पिता को कभी ऐसा करते नहीं देखा था। पूरी ज़िंदगी में एक बार भी नहीं। यह पहली बार था। शाहरुख खान को अपने पिता का किसी भी बात के लिए गिड़गिड़ाना पसंद नहीं था।
‘पापा! मैं वादा करता हूँ। ठीक है? अब आप खुश हैं?’
जगन्नाथ ने अपने बेटे को गुस्से भरी नजरों से देखा।

XXX

उस रात शाहरुख खान मनोरमा होटल के बार में बैठे थे। उनके दोस्तों का समूह वहां मौजूद नहीं था, सिवाय वलनेनी के।
‘साथी... भूल जाओ यार। तुम्हारे पिता सही कह रहे हैं। इसे मुझ पर छोड़ दो। मैं गुडेम को परेशान करने वाली हर चीज को किसी न किसी तरह खत्म कर दूंगा।’
शाहरुख खान ने अपना बैग ज़मीन से उठाया। उन्होंने उसमें से एक उपकरण निकाला। यह काले रंग का था, जिसका हैंडल समुराई तलवार की तरह लंबा था, और उस पर लगभग पाँच फीट लंबे तीन स्टील के एंटीना लगे थे जो देखने में छोटे त्रिशूल जैसे लग रहे थे। शाहरुख खान ने हैंडल पर लगे एक बटन को दबाया, जिससे उपकरण से हल्की सी भिनभिनाहट की आवाज़ आई।
‘यह सीएसआईआर द्वारा विकसित चुंबकीय ऊर्जा डिटेक्टर का एक प्रोटोटाइप है। यह आम धारणा है कि भूत-प्रेत जब मनुष्यों की दुनिया में आते हैं तो विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं। यह उपकरण इन क्षेत्रों का पता लगाने में सक्षम होना चाहिए। अब तक, इसने कभी काम नहीं किया है, यानी इसने केवल सामान्य विद्युत और चुंबकीय क्षेत्रों का ही पता लगाया है। हमने जितने भी क्षेत्रों का पता लगाया, उन सभी की व्याख्या करने में सक्षम रहे। मैं बस इतना चाहता हूं कि इस उपकरण का उपयोग स्मारक स्थल पर किया जाए। मुझे इसे ठीक तीन मिनट के लिए जमीन में गाड़ना होगा और हमारा काम हो जाएगा। वालू, तुम ही एकमात्र व्यक्ति हो जो मेरी मदद कर सकते हो।’
वालनेनी ने प्रोटोटाइप को इस तरह घूरकर देखा मानो वह कोई सामूहिक विनाश का हथियार हो।
‘तुम इसे अपने साथ क्यों ले जा रहे हो? तुम छुट्टी पर हो।’
शाहरुख खान ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं इसे अपने साथ हर जगह ले जाता हूँ। यह मेरे सामान का हिस्सा है। क्या पता कब कोई मददगार भूत सामने आ जाए। खैर, क्या आप मुझे गुडेम तक ले जा सकते हैं?'
'मुझे कोई आपत्ति नहीं है,' वलानेनी ने घबराते हुए कहा। 'आप कब जाना चाहते हैं?'
‘अभी एक पल भी गंवाने का समय नहीं है। मैं परसों दिल्ली के लिए रवाना हो रही हूँ और मुझे रीडिंग की ज़रूरत है। पिताजी नहीं चाहते कि मैं ये रीडिंग करूँ। असल में, उन्हें पता ही नहीं कि मैं घर से बाहर हूँ।’

वलानेनी ने कुछ नहीं कहा। वह बस उठे और बार से बाहर निकल गए। ड्रिंक्स का बिल चुकाने के बाद, शाहरुख खान अपने उस अनोखे दोस्त के पीछे-पीछे चल दिए। उन्होंने देखा कि वलानेनी सड़क पर अपनी 500cc एनफील्ड थंडरबर्ड मोटरसाइकिल पर उनका इंतज़ार कर रहे थे। मोटरसाइकिल गहरे रंग में चमक रही थी। शाहरुख खान बाइक के पीछे बैठ गए।

‘क्या आपको पता है कि अगर कोई हमें गुडेम में पकड़ ले तो क्या होगा?’

मुझे पूरा यकीन है कि आप मुझे बता देंगे।

'वे लोग काफी हिंसक हैं,' वालनेनी ने सोचा।

‘हाँ, मैं कराटे में येलो बेल्ट हूँ, यार। मैं अपना बचाव खुद कर सकता हूँ। क्या तुम डर रहे हो?’

‘मैं इन लोगों से इतनी बार लड़ चुका हूं कि अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब मैं इन्हें देखता हूं तो सबसे पहले यही करता हूं कि इनकी जमकर पिटाई शुरू कर देता हूं।’

शाहरुख खान ने सिर हिलाते हुए कहा, 'बहुत बढ़िया।'

लेकिन सावधान रहना। वे खतरनाक हैं। वे तुम्हें जान से मारने में जरा भी संकोच नहीं करेंगे।

शाहरुख ने गहरी सांस ली। उसने ऐसे लोगों के बारे में सुना था। कठोर, खूंखार, पल भर में बेरहमी से लड़ने को तैयार। लेकिन उसने अपनी जिंदगी में कभी ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं देखा था। अब तक तो नहीं।

उस अमावस्या की रात में उन्हें गुडेम पहुँचने में दो घंटे लग गए। सड़क के लंबे-लंबे रास्तों पर मोटरसाइकिल की एकमात्र हेडलाइट ही रोशनी का एकमात्र स्रोत थी। रात बहुत ठंडी थी, जिसका शाहरुख खान ने गहरे रंग की सूती टी-शर्ट और बरमूडा शॉर्ट्स पहनते समय बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया था।

जब वे गुडेम पहुंचे, तो पूरा गांव अंधेरे में डूबा हुआ था। सड़कों पर लगी बत्तियां नहीं जल रही थीं।

'देखो, यहां रोशनी नहीं है, ये यहां काम ही नहीं करतीं,' वालनेनी ने खुलासा किया।

'स्मारक स्थल कितनी दूर है?' शाहरुख खान ने पूछा।

‘दस मिनट। यह राजमार्ग पर है। वहां से आधा किलोमीटर दूर किला है। मज़े की बात यह है कि किले में बत्तियाँ जलती हैं। उनके पास जनरेटर वगैरह हैं। आप देखेंगे कि वहाँ कोई दीवार नहीं है। ग्रामीण किले में जा सकते हैं।’

'इसलिए?'

'पता नहीं, यह अजीब लगता है कि इस दुनिया में बिना दीवारों वाला एक किला भी है। खैर, हम यहाँ हैं।'

'खैर, बाइक अभी तक बंद नहीं हुई है, यह राहत की बात है,' एसआरके ने कहा।

बाइक रुक गई और अचानक उसमें से सूखी सी आवाज आई। वलानेनी ने तीखे लहजे में कहा, 'तुम्हारी जुबान बहुत मीठी है। अच्छा ही हुआ, हमें यहां से पैदल ही जाना होगा वरना वे हमें सुन लेंगे।'

'क्या आपको यकीन है कि हमारा ईंधन खत्म नहीं हुआ है?' शाहरुख खान ने पूछा।

वलनेनी ने बाइक को झटका दिया। एसआरके को टैंक के अंदर ईंधन के छलकने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने और कुछ नहीं कहा। वह जगह उन्हें डरावनी लगने लगी थी।

सड़क किनारे झाड़ियों में मोटरसाइकिल छिपाने के बाद, वे सड़क से सटे एक संकरे रास्ते पर पैदल चल पड़े। कुछ ही देर में वे सूर्य स्मारक परिसर के बाहर पहुँच गए। यह एक विशाल भूभाग था, लगभग क्रिकेट मैदान से दोगुना बड़ा। इसके चारों ओर बीस फुट ऊँची तार की जालीदार बाड़ लगी हुई थी। बीच में एक गोथिक शैली की इमारत थी।

उस जगह में कुछ भी अशुभ नहीं था, सिवाय इसके कि वह जगह अजीब सी डरावनी थी, खासकर उन परिस्थितियों को देखते हुए जिनमें वे थे। साथ ही, एक खौफ का एहसास भी था। पेट में एक खालीपन सा था, जैसे कुछ भयानक होने वाला हो। शाहरुख खान को ऐसा लग रहा था कि कोई उन्हें देख रहा है। शायद कोई शिकारी। जैसे शेर या तेंदुआ।

गुडेम के बारे में कुछ तो गड़बड़ थी। आखिर क्या हो सकता है? एक अज्ञात, बेनाम उपस्थिति जिसने उसके भीतर तक गहरी हलचल मचा दी थी और उसके मस्तिष्क के सबसे आदिम भाग में खतरे के संकेत जगा दिए थे। शायद यही वह घटना थी। मानव इतिहास में वैज्ञानिक रूप से सिद्ध पहला अलौकिक संपर्क हमेशा के लिए उसकी खोज बन गया।

वैज्ञानिक ने अपना चुंबकीय क्षेत्र संवेदक निकाला और उसे चालू किया। बार में सुनाई देने वाली धीमी सी गुनगुनाहट के बजाय, उपकरण से एक भयानक चीख निकली, इतनी तेज़ कि दोस्त लगभग डर के मारे उछल पड़े। शाहरुख खान ने तुरंत संवेदक बंद कर दिया। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

‘वहाँ कौन है? अरे, वह कौन है?’ उनके बाईं ओर से कहीं से एक तेज़ आवाज़ आई।

'भागो,' वालनेनी ने कहा।

उसने अपनी ही सलाह मानी और हिरण की तरह उसी रास्ते वापस भाग गया जहाँ से वे आए थे। "गांव वालों की पिटाई करने का तो कोई फायदा ही नहीं हुआ," एसआरके ने मन ही मन सोचा और अपने दोस्त के पीछे चल पड़ा।

उनकी उड़ान अल्पकालिक रही।

आग की मशालें लिए हुए आदमी चारों दिशाओं से उनकी ओर बढ़े और उन्हें घेर लिया। शाहरुख खान ने कुल आठ आदमियों को गिना। वे सभी बैलों की तरह हट्टे-कट्टे थे। मजबूत, तगड़े, बिना दाढ़ी वाले चेहरे उन दोनों को बेरहमी से घूर रहे थे। आग की रोशनी ने उनके चेहरों पर और भी गहरी छाया डाल दी थी।

‘मैं... मैं वलानेनी हूँ,’ उस युवक ने दबी आवाज़ में अपना परिचय दिया। उसकी हमेशा की चहल-पहल और अकड़ गायब थी।

‘तुम फिर आ गए। क्या तुम्हारा मन नहीं भरा? अगर तुम्हारे दादाजी वो नहीं होते जो वो थे, तो तुम अब तक मर चुके होते,’ गांव वालों में से एक ने वलानेनी पर थूकते हुए कहा।

दूसरे आदमी ने पूछा, 'दूसरा कौन है, वह तो नया लग रहा है?'

वालनेनी ने घबराहट में अपने पसीने से तर हथेलियों को अपनी पैंट पर पोंछा।

‘उसे कुछ नहीं पता। मैं उसे यहाँ स्मारक स्थल दिखाने के लिए लाया हूँ। कृपया...उसे चोट मत पहुँचाओ...उसकी शादी होने वाली है।’

शाहरुख खान ने गला साफ किया। ‘देखो, हमने कुछ गलत नहीं किया। हमने बस…’

‘चुप रहो,’ उस आदमी ने गुर्राते हुए कहा। एक भूखे शेर की तरह। वह किसी भी तरह की दखलअंदाजी बर्दाश्त नहीं करता था। ‘तुम यहाँ पहली बार आए हो, इसलिए अभी हम तुम्हें छोड़ रहे हैं। अगर हमने तुम्हें या इस उपद्रवी को यहाँ दोबारा देखा, तो तुम यहीं मर जाओगे। समझे?’

‘तुम बात नहीं कर सकते…’

‘समझ में आया ना, छोटे बदमाश?’ यह बात एक हट्टे-कट्टे आदमी ने गुस्से से भरी आँखों से कही। वह लंबे-चौड़े वैज्ञानिक से भी कहीं ज़्यादा लंबा था।

‘जी सर, मैं समझ गया,’ एसआरके ने कहा।

'मेरे मन बदलने से पहले ही यहाँ से चले जाओ।'

अध्याय 6

वैलानेनी ने अपना गला साफ किया, यह पहली आवाज थी जो उसने गुडेम गांव से लगभग एक घंटे पहले भागने के बाद निकाली थी।

‘वो चीज इतनी जोर से क्यों चीखी? उसमें क्या खराबी थी?’

“खैर,” एसआरके ने धीमी आवाज़ में कहा, “जब यह किसी ऐसे चुंबकीय या विद्युत क्षेत्र के संपर्क में आता है जिसे हम समझा नहीं सकते, तो इसका यही हाल होता है। शायद यह पहली बार है जब इस चीज़ ने वास्तव में अपना काम किया है। जहाँ तक मैं समझ पा रहा हूँ, रीडिंग उम्मीद से कहीं ज़्यादा हैं।”

वलानेनी ने घबराकर पूछा, 'यह अच्छा है या बुरा?'

मुझे नहीं पता। यह अब तक मेरे जीवन में घटी सबसे महत्वपूर्ण घटना है।

‘क्या यह सीजन 2 से भी बड़ा है?’

'हां, बहुत बड़ा।'

'तो फिर आप इस प्रक्रिया को पूरा कीजिए और मुझे उससे शादी करने दीजिए,' वलानेनी ने कहा।

'क्या?'

वह जोर से हंस पड़ा। 'हे भगवान साथी, मैं तुम्हारे चेहरे के हावभाव की कल्पना ही कर सकता हूँ।'

‘क्या यह मजाक था? यार, यह तो बहुत ही घटिया है!’

हंसी जितनी अचानक शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक बंद भी हो गई।

'सच में, आज रात के बाद तो इसे भूल ही जाओ। तुम इन लोगों को जानते भी नहीं। ये जानवरों से भी बदतर हैं। तुम अपने परीक्षा परिणाम ले लो, पदोन्नति पा लो, लेकिन फिर कभी वहाँ वापस मत जाना। यह खतरनाक है,' वलानेनी ने चेतावनी दी।

शाहरुख खान ने कुछ नहीं कहा। वो पुराने दिनों की तरह घर में दाखिल हुए। दीवार फांदकर बाथरूम की खिड़की खोली और अंदर चले गए। दीवार तक तो वे पहुँच गए, लेकिन खिड़की ने उन्हें एहसास दिलाया कि वो दुनिया से कितने कटे हुए हैं। अपने कमरे में वापस आकर शाहरुख खान ने लैपटॉप चालू किया और अपने बैग से यूएसबी तार निकाला। उन्होंने तार का एक सिरा लैपटॉप से और दूसरा डिवाइस से जोड़ा। देखते ही देखते एक ऐप खुल गया और डिवाइस में मौजूद जानकारी डाउनलोड होने लगी।

डाउनलोडिंग चालू रहने के दौरान, एसआरके ने शीला पीतांबर को फोन किया।

उन्होंने कहा, 'शुभ संध्या महोदया।'

'कितने बजे हैं?' फोन के दूसरी तरफ से एक मोहक आवाज ने उससे पूछा।

'मैडम, अभी सुबह के दो बज रहे हैं।'

एसआरके को एक अजीब सी आवाज सुनाई दी, जैसे उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही हो।

‘मुझे बताओ कि तुमने अपनी छुट्टी बढ़ाने के लिए फोन नहीं किया है।’

नहीं महोदया, मैं अभी आपको कुछ डेटा भेज रहा हूँ। कृपया इसकी जाँच करें और मुझे बताएं। हो सकता है मुझे इसमें कुछ महत्वपूर्ण जानकारी मिल गई हो।
दूसरी तरफ से कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।
मुझे इसके बारे में बताओ।
शाहरुख ने अपने बॉस को सब कुछ बता दिया।
बिना किसी रुकावट के उसकी बात सुनने के बाद, शीला ने उससे पूछा कि क्या वह ठीक है।
'मैं ठीक हूँ, मैडम।'
"अच्छा, इसे ऐसे ही रहने दो। वापस मत जाओ। चलो सबूतों की जांच करते हैं। अगर उनमें कुछ भी काम की बात हुई, तो हम उस पर चर्चा करेंगे। दोहराता हूँ, वहाँ दोबारा मत जाना। समझे साथी?"
'जी मैडम, मैं करता हूँ।'
फोन कट गया। उसने सगाई की बधाई तक नहीं दी और न ही उसकी मंगेतर के बारे में पूछा। खैर, कोई बात नहीं। कभी-कभी बॉस की बात माननी पड़ती है और कभी-कभी नहीं। शाहरुख खान ने सोचा कि यह उन मौकों में से एक है जब वह उसे नजरअंदाज कर सकते हैं। वह इतनी दूर थी कि कुछ कर पाना मुश्किल था।
अगली रात, वह फिर से गुडेम जाने वाली सड़क पर थे, इस बार अकेले, पीठ पर बैग लटकाए। वह किराए की मोटरसाइकिल, बजाज पल्सर, 150 सीसी पर थे। इस बार शाहरुख खान ज़्यादा सतर्क थे। उन्होंने गांव से काफी आगे बाइक से उतरकर उसे लोगों की नज़रों से ओझल कर दिया और लगभग पूरे अंधेरे में स्मारक स्थल की ओर चलना शुरू कर दिया।
रात की चहल-पहल, ऊपर चमगादड़ों की फड़फड़ाहट और कभी-कभार उल्लू की आवाज के अलावा, रात एकदम सन्नाटे में डूबी थी। एक बार फिर, अनहोनी का डर उसे सता रहा था। एक सहज चेतावनी उसे आगे आने वाले खतरे का आभास दे रही थी। मानव जाति में लंबे समय से सुप्त पड़ी छठी इंद्री बेकाबू हो रही थी। शाहरुख खान का मन बाइक की ओर लौटने का कर रहा था। लेकिन उनकी हर अंतरात्मा उन्हें एलुरु वापस जाने के लिए कह रही थी।
वह आगे बढ़ता रहा।
वह चुपचाप मैदान की चारदीवारी फांदकर अंदर घुस गया और ज़मीन पर हल्के कदमों से उतरा। कुछ देर तक घुटनों के बल बैठा रहा और पहरेदारों के आने के संकेतों का इंतज़ार करता रहा। बीस सेकंड के इंतज़ार के बाद, वह तेज़ी से मैदान पार कर गया; उसके जूतों की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ नहीं थी, जो नरम ज़मीन पर घिस रहे थे। वह हॉल में पहुँचा, जो एक विशाल इमारत थी, किसी भव्य पुराने गिरजाघर जैसी।
उसने दरवाजा खोलकर देखा तो वो खुला हुआ था। अगर कोई राक्षस आसपास मंडरा रहा था, तो कम से कम गांव वाले दरवाजे तो बंद कर ही सकते थे, उसने सोचा। दूसरी तरफ, दरवाजा चाहे कितना भी मजबूत

क्यों न हो, राक्षस को रोक नहीं सकता। इसलिए खुला दरवाजा सिर्फ यही दर्शाता था कि गांव वालों को हॉल से डरने की कोई जरूरत नहीं थी। अगर ऐसा था, तो उस यंत्र से इतनी तेज आवाज क्यों आई? क्या कोई खराबी थी? क्या सब कुछ समय की बर्बादी थी? खैर, शाहरुख खान ने सोचा, उसे जल्द ही पता चल जाएगा। वह चुपके से इमारत में घुस गया। उसने अपने बैग से टॉर्च निकाली और उसे जलाया। लगभग तुरंत ही, उसने टॉर्च की रोशनी से थोड़ा आगे, आसपास कुछ हलचल देखी। शाहरुख खान ने टॉर्च घुमाई और पाया... कुछ नहीं। उसे अंधेरे में किसी चीज के सरसराने की आवाज सुनाई दी। एक हल्की सी सरसराहट। अंधेरा इतना घना था कि वह देख ही नहीं पा रहा था कि वह क्या है। शायद कोई नाले का चूहा होगा। बस इतना ही।

उसने घबराकर निगल लिया। उस जगह पर एक अजीब सी दुर्गंध फैली हुई थी। जैसे गंधक जल रहा हो। जैसे नरक का द्वार हो। बस एक राक्षस की कमी थी जो द्वार की रखवाली कर रहा हो।

उसने टॉर्च घुमाकर चारों ओर देखा। हॉल एक विशाल इमारत थी जिसकी छत टाइलों से ढकी थी। दोनों ओर लंबी खिड़कियाँ थीं जो लगभग छत तक पहुँचती थीं। हवा के आने-जाने और रोशनी के कारण हॉल दिन के समय रोशन और हवादार रहता था। हॉल के बाईं ओर एक लंबी मेज थी और दाईं ओर कुछ पुरानी, धूल से सनी लकड़ी की कुर्सियाँ दीवार से सटाकर रखी थीं। वहाँ दूसरे छोर पर एक दरवाजे के अलावा और कुछ नहीं था, जो शायद किसी दूसरे कमरे में जाता था।

वह दरवाजे की ओर बढ़ा, और साथ ही अपना उपकरण भी निकाल लिया। उसने हलचल को देखा नहीं, बल्कि महसूस किया। जैसे शांत जल में कोई लहर उठती है। उसकी टॉर्च की रोशनी के ठीक परे, रात से भी ज़्यादा काली एक लकीर दिखाई दी।

उसकी पीठ में तेज दर्द हो रहा था।

शाहरुख खान चीखते हुए लड़खड़ा गए। उनकी कमीज बुरी तरह फट गई थी और उनकी पीठ से मांस के टुकड़े ऐसे जमीन पर गिर रहे थे मानो किसी चाकू से काटे गए हों। वे लड़खड़ाते हुए मैदान की ओर जाने वाले दरवाजे की तरफ भागे।

धड़ाम!

शाहरुख खान जमीन पर गिर पड़े।

उसके सिर का दाहिना हिस्सा बुरी तरह धंसा हुआ था, दिमाग के कुछ हिस्से ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। कोई चीज़ मृत वैज्ञानिक पर मंडरा रही थी, मानो जीवन के संकेतों की प्रतीक्षा कर रही हो। कुछ देर बाद हल्की चाँदनी दालान में छनकर आई। चाँदनी में एक काली परछाईं चमकी और शरीर पर छा गई। शाहरुख खान गायब हो गए, कपड़े, त्वचा, खून और हड्डियाँ सब कुछ। यहाँ तक कि उनका विद्युत चुम्बकीय मापक यंत्र भी गायब था।

जैसे कि वह कभी वहां था ही नहीं।

खंड-बी

शीला

अध्याय 7

प्रार्थना की अलमारी को दो कीलों से दीवार पर टांगा गया था। उसमें देवी-देवताओं के चित्रों के बजाय मृत लोगों की तस्वीरें थीं। ठीक तीन तस्वीरें।

उनमें से एक शीला के पति आलोक पीतांबर थे, जिनका निधन 25 मई, 2005 को हो गया था।

अन्य दो उनके माता-पिता, रूपेंद्र भाई (उनके पिता) और कमला बहन (उनकी माता), दोनों का निधन 26 नवंबर, 2008 को हो गया था।

ये तीन लोग शीला के लिए पूरी दुनिया थे, जिन्हें बेरहमी से उससे छीन लिया गया। एक को कुदरत के प्रकोप ने और बाकी दो को पागलों की मनमानी हरकतों ने। हर दिन वह एक मिनट के लिए चुपचाप उनसे बातें करती थी।

दिन में उस एक पल के लिए, शीला का कवच उतर जाता था और दर्द उस पर हावी हो जाता था। मानो वह जलती हुई चिता में कदम रख रही हो। फिर कवच वापस आ जाता था, अदृश्य, ठंडा, दृढ़, उसे आग से बचाता हुआ।

वह गुड़गांव में रहती थी, जो नगर परिषद से कम से कम 20 किलोमीटर दूर था, और वह हर दिन काम पर जाने के लिए अपनी सुजुकी स्विफ्ट हैचबैक कार चलाती थी। उसकी सुजुकी स्विफ्ट हैचबैक लाल और सफेद रंग की सीएसआईआर इमारत की पार्किंग में आकर रुकी। शीला नगर परिषद में काम करती थी, लेकिन उसकी टीम को एक परियोजना के लिए रॉ कार्यालय में तैनात किया गया था, जो उसे कभी-कभी दिलचस्प लगती थी और कभी-कभी परेशान करने वाली। हालांकि, उस सोमवार की सुबह उसके दिमाग में वह परियोजना नहीं थी।

शीला को शाहरुख खान से एक हफ्ते से ज़्यादा समय से कोई खबर नहीं मिली थी। उन्हें तो ड्यूटी पर आ जाना चाहिए था। उनके मोबाइल पर बार-बार कॉल करने पर भी वही नतीजा निकला - नेटवर्क कवरेज एरिया से बाहर। इससे भी बुरी बात यह थी कि उनके माता-पिता, जो एलुरु कस्बे के जाने-माने निवासी हैं, घर पर नहीं थे। बताया जा रहा था कि घर में ताला लगा हुआ था और वे बिना किसी सूचना के कहीं चले गए थे। शीला को लगा कि शायद इसका संबंध शाहरुख खान द्वारा उसे भेजी गई जानकारी से है।

या तो उसका चुंबकीय सेंसर पूरी तरह से खराब हो गया था या फिर विद्युत चुम्बकीय रीडिंग असाधारण थीं। वह उस दिन एक और परीक्षण के परिणाम का इंतजार कर रही थी, जो उनका बीसवां प्रयास था, और सभी परीक्षणों में एक ही रीडिंग आ रही थी। अगर सेंसर सही था, तो यही वह बिंदु था जिसे वे अलौकिक गतिविधियों की खोज में 'घटना क्षितिज' कहते थे। यह 'वापसी का कोई रास्ता नहीं' वाला बिंदु था।

सामान्य सापेक्षता के सिद्धांतों में, घटना क्षितिज अंतरिक्ष-समय में एक सीमा होती है। जैसे कोई दीवार। इसके भीतर घटित होने वाली घटनाएं उस दीवार के बाहर मौजूद व्यक्ति को प्रभावित नहीं कर सकतीं। क्या शाहरुख खान उस दीवार के भीतर थे? क्या इसका उन पर कोई प्रभाव पड़ा था? किस तरह से? क्या

यही कारण था कि वह शीला के फोन का जवाब नहीं दे रहे थे? क्या उन्हें चोट लगी थी या... शायद उनकी मृत्यु हो गई थी? जितना अधिक वह इसके बारे में सोचती, शीला को उतना ही अधिक चिंता होती जाती।
उस अध्ययन से जो शक्ति का संकेत मिल रहा था, वह अविश्वसनीय था, यह कहना भी कम होगा। अगर यह सच था, तो या तो कुछ ऐसा था जो दुनिया को दो हिस्सों में बांटने के लिए तैयार था, या अगर इसका सही इस्तेमाल किया जाए, तो भारत महाशक्ति बन जाएगा। दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश।
अक्षरशः।
जब शीला लिफ्ट से बाहर निकलीं तो पांचवीं मंजिल पर जानवी, शीतल और प्रियंका उनका इंतजार कर रही थीं। उनके बीच कोई फालतू बातचीत नहीं हुई। वे गंभीर चेहरे बनाकर खड़ी रहीं, उन्हें सुप्रभात कहा और बदले में उन्हें एक संक्षिप्त अभिवादन मिला।
यह परिषद किसी आम केंद्रीय सरकारी उद्यम जैसी बिल्कुल नहीं थी। वास्तव में, यह एक उद्यम भी नहीं थी, बल्कि लगभग एक कॉलेज परिसर जैसी थी। उनके कुल शोधों में से केवल पाँच प्रतिशत ही परिणाम देते थे, और वह भी आंकड़ों में थोड़ा-बहुत हेरफेर करने पर, जो उनके काम को जारी रखने के लिए पर्याप्त था। चारों सदस्य पाँचवीं मंजिल के एक हिस्से में बने अपने कार्यालय में दाखिल हुए। रक्षा विभाग के साथ उनके आधिकारिक संबंधों के कारण उन्हें गोपनीयता, रेटिना स्कैन वाले दरवाज़ों पर ताले, जासूसी कैमरे आदि जैसी विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं।
‘क्या परीक्षा परिणाम आ गए हैं?’ शीला ने धीरे से पूछा। उसकी मोहक, भारी आवाज़ ने उसके प्रति व्याप्त रहस्य और आकर्षण को और भी बढ़ा दिया।
‘जी मैम, यह आपकी मेज पर है,’ जानवी ने कहा। उसे कुछ समय पहले ही पता चल गया था कि शीला से निपटने का सबसे अच्छा तरीका सीधा और स्पष्ट जवाब देना है। शीला को अतिरिक्त बातें और संदर्भ पसंद नहीं थे। उदाहरण के लिए, अगर जानवी ने यह कह दिया होता कि परीक्षा के परिणाम चौंका देने वाले थे, तो शीला उसे तीखी नज़र से घूरकर या उंगली के इशारे से चुप करा देती।
मैं उन्हें देख लूंगा। क्या मेजर कांत से शाहरुख खान के बारे में कोई खबर मिली है?
'नहीं महोदया, मेजर अभी तक नहीं आए हैं।'
'मेरे केबिन में पंद्रह मिनट।'
'जी मैडम,' उन तीनों ने एक साथ कहा।
शीला का पांच फुट नौ इंच लंबा, लचीला शरीर डेस्क पर सरका, वह बड़े सलीके से अपनी कुर्सी पर बैठी और अपने चश्मे को अपनी नुकीली, थोड़ी सी बाज जैसी नाक पर टिका लिया। उसकी आँखें मुख्य रूप से भूरी थीं, फिर भी उनमें कहीं न कहीं बैंगनी रंग की झलक थी, एक गहरा रंग जो चमक रहा था। उसने अपने भरे हुए होंठों को सिकोड़ा और अपनी उंगलियों के सिरों को अपनी ठोड़ी पर रखा, जैसा कि वह अक्सर किसी विषय पर ध्यान केंद्रित करने से पहले करती थी, और वैज्ञानिक ने अपनी डेस्क पर रखी एक पतली स्टेपल की हुई रिपोर्ट को पढ़ना शुरू कर दिया।

रिपोर्ट बिल्कुल नई छपी थी। इसमें कोई शीर्षक, तारीख, संदर्भ विवरण या हस्ताक्षर नहीं थे। इसलिए, इसे आधिकारिक रिपोर्ट नहीं माना जा सकता था। इसके बजाय, वैज्ञानिकों ने इसे केवल शोध या संदर्भ नोट्स के रूप में प्रस्तुत किया। इस तरह उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें शीला के बॉस, रक्षा मंत्री, या उनके सैन्य समकक्ष, मेजर किशन कांत, जो वैज्ञानिकों के साथ कार्यस्थल साझा करते थे, को इसका खुलासा करने की आवश्यकता नहीं थी।

सीएसआईआर का अधिकांश कार्य सामाजिक मानकों में सुधार लाने, पर्यावरणीय चिंताओं को दूर करने और औद्योगिक विकास के असंतुलन के आर्थिक परिणामों से निपटने के लिए नई तकनीकों के नवाचार पर केंद्रित था। हालांकि, दीर्घकालिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, निधि का एक बड़ा हिस्सा क्वांटम विज्ञान, भौतिकी और अन्य वैज्ञानिक कार्यों पर शोध में लगाया गया।

क्वांटम भौतिकी में शीला के शोध और उनकी पीएचडी ने सैन्य प्रतिष्ठान का ध्यान आकर्षित किया था। रक्षा विभाग ने परमाणु की कार्यप्रणाली और भविष्य में हथियार निर्माण में इसकी संभावित भूमिका को समझने के लिए काफी धन का निवेश किया था। मिसाइल हमलों को रोकने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित लेजर ऊर्जा और भारतीय नौसेना के लिए दुश्मन के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को जाम करने के लिए माइक्रोवेव हथियारों पर उन्नत शोध, जो 'स्टार वार्स' शैली के भविष्यवादी गोला-बारूद थे, सीएसआईआर की सबसे अधिक निवेशित परियोजनाओं में से एक थी।

हालांकि, उसके अध्ययन समूह में अलौकिक व्यवहार और तत्वमीमांसा की भूमिका और सैन्य रणनीतियों में इसका स्थान शीला के ज्ञान और समझ से परे था।

शीला को बस इतना पता था कि गृह मंत्री ऐसा चाहते थे। वह इस बात से काफी खुश थी कि शाहरुख खान को इसमें दिलचस्पी थी और वे कथित अलौकिक गतिविधियों की जांच के लिए देश भर में यात्रा करने के लिए पूरी तरह से तैयार थे।

शीला रिपोर्ट लिख ही रही थी कि तभी दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। उसकी टीम के तीनों सदस्य एक तरफ खड़े थे और मेजर कांट छोटे से दरवाजे से अंदर आ गए।

मेजर बेहद आकर्षक व्यक्ति थे। उनकी लंबाई छह फीट से कुछ अधिक थी, उनके चौड़े और स्पष्ट रूप से मांसल कंधे उनकी खाकी कोट से झलक रहे थे। उनके पैर लंबे थे और उनका चेहरा चौकोर जबड़े, संकीर्ण आँखों और एक नुकीली नाक से भरा था, जिसकी तीक्ष्णता उनके सक्रिय सैन्य जीवन के दौरान कुछ कम हो गई थी। उनके बाएं हाथ पर कंधे से लेकर तर्जनी तक एक निशान था, और एक पतला निशान उनकी बाईं भौं के ठीक ऊपर था। उन्होंने शीला की ओर पश्चाताप भरी मुस्कान फेंकी। शीला ने पलक झपकते ही इन संकेतों को समझ लिया।

‘यह क्या है?’ उसने पूछा।

‘यह आपके सहकर्मी सत्यनारायण के बारे में है...माफ़ कीजिए, मैं लाख कोशिश करने पर भी उनका पूरा नाम नहीं बोल पा रहा हूँ। उनकी मोटरसाइकिल मिल गई है। कम से कम उसके कुछ हिस्से तो मिल ही गए

हैं। उसे अलग-अलग हिस्सों में तोड़कर आंध्र प्रदेश के गुडेम गाँव के आसपास के इलाकों में दफना दिया गया था।'

'उसका क्या होगा, धिक्कार है?' शीला गुस्से से बोली।

पुलिस ग्रामीणों से पूछताछ कर रही है, जिनके बारे में उनका कहना है कि वे उपद्रवी किस्म के लोग हैं। उस इलाके में आम तौर पर लोग उन ग्रामीणों के पास जाने से कतराते हैं। वे आपस में घनिष्ठ संबंध रखते हैं और बेहद सुरक्षात्मक हैं। अनौपचारिक रूप से, पुलिस को पूरा यकीन है कि उसकी हत्या ग्रामीणों ने ही की है। इसके अलावा भी कई अफवाहें हैं।

'हत्या? अफवाहें? भगवान के लिए, क्या?'

ऐसा लगता है कि यहाँ कोई स्थानीय लोककथा प्रचलित है और गाँव वाले इसे लेकर काफी सतर्क हैं। कोई स्थानीय देवता या देवी! अभी तक इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। पुलिस का मानना है कि सत्यनारायण की हत्या किसी अनुष्ठानिक हत्या का हिस्सा थी।

'क्या यह कोई रस्म के तहत की गई हत्या है? मेजर, हमें इस मामले की तह तक जाना होगा, वह हमारा ही एक साथी है,' शीला ने धीमी आवाज़ में कहा। उसकी गर्दन की नसें बेहद आकर्षक लग रही थीं। इससे उसके चारों ओर का मोहक माहौल और भी गहरा हो गया।

'मुझे शीला के मामले में कुछ सुराग चाहिए। अगर मेरे पास सत्यनारायण द्वारा आपको भेजी गई रिपोर्ट की एक प्रति होती, तो मैं मामले को आगे बढ़ा सकता था और जांच अपने हाथ में ले सकता था।'

'मेजर कांट, मुझे दो घंटे का समय दीजिए, शायद मेरे पास आपके लिए कुछ खास हो,' शीला ने धीरे से कहा, उसका ध्यान वापस रिपोर्ट पर चला गया था। 'लड़कियों, अगर आप चाहें तो अंदर आ सकती हैं।'

यह बर्खास्तगी भी थी और आदेश भी। उसने मेजर के चेहरे पर दिख रहे घोर आक्रोश को देखने की ज़हमत नहीं उठाई, जब वह उसके दरवाजे से पीछे हट रहा था। तीनों लड़कियाँ शालीनता से अंदर आईं और उस आकर्षक सैनिक को सहानुभूति भरी नज़रों से देखने लगीं।

ठीक एक घंटे पचपन मिनट बाद शीला ने अपना फोन उठाया। रिपोर्ट के निहितार्थों को समझने में उसे केवल पंद्रह मिनट लगे और बाकी समय उसने इस बात पर रणनीति बनाने में बिताया कि गुडेम में हुई घटनाओं की व्यापक जांच शुरू करवाने के लिए वह कितनी जानकारी साझा करना चाहती है। जांच को आगे बढ़ाने के लिए उनकी आवश्यकताएं काफी स्पष्ट थीं। बस, उसे रक्षा मंत्रालय को अपने साथ काम करने के लिए राजी करने के लिए सही बातें कहनी थीं।

'फिलहाल साथी की रिपोर्ट को सच मान लेते हैं। इसके अलावा और कोई ठोस सबूत नहीं है। हमें इसे अगले स्तर पर ले जाने के लिए क्या करना होगा?' शीला ने पूछा।

प्रियंका ने कहा, 'हमें सैटेलाइट इमेज चाहिए, मैडम। सिर्फ इतना ही नहीं, हमें सैटेलाइट पर डिटेक्शन ड्राइव अपलोड करने होंगे ताकि हम जमीन के नीचे क्या है, देख सकें। हमें बुनियादी ढांचा चाहिए, जमीनी स्तर के डिटेक्टर चाहिए जो भूमिगत इन्फ्रारेड स्कैन में मदद कर सकें। इन चीजों को लगाने में पैसा और

जनशक्ति दोनों लगते हैं।' प्रियंका ने यह सब जितना हो सके स्पष्ट और सरल शब्दों में कहा। बॉस को दिखावा पसंद नहीं था।

शीला ने अपनी लंबी, स्वाभाविक रूप से सुडौल भौहों को एक इंच के अंश जितना ऊपर उठाया और उसके होंठ लगभग मुस्कान में फड़क उठे।

'यह...अच्छा है, मुझे यकीन है कि आप प्रभावित हुए होंगे। तो आपको क्या लगता है कि इसे पाने के लिए हमें क्या खुलासा करना चाहिए?' उसने पूछा।

'मैडम, अगर मैं कहूँ तो, आप उन्हें जो भी कहना पड़े कह दीजिए। शाहरुख खान की अभी-अभी सगाई हुई है, हमें उन्हें ढूंढना होगा,' शीतल ने कहा, 'और मुझे उनका दक्षिण भारतीय लहजा बहुत पसंद आया।'

'बस करो शीतल! मुझे लगता है कि भूमिगत डिटेक्टर लगाने में लगभग तीन घंटे लगेंगे और उपग्रह की स्थिति के आधार पर, अंतिम रिपोर्ट जारी करने में कुछ घंटे और लग सकते हैं। कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि इस उपकरण की पूरी क्षमता को समझने में हमें एक दिन या उससे थोड़ा अधिक समय लगेगा, बशर्ते मैं किसी राजनेता को उस विषय के बारे में समझा सकूँ जिसके बारे में उसे कोई जानकारी न हो।'

'जी मैडम, आप यह कैसे करेंगी?'

'मेरी कुछ सोच रहेगी।'

शीला ने सिर हिलाकर सहमति दी। तीनों लड़कियाँ उसके केबिन से बाहर निकल गईं। एक गहरी साँस लेकर शीला ने उत्साह से उठकर अपनी ग्रे पतलून और हल्के नीले रंग की कमीज़ को ठीक किया। कार्यालय से निकलते समय वह रक्षा मंत्रालय से फ़ोन पर बात कर रही थी। वह राजपथ, रायसीना हिल स्थित सचिवालय की ओर जा रही थी, जहाँ भारत के सबसे शक्तिशाली राजनेता स्थित थे। उसका गंतव्य सचिवालय का दक्षिणी ब्लॉक था, जहाँ प्रधानमंत्री का कार्यालय, रक्षा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के कार्यालय थे।

अध्याय 8

विनम्रता-अत्यंत।

कृतज्ञता-सदाबहार।

ये विचार शीला के मन में हर बार सचिवालय में आते ही उभरते थे। निस्वार्थ बलिदान, स्वतंत्रता का सपना, स्वशासन का विचार। कई जिंदगियां भूसे की तरह कुर्बान कर दी गईं, एक भी कमतर नहीं, ताकि भारतीय जनता खुलकर सांस ले सके।

सचिवालय, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारतीय जनता के पांच सौ वर्षों के विशाल स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीकों में से एक था। धातु और पत्थर से बनी यह विशाल इमारत वह थी जिसे हर स्वतंत्रता सेनानी चाहता था कि भारतीय लोग उस समय अपने कब्जे में लें जब देश अभी भी ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश था।

चीजें योजना के अनुरूप नहीं हुईं।

किसी देश का इतिहास असफल योजनाओं से भरा पड़ा है। शीला जानती थी कि हर प्रयोग, हर माप में कुछ न कुछ त्रुटि की गुंजाइश हमेशा रहती है, और मानव इतिहास में कभी भी कोई चीज पहली बार में ही परिपूर्ण नहीं हुई है।

इसी तरह, भारत भी अपने नेताओं के साथ प्रयोग कर रहा था। शीला ने अपने जीवन के शुरुआती दौर में ही यह समझ लिया था कि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, स्मार्ट वर्क का कोई बहाना नहीं है, और मुफ्त में कुछ नहीं मिलता। भारतीय जनता जितनी जल्दी इस बात को समझ ले और अपने राजनीतिक आकाओं से बेतुके उपहारों की अपेक्षा करना छोड़ दे, उतना ही उनके लिए बेहतर होगा।

वह परिषद की सार्वजनिक कार से बाहर निकलीं। उन्होंने बैठक समाप्त होने के बाद कार वापस बुलाने के लिए ड्राइवर का मोबाइल नंबर लिख लिया। सचिवालय में पार्किंग की जगह मिलना लगभग नामुमकिन था और उन्हें बहुत पहले ही यह एहसास हो गया था कि यह काम किसी ड्राइवर को सौंपना ही बेहतर है। सामान्य सुरक्षा जांच के बाद, वह रिसेप्शन पर खड़ी हो गईं।

उन्होंने कहा, 'कमरा नंबर 104, रक्षा मंत्री।'

रिसेप्शनिस्ट, एक बूढ़ा और अनुभवी व्यक्ति जो सेवानिवृत्ति के करीब था और शीला को पहले भी कई बार देख चुका था, ने शीला का कार्ड लिया और फोन उठाया। उसने तेज़ी से हिंदी में बात की और फिर फोन वापस रख दिया। उसने शीला को देखकर मुस्कुराया, एक सच्ची मुस्कान जिससे उसकी आँखें चमक उठीं; ठीक वैसे ही जैसे शीला के पिता तब मुस्कुराते थे जब शीला उनके गणित के समीकरणों को हल कर देती थी। शीला ने भी उदास भाव से उस व्यक्ति को देखकर मुस्कुरा दिया। रिसेप्शनिस्ट ने उसकी मुस्कान के पीछे छिपे दर्द को भांप लिया।

‘Kya baat hai beti?’ he asked.

‘Kuch nahin Chacha, thank you.’

शीला ने उस व्यक्ति द्वारा दी गई अनुमति पर्ची ले ली। सीढ़ियों की एक सीढ़ी चढ़कर, वह सीधे चौड़े बरामदे से नीचे उतरी, कमरा नंबर 104 तक पहुँचने से पहले एक बार बाईं ओर मुड़ी।

Manjulal, the personal secretary to the Defence Minister was at his desk, picking his teeth. 'Ayiyae Scientist sahiban. Minister saab aap hi ke liye ruke huey hain, sirf aapke aane ki deri hai,' said Manjulal with a broad and evidently false smile.

'श्री मंजुलल, किसी को मेरा इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। अगर मंत्री जी जाना चाहते हैं, तो मैं उन्हें नहीं रोकूंगी। मुझसे मिलने से मुझ पर कोई एहसान नहीं हो रहा है और न ही मैं अपने साथ पैसों से भरी थैलियां लाई हूं,' शीला ने झल्लाकर जवाब दिया, उसकी भूरी और बैंगनी आंखें बंदूक की तरह चमक रही थीं।

सचिवालय की बाबू संस्कृति हमेशा शीला के सबसे बुरे रूप को सामने लाती थी। ये लोग यह सोचकर जीते और मरते थे कि वे भारत की जनता पर व्यक्तिगत उपकार कर रहे हैं। आख़िरकार, यह उनका काम था।

'अरे बाप रे बाप, आपका गुस्सा फूट पड़ा है। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। ये ठीक नहीं है। सम्मान करो और सम्मान लो। आपको तमीज़ से पेश आना होगा,' मंजूलाल ने एक क्रोधित शिक्षक की तरह उंगली हिलाते हुए कहा।

'या फिर क्या?' यह एक फुसफुसाहट थी, फिर भी एक कोड़े की मार जैसी थी।

सचिव चुपचाप उसे देखता रहा। वह स्पष्ट रूप से इस तरह की तीखी प्रतिक्रियाओं के लिए तैयार नहीं था।

'मैं उनका निजी सचिव हूँ! याद रखो तुम कहाँ हो!'

'तुम सरकारी कर्मचारी नहीं हो, तुम तो राजनीतिक नियुक्त व्यक्ति हो क्योंकि तुम उनके फेंके हुए टुकड़ों को उठाने के लिए तैयार हो और क्योंकि तुमने इस पद पर रहने के लिए बहुत पैसा खर्च किया है, दोनों ही तरह से तुम बेशर्म हो। मंजूलाल जी, आपकी औकात क्या है कि आप मुझसे बात तक करें? मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, तुम्हें मेरी ज़रूरत है, यह बात एक पल के लिए भी मत भूलो। अब जल्दी करो और उन्हें बताओ कि मैं यहाँ हूँ,' उसने तीखे स्वर में कहा और एक सोफे पर बैठ गई।

शीला जानती थी कि वह उस आदमी के साथ हद से ज्यादा आक्रामक व्यवहार कर रही है, लेकिन वह खुद को रोक नहीं पा रही थी। राजनीतिक चमचों ने उसके अंदर की सबसे बुरी प्रवृत्ति को उजागर कर दिया था। गुस्से से लाल हुए उस व्यक्ति ने बैठे हुए वैज्ञानिक को कुछ देर तक घूरा, फिर अचानक मुड़कर अंदर के कमरे में चला गया। कुछ मिनट बाद वह वापस आया।

'अब तुम अंदर जा सकती हो,' उसने उसकी ओर देखते हुए कहा।

शीला खड़ी हो गई, उस आदमी से कहीं ज़्यादा लंबी। उसके संक्षिप्त निमंत्रण को बिना स्वीकार किए, वह मंत्री के कमरे में चली गई। उसका उग्र स्वभाव, उसकी हल्की चमेली की खुशबू और उसकी अपनी बेबसी ने सचिव को और भी ज़्यादा क्रोधित कर दिया। मंजुलल ने वही किया जो वह सबसे अच्छा करता था। वह कार्यालय से बाहर निकलकर कैंटीन में जाकर रियायती दरों पर मिलने वाली चाय पीने चला गया।

शीला चमड़े की सीधी पीठ वाली कुर्सी पर बैठ गई, रिपोर्ट वाला फोल्डर बड़ी मेज पर रख दिया और कमरे में चारों ओर देखने लगी। हालाँकि वह इस कमरे में कई बार आ चुकी थी, फिर भी उसे इसकी भव्यता निहारना अच्छा लगता था।

दस फुट चौड़ी फ्रेंच खिड़कियों पर गहरे लाल रंग के लहराते पर्दे लगे थे। दीवार के सामने विक्टोरियन शैली के शोकेस में मंत्री छोटूराम चौधरी द्वारा अपने लंबे राजनीतिक जीवन में प्राप्त विभिन्न प्रशस्तियाँ और सम्मान प्रदर्शित थे। वहाँ कई विश्व नेताओं के साथ उनकी तस्वीरें भी थीं। फर्नीचर विक्टोरियन शैली का था। कालीन फ़ारसी शैली के थे। एयर कंडीशनिंग सुखद थी, न ज़्यादा ठंडी। कमरे की भव्यता और गरिमा का गहरा एहसास था।

मंत्री जी दुबले-पतले और चौकोर आकार के चश्मे पहने हुए थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक थी, लेकिन वे बेहद शालीन दिखते थे। नेहरू सूट पहने हुए वे सतर्क और धैर्यवान प्रतीत हो रहे थे। वे मेज के उस पार एक रिपोर्ट में मग्न बैठे थे।

कुछ समय पहले ही छोटूराम चौधरी ने यह महसूस किया कि उनके सरल स्वभाव और सौम्य व्यवहार का सामने बैठी महिला पर ज़रा भी असर नहीं होता। उन्होंने उनसे बातचीत को यथासंभव संक्षिप्त और सटीक रखने का तरीका सीख लिया था। शीला को न तो राजनीतिक आकाओं की परवाह थी और न ही उनसे मिलने वाले किसी भी तरह के एहसान की। वह सीएसआईआर और वर्तमान में सैन्य खुफिया विभाग के लिए एक अमूल्य वैज्ञानिक थीं। छोटूराम ने गला साफ किया।

‘Tell me Sheilaji kaise aana hua?’

'शुभ प्रभात महोदय। यह रिपोर्ट हमें घटनास्थल पर मौजूद हमारे व्यक्ति से मिली है। पिछली बार जब हम मिले थे, तब मैंने आपसे कहा था कि आंध्र प्रदेश के एक छोटे से गाँव में रहस्यमय विद्युतीय या विद्युत चुम्बकीय गतिविधियों के स्पष्ट संकेत मिले हैं। यदि आपको याद हो, तो हम उस समय रिपोर्ट का अध्ययन कर रहे थे। हमारा अध्ययन अब पूरा हो चुका है।'

मंत्री जी ने पूछा, ‘आपके अध्ययनों से क्या पता चलता है?’

'रिपोर्ट से यह लगभग स्पष्ट हो जाता है कि या तो पृथ्वी में कुछ बहुत गलत हो रहा है या...हमारे नीचे कुछ और पनप रहा है,' शीला ने कहा।

‘हमारे नीचे कुछ और भी उग रहा है? आपका क्या मतलब है? कृपया स्पष्ट रूप से बताएं?’

छोटूराम ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी। जब उन्होंने अपने देहाती पहनावे को त्यागने का फैसला किया, तो उनका व्यवहार काफी रूखा और व्यावसायिक हो सकता था और उनकी अंग्रेजी स्पष्ट और सटीक थी।

'जी सर। मैं और अधिक स्पष्ट जानकारी दे सकता हूँ। रिपोर्ट में एक सीमित क्षेत्र में अत्यधिक विकिरण, गर्मी और चुंबकीय हस्तक्षेप का पता चलता है।'

उसने एक कागज़ का टुकड़ा निकाला जिस पर एक काली तस्वीर बनी हुई थी। तस्वीर मकड़ी के जाले जैसी दिख रही थी, जिसमें ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएँ नियमित अंतराल पर एक-दूसरे को काट रही थीं। जाले के केंद्र के आसपास, काली तस्वीर पर एक सफ़ेद धब्बा था, जैसे स्याही से सने कागज़ की नकारात्मक छवि हो।

“महाशय, गतिविधि का केंद्र स्पाइडर ग्राफ के मध्य में चमकीला धब्बा है। गतिविधि की तीव्रता को देखते हुए, इसके प्रभाव का दायरा बहुत बड़ा होना चाहिए था, लगभग कुछ हज़ार किलोमीटर, फिर भी यह आधा किलोमीटर भी नहीं है। यह एक ही स्थान पर केंद्रित है और एक छोटे से गाँव के नीचे ऊर्जा विकीर्ण कर रहा है। जैसा कि आप देख सकते हैं, धब्बा छवि की पहली और दूसरी सीमाओं के बीच नहीं जाता है। ऐसा लगता है जैसे ऊर्जा का स्रोत, जो भी हो, किसी तरह रुक गया है। महाराज, शक्ति बहुत अधिक है। रीडिंग बहुत ही असामान्य है। अगर यह किसी भी तरह से अनियंत्रित हो गया तो एक प्रलय आ जाएगी, जिसका पैमाना बाइबिल में वर्णित प्रलय से भी बड़ा हो सकता है। या, यह पूरी तरह से प्राकृतिक घटना हो सकती है जिसे हमने किसी कारणवश अभी तक नहीं देखा है। मैंने सभी उपलब्ध आंकड़ों का मिलान कर लिया है...”

‘क्या दूसरे लोग भी इस शक्ति को महसूस कर सकते हैं?’

शीला मंत्री जी का इशारा समझ गई थीं। जब तक सरकार इसके लिए तैयार न हो जाए, तब तक अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने से बचना चाहिए। वे नहीं चाहेंगे कि महाशक्तियां इराक और अफगानिस्तान की तरह भारत के संसाधनों पर हमला करें।

शीला ने कहा, 'अब तक नहीं, महोदय। हमें इस घटना के अस्तित्व के बारे में पता ही नहीं था। हमारा आदमी एक आम भूतिया कहानी की जांच करते हुए बिल्कुल संयोग से इस पर आ गया। वह लापता है, महोदय, हम जांच कर रहे हैं। मुद्दे पर वापस आते हुए, जो भी हो, यह एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित है, एक बहुत छोटे से क्षेत्र तक। मुझे नहीं पता कैसे...'

‘अब तुम्हें क्या करना होगा?’ छोटूराम ने उससे अचानक पूछा।

हमें इस पर और अध्ययन करने की आवश्यकता है।

‘आप ऐसा कैसे करने का इरादा रखते हैं?’

‘प्रौद्योगिकी की मदद से, हम उपग्रहों में डिटेक्शन ड्राइव स्थापित कर सकते हैं। हम उनका उपयोग ऊर्जा के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए कर सकते हैं। यह पहला चरण है। यदि डेटा मूल रीडिंग से मेल खाता है, तो हमें साइट पर जांच करने की आवश्यकता होगी। यह दूसरा चरण होगा जिससे यह पता चल सके कि वास्तव में यह क्या है।’

‘शीला जी, आपको क्या लगता है यह क्या है?’

'मैं अभी आपको यह नहीं बता सकता, महोदय। यह धरती में कैंसर जैसी कोई बीमारी हो सकती है, ग्लोबल वार्मिंग का कोई दुष्परिणाम हो सकता है, परमाणु परीक्षण हो सकता है, भूमिगत जीव हो सकता है, ऊर्जा का संभावित स्रोत हो सकता है, कोई भूत या दानव हो सकता है; फिलहाल कुछ भी हो सकता है।'

‘यह जगह कहाँ है?’

'यह उन छोटे-छोटे गांवों में से एक है, महोदय, यह आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के मुख्यालय एलुरु के पास स्थित है।'

‘मैं उन इलाकों से परिचित हूं। आप जानते हैं कि वे जमीनें बहुत उपजाऊ हैं,’ मंत्री ने सुझाव दिया।

“उह...जी सर। स्रोत पूर्व स्थानीय राजपरिवार के स्मारक भवन के नीचे स्थित है। जाहिर है, वे अपने समय में सम्मानित थे और आंध्र प्रदेश के उस हिस्से में सबसे धनी थे। परिवार का केवल एक ही जीवित सदस्य है और वह एक वकील है; वह गुड़गांव में रहता है। मेरे पास उसका पता और फोन नंबर है। जब तक हमें पूरी तरह से पुष्टि नहीं हो जाती कि हमें किस चीज का सामना करना पड़ रहा है, हम उसे बुलाना या चेतावनी देना नहीं चाहते।”

'अच्छा विचार है। उसका नाम क्या है?'

‘Raghuram Surya,’ she said.

तुरंत ही मंत्री जी की आंखें चमक उठीं। 'सूर्य प्रसाद, सूर्या का बेटा? क्या हम उनकी जमीन की बात कर रहे हैं?'

'क्या आप उसे जानते हो?'

‘व्यक्तिगत रूप से नहीं, नहीं। मैं उनके पिता को जानता था। मैंने साठ के दशक के शुरुआती वर्षों में स्थानीय चुनावों में उनका समर्थन मांगने के लिए पार्टी की ओर से सूर्य प्रसाद से कई बार मुलाकात की थी। उनके लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे, शीला जी, लेकिन यही वजह नहीं है कि मुझे वह व्यक्ति इतना अच्छी तरह याद है। कभी-कभी लोग ऐसी बातें कह देते हैं जो हमेशा दिल में बसी रहती हैं, चाहे कुछ भी हो जाए। कभी-कभी यह आपके जीवन की पूरी दिशा बदल देती है और कभी-कभी, खैर, आप चाहते हैं कि ऐसा ही होता। ज्यादातर बार, मुझे लगता था कि शासन के बारे में उनका आकलन सही था। हालांकि, हममें से किसी ने भी उस पर अमल नहीं किया। काश हमने किया होता।’

शीला की दिलचस्पी बढ़ गई, वह मंत्री जी के आगे बोलने का इंतजार करने लगी। जब वे चुप रहे तो उसने कहा, 'उन्होंने क्या कहा, महोदय?'

छोटूराम ने गला साफ किया। ‘आपको याद होगा कि मैं उनसे 1960 के दशक में मिला था। पूरा देश जश्न और उथल-पुथल के बीच झूल रहा था। मैं हमेशा से सूर्य प्रसाद को एक सहज और बुद्धिमान व्यक्ति मानता था। अपने समय से बहुत आगे। वे ऐसी बातें देख लेते थे जो दूसरे नहीं देख पाते थे। वैसे, वे लंगड़े थे। उन्हें मस्कुलर डिस्ट्रॉफी थी। इस बीमारी से पीड़ित लोग ज्यादा दिन नहीं जी पाते। खैर, उन्होंने कहा था कि भारत लोकतंत्र बनने के लिए अभी बहुत अपरिपक्व है। उन्होंने कहा था कि जब तक लोग लोकतंत्र का असली मतलब नहीं समझेंगे, हम जो कर रहे हैं वह एक मजाक है। वे बिलकुल सही थे। उदाहरण के लिए, हमने रियासतों को खत्म कर दिया, लेकिन आज भी इन रियासतों के वंशज राजनीति में हैं। उन्होंने बस इतना

किया कि अपनी संपत्ति को अपने नाम से हटाकर कई फर्जी कंपनियों, ट्रस्टों वगैरह में दर्ज करा दिया। हमें असल में क्या मिला?'

'हमें जो मिला है, वह यह अधिकार है कि हम किसे शासित करें,' शीला ने घमंड से कहा।

मंत्री जी हँसे। 'क्या हमने ऐसा किया है?' इस देश को उन्हीं जन्मजात धनी लोगों के निजी उद्यमों ने संभाला है, न कि उन लोगों ने जिन्हें हमने सत्ता में बिठाया। हम, निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में, कुछ मामलों में भारतीय जनता के अपरिहार्य विकास को सुगम बनाने में मात्र सहायक रहे हैं और अन्य मामलों में इसे विलंबित किया है। हममें से कुछ ने देश प्रेम के कारण ऐसा किया, जबकि अन्य ने धन लाभ के लिए।'

'तो सूर्य प्रसाद का समाधान क्या था?' शीला ने पूछा।

सूर्य प्रसाद ने कहा था कि रियासतों के लिए एक झंडे के नीचे एकजुट होना और स्वशासन के लिए प्रतिबद्ध होना तथा फिर भी देश को शक्तिशाली बनाना संभव है। मुझे नहीं लगता कि वे पूरी तरह गलत थे। मध्य पूर्व को देखिए, ब्रुनेई, इंग्लैंड, जापान और डेनमार्क जैसे कुछ विकसित राज्यों के नाम लीजिए। लोकतंत्र के नाम पर हमने बस इतना ही हासिल किया है कि संसद के दरवाजे उन अपराधियों के लिए खोल दिए हैं जो लोकतंत्र के बारे में कुछ भी न जानने वाले अज्ञानी लोगों को प्रभावित या धमकाकर अपने इशारों पर नचाते हैं। देखिए, हमने अंततः लोकतंत्र का ही मजाक उड़ाया, इसे उन लोगों पर थोप कर जो इसे जानते ही नहीं थे।

'मैं यह नहीं कह सकती कि मैं आपसे असहमत हूं,' शीला ने अपने होंठ काटते हुए कहा।

छोटूराम ने उदास होकर आह भरी। 'आज भारत की राजनीति में दुनिया के किसी भी देश से ज़्यादा अपराधी हैं। हमने उस समय जो बीज बोए थे, उनसे भ्रष्ट राजनेताओं और पाखंडी धर्मगुरुओं की सड़ी हुई फसल उग रही है। लेकिन, सूर्या की बात कौन सुनता? देश नया था, जनता हर किसी से नाराज़ थी। आज़ादी एक नशा थी।' मंत्री ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'उनकी बातें मेरे मन में बस गई हैं। उन्होंने मुझे कई बार परेशान किया है। अगर उनका बेटा भी उन्हीं की तरह है, तो आपको उसे इस परियोजना में शामिल करना चाहिए,' मंत्री ने कहा।

आज तक शीला ने छोटूराम को अपने किसी भी सहकर्मी की तारीफ करते नहीं देखा था, किसी और की तो बात ही छोड़िए। दरअसल, सार्वजनिक सभाओं के अलावा, उसने हाल के दिनों में मंत्री को ज्यादा बोलते हुए नहीं देखा था। बूढ़े आदमी के प्रति शीला का दिल नरम पड़ गया। आखिर इतने ऊंचे पद पर होने के बावजूद उनमें थोड़ी सी शालीनता तो थी ही। शायद यह उनकी उम्र की वजह से था। शायद वे राजनीति के खेल से थक चुके थे। शायद वे इससे बाहर निकलना चाहते थे और अब उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उनकी राय तथाकथित लोकतांत्रिक व्यवहार के मानदंडों के विपरीत है।

'लेकिन क्या हमने राजकुमारों और राजाओं के हाथों कष्ट नहीं सहा? क्या उन्होंने अपने धन के लिए जनता को नहीं रौंदा?' उसने उससे पूछा।

जी हाँ, बिल्कुल उन्होंने ऐसा किया। लेकिन एक और भी महत्वपूर्ण सवाल है जो आपको पूछना चाहिए। हम अब क्या कर रहे हैं? क्या किसान अब भी उसी तरह आत्महत्या नहीं कर रहे हैं जैसे राजाओं और जमींदारों के शासनकाल में करते थे? सरकार द्वारा घोषित कल्याणकारी योजनाओं में से वास्तव में कितना पैसा लक्षित जन तक पहुँच रहा है? क्या इस बात की कोई जवाबदेही है कि वह पैसा कहाँ जा रहा है? आज के भारत में एक निर्वाचित प्रतिनिधि और एक राजा या जमींदार में कितना अंतर है? हम इसके बारे में क्या कर रहे हैं? क्या हम हर दिन, हर महीने घोटालों का पर्दाफाश नहीं कर रहे हैं? क्या यह पहले से भी बदतर नहीं है? शीला जी, खुद से पूछिए, क्या हमने सचमुच आजादी हासिल कर ली है या हम सिर्फ विदेशी शासन से आजादी का ही जश्न मना रहे हैं?

'क्या फर्क पड़ता है?'

छोटूराम उदास होकर मुस्कुराया, मानो उसे यह जानकर बहुत दुख हो रहा हो कि उसे एक उच्च शिक्षित व्यक्ति को इस तरह का मूलभूत अंतर समझाना पड़ रहा है।

जब कोई किशोर अपने माता-पिता का घर छोड़कर कॉलेज जाता है, तो वह इसे स्वतंत्रता मानता है। उसे जेब खर्च मिलता है, उसका हिसाब नहीं देना पड़ता, वह अपनी मर्जी से सब कुछ करता है और अपनी उम्र और जीवन के सभी सुख-सुविधाओं का आनंद लेता है। यही स्वतंत्रता है, बेरोकटोक, अनियंत्रित, किसी की परवाह किए बिना। स्वतंत्रता अपने साथ ज़िम्मेदारी भी लाती है, न केवल अपने लिए बल्कि अपने आस-पास के अन्य स्वतंत्र लोगों के लिए भी। यह एक ऐसा मूल्य तंत्र स्थापित करती है जो पड़ोसी की स्वतंत्रता का सम्मान करने और उससे अपनी स्वतंत्रता का सम्मान करने की अपेक्षा करने पर आधारित है। यह शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के नियमों को समझने की क्षमता के साथ आती है। दिल्ली की यातायात व्यवस्था को देखकर ही पता चलता है कि अधिकांश लोग यातायात नियमों का पालन नहीं करते, चाहे वह एकतरफा सड़कें हों, गति सीमा हो, लेन नियम हों, या कुछ और। यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हम अपनी स्वतंत्रता के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। क्या हम अपनी सामूहिक स्वतंत्रता का सम्मान कर रहे हैं और इसलिए जिम्मेदार लोगों की तरह व्यवहार कर रहे हैं? या हम बस यही कह रहे हैं कि जब तक हमें अपनी मनमर्जी करने को मिल रही है, तब तक हमें दूसरों की परवाह नहीं है? हम एक भ्रष्ट और बेकार व्यवस्था पर निर्भर हैं जो हमें मनमानी करने की छूट देती है, ठीक वैसे ही जैसे कोई किशोर बिना हिसाब दिए जेब खर्च उठाता है। और अगर ऐसा है, तो सूर्या सही था, हम लोकतंत्र बनने के लिए बहुत अपरिपक्व हैं क्योंकि हम वास्तव में चुनाव करने में असमर्थ हैं। इसके बजाय हम उन्हें चुनते हैं जो हमें सबसे ज्यादा जेब खर्च देने का वादा करते हैं।

शीला को मानना पड़ा कि बूढ़े आदमी की बात में दम था। एक तानाशाह दस तानाशाहों के बराबर नुकसान नहीं कर सकता। कम से कम एक तानाशाह के साथ तो मुकाबला करने की गुंजाइश थी। अगर कानून बनाने वाले ही आपराधिक आरोपों में घिरे हों, तो जनता के पास क्या उम्मीद बची?

मंत्री जी ने गहरी साँस ली। फिर उन्होंने कहा, 'शीला जी, आप अपने परीक्षण जारी रखिए। मुझे अपने सहयोगियों से बात करने दीजिए। आपने जो कुछ कहा है, वह मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया, लेकिन मैं

देखता हूँ कि मैं उन्हें कैसे मना सकता हूँ। यदि आवश्यकता पड़ी, तो आपको अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने पड़ सकते हैं। आपके परीक्षण पूरे होने में कितना समय लगेगा?'

'सर, इसमें कम से कम दो दिन लगेंगे।'

'तो...आपको क्या लगता है मुझे उन्हें क्या बताना चाहिए?' मंत्री ने थोड़ी अनिश्चितता से पूछा।

शीला ने गहरी सांस ली। 'सर, वहां नीचे कुछ ऐसा है जिसमें अभूतपूर्व ऊर्जा स्तर है। अगर हम इसका पता लगा लें और इस शक्ति की क्षमता का दोहन करने में सक्षम हो जाएं, तो हम आने वाले समय के लिए महाशक्ति बनने की राह पर अग्रसर हो सकते हैं।'

मंत्री जी ने पलकें झपकाईं। 'धन्यवाद, शीला जी।'

शीला के कमरे से चले जाने के बाद, छोटूराम ने फोन उठाया, 'क्या गृह मंत्री कार्यालय में हैं? हम्म... पता लगाना होगा। मुझे उनसे बात करनी है।'

छोटूराम ने दूसरा नंबर मिलाया।

उन्होंने कहा, 'मुझे प्रधानमंत्री से मिलने का समय दिलवा दीजिए।'

अध्याय 9

शांति हमेशा की तरह चुप थी।

उन्होंने अपने तलाक के बाद के दिनों को याद किया। यह एक सुखद याद थी। आजादी के वे साल उनके लिए अनमोल थे; भारतीय संस्कृति पार्टी के लिए अपने पिता के साथ काम करना, पार्टी के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेना, पार्टी के भविष्य पर होने वाली बहसों में शामिल होना और इस धारणा को बदलने के लिए आवश्यक कदम उठाना कि पार्टी कट्टरपंथियों की पार्टी है।

पार्टी को उदारवादी स्वरूप देने के अधिकतर विचार उन्हीं के थे। निःसंदेह वे उनके जीवन के सबसे संतुष्टिदायक वर्ष थे। उस समय पार्टी के कई वरिष्ठ सदस्य उन्हें अपनी स्थिति के लिए खतरा मानते थे क्योंकि वे पार्टी में बहुत अधिक शामिल थीं और उनसे कहीं अधिक चतुर थीं। उनके पिता बृजमोहन डालमिया पार्टी के नेता और आजीवन अध्यक्ष थे और वे जानते थे कि जब तक वे उन्हें संभावित उत्तराधिकारी के पद से नहीं हटाते, तब तक उन्हें कोई खास लाभ नहीं मिल सकता।

उन्होंने एक अवसर देखा जब राजस्थान के एक युवा राजनेता ने पार्टी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने उसे निस्वार्थ व्यक्ति कहा। उन्होंने शांति के खिलाफ उस युवा राजनेता का समर्थन किया।

पार्टी प्रमुखों के आदेश को नकारने वाली एक और घटना घटी। युवा राजनेता ने शांति को विवाह का प्रस्ताव दिया। बृजमोहन यह देखकर प्रसन्न हुए कि एक ही झटके में विवाह से शांति का जीवन सुरक्षित हो जाएगा और उन्हें पार्टी पर अपना नियंत्रण बनाए रखने का अवसर भी मिल जाएगा। शांति अपने पिता के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के बारे में सोच भी नहीं सकती थीं। उन्होंने गोविंद किरोमल से विवाह करने के लिए सहमति दे दी। इसके बाद जो हुआ वह इतिहास बन गया।

दो कठिन वर्षों के बाद उनका पहला विवाह टूट गया, जब उन्हें एहसास हुआ कि उनके पति महिलाओं की तुलना में पुरुषों के प्रति अधिक आकर्षित थे। खूबसूरत काले बालों वाली वह महिला अपने पिता के सार्वजनिक जीवन में अवसरों को बर्बाद न करने के लिए उनके साथ रहना चाहती थी। दूसरी ओर, बृजमोहन डालमिया की राय अलग थी।

उन्होंने तलाक का इंतजाम करने और उस आदमी को जीवन भर के लिए पर्याप्त धन देकर विदा करने में जरा भी समय नहीं लगाया। उनके पूर्व पति शंकर सुखदेव, उनके वर्तमान पति के मुकाबले फरिश्ता थे। तलाक लेना उनकी गलती नहीं थी, न ही उनके पिता की। एक महत्वाकांक्षी और विचित्र व्यक्ति के छल में फंस जाना, जो एक तरफ नैतिकता की मूर्ति था और दूसरी तरफ सत्ता का भूखा और गुप्त शिकारी; यही उनकी गलती थी। गोविंद किरोमल से शादी करना उनके जीवन की सबसे बड़ी गलती थी। बृजमोहन को अपनी बेटी की दुर्दशा का अंत तक एहसास नहीं हुआ और जब उनकी मृत्यु हुई, तब तक गोविंद पार्टी प्रमुख बन चुके थे।

शांति सोच रही थी कि उसका पहले से तलाकशुदा होना ही उसके खिलाफ निर्णायक कारक था। अगर उसने अपने पति के अजीब और समझ से परे व्यवहार के बारे में अपने पिता को बताया होता, तो वह न केवल उसे उसकी जिंदगी से निकाल देते, बल्कि पार्टी से भी बाहर कर देते।

लेकिन, अगर ऐसा कुछ किया जाता तो उसके पिता का राजनीतिक जीवन पूरी तरह से बर्बाद हो जाता। उनके गुट के दूसरे लोग उन्हें सत्ता से बेदखल कर देते। वे उसे एक चरित्रहीन महिला, शायद वेश्या भी कह कर उसके पिता को बर्बाद कर देते, और इससे न केवल उसका जीवन बर्बाद होता, बल्कि उसकी जान भी चली जाती। आखिर, जब उसकी माँ का निधन हुआ था और वह बहुत छोटी थी, तब से ही उसके पिता ने उसे बड़े प्यार और देखभाल से पाला-पोसा था।

इसलिए शांति चुपचाप सब कुछ सहती रही। उसने यह बात किसी को नहीं बताई कि अपने वैवाहिक जीवन के दौरान उसका पति केवल तीन बार ही उसके साथ शारीरिक संबंध बना पाया था, और वह भी पूर्वनिर्धारित समय पर। उसने यह तथ्य भी उजागर नहीं किया कि गर्भधारण के बाद उसके पति की उसमें शारीरिक और भावनात्मक रुचि खत्म हो गई थी।

उसकी दिलचस्पी अपने बेटे शक्ति में ज़्यादा थी और वह उसे रात में श्मशान घाटों और अजीबोगरीब अनुष्ठानों में अपने साथ ले जाता था। वह सिर्फ़ एक ही चीज़ के लिए जुनूनी था - सत्ता हासिल करना। ऐसा नहीं था कि वह उसके प्रति किसी भी तरह से निर्दयी था, बल्कि इसके विपरीत, उसने उसकी हर ज़रूरत और इच्छा पूरी करने के लिए बहुत प्रयास किए थे, सिवाय एक के - अपने पति के साथ वैवाहिक संबंध बनाने की इच्छा। वह बिस्तर पर उससे दूर रहता था।

पार्टी अध्यक्ष गोविंद किरोमल ने जी-तोड़ मेहनत की। उन्होंने उन क्षेत्रों में पार्टी की स्थिति मजबूत की जहाँ उनकी उपस्थिति थी; दक्षिण में भारतीय संस्कृति पार्टी के विकास के लिए वे व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार थे, जहाँ पार्टी की उपस्थिति नगण्य थी। उनकी रणनीतियाँ कभी गलत नहीं हुईं, उन्होंने हमेशा सही कदम उठाए और वर्तमान में दक्षिण भारत के चार राज्यों में से तीन पर भारतीय संस्कृति पार्टी का शासन है। तमिलनाडु एकमात्र ऐसा राज्य है जो स्थानीय पार्टियों के साथ अपने प्रेम-विरोध के संबंधों के कारण पार्टी की पकड़ का विरोध कर रहा है।

जब आईसीपी ने भारी बहुमत से सबसे बड़ी पार्टी बनकर आम चुनाव जीता, तो सबकी निगाहें उस शख्स पर टिक गईं जिसने इसे मुमकिन बनाया था - गोविंद किरोमल। प्रधानमंत्री का पद संभालने के बजाय, गोविंद ने जनरल बख्शी को इस पद पर नियुक्त किया। सेवानिवृत्त सेना जनरल और दिवंगत बृजमोहन डालमिया के घनिष्ठ मित्र, जनरल श्रीकांत बख्शी प्रधानमंत्री बने। दो युद्धों में वीरतापूर्वक भाग ले चुके जनरल श्रीकांत बख्शी को देश का नेतृत्व करने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति माना गया। गोविंद ने गृह मंत्रालय का कार्यभार संभाला और देश की आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। यह एक ऐसा काम था जिसके लिए कोई प्रशंसा नहीं मिलती थी, लेकिन इसने उन्हें अपनी मर्जी से कुछ भी करने की असीमित शक्ति प्रदान की।

उस दिन शांति ने अपने पति को जल्दी-जल्दी घर आते देखा; दोपहर भी नहीं हुई थी और वह वापस आ गया था। इसका एक ही मतलब हो सकता था। वह राजस्थान जा रहा था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। गोविंद ने बस फोन उठाया।

“अंकल जी, स्वामी जी ने कुछ दिन पहले जो कहा था, वही हो रहा है। मैंने अभी-अभी रक्षा मंत्री छोटूराम जी से बात की है। यही वो बड़ा मौका है जिसका हम इंतज़ार कर रहे थे। अब तक यह हमसे छिपा हुआ था। तांत्रिक को इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। उनकी उलटी-सीधी बातें मुझे समझ नहीं आ रही हैं। खैर, अच्छी खबर यह है कि हम अपनी जीत के और करीब हैं।”

भीतरी कमरे में दीवार के पास बैठी शांति ने गोविंद की बातें सुनने के लिए अपना सिर दीवार से सटा लिया। गोविंद सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाए गए अतिथि कक्ष में था।

जी हाँ अंकल जी, वे लोग पीड़ा के देवता को एक अनसुलझी घटना बता रहे हैं। अभी वैज्ञानिक यह पता लगाने में जुटे हैं कि यह क्या है। सेना उन्हें उपग्रह सुविधाएँ मुहैया करा रही है...हाँ, यह सब ज़रूरी है, यह योजना का हिस्सा है। मुझे पता है कि क्या करना है। मैं आपको सूचित करता रहूँगा।

शांति दीवार से हटकर कमरे में प्रवेश करने लगी। गोविंद उसकी ओर मुड़ा। 'क्या बात है?'

‘क्या मैं आपके कपड़े पैक कर दूं, जी?’ उसने धीरे से पूछा।

'नहीं, अभी नहीं प्रिय। चिंता मत करो। बहुत अच्छी चीजें होने वाली हैं और मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मुझसे शादी करके तुम्हें अब कभी पछतावा नहीं होगा।'

शांति ने चौंककर उसकी ओर देखा। गोविंद जोर से हँसा, एक गहरी, खोखली हँसी जो पूरी तरह से उसकी अपनी नहीं लग रही थी।

अध्याय 10

स्पेशल फोर्सेज के कैडेट दोपहर ढलते ही आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा से लगभग चालीस किलोमीटर दूर स्थित गनावराम हवाई पट्टी पर उतरे। हेलीकॉप्टर से उतरते ही, छोटे-छोटे बक्सों में रखे अपने सामान के साथ वे चार बिना नंबर वाली महिंद्रा ज़ाइलो एसयूवी की ओर चल पड़े। गहरे रंग की चमकदार गाड़ियाँ, जिन पर गहरे रंग के शीशे लगे थे, कैडेटों को लेकर एलुरु की ओर तेज़ी से निकल गईं। उन्हें गुडेम पहुँचने के लिए एलुरु पार करना था।

गुडेम तक पहुंचने में अनुमानित यात्रा समय चार घंटे था। जब तक वे बाहरी इलाके में पहुंचते, सूर्यास्त हो चुका होता और उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी। उनका मिशन गुप्त रूप से आगे बढ़ने पर निर्भर था। कैडेटों ने अपना सामान खोलना शुरू किया। प्रत्येक एसयूवी में टेप से सील किए गए चार बक्सों को सावधानीपूर्वक खोला गया। आखिर, उपकरणों को दोबारा पैक करना था।

कैडेटों ने कार्गो बॉक्स से लगभग चार फीट ऊंचे, काले रंग के, छड़ी जैसे दिखने वाले स्कैनर निकाले। प्रत्येक स्कैनर के एक सिरे पर गोलाकार उभारों में तीन परतों में अत्यंत शक्तिशाली सेंसर लगे हुए थे। यह बिना बट वाली अंतरिक्ष बंदूक की तरह दिखता था क्योंकि इसका दूसरा सिरा उभरा हुआ था और उस पर एक लाल बत्ती लगी हुई थी।

गोलाकार उभारों में लगे सेंसर लचीले कांच की ढालों से ढके हुए थे, जो जमीन में गाड़ते समय उनकी सुरक्षा करते थे। काम पूरा होने पर, स्थापित स्कैनर जमीन से दो फीट बाहर निकले रहते थे। छड़ के दूसरे सिरे पर लगा लाल बत्तीदार संकेत रात के आकाश में बहुत ऊपर स्थित उपग्रह को शक्तिशाली सिग्नल भेजता था। यह उपग्रह जमीन में कम से कम सौ फीट गहराई तक गए भूमिगत सेंसरों से अवरक्त तकनीक के माध्यम से सभी दिशाओं में जानकारी भेजता था।

मानो इतना ही काफी नहीं था, ये स्कैनर इतनी तेज़ आवाज़ निकाल सकते थे कि इंसानी कान उन्हें सुन नहीं सकते थे। आवाज़ दरारों और छेदों से भी पार होकर सेंसरों को सिग्नल भेज सकती थी। कुछ-कुछ सोनार जैसी। हर डिब्बे में पाँच स्कैनर थे, यानी कुल मिलाकर गुडेम गाँव के दस किलोमीटर के दायरे में चालीस स्कैनर लगे हुए थे।

एक बार सक्रिय होने के बाद, स्कैनर्स को दो घंटे तक जानकारी एकत्र करने और प्रसारित करने की अनुमति दी जाएगी। दो घंटे पूरे होने के बाद, डिटेक्टरों को निकालकर बक्सों में वापस रखा जाएगा और कैडेटों के साथ नई दिल्ली स्थित सेना मुख्यालय वापस भेज दिया जाएगा। सुबह के मध्य तक, उनसे प्राप्त होने वाले डेटा का विश्लेषण किया जाएगा।

शाम के करीब सात बज रहे थे जब एसयूवी गाड़ियां गुडेम से लगभग दस किलोमीटर दूर आकर रुकीं। कैडेट चुपके से एक-एक करके गाड़ी से बाहर निकले। उन्होंने तुरंत घुसपैठ रोकने के लिए घेराबंदी कर दी। सुरक्षित घेराबंदी के संकेत मिलते ही बाकी कैडेट खामोश भूतों की तरह खेतों में गायब हो गए। सर्दी

की रात ने ग्रामीणों को अपने घरों में वापस जाने पर मजबूर कर दिया था। स्मारक हॉल के पहरेदार वहीं आसपास huddled होकर सस्ती देसी शराब पी रहे थे।

उस रात बहुत ठंड थी। एक अजीब सी ठंड, जिसके बीच-बीच में गर्म हवा के झोंके आ रहे थे। हवा में डर का सा माहौल था। एक अनजाना डर। कैडेट्स को साफ तौर पर महसूस हो रहा था कि उन पर एक ऐसे शिकारी की नजर है जो उन सबसे कहीं ज्यादा ताकतवर है। हर कैडेट ने इसे महसूस किया। किसी ने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। उन्हें सिखाया गया था कि जब तक कोई आदेश न हो, तब तक न तो घबराएं और न ही घबराहट फैलाएं।

उन्होंने मोटे काले कपड़े, गहरे रंग के स्वेटर, मैटेड केवलर बॉडी आर्मर और फ्लैप वाली जेबों वाली गहरे रंग की कार्गो पैंट पहनी हुई थी। कमर पर करीने से एक साइड आर्म बंधा हुआ था। एक ग्लॉक 21 मशीन पिस्टल। इसके अलावा, उनकी पीठ पर एक पूरी तरह से भरी हुई INSAS असॉल्ट राइफल बंधी हुई थी। बेशक, किसी ग्रामीण इलाके के दौरे के लिए यह कुछ ज़्यादा ही था, लेकिन यह उनका मानक साजो-सामान था और सेना में मानकीकरण ही सब कुछ होता है। मानकीकरण के बिना नियंत्रण असंभव है। कैडेट्स ने अपना काम पूरी सटीकता से किया। हर इंस्टॉलेशन के बाद वे रॉड्स के किनारे लगे लाल स्विच को दबाते थे।

रात के अंधेरे में लाल बत्ती अशुभ ढंग से टिमटिमा रही थी, जिससे संकेत मिल रहा था कि पृथ्वी के ऊपर मंडरा रहे उपग्रह को संकेत भेजे जा रहे हैं। कैडेट्स को अलग-अलग दूरी पर तैनात किया गया था, हर दो किलोमीटर पर दो कैडेट। वे डिटेक्टरों से बीस मीटर की दूरी पर बैठ गए ताकि उनके शरीर की गर्मी पृथ्वी के नीचे से प्राप्त होने वाले मापों में न मिल जाए। रात ग्यारह बजे तक उन्होंने इंस्टॉलेशन पूरा कर लिया था।

सुबह एक बजे उन्होंने उपकरण हटाने का काम शुरू किया। काम खत्म होने पर उन्हें राहत मिली क्योंकि उनके भीतर डर हर पल बढ़ता जा रहा था, मानो कोई सुनामी आ गई हो। अगर उन्हें प्रशिक्षण न मिला होता, तो हर कैडेट डर से कांप उठता। फिर भी, उनमें से कुछ ने ट्रांसमीटर हटाते समय अपने कांपते हाथों को छिपाने की पूरी कोशिश की।

सुबह के दो बजते-बीतते वे गणवरम के हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गए। सुबह साढ़े पाँच बजे वे विमान में सवार हो गए। तब तक उनके मन में व्याप्त भय लगभग समाप्त हो चुका था।

जब तक कैडेट दिल्ली पहुँचकर नहा-धोकर ब्रीफिंग के लिए इकट्ठा हुए, तब तक सैटेलाइट से मिली रिपोर्ट का विश्लेषण, संकलन और एक प्रारंभिक प्रति तैयार करके शीला के वर्क-स्टेशन पर रख दी गई थी। विश्लेषण रिपोर्ट का ही एक हिस्सा था। उस सुबह जब वह अपने केबिन में दाखिल हुई तो उसने तीन उत्साहित चेहरों को अपनी ओर घूरते हुए पाया।

‘क्या?’ उसने पूछा।

'मैडम, अगर मैं कुछ कहूँ तो, आपको रिपोर्ट अवश्य पढ़नी चाहिए, मेरा मतलब है अभी...कृपया।'

शीला बड़े आराम से अपने कमरे में दाखिल हुई। उसने रिपोर्ट खोली और पहला पन्ना पढ़ना शुरू किया। उसे रिपोर्ट पढ़ने में तीन घंटे लग गए।

मूलतः, विद्युत शक्ति को ऊर्जा के रूपांतरण की दर से परिभाषित किया जाता है। यह वोल्टेज और प्रवाह का संयोजन है। सूत्र है $V = W \times A$, जहाँ वोल्टेज वाट और एम्पीयर का योग होता है। उसकी मेज पर मौजूद सामग्री के अनुसार, विद्युत ऊर्जा के प्रवाह की शक्ति इतनी अधिक थी कि पृथ्वी पर किसी भी उपकरण द्वारा इसे मापा नहीं जा सकता था।

विद्युत ऊर्जा को मापने पर, रिपोर्ट में पाया गया कि वाट घंटे लगभग अनंत थे। स्मारक के नीचे मौजूद कोई भी चीज़ इतनी अधिक वोल्टेज पर स्वयं बिजली उत्पन्न कर रही थी, जिसे समझना उनकी समझ से परे था। रिपोर्ट के अनुसार, यह दस हजार टेरावॉट से भी अधिक थी।

यह आश्चर्य की बात थी कि डिटेक्टर फट नहीं गए! एक टेरावॉट एक ट्रिलियन वॉट विद्युत शक्ति के बराबर होता है। पृथ्वी पर मानव निर्मित कोई भी चीज़ इतनी बिजली पैदा नहीं कर सकती। इस तरह की जानकारी सार्वजनिक करना और बाद में गड़बड़ी का पता चलना निश्चित रूप से उसके लिए अच्छा संकेत नहीं होगा।

अगले कुछ घंटे उपकरणों की जाँच में व्यतीत हुए, जो पूरी तरह से ठीक थे। शीला ने स्पेशल फोर्सेज कैडेट्स के टीम लीडर को बुलाया। बैठक के बाद उन्हें पता चला कि टीम ने ठीक वैसा ही किया है जैसा उन्हें बताया गया था। पाँच घंटे बाद, अपने द्वारा निर्धारित समय सीमा से काफी आगे, शीला ने जाँच के निष्कर्ष बताने के लिए फोन उठाया। अब जाँच को अगले स्तर पर ले जाने का समय था। फोन रखने के बाद, शीला ने एक टीम मीटिंग की। मेजर कांत भी उपस्थित थे। बैठक संक्षिप्त और सारगर्भित थी।

‘दोस्तों, अब समय आ गया है। मुझे जमीनी समर्थन की जरूरत है। मेजर कांत की टीम, पैरानॉर्मल से प्रियंका और विदुष मेरे साथ होंगे। शीतल, तुम मुख्यालय से मेरा समर्थन करोगी।’

'हां मैम।'

और दोस्तों, मुझे रघुराम सूर्या के बारे में तीन घंटे के भीतर पूरी जानकारी चाहिए, उनके ग्राहक, उनकी फर्म, प्रेम जीवन, कपड़ों का चुनाव, और बाकी सब कुछ जो मुझे जानना चाहिए, स्पष्ट है?

'हां मैम।'

मैं कल सुबह सबसे पहले गुडेम के लिए रवाना हो रहा हूँ।

शीला के अपने केबिन में वापस जाने के बाद, शीतल ने पल्लवी की ओर रुख किया।

‘भगवान के लिए, क्या वह कोई जासूस है या वैज्ञानिक?’

पल्लवी ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'क्या तुम उससे पूछना चाहती हो?'

शीतल ने अपना सिर जोर से हिलाया।

मैं उनसे यह पूछना चाहती हूं कि शाहरुख खान का क्या हुआ? उन्हें तो सब भूल ही गए हैं।

अध्याय 11

शीला लगभग एक घंटे में सचिवालय पहुँच गई। इस बार वह नॉर्थ ब्लॉक की ओर जा रही थी।
छोटूराम, प्रधानमंत्री बख्शी और गृह मंत्री गोविंद किरोमल गृह मंत्री के कार्यालय में चमड़े के सोफे पर बैठे थे। प्रोटोकॉल के अनुसार उन्हें प्रधानमंत्री कार्यालय में इकट्ठा होना चाहिए था, लेकिन गोविंद किरोमल आमतौर पर प्रोटोकॉल का पालन नहीं करते थे। सभी जानते थे कि वही बॉस हैं।
गृह मंत्री शीला को भूखी निगाहों से घूर रहे थे, मानो उसे खा जाना चाहते हों। शीला को उनमें ज़रा भी प्रेम भाव नहीं दिखा। ऐसा लग रहा था मानो कोई भूखा लकड़बग्घा उसके बचाव कम करने का इंतज़ार कर रहा हो। छोटूराम मानो आकार में छोटा हो गया था और अपनी विशाल कुर्सी में खोया हुआ सा लग रहा था। जनरल बख्शी अपनी घनी सफेद मूंछों के नीचे अपनी मशहूर समुद्री डाकू वाली मुस्कान लिए बैठे थे, लेकिन शीला समझ गई कि उनकी मुस्कान भी उतनी ही बनावटी थी जितनी उनका टूथब्रश।
‘शीला जी, गृह मंत्री जी आपसे बात करना चाहते थे,’ छोटूराम ने बेमन से कहा। शीला ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और खड़ी ही रही।
'कृपया बैठ जाइए, श्रीमती शीला, आराम से बैठिए,' गोविंद किरोमल ने प्यार से कहा। 'मुझे पता है आप बहुत व्यस्त होंगी, इसलिए मैं आपको ज्यादा देर तक नहीं रोकूंगा।'
खड़े रहने के अपने दृढ़ संकल्प के बावजूद, शीला खुद को एक चमड़े की कुर्सी पर फिसलती हुई पाई।
‘अच्छा, क्या आप चाय पीना चाहेंगे? हाँ…’
किरोमल ने घंटी बजाई और एक वार्ड बॉय तुरंत अंदर आया, उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे।
'हम सबके लिए चाय, भीमसिंह।'
किरोमल ने शीला को अपनी निगाहों से परखा। उसने उसके होंठों और गर्दन को गौर से देखा। शीला असहज होकर अपनी सीट पर हिली और छोटूराम की ओर एक नजर डाली। रक्षा मंत्री ने भी क्षुब्ध निगाहों से उसकी ओर देखा। मानो वह कह रहा हो, 'मैं भी इस राक्षस के सामने उतना ही बेबस हूँ जितना तुम हो।'
नौकरानी एक स्टील की ट्रे लेकर लौटी जिस पर सुनहरे बॉर्डर वाले सफेद रंग के सुंदर प्याले रखे थे, जो गरमागरम चाय से भरे हुए थे। थोड़ी देर बाद, अपना सामान बाँटने के बाद, नौकरानी चली गई।
'आप मुझसे कुछ जानकारी चाहते थे, महोदय।'
‘हम्म...हाँ। सबसे पहले, इस पूरे मामले पर आपकी क्या राय है?’ किरोमल ने पूछा।
शीला ने गला साफ किया। “इन्फ्रारेड छवि में यह दस फुटबॉल स्टेडियमों के आकार के एक गोले के रूप में दिखाई देता है, इसके अलावा हमें नहीं पता कि यह क्या है। ऐसा लगता है कि यह विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों से बना है जो इसकी स्वयं की विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने में मदद करते हैं। हालांकि, हमें यह नहीं पता कि यह ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए किस ईंधन का उपयोग करता है। इस अनोखी चीज़ के बारे में ध्यान देने योग्य

एकमात्र बात यह है कि यह जितनी शक्ति उत्पन्न करता है, वह सबसे उन्नत तकनीक की क्षमता से कहीं अधिक है।"

बख्शी ने परिकल्पना की, 'विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र वास्तव में क्या है?'

शीला ने गला साफ़ करते हुए कहा, 'यह थोड़ा तकनीकी है। चलिए इसे जितना हो सके सरल शब्दों में समझाती हूँ। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र विद्युत आवेशित कणों पर बल लगाता है और कणों की गति से प्रभावित होता है, महोदय। इसलिए, एक बदलता हुआ चुंबकीय क्षेत्र विद्युत क्षेत्र उत्पन्न करेगा और इसके विपरीत भी। यह हर जगह मौजूद हो सकता है लेकिन मानव आँख से दिखाई नहीं देता। क्योंकि एक दूसरे को उत्पन्न कर सकता है, इसलिए इसे विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र कहते हैं। आइंस्टीन ने विद्युत चुंबकत्व के आधार पर अपने विशेष सापेक्षता के सिद्धांत का विकास किया। बिजली के ट्रांसफार्मर और जनरेटर विद्युत चुंबकत्व पर आधारित होते हैं।'

बख्शी ने भावहीनता से सिर हिलाया। शीला को नहीं लगा कि उसने उसकी कही हुई बातों को ठीक से समझा है।

'यदि यह विसंगति दस फुटबॉल स्टेडियमों के आकार की है, जैसा कि आप कह रहे हैं, तो क्या इससे वहां की धरती हिल नहीं जाएगी, मेरा मतलब है, क्या वहां बड़े भूकंप नहीं आएंगे?' बख्शी ने सवाल किया।

'यह पूरी तरह से ठोस नहीं लगता, महोदय। सतह के करीब के कुछ हिस्से ठोस या अर्ध-ठोस प्रतीत होते हैं, लेकिन अधिकांश भाग ऊर्जा से बना है। यह एक विद्युत आवरण की तरह है। इसके आकार को देखते हुए भूकंप आना तय है, लेकिन हमने उस क्षेत्र में किसी भूकंप की सूचना नहीं दी है। कम से कम हाल के दिनों में तो नहीं। हालांकि, जब हम इसका और करीब से अध्ययन करेंगे तो हमें और अधिक जानकारी मिलेगी,' शीला ने उत्तर दिया।

'मतलब, यह कई सालों से मौजूद हो सकता था और अगर भूकंप आया तो हमें पता नहीं चलेगा कि यह कब हुआ।' बख्शी ने सवाल उठाया।

'जी हां, महोदय।'

'यह गो...उह, घटना वास्तव में कितनी शक्तिशाली है, सुश्री शीला?' किरोमल ने उनसे पूछा।

'सर, मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। 2015 में, भारत की बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता 276,637 मेगावाट थी,' शीला ने अपनी रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा। 'यह गोलाकार पिंड वर्तमान में दस हजार टेरावॉट से अधिक विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करता है। एक मेगावाट का मतलब दस लाख वाट बिजली होता है, जबकि एक टेरावॉट का मतलब एक ट्रिलियन वाट होता है। मैं आपको बता सकती हूँ कि यदि हम इस गोलाकार पिंड की ऊर्जा का दोहन करने में सक्षम हो जाएँ, तो हम इसकी दस प्रतिशत शक्ति का भी दोहन किए बिना पूरी दुनिया को निर्बाध विद्युत ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं। हालाँकि, यदि यह इतनी विद्युत ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है, तो यह ईंधन का उपभोग अवश्य कर रहा होगा। तो, इसका ईंधन क्या है? क्या इसे

ऐसे ही चलने देना सुरक्षित है? क्या यह अंदर की ओर फट जाएगा या विस्फोट होकर पृथ्वी को नष्ट कर देगा? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका हमें उत्तर खोजना होगा।'

गोविंद किरोमल ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया, लेकिन शीला उनकी आँखों में उत्सुकता की चमक देख सकती थी। वह एक छोटे बच्चे की तरह थे जो उस महंगे खिलौने को पाने के लिए बेताब थे जिसका उनसे वादा किया गया था।

वह इस बात को लेकर इतना परेशान क्यों है?

'यह सिर्फ बिजली मुहैया कराने से कहीं ज्यादा काम कर सकता है, श्रीमती शीला। आप जल्द ही देख लेंगी,' किरोमल ने धीरे से कहा।

'आपका क्या मतलब है, महोदय?'

'कोई बात नहीं। अब आप आधिकारिक तौर पर इस मामले की जांच के लिए वैज्ञानिकों की एक टीम का नेतृत्व करेंगे। आप सीधे मुझे रिपोर्ट करेंगे। आपको एक गुप्त पहचान की आवश्यकता होगी; हम नहीं चाहते कि हमारे मित्र और शत्रु, चाहे वे सीमा के भीतर हों या उस पार, हमारे इस छोटे से रहस्य को जानें।'

उसने अपने ब्रीफकेस से एक लिफाफा निकाला और शीला को सौंप दिया।

आपको सारी जानकारी उसमें मिल जाएगी। लिफाफे के अंदर लिखी बातें पढ़ने से आपका समय बचेगा।

'लेकिन लिफाफे में क्या है?' छोटूराम चिल्लाया। 'यह सब गोपनीयता क्यों?'

गृह मंत्री ने आह भरते हुए कहा, "संक्षेप में, शीला की टीम खुद को कॉर्पोरेट संकटमोचक के रूप में पेश करेगी और आंध्र प्रदेश में एक संयुक्त सार्वजनिक/निजी बिजली परियोजना स्थापित करने की कोशिश करेगी। राज्य सरकार सहयोग करेगी। इस मामले में हमें सावधानी बरतनी होगी। अगर यह परियोजना सफल होती है, तो हम एक अद्वितीय महाशक्ति बन जाएंगे और अगर यह विफल होती है, तो हम नहीं चाहते कि किसी को पता चले कि इस परियोजना ने देश और पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंचाया है।"

शीला ने गृह मंत्री को हैरानी से देखा। उन्होंने सब कुछ बहुत ही तर्कसंगत ढंग से पेश किया, लेकिन शीला को इस छल का कारण समझ नहीं आया। भारतीय सरकार को भारतीय धरती पर किसी भी मामले की जांच करने का पूरा अधिकार था। शीला को अब किरोमल के सहयोगियों के चेहरे पर दिख रही बेचैनी का कारण समझ आ गया था। बख्शी और छोटूराम इससे खुश नहीं थे और किसी कारणवश किरोमल का विरोध नहीं कर पा रहे थे; दरअसल, वह उस आदमी को ठीक से जानती भी नहीं थी और उसके निर्देशों को मानने के लिए मजबूर थी।

'जैसी आपकी इच्छा, महोदय,' उसने अनिश्चितता से बुदबुदाते हुए कहा। छोटूराम चौंक गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस जोशीली वैज्ञानिक को वह जानता था, वह इतनी शांत हो गई है।

'यह व्यापक हित के लिए है, सुश्री शीला। बधाई हो और आपकी परियोजना के लिए शुभकामनाएं।'

किरोमल शीला को परखना चाहती थी; यही एकमात्र तर्कसंगत कारण था जो शीला को बैठक के लिए समझ में आया, अन्यथा निर्देश उसे कूरियर, ईमेल या मौखिक रूप से भेजे जा सकते थे। शीला जल्दी से कमरे से निकल गई, गृह मंत्री के रहस्यमय चुंबकीय प्रभाव से मुक्त होकर वह बेहद खुश थी।

खंड-सी

सूर्य

अध्याय 12

रूपल शर्मा हांफने लगीं। उनकी आंखें फड़फड़ाने लगीं। उन्होंने मुश्किल से सांस ली। उनके नाखून रेशमी चादर में गड़ गए, उन्होंने एक कराह निकाली और फिर छोटी-छोटी, तेज सांसें लीं। उनकी बाहें उनके ऊपर लेटे हुए आदमी के नंगे कंधों पर लिपट गईं। उन्होंने उसे कसकर पकड़ लिया, उनके दांत उसकी कलाई के ठीक ऊपर की त्वचा में गड़ गए। वह जोर से चीखीं, उनकी आंखें और ज्यादा फड़फड़ाने लगीं। अंत में, वह महिला भारी सांसें लेते हुए बिस्तर पर गिर पड़ीं।

'यह मेरे जीवन का सबसे लंबा चरम सुख था। तुम सबसे अच्छे हो,' उसने उस आदमी के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

रघुराम सूर्या ने हल्की सी आह भरी, उसके ऊपर से लुढ़क गया और उसी झटके में अपनी हल्के नीले रंग की जींस उठा ली। कुछ ही मिनटों में वह पूरी तरह से कपड़े पहने हुए था।

'अरे, ऐसा मत करो, मुझे बुरा लग रहा है... जब तुम इस तरह चले जाते हो तो मुझे बहुत बुरा लगता है,' रूपल ने शिकायत की।

"हाँ, ठीक है... मुझे माफ़ करना, आज मेरी एक मीटिंग है, मुझे जाना होगा," उसने धीरे से कहा। कमर के आसपास थोड़ी चर्बी जमा होने के बावजूद, वह अपने छह फुट चार इंच के कद को आसानी से संभाले हुए था। उसकी ऊनी स्वेटशर्ट के नीचे से उसके मोटे, नुकीले निप्पल उभरे हुए थे, जिन्हें देखकर रूपल एक बार फिर उत्तेजित हो गई।

'तुम वापस कब तक आओगे?'

वह एक खूबसूरत महिला थी, भूरे बाल, अंडाकार चेहरा और गुलाबी होंठ, गहरी और रहस्यमयी आंखें, लंबी गर्दन और सुडौल काया वाली।

'यह इस बात पर निर्भर करता है कि मैं हैरी से पहले वापस आता हूँ या नहीं। वह कितने बजे वापस आता है?' रघु ने पलटकर उससे पूछा।

'ओह...नौ बजे तक,' रूपल ने थोड़ी नाराज़गी से कहा।

'हम्म... मैं भी लगभग उसी समय वहाँ होऊँगा। शायद मैं उसके साथ ड्रिंक पर जा सकूँ।'

'कभी-कभी मुझे लगता है कि तुम्हें मेरे साथ पीने की तुलना में मेरे पति के साथ पीना ज्यादा पसंद है,' उसने झल्लाकर कहा।

'कभी-कभी...'

उसने उसकी गुस्से भरी प्रतिक्रिया सुनने के लिए ज़्यादा देर तक इंतज़ार नहीं किया। वह उसके पिछले दरवाज़े से बाहर निकला, उसके घर और अपने घर को अलग करने वाली पाँच फुट ऊंची दीवार को फांदकर अपने पिछवाड़े में खड़ा हो गया।

रघुराम को कैप्टन हरीश शर्मा की पत्नी रूपल शर्मा से कोई मतलब नहीं था। वह तो बस एक अय्याश औरत थी। उस बंद बस्ती में हर कोई जानता था कि रघुराम उसके साथ संबंध बना रहा है, सिवाय उसके बेचारे पति के। रघुराम को अपने दोस्त की पत्नी के साथ सोने पर खुद से नफरत होती थी। वहीं दूसरी तरफ उसे इस तरह के गुप्त आनंद और मौज-मस्ती का मजा भी आता था। हैरी रूपल के लिए महंगे गहने और इत्र खरीदने के लिए खूब मेहनत करता था। और इन सब के बावजूद, रूपल ने रघुराम को धोखा दिया।

खैर, जिंदगी ऐसी ही है, हैरी, आगे मुश्किल समय आने वाला है!

वह रसोई के दरवाजे से चुपके से अपने घर में दाखिल हुआ। रसोइया अभी तक अपने कमरे से नीचे नहीं आई थी। अच्छा हुआ, रूपल के साथ रात बिताने के बाद कामिनी को खुश करने के लिए उसे वाकई बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।

कामिनी जवान और ऊर्जावान थी, जबकि रघु लगभग तैंतालीस वर्ष का हो चुका था। उसे अपनी तनख्वाह लिए लगभग छह महीने हो गए थे, क्योंकि उसका दावा था कि उसे उससे अपनी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई थीं। रघु ने यह सोचकर तिरस्कारपूर्वक सिर हिलाया; उसे आश्चर्य हुआ कि क्या वह उसका मालिक था या उसकी रखैल।

जब तक वह नहा-धोकर कपड़े पहनकर अपनी काली टाई बांधकर तैयार हुआ, कामिनी नाश्ता लेकर खड़ी थी। उसने दिन की शुरुआत हिंदी में शिकायतों की झड़ी लगाकर की। हमेशा की तरह, उसकी सारी शिकायतें रूपल के बारे में थीं।

‘Us randi ke saath the naa raat bhar? Mujhe maloom hai ji, us aurat ki to aisi ki taisi. Tum bachke rehna, woh tumhe pyar nahin karti, main karti hoon tumse pyar,’ she said vehemently.

रघु ने समझदारी से सिर हिलाया। उसे अपनी भड़ास निकालने देना ही बेहतर था। वह आज रात उसे समझा देगा। जब तक वह उससे निपट लेगा, तब तक वह एक स्वस्थ बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करेगी।

फ़ोन की घंटी बजी और उसकी बातों का सिलसिला रुक गया। रघुराम ने अपना ओमेगा फ़ोन देखा; सुबह के सात बजकर पैंतालीस मिनट हो रहे थे, व्यावसायिक कॉल के लिए बहुत जल्दी थी। वह कॉल का जवाब देने के लिए लिविंग रूम में चला गया।

‘Kya baat hai, dulha lag rahe ho! Mera dulha,’ Kamini smiled at him, her eyes glazed and all lusty.

‘चुप!’ रघुराम ने गुस्से से कहा, जिससे कामिनी चुप हो गई। कामिनी ने उसे देखकर मुंह बनाया और रसोई में वापस चली गई।

'हाँ...'

'बाबू गारू अंडी, नेनु, पोटी!'

रघुराम ने तेलुगु में 'पो-टी' बोलते हुए कहा, 'मुझे पोटी का नाम बताओ।' उन्हें अपनी मातृभाषा में बात करना हमेशा अच्छा लगता था। उनके मन में उस छोटे कद के हट्टे-कट्टे आदमी की छवि बन गई थी, जो सफेद

सूती कमीज और धोती पहने, पुराने डायल वाले फोन को पकड़े हुए, उस कमरे में बैठा था जो कभी महल का दरबार हुआ करता था।
‘बाबू, कुछ अजीब हो रहा है। कोटा में कुछ लोग हैं, वे सेना के हैं। वे आपसे बात करना चाहते हैं।’
‘सेना से?’ गुडेम में सेना क्या कर रही थी?
'वे कहते हैं कि वे एक अजीब नाम वाली कंपनी से हैं, लेकिन मैं सेना को जानता हूं। मैं उसमें रह चुका हूं।'
वे क्या चाहते हैं?
मुझे नहीं पता। कुछ दिन पहले कोई हॉल में घुस गया था। हमें स्मारक भवन के अंदर जाते हुए पैरों के निशान मिले, एक जोड़ी। मुझे नहीं पता कि वह कैसे बाहर निकला या वहां से कहां गया, लेकिन मुझे बताया गया है कि वह लापता है। गांव के कुछ लड़कों को एक लावारिस मोटरसाइकिल मिली। उन्होंने उसे खोलकर उसके पुर्जे छिपाने की कोशिश की। जाहिर है वे पकड़े गए। मैंने सुना है कि लापता व्यक्ति एलुरु का रहने वाला है और दिल्ली में सीएसआईआर में काम करता है। अब ऐसा लग रहा है कि सरकार और सेना उसकी तलाश में यहां आई हैं। मुझे यह सब समझ नहीं आ रहा है।
रघुराम ने माथे पर शिकन डाली। वे स्मारक कक्ष को यूं ही क्यों नहीं छोड़ देते? उन्हें आखिर जानना क्या था? बंद दरवाजों में ऐसी क्या बात थी जो लोगों में जिज्ञासा पैदा करती थी?
उन्हें मेरा नंबर दे दो।
रघु को गुडेम गए बारह साल हो गए थे। बारह साल वीरान। गुडेम ही वह जगह थी जहाँ उसे सचमुच घर जैसा महसूस होता था। यह उसका घर था, भले ही वह अपने परिवार की शाखा का इकलौता सदस्य बचा था।
‘बाबू, उनके पास तुम्हारा नंबर, तुम्हारा पता, सब कुछ है।’
रघु का माथा और भी सिकुड़ गया, 'क्या समस्या है, आखिर वे मुझे फोन क्यों नहीं कर सकते? वे मुझे गुडेम में क्यों ढूंढ रहे हैं?'
'बाबू...वे चाहते हैं कि आप जितनी जल्दी हो सके यहां आ जाएं।'
'क्या?'
उनके पास एक बेहद आधिकारिक दिखने वाला कागज़ है जिसमें वे स्मारक की ज़मीन को अपने उद्देश्यों के लिए अधिग्रहित करने की बात कह रहे हैं। वे कह रहे हैं कि वे एक बिजली उत्पादन केंद्र, एक पवनचक्की या पवन टरबाइन संयंत्र और न जाने क्या-क्या स्थापित करना चाहते हैं।
रघु कभी-कभी भूल जाता था कि पोटी कभी सिविल इंजीनियर थे और भारतीय सेना के इंजीनियरिंग कोर में काम कर चुके थे। उनके लिए पोटी आज भी वही मृदुभाषी युवा कार चालक थे जिनसे उन्हें प्यार हो गया था। हालांकि रघु उस समय बहुत छोटे थे और यह बात उन्हें पता नहीं थी, लेकिन परिवार ने पोटी की शिक्षा का खर्च उठाया था और पोटी ने कभी भी परिवार से संपर्क नहीं तोड़ा था।

सेना से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद वह गुडेम लौट आया था और अब रघुराम का भरोसेमंद लेफ्टिनेंट और सहायक सेवक था। पोटी कोटा का प्रबंधन करता था। सूर्य महल पांच सौ साल पुराने शाही परिवार का अंतिम अवशेष था, जो महाराजाओं की तुलना में बेशक छोटा परिवार था, लेकिन अपने समय में काफी सम्मानित और शक्तिशाली था।

रघु ने पूछा, 'क्या आपका मतलब मांग या अधिग्रहण से है?'

नोटिस में 'अधिग्रहण' लिखा है। दोनों में क्या अंतर है?

रघुराम ने कहा, "ठीक है, सरकार किसी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए संपत्ति का अधिग्रहण कर सकती है और वह संपत्ति उस तारीख से सरकार की हो जाती है। सरकार किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए संपत्ति का अधिग्रहण कर सकती है, जिसमें स्वामित्व संपत्ति के मूल स्वामी के पास ही रहता है और उद्देश्य पूरा होने पर सरकार द्वारा संपत्ति वापस कर दी जाती है। यही मूल अंतर है।"

क्या आप गुडेम आ रहे हैं?

'हम्म...देखते हैं, मैं लगभग पंद्रह दिनों में गुडेम पहुँच सकता हूँ। तुम उन्हें यह बता देना। क्या उन्होंने तुम्हें आधिकारिक दिखने वाले कागज़ की एक प्रति दी?'

पोटी ने दयालुतापूर्वक सिर हिलाया, इस बात से बेखबर कि रघु गुड़गांव से उसे ठीक से देख नहीं पा रहा था।

उन्होंने आगे कहा, 'हां, मेरे पास एक प्रति है।'

इसे मुझे फैक्स कर दो।

'ठीक है बाबू। तो क्या आप पंद्रह दिनों में आ रहे हैं? मुझे आपके रहने की जगह तैयार कर देनी चाहिए।'

अगले दो दिनों में ही शायद हो जाएगा, लेकिन उन्हें क्या पता होना चाहिए। सुदर्शन रेड्डी गारू से कहो कि मुझे मेरे मोबाइल पर कॉल करें। नहीं, ऐसा मत करो। उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलो और उन्हें बता दो कि मेरी तरफ से कॉल आने वाला है। पोटी, उन्हें मांग पत्र भी दे दो।

'मुझे इसके लिए विजयवाड़ा जाना होगा। बस से जाने में थोड़ा समय लगेगा, हालांकि मैं ट्रक से जा सकता हूं,' पोटी ने उम्मीद से कहा।

'मैं चाहता हूं कि तुम अगले दो घंटों के भीतर वहां पहुंच जाओ। अगर जरूरत पड़े तो ज़ेनॉन का इस्तेमाल करो।'

'सच में, क्या मैं कर सकता हूँ?' कारों के मामले में पोटी का व्यवहार इतना बचकाना था कि यह हास्यास्पद नहीं था।

रघु के टाटा ज़ेनॉन ऑफ-रोडर खरीदने के फैसले को मंजूरी देने के बाद से पोटी की ज़िंदगी बदल गई थी। वह उस खस्ताहाल गाड़ी को साफ करता, चमकाता और ऐसे चलाता जैसे वो मर्सिडीज हो। उसने उसमें अतिरिक्त फॉग लाइट्स लगवाईं और एक दमदार स्टीरियो सिस्टम पर तेलुगु फिल्मों के नए-नए गाने बजने लगे। वो गाड़ी उसकी नई दीवानगी बन गई थी।

‘हां मेरे बच्चे, तुम कर सकते हो,’ रघु ने धैर्यपूर्वक कहा।
क्या मुझे उसे बताना चाहिए कि आपने उसे क्यों फोन किया?
नहीं, उसकी चिंता मत करो। बस उसे बता देना कि मेरा फोन आएगा।
‘ठीक है बाबू, दो दिन में मिलते हैं।’
रघु ने रिसीवर वापस रख दिया। उसने एक रोटी उठाई, उस पर एक चम्मच तले हुए अंडे डाले और उसे बेलकर एक छोटी सी रोटी बना ली। नाश्ता करते-करते वह दरवाजे से बाहर निकल गया। उसने रिमोट लॉक दबाया और अपनी मैरून रंग की ई क्लास मर्सिडीज बेंज का दरवाजा खोल दिया। वह मुलायम चमड़े की सीट पर बैठ ही गया था कि कामिनी उसका लंच बॉक्स लेकर बाहर आ गई।
‘Itni pyar se banayee tumhare liye. Chod ke ja raha hai!’ she complained.
रघु ने उसे अपनी सबसे प्यारी मुस्कान दी।
कामिनी की कहानी अनोखी थी। उसकी शादी एक विवाहित व्यक्ति से इसलिए कर दी गई क्योंकि उसकी पहली पत्नी संतान उत्पन्न करने में असफल रही थी। बाद में उसे पता चला कि उसकी पहली पत्नी में कोई समस्या नहीं थी। दरअसल, उसके शुक्राणुओं की संख्या निर्धारित सीमा से काफी कम थी। अंत भला तो सब भला, इस कहावत को एक नया ही मोड़ देते हुए, उसकी दोनों पत्नियों ने उसे छोड़ दिया।
कहानी यहीं समाप्त होती है।
कामिनी अपने धोखेबाज़ परिवार के पास वापस नहीं लौटी। इसके बजाय उसने अपना रास्ता खुद चुना। इस चंचल स्वभाव वाली महिला ने रघु द्वारा रसोइया के रूप में रखे जाने से पहले कई छोटे-मोटे काम किए। उसे रघु पसंद आ गया। दो सप्ताह के भीतर ही इस छोटी सी खूबसूरत महिला ने रघु के साथ संबंध बनाने का रास्ता बना लिया, वैसे भी वकील को उसके साथ संबंध बनाने में कोई आपत्ति नहीं थी, खासकर इसलिए क्योंकि उसका बिस्तर उसके खाने से कहीं बेहतर था।
रघुराम एक अजीब तरह से आकर्षक थे। वे सहजता से काउंट ड्रैकुला का किरदार निभा सकते थे। लंबे लहराते बालों से सजा उनका गंभीर चेहरा, गहरी चमकती आंखें, तीखी नाक और भरे हुए होंठ, साथ ही काले कपड़ों के प्रति उनका लगाव, उन्हें एक अभिमानी और आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करते थे। वे अपने गुस्सैल स्वभाव और हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध थे। यौन संबंधों में अनैतिकता का पुट, और शांत अहंकार का मिश्रण, उनकी छवि को पूरा करता था।
मर्सिडीज कार गुड़गांव के साइबर सिटी स्थित रघु के आलीशान दफ्तर के बेसमेंट पार्किंग में पहुंची। रघु अपेक्षाकृत शांति से लिफ्ट में बैठकर बीसवीं मंजिल पर स्थित अपने दफ्तर तक गए, लेकिन उन्हें पता था कि जैसे ही लिफ्ट के दरवाजे खुलेंगे, उनकी यह शांति सुबह की धुंध की तरह गायब हो जाएगी।
उन्हें निराशा नहीं हुई।
बड़े-बड़े चांदी के अक्षरों में लिखा था कुमार, ब्रिंदा और यश एसोसिएट्स। उनके दफ्तर इमारत की सबसे ऊपरी पांच मंजिलों में थे। खूबसूरत रिसेप्शनिस्ट जूलिया ने रघु को एक औपचारिक मुस्कान दी, फोन पर

बात करती रही और साथ ही कूरियर वाले की डिलीवरी शीट पर हस्ताक्षर भी कर दिए। रघु ने उसकी एक साथ कई काम करने की क्षमता की प्रशंसा करते हुए मन ही मन सिर हिलाया।

उसने अपना कार्ड स्वाइप किया और पलक झपकते ही इलेक्ट्रॉनिक लॉक खुल गया। वह ऑफिस में दाखिल हुआ। बीसवीं मंजिल आयताकार आकार में फैली हुई थी और इसके तीन तरफ केबिन बने हुए थे, जबकि चौथी दीवार पर चार कॉन्फ्रेंस रूम एक-दूसरे से सटे हुए थे। ऑफिस के बीचोंबीच स्वास्तिक के आकार में बने छोटे-छोटे केबिन थे, जिनमें सचिवों और उनके प्रशासनिक उपकरणों, जैसे फैक्स मशीन, प्रिंटर आदि के लिए जगह थी। इस मंजिल पर पार्टनर और वरिष्ठ सहयोगी बैठते थे।

रघुराम कुछ ही दिनों में फर्म के पार्टनर बनने वाले थे। उनका कार्यक्षेत्र संवैधानिक कानून था, जिसका अर्थ यह था कि वे भारत के विभिन्न राज्यों के उच्च न्यायालयों और नई दिल्ली स्थित सर्वोच्च न्यायालय में मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व करते थे। फर्म की दूसरी वकील वृंदा खन्ना थीं, जो संस्थापक पार्टनर थीं। उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र कॉर्पोरेट और दूरसंचार कानून था।

ब्रिंदा अब फर्म में सक्रिय भागीदार नहीं थीं, वे अपने दो कॉलेज जाने वाले बच्चों की देखभाल करने और फर्म द्वारा अर्जित मुनाफे का आनंद लेने में ही संतुष्ट थीं। हालांकि, वे कभी-कभार परामर्श के लिए आती थीं और दूरसंचार क्षेत्र में कनिष्ठ सहयोगियों को दृढ़तापूर्वक मार्गदर्शन देने के लिए जानी जाती थीं।

रघुराम उस कमरे में रहता था जो पहले वृंदा का कमरा हुआ करता था। उसे वह कमरा पसंद था। उससे जुड़ी यादें भी उसे प्यारी थीं। पंद्रह साल पहले जब उसने फर्म जॉइन की थी, तब वह अपना ज़्यादातर समय वृंदा के साथ उसी कमरे में उसके केसों पर काम करते हुए बिताता था। यही वह कमरा था जहाँ उसने वृंदा के साथ प्रेम संबंध बनाए थे। वह बेहद खूबसूरत, हताश 44 वर्षीय तलाकशुदा महिला थी और रघुराम उससे उस समय करीब दस साल छोटा था। यह एक रात का रिश्ता था और उन्होंने इसके बारे में कभी बात नहीं की। दफ्तर में उनका यह संबंध एक खुला रहस्य था।

रघुराम को भर्ती करने वाला व्यक्ति, ज़ाहिर है, यश था, जो इंग्लैंड के ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में उसका साथी था। दस साल पहले, जब रघु चेन्नई उच्च न्यायालय में तेज़तर्रार श्रम वकील राघवन के लिए काम कर रहा था और अपने काम से पूरी तरह असंतुष्ट था, तब यश ने उसे अपनी फर्म में एक पद की पेशकश की। यश, यशवंत कुमार का बेटा था और फर्म के प्रबंध भागीदार, यशवंत कुमार को हर कोई जानता था।

‘सर, श्री कुमार आपसे कुछ बात करना चाहते थे। वे लॉर्ड डेनिंग रूम में हैं,’ रघु के पास से गुजरते हुए कुमार की सचिव कृतिका ने कहा।

‘वरिष्ठ या कनिष्ठ?’ उसने बिना रुके पूछा।

'वरिष्ठ।'

कुमार आमतौर पर मुकदमेबाजी में किसी नए मुवक्किल का परिचय कराने के लिए उसे फोन करता था, हालांकि रघुराम काफी हद तक इस प्रैक्टिस को एक लाभ केंद्र के रूप में चलाता था।

‘सुप्रभात श्रीमान कुमार,’ उन्होंने सबसे बड़े सम्मेलन कक्ष में प्रवेश करते हुए हल्के स्वर में कहा। कुमार मेज के दूसरे छोर पर बैठे थे, कद में छोटे और मजबूत शरीर वाले, घनी भौहों के नीचे तीव्र आँखों वाले व्यक्ति। उनकी फ्रांसीसी दाढ़ी साही के कांटों की तरह उभरी हुई प्रतीत होती थी।

‘सरकार के साथ यह सब क्या मामला है?’ कुमार ने रघु की ओर देखे बिना ही पूछा।

‘माफ़ कीजिए, श्रीमान कुमार, मुझे समझ नहीं आया।’

मुझे गृह मंत्री के निजी सचिव का फोन आया, जिसमें उन्होंने बताया कि आप किसी जांच में सरकार के साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं। उन्होंने सुबह छह बजे ही मुझे जमकर फटकार लगाई।

रघु ने वरिष्ठ सहयोगी को पूरी हैरानी से देखा।

'WHO?'

भारत के केंद्रीय गृह मंत्री के सचिव...और उन्होंने इस बारे में बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से बात की।'

रघु कुछ क्षणों के लिए चुप रहा।

'सर, मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं।'

कुमार ने झुंझलाहट दिखाते हुए माथे पर शिकन डाली। 'मेरा मानना है कि उन्हें आपके पैतृक नगर में आपकी किसी पुरानी संपत्ति के बारे में आपके सहयोग की आवश्यकता है। मंत्री जी के अनुसार, आप उनके साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं।'

रघुराम जोर से हँस पड़ा। जो भी उसे जानता था, उसे पता था कि यह उसके बढ़ते गुस्से का संकेत था। उसने बताया, 'मुझे सुबह करीब आठ बजे गुडेम में मेरे लोगों का फोन आया कि सरकार और सेना से कोई मुझसे मेरे गाँव में बात करना चाहता है। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि गृह मंत्री भी इसमें शामिल थे।'

‘सेना?’ कुमार असमंजस में पड़ गया।

'यह सही है!'

‘क्या मंत्रालय से किसी ने आपको फोन नहीं किया?’

'नहीं, महोदय।'

‘खैर, वह आदमी काफी खतरनाक लग रहा था। मुझे लगा कि तुम बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गए हो,’ कुमार ने कहा।

रघु को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसने कुमार को घूरकर देखा और फिर जानबूझकर अपने पैर हिलाने लगा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे स्कूल में किसी छोटे बच्चे को डांट पड़ रही हो।

"ठीक है, कृपया काम पर लग जाइए, देखिए कि ये लोग क्या चाहते हैं और आपको जो करना है वह कीजिए। अगर उन्हें वह नहीं मिला जो वे चाहते हैं तो वे बहुत ही क्रूर हो सकते हैं।"

‘ज़रूर, मैं इस पर गौर करूंगा,’ रघु गुस्से में मुड़ा और कमरे से बाहर निकल गया। जाते समय उसने लगभग दरवाज़ा ही उखाड़ दिया।

वह गुस्से से अपने कमरे में घुस गया, उसकी झुकी हुई आँखों से ज़हर निकल रहा था, मानो खून की प्यास में डूबा हुआ ड्रैकुला हो। गृह मंत्रालय ने निष्पक्षता नहीं बरती थी। पहली गलती यह थी कि उन्होंने उसकी संपत्ति के लिए गुडेम में अधिग्रहण नोटिस भेजा, जबकि उन्हें पता था कि वह गुड़गांव का निवासी है। दूसरी गलती यह थी कि उन्होंने उसके बॉस से शिकायत की कि वह उनके साथ काम नहीं कर रहा है, जबकि उन्होंने पहले उसे यह नहीं बताया कि वे क्या चाहते हैं।

कुछ तो गड़बड़ थी।

उनकी टीम की कृति ने उनके कोने वाले कार्यालय के खुले दरवाजे पर दस्तक दी।

'हाँ, क्या?'

चश्मा पहने लड़की अपनी बांह के कोने में कुछ फाइलें दबाए हुए कार्यालय में दाखिल हुई।

'रघु, त्रिविस्टा टेलीकॉम का मामला... तुम्हें सुबह सबसे पहले इसकी जानकारी चाहिए थी,' उसने धीमी आवाज़ में कहा। वह जानती थी कि जब उसका बॉस खराब मूड में होता था, तो वह पहले से कहीं ज़्यादा वैम्पायर जैसा दिखता था, स्क्रीन पर दिखाए गए दृश्यों के हिसाब से तो वह बेहद आकर्षक था। कृति को लगता था कि वह जब चाहे उसका गला पकड़ सकता है।

"अरे वाह, कृति मेरी जान, तुमने तो बस ही छोड़ दी। सुबह-सुबह की डेट के लिए तुम लेट हो गई हो," रघु गुर्राया, उसकी गहरी काली आँखें उसे भेदक निगाहों से घूर रही थीं। वह खुद को रोक नहीं पाई और खिलखिलाकर हंस पड़ी।

बुरी चाल।

'क्या मैंने किसी बात पर मजाक किया?'

'नहीं रघु, मुझे...माफ़ करना।'

'कामेश कहाँ है?'

कृति ने अपना सिर हिलाया।

तो फिर...किस बात का इंतजार कर रहे हो, उसे फोन करो।'

'ज़रूर रघु,' उसने कहा। वह पहले से ही अपने मोबाइल फोन पर थी।

सुनिए, मैं कुछ दिनों के लिए यहाँ से बाहर जा रहा हूँ, पंद्रह मिनट में कृष्णा अय्यर के कमरे में एक बैठक बुलाइए।

'क्या तुम कहीं जा रहे हो?'

'हां, मैं कहीं जा रहा हूँ।'

'कहाँ?'

'क्या...?' उसका चेहरा और भी गुस्से से लाल हो गया।

कृति ने एक बार फिर अपना सिर हिलाया। काश उसमें इतनी हिम्मत होती कि वह उसका सिर पकड़कर उसे ज़ोरदार चुंबनों से भर देती, उसे कुर्सी पर ही जकड़ लेती और फिर उससे पूछती कि वह कहाँ जा रहा है। लेकिन वह यह बात पूरी तरह जानती थी कि ऐसा कभी नहीं होने वाला... कभी नहीं।

'उस लड़की को क्या हो गया है?' रघु ने खुद से पूछा। महिलाओं के साथ अपने सारे हुनर के बावजूद, रघु उन्हें कभी समझ नहीं पाता था और न ही उसे इसकी परवाह थी। वह कुर्सी पर बैठ गया और फोन उठाया। उसने विजयवाड़ा में लंबी दूरी का नंबर डायल किया।

उन्होंने तेलुगु में पूछा, 'हैलो...नमस्कारमु, सुदर्शन रेड्डी गरु उनारा एंडी?' वह एक पल के लिए ध्यान से सुनता रहा।

जब उनसे पूछा गया कि वह कौन हैं, तो उन्होंने कहा, 'नेनु रघुराम सूर्याणी मत्लादुथुना।'

उसने कुछ पल इंतजार किया। एक बुजुर्ग आवाज ने उसका अभिवादन किया।

'नमस्कारल्लू बाबूगारु।'

'रेड्डीगारू, कुलासा ऐना?'

विजयवाड़ा के अस्सी वर्षीय वकील अभी भी सक्रिय रूप से वकालत कर रहे थे और रघुराम के ज्ञान में सबसे तेज दिमाग वाले लोगों में से एक थे।

'पोटी आज सुबह मिले आदेश के साथ किसी भी समय वहाँ पहुँच सकता है। मेरे पास अभी पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि सरकार महल और हॉल को अपने अधिकार में लेना चाहती है। उसके पास कानूनी कागजात पर हस्ताक्षर करने के लिए मेरा पावर ऑफ अटॉर्नी है...हाँ, मुझे पता है, आपको भी पता है। मैं चाहता हूँ कि आप हैदराबाद उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर करें, जिसमें कंपनी को...जिसका नाम आदेश में है...गुडेम स्थित मेरे परिसर में प्रवेश करने से रोका जाए। मुझे यह आदेश आज शाम तक चाहिए।'

'आपको पोटी से मिलने के लिए कहना होगा... ओह, वह आ रहा है,' वकील ने कहा।

'वह आपको वह पत्र या आदेश या जो भी हो, दे देगा जो उन लोगों ने उसे सौंपा है। महोदय, एक और बात, सूरीबाबू को फोन कीजिए, वह पुलिस अधीक्षक हैं...हाँ, ठीक है, आप उन्हें जानते हैं...अच्छा, उन्हें बता दीजिए कि मुझे गणवरम में चार्टर्ड हेलीकॉप्टर उतारने के लिए अनुमति चाहिए। मैं आज आ रहा हूँ।'

यशवंत कुमार से मुलाकात के बाद रघु ने अपनी यात्रा की तारीख आगे बढ़ाने का फैसला किया था।

'ठीक है...धन्यवाद रेड्डी गारू।'

उसने रिसीवर वापस रखा और कमरे से बाहर निकल गया। सुबह के साढ़े ग्यारह बज चुके थे। काम करना बाकी था।

अध्याय 13

एक समय की बात है, जावारम एक छोटा-सा जर्जर गाँव मात्र था। वहाँ किसानों के स्वामित्व वाले दो ही पक्के मकान थे, जिनके पास ज़मीन के सबसे बड़े टुकड़े थे, और एक छोटी सी नदी के किनारे कई झोपड़ियाँ थीं जिनमें किसानों के लिए काम करने वाले भूमिहीन मज़दूर रहते थे। आबादी का एक और वर्ग था जिनके पास ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़े थे और वे मिट्टी की दीवारों और छप्पर से बने आलीशान घरों में रहते थे। यह कर्ज़ में डूबा हुआ वर्ग था और स्थानीय साहूकारों के कर्ज़ वसूली एजेंटों और अपनी ज़मीनों पर नज़र रखने वाले बड़े किसानों के डर में जीता था।

जावाराम की ज़िंदगी तब पूरी तरह बदल गई जब कर्ज़ में डूबे किसान के शहर में पढ़े-लिखे युवा बेटे ने अपनी ज़मीन में ग्रेनाइट का विशाल भंडार खोज निकाला। किसान रातोंरात करोड़पति बन गया और बड़े-बड़े ज़मींदारों को भी पीछे छोड़ दिया। फिर दूसरे भी उसके नक्शे कदम पर चलने लगे। मज़े की बात यह है कि तथाकथित बड़े किसानों में से कोई भी इतना भाग्यशाली नहीं रहा।

इस तरह उस गाँव की सफलता की कहानी शुरू हुई, जिसने तब से अपना दर्जा एक 'शहर' में बदल लिया है, जिसमें एक तीन सितारा होटल, अत्याधुनिक मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल, स्कूल, बैंक, मजिस्ट्रेट कोर्ट और एक सरकारी गेस्ट हाउस है। जावारम के स्थानीय करोड़पति अब आंध्र प्रदेश के सबसे धनी लोगों में शुमार थे। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जावारम में राज्य के अधिकारियों और राजनीतिक आकाओं के लिए बना सरकारी गेस्ट हाउस एक विशाल, केंद्रीय रूप से वातानुकूलित हवेली थी, जिसमें एक जिम और एक स्विमिंग पूल भी था।

हाल ही में इस गेस्ट हाउस को सीएसआईआर-आरएडब्ल्यू द्वारा प्रायोजित 'ऑपरेशन इलेक्ट्रिक स्टॉर्म' नामक एक साधारण से कार्यक्रम का मुख्यालय बनाया गया था। ज़ाहिर है, इस कार्यक्रम का गुप्त नाम रखा गया था। बहुत कम लोगों के समूह के अलावा किसी को भी इसके बारे में पता नहीं था। जावाराम को मुख्यालय के रूप में चुनने का कारण यह था कि यह गुडेम से बारह किलोमीटर दूर एलुरु जाने वाले रास्ते पर स्थित था।

एक संक्षिप्त प्रेस विज्ञप्ति में यह घोषणा की गई थी कि भारत इलेक्ट्रिक जनरेशन कंपनी लिमिटेड नामक एक कंपनी ने गुडेम और उसके आसपास की भूमि का परीक्षण करने के लिए वैज्ञानिकों के एक समूह को नियुक्त किया है। औद्योगिक रूप से पिछड़े क्षेत्र के रूप में घोषित इस क्षेत्र में सरकार ने बिजली उत्पादन संयंत्र स्थापित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए निवेश करने का निर्णय लिया था।

कंपनी के ज्ञापन के अनुसार, इसका मुख्य उद्देश्य देश भर में बिजली उत्पादन संयंत्रों का एक नेटवर्क स्थापित करना था ताकि भारत की ग्रामीण आबादी की जरूरतों को पूरा किया जा सके और साथ ही औद्योगिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में रोजगार सृजित किया जा सके। एक महत्वपूर्ण तथ्य का कहीं उल्लेख नहीं किया गया था। भारत इलेक्ट्रिक जनरेशन कंपनी निजी स्वामित्व वाली कंपनी थी। इसे भारत सरकार द्वारा

अपने घोषित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नियुक्त किया गया था। कंपनी के शेयरधारकों और प्रथम निदेशकों के दस्तावेजों की जांच से पता चलता है कि यह किरोमल इंडस्ट्रीज की होल्डिंग कंपनी की सहायक कंपनी की सहायक कंपनी के स्वामित्व में थी।

स्थानीय और राष्ट्रीय समाचार पत्रों में इस परियोजना की खूब प्रशंसा की गई और इसे जनहितैषी सरकार द्वारा भारत के सुदूर कोनों तक आर्थिक विकास पहुंचाने का एक और प्रयास बताया गया। प्रारंभिक टीम कथित तौर पर जलविद्युत और पवन टरबाइन बिजली उत्पादन संयंत्र स्थापित करने की व्यवहार्यता का अध्ययन कर रही थी। स्थानीय पत्रकारों ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि गुडेम में जलविद्युत संयंत्र के लिए पर्याप्त जल संसाधन नहीं थे और न ही पवन टरबाइन लगाने के लिए आवश्यक पवन ऊर्जा घनत्व वाली जगहें थीं।

जावारम स्थित गेस्ट हाउस उस दिन एकदम शांत था। मेजर कांत, अपनी सेना की वर्दी उतारकर, सफेद कमीज और खाकी पैंट पहने, चमकीले बरगंडी रंग के जूतों में, अपने अस्थायी कार्यालय बने कमरे में इधर-उधर पैर पटक रहे थे। कमरे में मौजूद एकमात्र अन्य व्यक्ति, शीला, उन्हें बड़ी बेरुखी से देख रही थी।

‘हमें उच्च न्यायालय का एक आदेश मिला है जिसमें हमें सूर्या की संपत्ति में प्रवेश करने से मना किया गया है,’ मेजर कांत ने गुस्से से कहा। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे किसी उद्दंड नए कैडेट ने थप्पड़ मार दिया हो। कांत ने अपनी कमजोर मेज पर मुक्का मारा और खाली चाय के कप और पेन स्टैंड की खड़खड़ाहट से उन्हें संतुष्टि मिली।

‘मेजर, आप और क्या उम्मीद कर रहे थे? अगर आपने सूर्या पर हमारे द्वारा प्रसारित शोध पढ़ा होता, तो आपको पता होता कि उसमें एक सामंती सरदार की क्रूरता और एक बैले डांसर की नज़ाकत दोनों हैं। अरे, वो तो वकील है!’ शीला ने कहा।

‘तुम मुझसे क्या करवाना चाहती हो?’ कांट ने उस पर चिल्लाते हुए कहा।

उन्होंने कहा, 'जिस व्यक्ति की पुश्तैनी संपत्ति पर आप कब्जा करना चाहते थे, उसे अधिग्रहण का नोटिस देने से कोई और प्रतिक्रिया नहीं मिल सकती थी। आपको उसे विश्वास में लेना चाहिए था।'

और अगर उसका यहाँ जो कुछ भी हो रहा है उसमें हाथ हो तो? यहाँ कुछ लोग सोचते हैं कि सूर्य परिवार किसी तरह के शैतान की पूजा करता है और उन्होंने ही श्राप दिया है। हर मिथक और किंवदंती कुछ तथ्यों पर आधारित होती है। मुझे शक है कि सूर्य या उसके परिवार का इस घटना से कुछ न कुछ संबंध जरूर रहा होगा।

शीला ने अपनी आँखें घुमाईं। पहली बात तो यह थी कि यह एक प्राकृतिक घटना थी, कोई मानव निर्मित चीज़ नहीं जो किसी प्रक्रिया के अधीन हो, जब तक कि सूर्या या उसका पूरा परिवार कोई अलौकिक प्राणी न हो जो सिर्फ छींकने से ही हजारों टेराबाइट बिजली पैदा कर सके।

भगवान के लिए, रघुराम सूर्या भारत के सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करने वाले वकील थे, कोई अनपढ़ पंथवादी या मंगल ग्रह से आया कोई अज्ञानी नहीं। उन्होंने कांट को जवाब देना उचित नहीं समझा। उन्हें

कुछ भी बताने का कोई फायदा नहीं था। वह व्यक्ति इसलिए क्रोधित था क्योंकि किसी ने उसकी शक्ति पर सवाल उठाया था। बस! अदालत का आदेश अंतिम था, चाहे जो भी स्पष्टीकरण दिया जाए, उसे नकारा नहीं जा सकता था।
उसने इसके बजाय पूछा, 'आप क्या करने का इरादा रखते हैं?'
उन्होंने महत्वपूर्ण लहजे में कहा, 'मुझे मुख्यालय से स्पष्टीकरण लेना होगा।'
शीला लगभग हंस पड़ी।
'ठीक है। फिलहाल, मुझे नहीं लगता कि आज गुडेम जाने में कोई दिक्कत है। मुझे स्मारक हॉल में क्या है, इसके बारे में और जानकारी चाहिए और इसका एक तरीका है आसपास के लोगों से पूछना,' उसने कहा।
कांट ने उदासीनता से कंधे उचकाए। उन्होंने कहा, 'अगर आप चाहें तो कुछ कैडेटों को ले जा सकते हैं।'
शीला ने ठंडी मुस्कान के साथ कहा, 'मैं संभाल लूंगी, चिंता मत करो।'
शीला गुडेम पहुँचकर रात होने से पहले वापस आना चाहती थी, वह जगह उसे डरावनी लगती थी। चाहे वह कितनी भी तर्कसंगत तरीके से सोचती, उसे लगता था कि उस छोटे से गाँव में कुछ बुरा सा माहौल है। एक तो उसके बुरे सपने फिर से आने लगे थे।
'हम किससे मिल रहे हैं?' शीला ने पीएडी में अपने सहकर्मी विदुष से पूछा।
मंडल पंचायत प्रमुख हमसे औपचारिक रूप से मिलने को तैयार नहीं थे। मुझे बताया गया है कि राज्य प्रशासन के किसी अधिकारी ने उनसे इस बारे में बात की थी। वे राज्य सरकार की नजरों में बुरा नहीं दिखना चाहते, इसलिए वे अपने आम के बाग में हमसे अनौपचारिक रूप से मिलने के लिए राजी हो गए। उन्होंने कहा कि पंचायत के अन्य सदस्य भी वहां मौजूद रहेंगे।
'आमों का बाग? क्या यह थोड़ा घिसा-पिटा नहीं है? मेरा मतलब है, गांवों में होने वाली हत्याएं और अन्य भयावह घटनाएं आमतौर पर बागों और जंगलों के आसपास ही होती हैं, है ना?' शीला ने पूछा।
विदुष ने घबराकर कहा, 'महोदया, यह जगह मुझे पहले से ही डरा रही है। मैंने पीएडी के तहत तथाकथित भूतिया जगहों का दौरा किया है। लेकिन गुडेम में मुझे जो महसूस हो रहा है, वैसा पहले कभी नहीं हुआ। मुझे बस यही नहीं चाहिए कि मैं जंगल में बर्बरों द्वारा मारे जाने के बारे में सोचूं।'
'क्या आपको शाहरुख खान के साथ जिन अन्य जगहों पर आप गए थे, उनमें से किसी भी जगह पर कोई अलौकिक घटना देखने को मिली है?'
विदुष ने सिर हिलाकर 'नहीं' कहा।
शीला ने उसे तिरस्कार भरी नजर से देखा।
'क्या तुम्हें लगता है कि यही सच में आखिरी है?' उसने फुसफुसाते हुए उससे पूछा।
'मैं किसी भी चीज को 'अलौकिक' नहीं मानता... हर चीज का एक सामान्य स्पष्टीकरण होता है, लेकिन हां, मुझे लगता है कि उस स्मारक कक्ष के नीचे जो भी ऊर्जा है, वह भय जैसी आदिम भावनाओं को प्रभावित कर सकती है।'

‘तो क्या तब ग्रामीणों को भी डर नहीं लगना चाहिए?’
शीला ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'शायद शुरू में वे ऐसे ही थे। शायद वे भी हम सब की तरह इस बड़ी और बुरी दुनिया में डर के साथ जीना सीख गए हों, या शायद वे भी हम में से कुछ लोगों की तरह ज़ॉम्बी बन गए हों।'
विदुष चौंक गया।
‘जब आप पिछली बार गुडेम गए थे, तो आप किससे मिले थे?’ शीला ने पूछा।
'हम एक विशाल किले या महल जैसी किसी जगह पर गए जो बिल्कुल सुनसान इलाके में स्थित थी। वहां पोटी नाम का एक छोटा सा आदमी किले के सामने वाले आंगन में हमारा इंतजार कर रहा था।'
'हमसे आपका तात्पर्य उन चार कैडेटों से है जो आपके साथ आए थे।'
विदुष ने हल्के से सिर हिलाया। 'हाँ... खैर, वह हमें एक सामने वाले कमरे में ले गया, जो किसी तरह का स्वागत कक्ष था। वह कमरा दिल्ली में मेरे अपार्टमेंट से कई गुना बड़ा था। उसने लिफाफा खोला, आदेश पढ़ा और एकदम साफ अंग्रेजी में कहा कि वह अपने बॉस से बात करने के बाद हमसे संपर्क करेगा।'
'सच में? और आपको लगता है कि अंग्रेजी बोलना बुद्धिमत्ता की निशानी है?' शीला की आवाज सख्त थी।
'नहीं-नहीं, दरअसल, उसने किसान की तरह ही कपड़े पहने थे और मुझे उससे अंग्रेजी बोलने की उम्मीद नहीं थी।'
शीला ने सिर हिलाया। 'आगे बोलो।'
बस, हमने मुंह फेर लिया। वो आदमी बहुत निर्दयी था। उसने हमें घूर-घूर कर देखा, मानो कह रहा हो, ‘मैं तुम्हें मार डालूंगा!’ उसने कैडेटों से कुछ सवाल पूछे, मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि वे क्या थे और फिर हम वहां से चले गए।
‘और कुछ नहीं?’ शीला ने पूछा।
‘नहीं... बस इतना ही कि किला सुरक्षित महसूस हो रहा था, ठंड तो थी, लेकिन सुरक्षित महसूस हो रहा था। हाँ... अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो किले में रहते हुए हमें किसी तरह का डर या खौफ नहीं था,’ विदुष ने कहा।
शीला के चेहरे पर सोच-विचार के भाव थे। उसने और कुछ नहीं कहा। बाकी का सफर खामोशी में बीता, जब तक कि डर की पहली लहर ने उसे अंदर तक झकझोर नहीं दिया।
'यह वापस आ गया है,' दोनों ने एक साथ कहा और फिर एक दूसरे को घूरने लगे।
ऐसा लग रहा था मानो गहरी दबी हुई आदिम प्रवृत्ति शीला को किसी खतरे की चेतावनी दे रही हो, किसी शिकारी की मौजूदगी का आगाह कर रही हो। लाखों वर्षों के विकास के दौरान मन में गहराई से समाई हुई यह प्रवृत्ति किसी बात से जागृत हो उठी।
क्या?

कुछ दिन पहले जब वह पहली बार गुडेम में थी, तब उसे इसका एहसास हुआ था। उस समय, उसकी कार सड़क किनारे खराब हो गई थी। वह थोड़ा आराम करने के लिए बाहर निकली थी। उसे स्मारक परिसर दिखाई दिया, जो बाड़ और गेट से घिरा हुआ था, और परिसर के बीचोंबीच एक विशाल गिरजाघर जैसा हॉल बना हुआ था।

ठंडी हवा में कुछ अजीब सा था, जिसे परिभाषित करना मुश्किल था, एकदम सन्नाटा पसरा हुआ, मानो कोई देख रहा हो। बड़ी मुश्किल से वह वापस कार में बैठ पाई। जैसे-जैसे गाड़ी गाँव से दूर जाती गई, डर धीरे-धीरे ठंडे सन्नाटे में घुलता चला गया। उस रात शीला को भयानक सपना आया।

भय ने उसे दूसरी त्वचा की तरह जकड़ लिया। उसके पैरों तले ज़मीन एक विशाल मुँह की तरह खुल गई। वह नरक में खिंची चली गई। उसे दुर्गंध महसूस हो रही थी। भय उसके गले में अटक गया था। फूले हुए शरीर उसके चारों ओर लटके हुए थे, खाली आँखें खामोशी से शून्य में घूर रही थीं।

वह चीखना चाहती थी, लेकिन मुंह में भरी बदबूदार गंदगी के कारण वह केवल भयभीत होकर घुरघुरा रही थी। वह अपने हाथ-पैर पटक रही थी। उसकी नाक से हरे रंग की गाढ़ी हवा निकल रही थी। तभी किसी ने उसे सहारा दिया। उसके पति आलोक ने उसे तीन फुट गहरे नाले के पानी के नीचे छिपी सीवर लाइन से बाहर निकाला। गहरे भूरे आसमान से बरसती बारिश उस पर लगातार पड़ रही थी और वह फुटपाथ पर खांसते-उल्टी करते हुए रो रही थी।

आलोक फिर से खुले नाले में कूद गया। दो बार वह ऊपर आया, एक बार एक छोटी बच्ची को गोद में लिए, और एक बार एक बूढ़े आदमी को। वह फिर से नाले में कूद गया। शीला वहीं थी, उसके वापस आने का इंतज़ार कर रही थी। एक तरह से इतने सालों बाद भी वह उसका इंतज़ार कर रही थी। दर्द थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। उस समय वह चार महीने की गर्भवती थी। डॉक्टरों ने कहा कि शारीरिक मेहनत से ज़्यादा सदमे की वजह से उसके अजन्मे बच्चे की मौत हुई।

इतने समय बाद भी ऐसी रातें आती थीं जब वह पेट पर हाथ रखे और होंठों पर रोने की आवाज़ लिए जाग जाती थी। शीला आलोक और उन विचारों से अपना ध्यान हटाती थी कि अगर वे उस दिन खरीदारी करने न गए होते, अगर उसने आलोक की बात मानकर घर पर ही रहने का फैसला किया होता तो क्या होता।

उन्होंने एक आदमी को देखा, जिसने गंदी धोती और बिना आस्तीन की सूती कमीज पहनी हुई थी, हाथ में लाठी लिए हुए था और गाड़ी को रुकने का इशारा कर रहा था। ड्राइवर ने गाड़ी को सड़क के किनारे रोका और शीला ने खिड़की का शीशा नीचे कर दिया।

‘थमारु शीला गारा?’

शीला ने उसका नाम पहचान लिया और सिर हिलाया। फिर उसने ड्राइवर से कहा, 'उससे पूछो कि उसे क्या चाहिए।'

ड्राइवर और ग्रामीण ने बहुत तेजी से तेलुगु में बात की।

'महोदया, वह हमें उपवन तक ले जाने के लिए यहाँ आया है।'

उसे अंदर आने के लिए कहो।
कुछ ही देर में, सफेद रंग की टाटा सूमो कार, जिसके किनारों और पीछे की विंडशील्ड पर 'सरकारी सेवा में' लिखा हुआ था, सड़क से उतरकर खेतों में चली गई। पंद्रह मिनट की इस यात्रा में वे सलाद की सब्जियों की तरह इधर-उधर उछलते रहे, और अंत में वे एक आम के बाग में पहुँच गए।
'हैलो शीला गारू, चेलापति राजू का स्वागत है,' एक करुण व्यक्ति ने कहा।
शीला ने चिंतनशील भाव से सिर हिलाया। वे बेंत की कुर्सियों पर बैठे थे और एक चौकोर लकड़ी की मेज पर गरमागरम मलाईदार चाय के प्याले सुविधाजनक स्थानों पर रखे थे। वह मासूम सा दिखने वाला आदमी कुछ मिनट पहले ही आया था। मेज के चारों ओर बैठे बाकी लोग उदास थे। शायद उन्हें अजनबियों से बात करना पसंद नहीं था, जैसे कि गाँव के अधिकांश लोगों को, खासकर कमीज और पैंट पहने महिलाओं को।
‘मुझे पता है कि आप तेलुगु नहीं समझ सकते, इसलिए मैं अंग्रेजी में बोलूंगा। कृपया गलतियों के लिए क्षमा करें, धन्यवाद,’ उस व्यक्ति ने कहा।
शीला ने फिर सिर हिलाया। विदुष उसके ठीक बगल में बैठ गया; वह उन सभी को ऐसे घूर रहा था मानो वे किसी हत्या के मामले में मुख्य संदिग्ध हों।
‘बताइए महोदया, हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?’ राजू ने झिझकती हुई अंग्रेजी में उनसे पूछा।
‘श्री राजू, सरकार इस जगह पर पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर रही है। आपने शायद स्थानीय समाचार पत्रों में इसके बारे में पढ़ा होगा।’
अब राजू की बारी थी सिर हिलाने की।
हालांकि, ग्रामीणों में प्रतिरोध है। उन्हें लगता है कि हम उनकी जमीनें छीनने आए हैं। सच्चाई इससे बिल्कुल परे है। अगर सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो गुडेम के हर पुरुष, महिला और बच्चे को हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों से लाभ होगा।
‘महोदया, आप हमसे क्या चाहती हैं?’ चेलापति राजू ने फिर पूछा।
मैं चाहता हूं कि आप हमें जल्द से जल्द अपना काम शुरू करने में मदद करें।
‘हम आपकी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?’
हमें पवन ऊर्जा घनत्व के लिए स्थानों का परीक्षण करने की आवश्यकता है। हमने यहाँ आसपास जिन अन्य स्थानों का परीक्षण किया है, वे पर्याप्त अच्छे नहीं हैं। परीक्षण के लिए एकमात्र स्थान स्मारक हॉल के आसपास का खुला मैदान बचा है। आपको भूमि के मालिक श्री सूर्या को हमारे साथ सहयोग करने के लिए मनाना होगा।
चेलापति राजू ने शीला के अनुरोध को पंचायत परिषद के बाकी सदस्यों के सामने अनुवादित किया, जो तब तक इस मामले से अनभिज्ञ थे।

एक सदस्य ने चेलापथी राजू से तेलुगु में कहा, 'रात में शिकार करने वाला राक्षस उन्हें हॉल के पास भी नहीं आने देगा। वह उन सबको मार डालेगा। ये लोग यकीन नहीं करेंगे, चाहे हम उन्हें बता भी दें। हमें उन्हें बाबू गारू से निपटने देना चाहिए।'

'प्रिय महिला,' चेलापति राजू ने कहा, 'आप बाबू गारू से खुद बात क्यों नहीं करतीं?'

'किसके लिए?'

राजू मुस्कुराया। 'हम आज जो कुछ भी हैं, सूर्य परिवार की वजह से हैं। समझे? भूमिहीन, निर्धन मजदूर से आज हम अपनी जमीन के किसान हैं, क्योंकि राजा सूर्य प्रसाद सूर्य बहादुर गारू, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, ने अपने यहाँ काम करने वाले हर मजदूर और किसान को जमीन का एक टुकड़ा, एक पहचान और गौरव दिया। इसलिए हम उन्हें राजा गारू कहते थे, पुरुषों में राजा, न केवल उपाधि से बल्कि चरित्र से भी। रघुराम उनका पुत्र है। जो उनके पिता नहीं कर सके, उन्होंने कर दिखाया। उन्होंने, क्या कहें... उह... दो हजार गांवों के लोगों की देखभाल करने वाले ट्रस्ट और फाउंडेशन बनाए हैं। वे वकालत करके पैसे कमाते हैं, जबकि उनकी पारिवारिक संपत्ति हमारे लिए इस्तेमाल होती है। हम उन्हें बाबू गारू कहते हैं क्योंकि अब कोई राजा नहीं रहे, कम से कम हमें तो यही बताया जाता है।'

शीला ने उस आदमी की बात सुनी।

'और आप चाहते हैं कि मैं आपके बाबू गारू से बात करूं? क्या वह मुझसे बात करेंगे?'

'मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं दिखती? आप उसकी जमीन पर कब्जा करने से पहले उससे बात करने की कोशिश कर सकते थे।'

बोलने वाला चेलापति राजू नहीं था, न ही परिषद का कोई सदस्य। शीला यह देखने के लिए अपनी सीट पर घूमी कि वह तीखी आवाज़ किसकी थी। उसके सामने एक छोटा, गंभीर दिखने वाला आदमी खड़ा था। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और उसने बाकी किसानों की तरह बिना आस्तीन की सफेद सूती कमीज़ और साफ सफेद धोती पहनी हुई थी।

'आप कौन हैं?'

'अरे...ये तो पोटी है...जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था,' विदुष ने कहा।

'मेरा नाम कृष्णा नायडू है, महोदया। मैं महल का रखवाला हूँ,' पोटी ने बिना किसी उच्चारण की अंग्रेजी में कहा।

तो क्या आप मीटिंग का इंतजाम कर देंगे? क्या श्री सु... मतलब बाबू गारू, गुडेम में हैं?

'हम आपसे संपर्क करेंगे। चेलापथी के पास अपना फ़ोन नंबर छोड़ दीजिए,' पोटी ने कहा। छोटे कद के उस व्यक्ति ने परिषद के सदस्यों को एक बार सिर हिलाकर अभिवादन किया और फिर चला गया। वह एक ऑफ-रोडर में सवार हुआ और धूल का गुबार उड़ाता हुआ तेज़ी से निकल गया।

शीला कुछ कहने ही वाली थी कि उसने खुद को रोक लिया।

'हाँ?' चेलापति राजू ने कहा।

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘क्या फर्क पड़ता है!’ ‘तुम्हें पता है कि एक कानून है जिसने रियासतों को समाप्त कर दिया है और सारी जमीनें वैसे भी जब्त करके भूमिहीनों में बांटी जानी थीं। ऐसा तो है नहीं कि सूर्या के पिता ने तुम्हें जमीन देकर तुम लोगों पर कोई एहसान किया हो।’
चेलापथी राजू जोर से हँस पड़े। मानो किसी ने गोली चला दी हो। फिर उन्होंने अपने साथी परिषद सदस्यों को इसका कारण बताया। सभी सदस्य भी उनके साथ जोर से हँसने लगे, मानो कई बंदूकें एक साथ चल रही हों।
'महोदया, राजा गारू ने ये ज़मीनें हमें सन् 1946 में दी थीं, भारत की स्वतंत्रता से एक साल पहले। उस समय उनकी उम्र मात्र बारह वर्ष थी। आंध्र प्रदेश कृषि भूमि सुधार अधिनियम सन् 1973 में लागू हुआ। जब यह कानून लागू हुआ, तब राजा सूर्य प्रसाद का देहांत हो चुका था। क्या इसके अलावा कुछ और है?'
शीला कुछ देर तक उस आदमी को देखती रही। उसने वहां से जाने की कोई कोशिश नहीं की। 'क्यों? उसने ऐसा क्यों किया?'
क्योंकि उन्हें कुछ भी नहीं खोना पड़ा और दो हजार गांवों का प्यार मिला। उनकी शहरी संपत्तियां शाही परिवार के आराम से रहने के लिए पर्याप्त से अधिक हैं। देखिए, उन्हें अपना काम करने के लिए ग्रामीणों की सद्भावना की आवश्यकता थी।
और वह क्या हो सकता है?
चेलापति राजू ने आह भरी। 'यह तो सिर्फ बूढ़े पिची रथया ही बता सकते हैं। अगर आपको जवाब चाहिए तो उनसे बात कीजिए।'
‘तुम मुझे क्यों नहीं बता सकते?’ शीला ने पूछा।
क्योंकि मुझे नहीं पता कि उस मनहूस रात को राजा गारू ने क्या किया था। हममें से किसी को भी नहीं पता। हमें इसके बारे में कभी पूछने की मनाही थी। हममें से केवल एक ही व्यक्ति, जो 1971 में राजा सूर्य प्रसाद सूर्य की मृत्यु के समय वहाँ मौजूद था, वास्तव में यह बात जानता है और वह हैं पिची रथैया। मुझे नहीं पता कि वह आपको बताएंगे भी या नहीं, लेकिन आप कोशिश कर सकते हैं।
‘धन्यवाद,’ उसने कहा, ‘मुझे पिची रथाया कहाँ मिलेगी?’
चेलापति राजू ने एक गहरी आह भरी। ‘प्रिय महोदया, उनके नाम में 'पिची' शब्द नहीं है। मेरी मातृभाषा तेलुगु में 'पिची' का अर्थ 'पागल' होता है। वह उसी ग्रामीण सड़क पर रहते हैं जिससे आप यहाँ आई हैं; आप उसे पहचान लेंगी। वह सड़क सीधे उनकी पुरानी झोपड़ी तक जाती है। एक और बात, मैंने सत्यनारायण को उनके लापता होने से पहले यही कहा था। जिन चीजों को आप समझ नहीं सकते, उनमें दखल न दें।’
‘क्या साथी ने तुमसे बात की? उसके और उसके परिवार के साथ क्या हुआ?’
‘प्रिय महिला, अगर मैं आपको बताऊँ कि उस मूर्ख युवक के साथ क्या हुआ, तो आप विश्वास नहीं करेंगी। इसलिए मैं नहीं बताऊँगा। मैं केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि आपका भी वही हश्र न हो जो सत्यनारायण का हुआ था। आपसे विनती है, कृपया इस जगह से अपना संबंध न रखें।’

शीला ने अपनी ठंडी मुस्कान के साथ कहा, 'ओह, लेकिन यह मामला मुझसे संबंधित है, श्री राजू। फिर भी धन्यवाद।'

थोड़ी दूर गाड़ी चलाने के बाद वे एक बहती हुई धारा के किनारे बनी एक अकेली फूस की झोपड़ी पर पहुँचे। रेत के रंग को देखकर लगता था कि यह कभी नदी रही होगी। झोपड़ी के चारों ओर कुछ ताड़ और आम के पेड़ थे। तांबे जैसी त्वचा वाला एक बूढ़ा आदमी झोपड़ी के बाहर आरामकुर्सी पर बैठा था और काले चश्मे से आसमान को निहार रहा था। शीला ने ड्राइवर से रथाया के बारे में पता लगाने का अनुरोध किया।

'मैडम, काले चश्मे वाला अंधा आदमी पिची रथया है। वह कहता है कि वह आपसे मिलेगा,' ड्राइवर ने बताया।

शीला और विदुष उस आदमी के पास पहुँचे। उसने उन्हें अपने पास रखी दो पुरानी बेंत की कुर्सियों पर बैठने का इशारा किया। वह अंधा था। उनके हाव-भाव से उन्हें यह पता चल गया। वैज्ञानिकों ने उसे धन्यवाद दिया और कुर्सियों पर बैठ गए। उम्र के कारण उसका चेहरा झुर्रियों से भरा था, लेकिन वह हष्ट-पुष्ट था। रथया में एक ऐसी शांति और सहजता झलक रही थी जो आम लोगों में आसानी से नहीं मिलती।

'हम यहां इसके बारे में पूछने आए हैं...' ड्राइवर ने तेलुगु में कहना शुरू किया।

उस व्यक्ति ने झुर्रीदार लेकिन मजबूत हाथ उठाया। उसने एकदम सही अंग्रेजी में बात की।

'क्या आपको पता है मेरी उम्र कितनी है, महोदया?'

'नहीं महोदय।'

'पंचानबे।'

शीला उसे देखकर हिचकिचाई। उस आदमी के दांत मजबूत थे, हालांकि उनमें हल्के भूरे रंग के निशान थे, और उसके सिर पर सफ़ेद और काले रंग के बाल थे। अंधा होने के अलावा, वह हर तरह से स्वस्थ प्रतीत होता था और सत्तर साल से अधिक उम्र का नहीं लगता था।

'मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ?' जानकारी को समझने के लिए पर्याप्त समय देने के बाद रथाया ने पूछा।

'आप बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं महोदय; मैं सोच रही थी कि कैसे?' शीला ने उनसे पूछा।

रथया ने उदास मुस्कान के साथ कहा।

'मैं राजा गारू के साथ उनके घर पर दी जाने वाली शिक्षाओं में जाता था। पैरों की कार्यक्षमता खो देने के बाद वे नियमित स्कूल नहीं जा सकते थे। मैं उनका निजी अंगरक्षक था। लेकिन, वे मुझे भाई की तरह मानते थे। उन्होंने मुझे वह सब सिखाया जो वे खुद सीखते थे।'

बूढ़ा आदमी चुप हो गया, मानो अपने विचारों को इकट्ठा कर रहा हो। 'लेकिन,' रथाया ने अचानक कहा, 'मुझे लगता है कि आप मुझसे यह पूछने के लिए इतनी दूर नहीं आए हैं।'

शीला उस आदमी को और भी हैरानी से देखती रही। क्या उसे पता था कि वे उससे मिलने क्यों आए हैं? भला उसे कैसे पता चल सकता है?

मुझे आपसे राजा सूर्य प्रसाद के बारे में और उनके साथ क्या हुआ होगा, इस बारे में बात करने के लिए कहा गया था। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?
रथया बोलने से पहले कुछ क्षण तक सोच में डूबा रहा।
'प्राचीन भारत में माया की अवधारणा प्रचलित थी। माया से मेरा तात्पर्य भ्रम से है। पूर्वजों ने अपने ज्ञान से कहा था कि समस्त बुराई का मूल कारण भ्रम है, जो अनेक रूपों में प्रकट होता है। उनका कहना था कि यदि आप संसार को उसके वास्तविक स्वरूप में देखें, तो देखने के लिए कुछ भी नहीं है। हम जो कुछ भी सुनते, देखते और महसूस करते हैं, वह सब माया द्वारा हमारे मन पर खेला गया छल है। क्या आप इससे परिचित हैं?' उन्होंने शीला से पूछा।
जी हाँ... मैंने इसके बारे में सुना है। सब कुछ माया है और इसलिए भगवान के अलावा जो कुछ भी हम देखते हैं वह वास्तविक नहीं है। यह एक बहुत ही हिंदू और बौद्ध दर्शन है जो सांसारिक आवश्यकताओं और संपत्तियों का त्याग करके तथाकथित "स्वयं" की प्राप्ति का समर्थन करता है।
Rathaya nodded happily.
"फिर भी, आप जैसे वैज्ञानिकों को यह समझने में इतना समय लग गया कि उप-परमाणु स्तर पर, सब कुछ शून्य है और शून्य ही सब कुछ है, हम सब परमाणु हैं। इसलिए हमारी इंद्रियाँ माया से भ्रमित हो जाती हैं, वह छवि जो हमारा मन हमारे लिए बनाता है। जिसे हम अपने आसपास की दुनिया मानते हैं, वह वास्तव में मौजूद नहीं है, क्या आप सहमत नहीं होंगे?"
क्वांटम सिद्धांतों के प्रति उस अंधे व्यक्ति के सहज रवैये को देखकर शीला चकित रह गई।
'हां, आधुनिक वैज्ञानिकों को उस ज्ञान को समझने में काफी समय लगा जिसे आप 'प्राचीन लोगों का ज्ञान' कहते हैं।'
"लेकिन, प्रिय शीला गारू, जब तक यह सब खत्म नहीं हो जाता, भ्रम आपको अटूट रूप से बांधे रखेगा।"
'इसका क्या मतलब है? आपको मेरा नाम कैसे पता?' शीला ने थोड़ी झिझकते हुए पूछा।
रथया ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने कहा, 'बाबू गारू मुझसे मिलने नहीं आएंगे और मैं उनके पास नहीं जा सकता। आप जानती हैं, मैं आपकी दुनिया से अनजान हूं और मेरी दुनिया मुझे कहीं और ले जाएगी। आपको उन्हें मुझसे बात करने के लिए मनाना होगा। उन्हें अग्निपुत्र चलाना सीखना होगा, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। बहुत समय हो गया है कि वह अपने भाग्य से बचते रहे हैं। हमने उस राक्षस पर जो बंधन लगाए थे, वे कमजोर पड़ रहे हैं। वे ज्यादा देर तक नहीं टिकेंगे। वह बहुत जल्द मुक्त हो जाएगा।'
'ये कैसी बेड़ियाँ? ये कैसी घिनौनी हरकत? कौन इनसे मुक्त होगा? महोदय, आपकी बातें समझ में नहीं आ रही हैं।'
रथया मानो किसी दूसरी ही दुनिया में खोया हुआ था। उसने कहा, 'देखो, प्रयोग विफल हो गया। इसीलिए सेबल पार्च उस चीज़ को रोकने की कोशिश कर रहा है जिसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए था। यह रोकथाम

हमेशा के लिए काम नहीं करेगी। यह केवल एक अस्थायी उपाय था, ताकि कुछ समय मिल सके। लेकिन हम बहुत समय गंवा चुके हैं।'
आप किस प्रयोग की बात कर रहे हैं?
'यह विश्वासघात था... विश्वासघात ने हम सबको बर्बाद कर दिया।'
'कृपया, आपको और स्पष्ट बताना होगा।'
'कल जब आप बाबू गारू से मिलें, तो उन्हें मेरे पास ले आइए। कृपया... आपको उन्हें मनाना होगा। केवल आप ही ऐसा कर सकते हैं।'
शीला का मुंह खुला का खुला रह गया। वह बूढ़ा आदमी सचमुच समझ से परे था। उसे कैसे पता चला कि शीला अगले दिन रघुराम सूर्या से मिलने वाली है?
शीला को पूरा यकीन था कि वे ही उसके पहले आगंतुक थे। पंचायत के सदस्य उनसे पहले नहीं आ सकते थे। कई मील तक, उस बाग से रथाया की झोपड़ी तक जाने का यही एकमात्र रास्ता था। फिर भी, रथाया, जिसे पागल समझा जाता था, जानता था कि वह अगले दिन रघुराम सूर्या से मिलेगी। क्या उसकी किसी विलक्षण क्षमता के कारण ही लोग उसे पागल कहते थे? शीला ने सोचा कि बूढ़े आदमी से पूछना ही बेहतर होगा।
'आपको कैसे पता चला कि मुझे कल उनसे मिलना है?'
रथया मुस्कुराई, "दुनिया कितनी छोटी है! बात तो दूर की बात है, महोदया। आखिर हम सब परमाणु ही तो हैं, क्या आपको नहीं पता कि परमाणु आपस में संवाद करते हैं? क्या आपको नहीं लगता कि वे आपस में बात करते हैं?" आदमी हँस पड़ा। "आखिरकार, कोपेनहेगन व्याख्या ने यह स्थापित किया है कि परमाणु कण अवलोकन किए जाने पर एक दूसरे से संवाद करते हैं। क्या मैं गलत हूँ?"
इस समय तक शीला की आँखों में आँसू आ रहे थे। उसे ठीक से पता नहीं था कि वह क्यों रो रही है। यह निश्चित रूप से शोक नहीं था। यह आश्चर्य से भरा था। एक जादुई प्राणी उसके सामने प्रकट हुआ था और वह उसकी क्षमताओं से मंत्रमुग्ध हो गई थी। इतना अधिक कि वह बस रोती रही। किसी भी चीज़ ने उसे इस असाधारण बूढ़े व्यक्ति के लिए तैयार नहीं किया था।
'नहीं महोदय, आप गलत नहीं हैं,' उसने कांपती हुई आवाज में कहा।
"लेकिन तुम्हें नहीं पता कि मैं कैसे सही हूँ।" वह आदमी खिलखिलाकर हँसा, जिससे उसका गंभीर चेहरा मानो सांता क्लॉज़ की तरह खिल उठा।
'परमाणु मुझे बहुत कुछ बताते हैं। लोग सोचते हैं कि मैं पागल हूँ, पिची रथाया, लेकिन क्या मैं सच में पागल हूँ? मिस शीला, पागलपन क्या नहीं है? मैं इस बात का जीता-जागता सबूत हूँ कि क्वांटम भौतिकी, या कम से कम इसका कुछ हिस्सा, सही है। अगर मैं आपसे कहूँ कि यह अंधा बूढ़ा आदमी सब कुछ देखता है, लेकिन उप-परमाणु स्तर पर? अगर मैं आपसे कहूँ कि यही मेरा अभिशाप है? अगर मैं आपसे कहूँ कि मरने के बाद

भी मैं जीवित रहता हूँ, इसलिए मृत्यु भी एक भ्रम है? मैं एक ही समय में हर जगह और कहीं नहीं हूँ। यकीन करना बहुत मुश्किल लगता है, लेकिन मुझे पता है।'

जी हाँ। यह विश्वास करना बहुत मुश्किल है कि आपको यह सब पता है।

'अरे! लेकिन अग्निपुत्र का उपयोग न कर पाने का यही दुर्भाग्यपूर्ण दुष्प्रभाव है।'

अग्निपुत्र! रथया ने दूसरी बार इसका जिक्र किया था।

'अग्निपुत्र क्या है?' उसने कांपती हुई आवाज में पूछा।

रथया ने उसके सवाल को अनसुना कर दिया।

'कृपया मेरे दूत बनिए, मेरे प्रिय वैज्ञानिक। बाबू गारू को मुझसे मिलने के लिए कहिए। बहुत कुछ चर्चा करनी है।'

उसने अपने काले चश्मे उतारे और अपनी निगाहें उस पर टिका दीं।

शीला जम सी गई। उसका आश्चर्य रेगिस्तान में बर्फ के टुकड़े की तरह पिघल गया। उसकी जगह दहशत ने उसे जकड़ लिया। घोर दहशत। वह विदुष की तेज़ साँसें सुन सकती थी। उनका ड्राइवर अपने पैरों पर खड़ा था।

रथया की आंख में पुतली नहीं थी। प्रत्येक आंख के सफेद भाग पर एक खून जैसी लाल नस क्षैतिज रूप से एक धागे की तरह फैली हुई थी।

बूढ़े आदमी ने अपना चश्मा वापस लगा लिया। उसने फिर से आकाश की ओर देखना शुरू कर दिया।

यह बर्खास्तगी थी। शीला को अंदर ही अंदर पता था कि वह उनकी हर हरकत पर नज़र रख रहा है और रघुराम सूर्या से मिलने और उसका संदेश देने तक उन पर नज़र रखता रहेगा। उसके बाद क्या होगा, यह उसे नहीं पता था। वह बस इतना जानती थी कि शतरंज के खेल में मोहरे की तरह, वह रघुराम सूर्या की ओर खिंची चली जा रही थी, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी वह एक ही समय में प्रशंसा और घृणा करती थी।

अध्याय 14

ज़ेनॉन गाड़ी धीरे से रुक गई। रघु गाड़ी से बाहर निकला। उसने गले से खुली काली टी-शर्ट और काली जींस पहनी हुई थी। वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा, अपने महल के नज़ारे को निहारता रहा। यादें उसके मन में ज्वार की लहर की तरह उमड़ आईं। हर बार जब वह अपनी जड़ों में लौटता, तो ऐसा ही होता, मानो वह जगह उससे विनती कर रही हो कि वह उसे न भूले।

रघु बरामदे की ओर जाने वाली खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ रहा था, लेकिन उसके मन में वही दस साल का लड़का था जो अपनी दादी का हाथ एक तरफ और अपनी माँ का हाथ दूसरी तरफ पकड़े हुए उन्हीं सीढ़ियों पर चढ़ रहा था जो उसके महल की ओर जाती थीं। पोटी अपने सामान के साथ रघु के पीछे-पीछे चल रहा था। एक नौकर आगे बढ़ा और पोटी को उसके काम से मुक्त कर दिया।

कृष्णा नायडू कद में छोटे थे, लगभग पाँच फीट के, इसीलिए उनका उपनाम पोटोडु था, जिसका तेलुगु में अर्थ होता है 'छोटा आदमी'। लगभग सभी उन्हें पोटी कहकर बुलाते थे। उनकी मजबूत काया और तेज बुद्धि ने कद की कमी को पूरा कर दिया था।

'मैंने महीनों से ऊपर वाले कमरे नहीं खोले थे, जगह साफ करने का समय नहीं मिला था, हम सातों को इसे ठीक करने में पूरा एक दिन लग गया, काश मैं इस जगह को और अधिक बार साफ कर पाता,' पोटी ने कहा।

'इस जगह की सफाई? इसमें तो सालों लग जाएंगे...' सूर्या हंस पड़ी।

'सिर्फ आपका कमरा और केंद्रीय आंगन, मैं खजाना कक्ष या शस्त्रागार की सफाई करने की उम्मीद भी नहीं कर सकता, हालांकि कभी-कभार मैं प्रार्थना कक्ष की भी सफाई कर देता हूं।'

'खज़ाना-कोषागार, शस्त्रागार... ये तो किसी और ज़माने की बातें हैं। मैं इस जगह का ज़िक्र अपने दोस्तों से भी नहीं करता, उन्हें यकीन ही नहीं होगा,' रघु ने व्यंग्य से कहा।

'क्या तुम्हें अब भी वो सपना आता है जिसमें कोटा में तुम्हें अंडरवियर में दौड़ाया जाता है?' पोटी की आँखों में शरारत झलक रही थी।

'ओह हाँ...पोटी...लेकिन अब उतनी बार नहीं जितनी बार पहले जाती थी। फिर भी मुझे इससे बहुत डर लगता है। सबसे अच्छी बात यह है कि मुझे नहीं पता कि मेरा पीछा कौन कर रहा है। दो लोग हैं, एक आदमी जिसके हाथ में दो तलवारें हैं और कुछ और भी है जिसे मैं ठीक से देख नहीं पा रही हूँ।'

'मुझे लगता है, उह...क्या आपको यकीन है कि यह आपकी सहेलियों द्वारा आपका पीछा किए जाने का सपना नहीं था?'

रघु ने शैतानी मुस्कान के साथ कहा, 'मुझे यकीन है कि गर्लफ्रेंड तो नहीं... मैं क्यों भागूंगा? वैसे भी, यह मेरे बचपन का एक बुरा सपना है।'

'शायद आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास?' पोटी ने मजाक में कहा।

रघु पुराने किले के भूतल पर बने मुख्य हॉल में दाखिल हुआ। चावल, गन्ने और आमों से भरे बोरे... इन सबकी मिली-जुली, असहनीय खुशबू उसके मन में चित्र उफान मार रही थी। हर बार ये खुशबू उसकी आँखों में आँसू ला देती थी। किले से दूर रहने का उसका समय उतना ही दर्दनाक होता था। चूना पत्थर की दीवारें, ऊँची, लगभग अंधेरी छत पर लगे विशाल लकड़ी के शहतीर, किले का सन्नाटा अकेलेपन को ऐसे उजागर कर देता था जैसे कोई गंदा नाला हो। एक ऐसा गहरा खालीपन जिसे कभी भरा नहीं जा सकता था। अपनों से मिला वो प्यार, जिसकी भरपाई कोई नहीं कर सकता था। यह बिछड़ना इतना दर्दनाक था कि वो अब कभी किसी से प्यार नहीं कर सकता था।

रघु को लगभग अपनी दादी की छड़ी की आवाज सुनाई दे रही थी, जो पहली मंजिल के घुमावदार बरामदे की ग्रेनाइट की पट्टियों पर पड़ रही थी, छक, छक!

'बाबू रघु, कुएँ के ज़्यादा पास मत जाओ... मेरे बेटे...' उसके शब्द अब भी उसके मन में गूँज रहे थे। उसके होंठ भावनाओं के उफान से काँप रहे थे, मानो कोई टूटा हुआ बांध हो। 'नानामा,' उसने खाली कमरे में उसे पुकारा, हालाँकि वह बहुत पहले ही जा चुकी थी।

उसने अपने महल के बीस फ़ुट लंबे रोज़वुड के दरवाजों पर हाथ फेरे। सुबह की धूप में वे मंद-मंद चमक रहे थे। जटिल नक्काशी से सटी उसकी त्वचा, और उस पर जमी धूल, मानो कोई बिछड़ा प्रेमी हो।

रघु को लगा कि पोटी ने इस जगह को जितना बताया था, उससे कहीं बेहतर ढंग से रखा था। छोटी-छोटी मेजें अभी भी सही सलामत थीं, जिनके पैर हाथी की सूंड जैसे बने थे। कारीगरी में भारतीय कला पर पड़े कई प्रभावों का मिश्रण था - मुगल, यूरोपीय और हिंदू। सूर्या धीरे से एक सोफे पर बैठ गया; उसकी उंगलियों को कपड़े की जानी-पहचानी मखमली कोमलता का एहसास हुआ, तभी उसकी नज़र कमरे के कोने में रखे पुराने ग्रामोफोन रिकॉर्ड प्लेयर पर पड़ी, जिसमें स्पीकर भी लगे थे।

'यह अभी भी काम करता है, लेकिन सुइयों को घिसना पड़ेगा। अगर आप चाहें तो मैं किसी लड़के से करवा सकता हूँ,' पोटी ने कहा। रघु को पता ही नहीं था कि पोटी ठीक उसके पीछे खड़ा है।

'जी हाँ,' रघु ने भारी आवाज़ में कहा।

'बाबू, समझ लो काम हो गया।' पोटी कमरे से बाहर निकल गया और मुसली, चंदर, येनकाना और अपने बाकी साथियों को बुलाया।

सूर्य अब चौकोर केंद्रीय आंगन में था। ठीक बीच में केले के पेड़ों का एक झुंड था, बिल्कुल पुराने दिनों की तरह। चारों ओर बरामदे कोटा के अन्य हिस्सों की ओर जाते थे। एक बरामदा विशाल पूजा कक्ष की ओर जाता था, जिसमें हिंदू धर्म के लगभग सभी देवी-देवताओं की असंख्य तस्वीरें और चित्र लगे हुए थे।

इसके सामने वाला कमरा विशाल रसोईघर में खुलता था, जहाँ कम से कम पाँच रसोइये और दस सहायक हमेशा काम पर लगे रहते थे, और दिन के समय के अनुसार लगातार आने वाले मेहमानों—किसानों, सरकारी एजेंटों, रिश्तेदारों, दोस्तों—के लिए उपयुक्त भोजन तैयार करते थे। एक और दरवाजा खजाने में खुलता था, जो मजबूत दीवारों और लोहे की जाली से बनी एक अंडाकार संरचना थी।

रघु को हमेशा से ही राजकोष कक्ष से डर लगता था। गंभीर चेहरे वाले हट्टे-कट्टे आदमी, जिनके हाथों में पट्टे पर बंधे कुत्ते होते थे, प्रवेश पर रोक लगाने के लिए पहरा देते थे और जब वह बच्चा था और लोहे की जाली से घिरे उस कमरे में जाने की कोशिश करता था, तो वे उसे धीरे से मना कर देते थे।

जब उसने दरवाजे से झाँका, तो उसे जंग लगी लोहे की सलाखों वाला एक जर्जर कमरा, खाली टूटे-फूटे तहखाने और बुझी हुई बत्तियाँ नज़र आईं। खजाने की इमारत भी बाकी सब चीजों की तरह अब एक अवशेष मात्र रह गई थी। किसी कारणवश वह कमरा उसे स्टीफन हॉकिंग्स की किताब 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' के एक अंश की याद दिला रहा था। रघु को शब्दशः याद तो नहीं था, लेकिन उसका सार यह था कि ब्रह्मांड का स्वभाव अव्यवस्था है और यह जितनी अधिक फैलेगी, उतनी ही अधिक अव्यवस्था बढ़ेगी।

मोबाइल फोन की घंटी बजने से रघु वर्तमान में लौट आया। उसने यंत्र निकाला।

डिस्प्ले पर घोषणा हुई, 'रूपल बेबी'।

‘हे,’ उसने कहा।

‘अरे, तुम आखिर हो कहाँ?’

‘बाहर...तो क्या चल रहा है?’

‘बाहर जाने का क्या मतलब है? रघु, क्या तुम शरारत कर रहे हो?’

'जब मैं बाहर कहती हूं, तो मेरा मतलब सच में बाहर ही होता है, रूपल। तुम्हें बस इतना ही मिलेगा... अब क्या बचा है?'

‘हम्म... सेक्सी, मुझे पसंद है... मैं तुम्हें वश में कर लूंगी, शेर के बच्चे।’

सूर्या हँस पड़ा। ‘मैं थोड़ी देर में वापस शहर आ जाऊँगा। शायद तब आप मुझे फ़ोन कर लें।’ उसने जवाब का इंतज़ार किए बिना ही फ़ोन काट दिया।

उसने खुद को धातु की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए पाया जो पहली मंजिल के बरामदे की ओर जाती थीं।

बिना पॉलिश किए ग्रेनाइट पर बनी 'चक, चक' की आवाज करती हुई छड़ी।

रेशमी साड़ी में लिपटी अपनी दादी की वह याद उसके मन में कौंध गई और वह सिसकियाँ लेते हुए रोने लगा।

उसके कोमल चेहरे और दयालु आँखें केवल उसके और उसकी विधवा माँ के लिए थीं। बाकी सबके लिए, वह रानी गारू, महारानी माँ थी, जिसकी आँखों में अधिकार झलकता था और मुँह उसके चेहरे पर एक कठोर रेखा की तरह था।

वह अंबारी पर चढ़ गया, जो बरामदे का उभरा हुआ हिस्सा है, जहां से उसके पूर्वज हाथियों पर सवार होकर निकलते थे या अपनी प्रजा की पीड़ा सुनते थे।

‘बाबू...पीछे हट जाओ, ढांचा कमजोर है,’ पोटी ने सामने के आंगन से चिल्लाकर कहा।

रघु मुड़कर सूर्य शासकों के निजी आवास के द्वार से अंदर चला गया। कमरों का आकार उसे हमेशा आश्चर्यचकित करता था। उसने, कई बार, इस बात पर विचार किया कि पुराने समय की तुलना में जीवन कितना सीमित हो गया है।

संपीड़ित सॉफ़्टवेयर फ़ाइलों की तरह, जीवन अनगिनत घटनाओं से भरा हुआ था ताकि और भी अर्थहीन चीज़ों के लिए जगह बनाई जा सके। लोग भौतिक इच्छाओं के मायावी सुख की तलाश में बेतहाशा भाग रहे थे—नवीनतम कार, सबसे आकर्षक महिलाएं, सबसे सुंदर घर, मोटी धनराशि। उन्होंने एक बार भी यह नहीं सोचा कि यह सब उन्हें कहाँ ले जा रहा है, वे क्या खो सकते हैं।

वहाँ दो शयनकक्ष थे, एक उसके बाईं ओर और एक दाईं ओर। बाईं ओर वाला कमरा उसकी दादी का था। दाईं ओर वाला कमरा उसका और उसकी माँ का था। रघु ने अपनी दादी के कमरे में जाने का फैसला किया। गुंबदनुमा आकार और लंबी-लंबी ब्लेडों वाला विशाल बिजली का पंखा चालू करते ही बिना किसी आवाज के चलने लगा। हाथ से चलने वाले पारंपरिक पंखे हटा दिए गए थे, हालांकि उनके फिटिंग अभी भी दीवार पर यादों की तरह लटके हुए थे।

रेशमी मच्छरदानी और मुलायम सूती रजाई वाले गुलाब की लकड़ी के पलंगों को देखकर रघु को अपनी दादी की बाहों में सिमटने की गर्माहट की याद सताने लगती थी। आठ साल का वह भोला-भाला बच्चा अपने दादाजी के शिकार अभियानों और पिता के महल के तहखाने में राक्षसों से लड़ने की कहानियाँ सुनता था। मज़े की बात तो यह थी कि महल में कोई तहखाना नहीं था। खैर, रघु ने सोचा, कहानी सुनाने वालों के पास हमेशा कल्पना की कोई कमी नहीं होती।

गुड़गांव स्थित उनके 'विला' से लगभग तीन गुना बड़ा आयताकार भोजन कक्ष था। कमरे के ठीक बीच में रखी भोजन मेज के चारों ओर चौंसठ कुर्सियाँ थीं।

उसने गिनती नहीं की।

वह जानता था।

जैसे ही सुबह सर्द दिसंबर की दोपहर में बदल रही थी, वह एक कुर्सी पर बैठ गया।

‘बाबू... आपका लंच, गौराया आपके लिए सेवानिवृत्ति से वापस आ गई हैं,’ पोटी हँसी। कुछ युवा कर्मचारी पीतल के बर्तनों से सजी ट्रे लेकर आए। मटन कोरमा, चावल और चारू की खुशबू पूरे कमरे में फैल गई।

‘गौरय, हे भगवान, क्या वह बूढ़ा आदमी अभी भी जीवित है?’ सूर्य ने आश्चर्य से पूछा। रघु को तो बचपन से ही गौरय बूढ़े लगते थे।

'अरे हाँ... वो बूढ़ा बंदिकूट अभी भी यहीं है। वो नीचे तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। मुसली, उसके साथी और रामदास भी वहीं हैं।'

‘रामदास? वही तो गार्ड्स के आखिरी कमांडर थे?’

'जी बाबू।'

‘पिची रथया कैसे हैं? क्या वो अब भी मुझसे मिलने पर अड़े हैं? याद है, वो मुझे कितनी सारी बातें बताने का दावा करते थे? मैं बचपन में उनसे बहुत डरती थी। मुझे लगता है, उनकी आँखों की वजह से, वो पूरी तरह सफेद थीं और उनमें एक लाल नस थी; वो... किसी तरह अमानवीय लगते थे।’
पोटी ने थोड़ी उदास मुस्कान दी।
‘वह आखिरी व्यक्ति था जिसने आपके पिता को जीवित देखा था और हमें वास्तव में नहीं पता कि हॉल के अंदर क्या हुआ था। उन्होंने हममें से किसी को भी कुछ नहीं बताया; अभी भी नहीं बताया है, रथाया का कहना है कि यह बात सिर्फ आपके लिए है।’
रघु ने कोई जवाब नहीं दिया। वो परियों की कहानियों के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका था। साथ ही, वो खाने में इतना मशगूल था कि उसने खाना खत्म किया और संतुष्टि से एक डकार ली। उसने पीतल के कटोरे में सुगंधित पानी से अपने हाथ धोए।
बाबू, क्या तुम्हें पता है कि आजकल तुम बिल्कुल अपने पिता की तरह दिखते हो? वो ठीक उसी जगह बैठते थे जहाँ तुम अभी बैठे हो। मुझे पता है कि तुम्हें उनकी याद नहीं होगी, क्योंकि जब तुम कुछ ही महीनों के थे तब उनका निधन हो गया था। मैं तब बहुत छोटी बच्ची थी। तुम्हारी माँ, चिन्ना रानी गारू, ज्यादातर रोती रहती थीं और रानी गारू बहुत दुखी थीं।
क्या मेरी माँ को बहुत कष्ट सहना पड़ा?
'हां, शुरू में तो उसने ऐसा ही किया था। उस समय वह मुश्किल से उन्नीस साल की थी और एक मां थी। उसका जीवन काफी निराशाजनक था। उसने धर्म का सहारा लिया। हम उसे मद्रास ले गए थे। आपको याद है?'
रघु ने सिर हिलाते हुए कहा, 'मैं सात साल का था। मुझे याद है।'
“समस्थानम से अब इस पुराने कोटा और हम जैसे अवशेषों के अलावा कुछ भी नहीं बचा है, लेकिन हमें अच्छे और बुरे दोनों दिन याद हैं। यहाँ के सभी किसान आपके पिता की बदौलत ही भूमि मालिक हैं। दो हज़ार ऐसे गाँव हैं जो इस कोटा को हमेशा जीवित रखेंगे, बाबू।”
रघु ने सिर हिलाकर अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया।
“दूसरों को यह धूल से भरा पुराना कोटा लग सकता है, लेकिन यहाँ कभी राजाओं का वास था। बाबू, उनका खून आप में दौड़ता है... इसे मत भूलना। हम आपकी प्रजा हैं और आप हमेशा हमारे राजा रहेंगे।”
‘पोटी... मेरे पिता ने जो किया, वो उन्होंने किया। मैं कभी उनकी बराबरी नहीं कर सकती, लेकिन जब मैं यहाँ, इस सुनसान घर में खड़ी होती हूँ, तो मुझे पता चलता है कि कभी वो यहीं रहते थे और लोग उन्हें बहुत सम्मान देते थे। मुझे लगता है कि मैं एक कर्मठ जीवन, एक परिपूर्ण जीवन का हिस्सा हूँ। यही इस जगह का मेरे लिए प्रतीक है, एक सार्थक जीवन। अनाज और गन्ने की महक, रात में जुगनुओं की रोशनी, सुबह मोरों की वाणी, ये सब मुझे मेरी मासूमियत, मेरे सपने, बचपन में जो मैं करना चाहती थी, सब याद दिला देते हैं। मैं सचमुच अपने पिता द्वारा यहाँ के लोगों के लिए शुरू किए गए काम को आगे बढ़ाना चाहती हूँ।’

पोती स्तब्ध रह गया। 'बाबू...'

'देखो पोटी, मैं इस कोटा में रहने का हक कमाना चाहता हूं।'

'दिल्ली में आपकी वकालत के बारे में क्या?'

'यह एक लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है। मैं अपना पूरा जीवन अदालतों में नहीं बिताना चाहता। कुछ और वर्षों तक, मैं साझेदार के रूप में पैसा कमाऊंगा, फिर मुनाफा कमाकर निकल जाऊंगा। सूर्या ट्रस्ट जैसी विभिन्न रुचियों वाले ट्रस्ट का प्रबंधन करना, जो कई चीजों में निवेश करता है, अंशकालिक काम नहीं है। फिर भी, मेरी वजह से, इसमें कोई पूर्णकालिक प्रबंध न्यासी नहीं है। मेरा इरादा है कि मैं यह जिम्मेदारी यहीं पूर्णकालिक रूप से संभालूं।'

पोटी ने रघु को गले लगाया।

'जैसी आपकी इच्छा...राजा गरू.'

अध्याय 15

यह बहुत तेजी से हुआ।
आँखों की पहुँच से भी तेज़।
घोर अंधेरी रात से भी अधिक अंधेरा।
वह उसका आकार ठीक से नहीं देख पा रहा था; बस इतना पता था कि वह कभी-कभी चमकता था। उसमें कोई विशेषता नहीं थी, कोई आकृति नहीं थी, बस एक कालापन था। मानो प्रकाश उसमें समा गया हो। रघु स्मारक कक्ष से पूरी रफ्तार से बाहर भागा, उसके पैर नंगे थे और उसने सिर्फ शॉर्ट्स पहने हुए थे। उसे नहीं पता था कि वह स्मारक कक्ष में कैसे आया, बस इतना पता था कि उसके लिए भागना ज़रूरी था, उस राक्षस से दूर भागना ज़रूरी था जो उसका पीछा कर रहा था।
उसका धड़कता हुआ दिल मानो सीने को फाड़ देगा और उसके पैर बेसुध पड़ गए थे, कुछ डर के कारण तो कुछ ऊर्जा के अनियंत्रित उपयोग के कारण। वह जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा। धीमा होना तो मानो मौत को दावत देना था।
क्या मैं किसी बुरे सपने में हूँ?
यह सपने जैसा नहीं लग रहा था, यह बिल्कुल वास्तविक लग रहा था।
लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं बुरे सपने में हूँ?
स्मारक स्थल से महल की ओर जाने वाले पथरीले रास्ते पर दौड़ते समय कंकड़ उसके पैरों की नंगी त्वचा में चुभ गए।
ठंडी रात की हवा उसके नंगे सीने से टकराई और पसीने की बूंदें तुरंत सूख गईं।
'भगवान मेरी मदद करो!'
सरकंडे की शाखाएँ उसके चेहरे पर लगकर उसे दर्द से चीखने पर मजबूर कर रही थीं, लेकिन उसने अपनी गति धीमी नहीं की, वह पूरी ताकत से भागा, यह जानते हुए कि उसका पीछा करने वाली चीज का वह मुकाबला नहीं कर सकता।
अपनी दृष्टि के किनारे से उसने देखा कि वह आदमी तिरछे रास्ते पर उसकी ओर दौड़ रहा है। ठीक वैसे ही जैसे उसके बुरे सपने में देखा था।
उस आदमी ने रघु को घूरकर देखा और फिर अपने पीछे खड़ी उस चीज़ को। उसके बाल लंबे थे और हवा में लहरा रहे थे। उसने दो घुमावदार तलवारें पकड़ रखी थीं, घातक स्टील की बनी हुई जो किसी आदमी को दो टुकड़ों में काट सकती थी। उसका कवच किसी गहरे रंग के चिपचिपे पदार्थ का बना था और उसकी पैंट बूटों में ठूंसी हुई थी।
रघु जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, उतनी तेज़ी से दौड़ा।
'यह तो बिल्कुल असली लग रहा है। हद से ज्यादा असली!'

उसे याद नहीं आ रहा था कि वह स्मारक कक्ष में कैसे पहुंचा। उसके दिमाग में बस एक ही बात थी - वह काली शक्ति जो उसे चिढ़ा रही थी, उसके साथ खेल रही थी। वह जानती थी कि जब चाहे उसे मिटा सकती है।

‘भाग जा बेवकूफ, भाग जा; अभी सोच मत,’ अजनबी उस पर चिल्लाया।

'क्या?'

‘बस भागो सूर्या..., मुझे समय दो,’ वह चिल्लाया।

वे दोनों कुछ देर तक कंधे से कंधा मिलाकर दौड़ते रहे। अचानक वह अजनबी ऐसे गायब हो गया मानो ज़मीन में समा गया हो और रघु अकेला रह गया। उसने एक पल के लिए अपना सिर घुमाया। उसी क्षण उसने देखा कि वह अजनबी हवा में ही तलवारें चला रहा है। चारों ओर चिंगारियाँ उड़ रही थीं, मानो वह ठोस चट्टान को काट रहा हो। रघु आगे देखने के लिए नहीं रुका; वह सीधे महल की ओर भागा और सामने के आँगन की खड़ी सीढ़ियाँ दो-दो करके चढ़ने लगा।

‘पोटी...वेंकन्ना, दरवाजे खोलो...’ उसने सामने के दरवाजे पर जोर से दस्तक दी।

कोई जवाब नहीं मिला। रात में अपील की पुरानी घंटी बजने पर रघु चौंक उठा। एक ज़ोरदार पुकार। विरोध की गर्जना।

वह अजनबी ही था जो पुरानी घंटी खींच रहा था। शुक्र है, घंटी बज गई। वह धीरे-धीरे चलकर रघु के पास पहुँचा, जो हाँफ रहा था।

'सूर्या, बाल-बाल बच गए, बहुत ही कम। पर्च ने तुम्हें पकड़ लिया... बहुत जल्दी।'

‘पार्च? आखिर यहाँ क्या हो रहा है? वो चीज़ क्या थी? मैं यहाँ कैसे आ गया? तुम कौन हो?’

उस आदमी ने कुछ देर तक सूर्या को घूरकर देखा। अंत में उसने कहा, ‘मैं पी. ईश्वर हूँ। सेबल पर्च को तुम्हें ढूंढने के लिए बनाया गया था, सूर्या, और इसने तुम्हें ढूंढ लिया। इसने तुम्हें पुकारा और तुमने इसके आदेश का पालन किया। लेकिन तुम इसके लिए तैयार नहीं हो। अब से, तेज रोशनी में चलना। पर्च को तेज रोशनी पसंद नहीं है।’

'क्या?'

‘क्या तुमने गुडेम में किसी से अपने पिता के बारे में कुछ कहा था?’ ईश्वर ने पूछा।

‘मेरे पिता के बारे में? नहीं, मेरा मतलब है, हाँ...आज दोपहर मैं एक दोस्त से कह रहा था कि मैं अपने पिता द्वारा शुरू किए गए काम को पूरा करने आया हूँ। क्यों? इसमें क्या गलत है?’

ईश्वर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'सेबल पार्च ने तुम्हारी बात सुन ली।'

'क्या?'

उस आदमी ने सूर्या को घूरते हुए कहा, 'मैं बस यही उम्मीद कर सकता हूँ कि तुम्हारे पिता तुम्हारे बारे में और अग्निपुत्र का उपयोग करने की तुम्हारी क्षमता के बारे में सही थे। अभी तक मैंने जो देखा है, उससे तो लगता है कि तुम इस स्तर से बहुत नीचे हो।'

'अग्निपुत्र आखिर होता क्या है?'
किले के चारों ओर लगी बत्तियाँ अचानक जल उठीं और सामने के दरवाजे खुल गए। पोटी हाथ में राइफल लिए खड़ा था और उसके पीछे रामदास और उसके साथी थे। रघु ने तेज रोशनी से बचने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं और जब उसने दोबारा आँखें खोलीं तो पी. ईश्वर नाम का अजनबी वहाँ से जा चुका था।
'बाबू गारू, आप इतनी ठंड में बाहर क्या कर रहे हैं?' पोटी ने उनसे पूछा।
'मैं पोटी को सच में नहीं जानता, मैं...'
'अंदर आ जाओ, भगवान के लिए। बारह साल बाद यहाँ आए हो और रात में आधे नंगे होकर घूमना चाहते हो। अगर गाँव वाले तुम्हें इस हालत में देखेंगे तो क्या सोचेंगे?'
एड्रेनालाईन का प्रवाह कम होते ही रघु के पैर कमजोर पड़ गए। वह लड़खड़ाकर आगे बढ़ा। रामदास ने तुरंत रघु को अपनी बाहों में भर लिया।
'क्या हुआ बाबू? ऐसा लग रहा है जैसे तुमने मौत को सामने से देख लिया हो!'
रघु ने घबराकर कहा, 'मेरा सबसे बुरा सपना, आज रात मैंने अपना सबसे बुरा सपना जी लिया, पोटी...'
'क्या?'
'मेरा पीछा किया जा रहा था। मुझे नहीं पता कि मैं स्मारक हॉल में कैसे पहुंचा। मुझे बस इतना याद है कि मैं हॉल से बाहर भागा और मेरा पीछा किया जाने लगा। यह बिल्कुल मेरे बुरे सपने जैसा था... सिवाय इसके कि...'
'सिवाय किसके?'
'मेरे बुरे सपने में मैं कभी महल के दरवाज़े तक नहीं पहुँच पाता। मैं जाग जाता हूँ।'
दबी हुई आवाज़ में पोटी ने कहा, 'बाबू, तुम लंबे समय बाद स्मारक कक्ष से ज़िंदा बाहर आने वाले पहले व्यक्ति हो।'
'आपका क्या मतलब है?'
'तुम कांप रहे हो। चलो तुम्हें अंदर ले चलते हैं। मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा जो मुझे पता है।'

अध्याय 16

गोविंद के पास फालतू की बातों के लिए समय नहीं था, करने को बहुत कुछ था और हर पल कीमती था। जीवन में हमेशा बाधाएं आती हैं। हमेशा। उनका दृढ़ विश्वास था कि हर बाधा को पार करने का कोई न कोई हल जरूर निकल आता है।

जब गोविंद अहमदाबाद के आईएमएम में पढ़ रहे थे, तब उन्होंने अपने एक रूममेट से भी यही बात कही थी। जवाब में, उस युवक ने हेयर वॉशिंग जेल की आधी ट्यूब गोविंद की हथेलियों में खाली कर दी और उनसे कहा कि पंद्रह मिनट में जेल को वापस ट्यूब में डाल दें। उन्होंने सोचा था कि गोविंद ऐसा करने में आने वाली बाधाओं को कैसे संभालेंगे।

उस छोटे से अभ्यास के परिणामस्वरूप गोविंद के सामने दो तथ्य स्पष्ट हुए। पहला, यह मान लेना गलत था कि जेल की खाली ट्यूब कोई बाधा है; यह तो बस गंदगी थी। दूसरा, लोगों को वास्तव में यह पता ही नहीं था कि बाधा क्या होती है। उदाहरण के लिए, अब उसे जिन बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था, उन्हें ही ले लीजिए।

सूर्या मेमोरियल हॉल उनकी योजना की कुंजी थी; बाधा उच्च न्यायालय का वह आदेश था जिसमें उन्हें उस स्थान पर प्रवेश करने से प्रतिबंधित किया गया था। आदेश व्यापक था और उन्हें किसी भी तरह से संपत्ति में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देता था। ऐसा लग रहा था मानो न्यायाधीश के बजाय स्वयं सूर्या ने आदेश दिया हो।

इस व्यवस्था को नकारने का रास्ता उसे स्वयं सूर्यों के रूप में दिखाई दिया। समस्या का हल हमेशा उसमें ही छिपा होता है। हमेशा।

वह खास तौर पर जावाराम इसलिए आया था ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि यह बाधा किसी खतरे में न बदल जाए। उसके पास शीला या उसके द्वारा कुछ अज्ञानी ग्रामीणों और एक सनकी बूढ़े आदमी के बारे में दी गई जानकारी के लिए समय नहीं था। उसने शीला की बातों पर मुश्किल से ही ध्यान दिया, और उसकी पूरी कहानी खत्म होने तक बड़ी मुश्किल से ही अपने चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान बनाए रखी।

'अगर हमारा काम पूरी तरह से खत्म हो गया है, सुश्री शीला, तो हमें कुछ और बैठकों में भी शामिल होना है,' उन्होंने धीरे से, लगभग माफी मांगते हुए कहा।

शीला तुरंत उठ खड़ी हुई। उसने माफी मांगते हुए कमरे से बाहर जाने की कोशिश की।

'कृपया, मैं चाहता हूँ कि आप बैठक में शामिल हों। आखिरकार, मैं सूर्या परिवार से मिल रहा हूँ। हो सकता है कि हमारी समस्याएँ अभी हल हो जाएँ।'

शीला ने अपनी हैरानी छिपाने की पूरी कोशिश की। उसे उम्मीद नहीं थी कि रघुराम चुपचाप उनके मुख्यालय में आकर आत्मसमर्पण कर देगा। सूर्या के वारिस की छवि उसके मन में एक ऐसे अभिमानी

व्यक्ति की थी जो बिना चाहे एक इंच भी नहीं हिलेगा, खासकर अदालती आदेश के जरिए अपनी पुश्तैनी संपत्ति में उनके प्रवेश को प्रभावी ढंग से रोकने के बाद।

लेकिन फिर शीला ने सोचा, वह आदमी तो पतित था। उसका सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त था, प्रेम-प्रसंगों और तुच्छ पसंदों से भरा हुआ। उसकी कमियों की सूची में वह नैतिक पतन को भी जोड़ सकती थी। शायद, शीला ने सोचा, वह रघुराम को उसके पिता समझ रही थी। अगर सूर्य प्रसाद वैसा ही व्यक्ति था जैसा रक्षा मंत्री छोटूराम ने बताया था, तो वह अवश्य ही शक्तिशाली रहा होगा। दूसरी ओर, रघु एक ऐसा व्यक्ति था जिसके विवाहित महिलाओं, उससे कम से कम बारह साल छोटी उसकी रसोइया और उससे दस साल बड़े उसके बॉस के साथ संबंध थे। एक ऐसे व्यक्ति पर भरोसा करना मुश्किल था जिसकी नैतिक नींव कमजोर हो।

शीला सोच रही थी कि तीन महीने पहले तक जिस गाँव को वह जानती भी नहीं थी, उसके लिए या उस आदमी के लिए, जिसका कोई स्पष्ट मूल्य तंत्र नहीं था, उसे इतनी तीव्र भावनाएँ क्यों महसूस हो रही थीं। ये विचार उसके मन में उमड़ रहे थे, फिर भी उसका एक हिस्सा इस तथ्य को स्वीकार करने से इनकार कर रहा था कि रघुराम यूँ ही लेटकर मर जाएगा।

उसे पंचायत प्रमुख की कही बातें याद आ गईं। ऐसा लगता था कि वह व्यक्ति ट्रस्टों और संस्थाओं के माध्यम से अपने लोगों के लिए बहुत अच्छा काम करता था। साथ ही, कानूनी तौर पर उसके पास अदालत का एक आदेश भी था जो उसके पक्ष में था। वकील को अपनी चालें चलना आता था। अगर सूर्या गृह मंत्री से मिलने को तैयार था, तो वह यह जरूर जानना चाहती थी कि उनके मन में क्या चल रहा है।

रघुराम उस दिन उपस्थित नहीं हुए। दो अन्य उपस्थित हुए। आदित्य प्रसाद सूर्या और रवि प्रसाद सूर्या। एक की उम्र लगभग तीस वर्ष थी और दूसरा अपने भाई से कम से कम पाँच-छह वर्ष छोटा था। वे दोनों सांवले, आकर्षक पुरुष थे, जिनकी नाक और कंधे वैसे ही तीखे थे जैसे रघुराम की तस्वीरों में देखे थे। बिल्कुल जेम्स बॉन्ड फिल्मों के खलनायकों की तरह।

औसत कद-काठी के होने और पेट की चर्बी के कारण थोड़ा झुके होने के बावजूद उन्होंने अपना सिर ऊंचा रखा था। दोनों भाई सफेद कुर्ता, सफेद पतलून और गहरे रंग की ऊंची गर्दन वाली बनियान पहने हुए थे।

गृह मंत्री ने दोनों भाइयों का खुले दिल से स्वागत किया, मानो वे किसी विदेशी धरती के उच्च पदस्थ गणमान्य व्यक्ति हों। गोविंद किरोमल ने दोनों से हाथ मिलाते हुए कहा, 'स्वागत है मेरे मित्रों। कृपया बैठिए, आराम से बैठिए।' दोनों ने उदारतापूर्वक मुस्कुराते हुए दी गई कुर्सियों पर बैठ गए।

'यह सौभाग्य हमारा है, मंत्री जी,' भाइयों में से बड़े आदित्य ने भारी लहजे वाली हिंदी में कहा।

‘बिल्कुल नहीं, मुझे खुशी हुई। आपके व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालने के लिए मैं आपका आभारी हूं। मुझे पता है कि आप राज्य स्तर पर विपक्षी गठबंधन का हिस्सा हैं और मेरे सहयोगियों ने आपके साथ कई कड़वी राजनीतिक लड़ाइयां लड़ी हैं। मुझे यह भी पता है कि आप हैदराबाद में बेहद प्रभावशाली व्यक्ति हैं।’

बड़े सूर्य, आदित्य ने प्रशंसा को नकारते हुए हाथ हिलाया। छोटा सूर्य चुपचाप और ध्यान से देख रहा था।
'मेरी सहकर्मी सुश्री शीला पिटंबर से मिलिए। वह गुडेम में इस परियोजना की हमारी प्रमुख वैज्ञानिक हैं।'
दोनों भाइयों ने एक विनम्र अभिवादन और नमस्ते कहकर शीला की उपस्थिति को स्वीकार किया।
रवि ने मंत्री जी से पूछा, 'मुझे बताइए, हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?'
गोविंद ने उन दोनों को अपनी सबसे मनमोहक मुस्कान दी। उसकी कोमल आँखें गर्मजोशी और खुशी से चमक उठीं, जिसे देखकर शीला को लगा जैसे कोई भूखा शेर अपने होंठ चाट रहा हो।
मंत्री जी ने कहा, "मेरे मित्रों, यह हमारे लिए राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता को समाप्त करने का अच्छा समय है। सूर्या परिवार के पास भारत सरकार के साथ मिलकर जनता के हित में काम करने का एक बड़ा अवसर है। जैसा कि आप सर्वविदित हैं, सरकार देश भर में पवन टरबाइन और जलविद्युत परियोजनाएं स्थापित कर रही है और गुडेम उन गांवों में से एक है जिन्हें हमने इस राष्ट्रव्यापी परियोजना से लाभान्वित होने की संभावना समझी है। जैसा कि आप जानते होंगे, इस पहल को संसद का पूर्ण समर्थन प्राप्त है।"
'बहुत बढ़िया,' बड़े सूर्या ने उपयुक्त रूप से प्रसन्न स्वर में कहा। 'हम आपकी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?'
'आपके चचेरे भाई रघुराम को छोड़कर हर कोई विकास चाहता है। सरकार को पवनचक्कियां लगाने के लिए उनकी संपत्ति की जरूरत है। उन्होंने भारत सरकार को अपनी संपत्ति में प्रवेश करने से रोकने के लिए निषेधाज्ञा प्राप्त कर ली है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि यह जनहित में है। मुझे इस निषेधाज्ञा को रद्द करवाने के लिए आपकी मदद चाहिए।'
आदित्य ने गृह मंत्री को ध्यान से देखा। 'आप जानते हैं कि हमारे बीच दुश्मनी हमारे दादाओं के समय से चली आ रही है, जब मेरे दादा ने पागलपन में आकर अपने भाई की हत्या कर दी थी, जो रघुराम के दादा हैं। हमारी आपस में बातचीत भी नहीं होती। मुझे नहीं लगता कि रघुराम मेरी बात सुनेगा और मैं अपने चचेरे भाई से भीख मांगने के मूड में नहीं हूँ।'
'और इससे हमें कुछ भी हासिल नहीं होने वाला है,' रवि प्रसाद ने कहा।
गोविंद की मुस्कान जरा भी फीकी नहीं पड़ी। 'बेशक, मैं आपको मध्यस्थ बनने के लिए कहकर आपका अपमान करने के बारे में सोच भी नहीं सकता। मेरे मन में कुछ और ही था, कुछ ऐसा जो हम दोनों के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी हो सकता है।'
दोनों भाई एक साथ अपनी कुर्सियों पर आगे की ओर झुक गए। अचानक उनके चेहरे बाज की तरह चौकन्ने हो गए।
'वह क्या हो सकता है?' आदित्य ने पूछा।
'खैर, मैं सोच रहा था कि मैं आपसे कहूँ कि आप अपने चचेरे भाई के खिलाफ अदालत में मुकदमा लड़ें। अगर आप सरकार के रुख का समर्थन करते हुए खुद को इस मामले में प्रतिवादी बना लें और इस आधार

पर निषेधाज्ञा रद्द करने की मांग करें कि आपके परिवार को सार्वजनिक हित के लिए परिसर का उपयोग करने पर कोई आपत्ति नहीं है, तो इससे आपको राजनीतिक रूप से बहुत फायदा होगा।'

दोनों भाइयों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

रवि ने पूछा, 'रघु को पहले ही निषेधाज्ञा मिल चुकी है, ऐसे में इस कदम से क्या हासिल होगा?'

"जब सूर्या परिवार के सदस्य पारिवारिक संपत्ति के उपयोग को लेकर आपस में बंटे हुए हों और परियोजना जनहित में हो, तो अदालत के पास मामले को खारिज करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। अदालत यह राय भी दे सकती है कि रघुराम को अकेले पारिवारिक संपत्ति का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार नहीं है। परिणामस्वरूप, उनके द्वारा लिया गया रुख कानून की दृष्टि से गलत माना जाएगा, क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य सरकार का साथ दे रहे हैं। हमें परियोजना को लागू करने का मौका मिलेगा और आपको अपार साख और राजनीतिक लाभ मिलेगा। आप, मेरे दोस्तों, नायकों के रूप में देखे जाएंगे।"

गोविंद ने नाटकीय अंदाज में अपने हाथ फैलाए और संत की तरह मुस्कुराते हुए कहा, 'बिल्कुल, आपके साथ-साथ इस काम के लिए गठित कंपनी भी तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर जनहित का हवाला देते हुए निषेधाज्ञा रद्द करने के लिए अर्जी दाखिल करेगी।'

रवि सूर्या ने गला साफ किया। 'मंत्री जी, यह एक अच्छी चाल है। लेकिन आप जानते हैं कि लोगों की याददाश्त बहुत सीमित होती है। खासकर अच्छे काम लंबे समय तक याद नहीं रहते। हमेशा कोई न कोई ऐसा होता है जो और अधिक चाहता है। यही राजनीति है। मुझे यकीन है कि आपको यह बताने की जरूरत नहीं है। सच कहें तो, हमें आपके इस विचार में दीर्घकालिक लाभ नजर नहीं आता।'

'मैं समझ गया,' गोविंद ने कहा। 'तुम्हारे मन में क्या है?'

रवि ने प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराते हुए कहा, "कुछ साल पहले हमने अपनी पुश्तैनी ज़मीनों के बंटवारे के लिए याचिका दायर की थी। रघुराम ने इस आधार पर इसका विरोध किया कि ज़मीनें ग्रामीणों को वसीयत में दी गई थीं और जनहित में थीं। हम मुकदमा हार गए क्योंकि हमारी याचिका कृषि भूमि रखने की अधिकतम सीमा से संबंधित कानून के खिलाफ थी और ज़मीनें पहले ही किसानों को हस्तांतरित हो चुकी थीं।"

और बात क्या है?

बात यह है कि ये हमारी पुश्तैनी ज़मीनें हैं, कोई भी इन्हें यूं ही नहीं दे सकता। हमें अपनी ज़मीनों के नुकसान के लिए न तो सरकार से और न ही किसानों से कोई मुआवज़ा मिला है। हमें न्याय चाहिए। क्या आप इस मामले में हमारी मदद कर सकते हैं?

गोविंद के चेहरे पर मुस्कान बनी रही, हालांकि उसकी आंखों की गर्माहट लगभग गायब हो गई थी। 'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

'हमारी आधी ज़मीनें हमें वापस दे दो। आप इसे जो चाहें रूप दे सकते हैं। यह हम आप पर छोड़ते हैं; विकास, कॉर्पोरेट खेती, कुछ भी। हमें बस अपनी ज़मीनें वापस चाहिए। ऐसा नहीं है कि हमारे पास पैसा नहीं है, बल्कि यह सम्मान का मामला है।'

'देखते हैं मैं वहां क्या कर सकता हूं। मैं आपको कुछ भी वादा नहीं कर रहा हूं।'
‘एक और बात...’ दोनों सूर्यों में से छोटे ने बीच में ही कहा।
'हाँ...'
हमें अपने चल रहे राजनीतिक कार्यों के लिए धन की आवश्यकता है...आप जानते ही हैं। यदि सरकार...या आप...इस मामले में हमारी मदद कर सकें तो हम आभारी होंगे। सटीक राशि का पता लगाया जा सकता है।
गोविंद की मुस्कान और चौड़ी हो गई। ‘मैं इस तरह के किसी भी प्रयास का व्यक्तिगत रूप से प्रतिफल देने में प्रसन्न होऊंगा। मैं हमेशा लोगों की मदद करने के लिए तत्पर रहता हूं,’ उन्होंने मधुर स्वर में कहा। ‘मुझे लगता है कि कुछ सौ करोड़ रुपये लगभग उचित रहेंगे...’ उन्होंने अपनी बात समाप्त की।
कुछ ही समय बाद, राजनीतिक गठबंधनों और नए तेलंगाना राज्य की संभावनाओं पर संक्षिप्त चर्चा के बाद, भाइयों ने गृह मंत्री से हाथ मिलाया और चले गए। उन्होंने वादा किया कि हैदराबाद में नकद राशि मिलने के बाद वे विजयवाड़ा में सरकारी वकील से मिलेंगे और निषेधाज्ञा हटाने के लिए याचिका दायर करने हेतु आवश्यक कागजात पर हस्ताक्षर करेंगे। वे अपनी जमीन वापस लेने के लिए मंत्री की मंजूरी का इंतजार करने को तैयार थे।

अध्याय 17

सूर्या बंधुओं के चले जाने के बाद कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। राजनीति में होने वाली हेराफेरी और पर्दे के पीछे की साज़िशों का घिनौना चेहरा शीला के सामने आ चुका था। उसे यह अनुभव बेहद घृणित लगा।

'देखिए, मिस शीला,' किरोमल ने प्यार से कहा, 'आपको बाधा पार करनी होगी, न कि किसी अँधेरे कमरे में अंधे की तरह इधर-उधर भटकना होगा। बस आप देखिए, मैं ऐसा जन आंदोलन खड़ा कर दूँगी कि रघुराम सूर्या के पास अपने बहुमूल्य स्मारक भवन को हमें थाली में सौंपने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा। यही है जनमत की शक्ति। मैं राष्ट्रीय प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अपने इशारों पर नचाऊँगी। विकास बनाम अभिजात वर्ग। आपको क्या लगता है, कौन जीतेगा? क्या यह कुछ ग्रामीणों और बूढ़े लोगों से मिलने से बेहतर नहीं है?'

शीला ने कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे यह बताना चाहिए, महोदय, कि इसमें शामिल सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर हमें हॉल के नीचे की ऊर्जा हानिकारक पाई जाती है, तो हम अंततः उसे नष्ट कर सकते हैं। मुझे यकीन नहीं है कि किसी व्यक्ति का जीवन बर्बाद करना उचित होगा।'

'अगर यह घातक है, मिस शीला, और यह एक बहुत बड़ा 'अगर' है। अगर हम कुछ नहीं करते हैं और देश को नुकसान उठाना पड़ता है तो क्या होगा? आपको व्यापक परिदृश्य देखना चाहिए।'

शीला ने इस पर कुछ नहीं कहा, लेकिन कमरे से निकलते समय वह यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाई कि रघुराम पर किसके हित में आरोप लगाए जा रहे हैं, देश के हित में या गोविंद किरोमल के हित में।

जैसे ही वह अपने कमरे में दाखिल हुई और सोफे पर लेट गई, उसे एहसास हुआ कि रघुराम गोविंद किरोमल के साथ सौदेबाजी करेगा, यह सोचकर वह कितनी गलत थी।

मोबाइल फोन की घंटी बजी।

'हाँ...'

'क्या मैं शीला पीतांबर से बात कर रहा हूँ?' आवाज गहरी और बर्फीली दोनों थी।

'यह सही है।'

मेरा नाम रघुराम सूर्य है।

शीला की रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई, जिससे वह पूरी तरह से हैरान रह गई। वह बस इतना ही कह पाई, 'हाँ।'

मुझे लगता है कि आप मुझसे बात करना चाहते थे।

'श्रीमान सूर्या...हमारा मिलना जरूरी है।'

मामला अदालत में है, मुझे लगता है कि हम वहां इसका मुकाबला कर सकते हैं।

शीला का दिल एक पल के लिए रुक गया। वह उससे मिलने के लिए बहुत बेताब थी।

तुम्हारे साथ क्या गलत है?

‘श्रीमान सूर्या, यहाँ मुकदमों के अलावा भी बहुत कुछ हो रहा है और मुझे लगता है मैं आपकी मदद कर सकती हूँ,’ उसने स्थिर स्वर में कहा। वह जंगल में खोई हुई छोटी बच्ची की तरह नहीं दिखना चाहती थी। उसे यह एहसास नहीं था कि वह दल बदलने के लिए तैयार थी। किसी अज्ञात कारण से, शीला ने रघुराम सूर्या का साथ दिया था। यह कोई सचेत निर्णय नहीं था, लेकिन उसे यह बिल्कुल स्वाभाविक लगा।
दूसरी तरफ से थोड़ी देर की खामोशी छा गई, 'जैसे कि?'
मुझे लगता है कि हम इस बारे में आमने-सामने बैठकर चर्चा कर सकते हैं।
मुझे बिलकुल भी यकीन नहीं है कि आपको अपना समय बर्बाद करने की जरूरत है। हम यह बात फोन पर ही कर सकते हैं।
क्या वह आदमी पागल है? क्या वह यह जानना नहीं चाहता था कि उसके मन में क्या चल रहा है? कोई इतना हठी कैसे हो सकता है?
'श्री सूर्या, मैं आपसे पेशेवर सलाह नहीं मांग रहा हूँ। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मुझसे मिलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। इस स्थिति में हम अपनी मदद के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।'
गुडेम में रघुराम अनजाने में मुस्कुरा उठा। वह उस व्यक्ति से मिलना चाहता था जिसकी आवाज़ इतनी दमदार और अधिकारपूर्ण थी।
'सच में, और आप इतने उदार क्यों होंगे?' उसने चिढ़ाते हुए कहा।
'क्योंकि मेरे पास तुम्हारे लिए एक संदेश है,' उस मोहक आवाज ने कहा।
उसने लंबे बालों वाली और गंभीर चेहरे वाली एक सुंदर महिला की कल्पना की, जिसका चेहरा उस आवाज़ से मेल खाता हो। उस आवाज़ में कुछ ऐसा था जो उसे मोह लेता था। शायद उस लहजे से लग रहा था कि आवाज़ का मालिक पहुँच से बाहर है। रघुराम की जन्मजात शिकारी प्रवृत्ति बेकाबू हो रही थी।
एक महिला की खुशबू।
‘यह जानकारी निश्चित रूप से माननीय गृह मंत्री से ही प्राप्त हुई होगी।’
‘No, from pichi Rathaya!’
रघुराम भड़क उठा। 'उस बूढ़े मूर्ख को मुझसे मिलना ही होगा। वह तो सालों से यही करता आ रहा है।'
शीला का सब्र लगभग टूट चुका था। मैं एक बार फिर कोशिश करूंगी, अगर वह नहीं माना तो भाड़ में जाए वो।
‘मुझे पूरा यकीन है कि श्री सूर्या अपना समय बर्बाद कर रहे थे। उन्हें कोशिश करने की ज़रूरत नहीं थी और न ही मुझे। अगर आप मुझसे मिलना चाहते हैं, तो मैं जावाराम के गेस्ट हाउस में हूँ। और हाँ, वैसे, वह कह रहे थे कि अब समय आ गया है कि आप अपनी ज़िम्मेदारियों से भागना बंद कर दें। शायद उन्हें यह एहसास नहीं है कि यह आपके लिए कोई नई बात नहीं है। वह चाहते थे कि मैं आपको बताऊँ कि अग्निपुत्र का उपयोग करने का समय आ गया है।’

रघुराम के लिए वह एक लंबा क्षण था, जिसमें दुनिया पिछली रात के उस राक्षस की तरह काली हो गई। एक सिहरन उसकी रीढ़ की हड्डी में दौड़ गई।
‘तुम्हें अग्निपुत्र के बारे में कैसे पता चला?’
आखिर वो भी इंसान ही है! उसने सोचा...और उससे भी बड़ी बात, उसे अग्निपुत्र के बारे में जानकारी थी। अगर शीला को उस धूर्त गृह मंत्री के निजी एजेंडे को हद से ज्यादा आगे बढ़ाने से पहले इस मामले की तह तक पहुंचना था, तो उसे सूर्या की मदद की जरूरत थी।
‘श्री सूर्या, आपको इससे क्या फर्क पड़ता है? शायद मुझे इसे अदालत में भी उठाना चाहिए। लेकिन फिर मैंने सोचा कि निष्पक्षता के लिहाज से मुझे पहले आपसे बात कर लेनी चाहिए। मुझे लगता है मैं गलत था।’
‘ठीक है सुश्री पीतांबर, कृपया गुडेम स्थित मेरे घर आइए। हम बात कर सकते हैं। मैं इसके अलावा और कुछ वादा नहीं करता।’
‘श्री सूर्या, मुझे आपसे कुछ भी उम्मीद नहीं है। कल मिलते हैं, क्या सुबह दस बजे ठीक रहेगा, या आपके लिए बहुत जल्दी है?’ वह ताना मारने से खुद को रोक नहीं पाई।
शीला को अनजाने में ही चक्कर आने लगा। सालों में पहली बार उसे किसी से मिलकर खुशी महसूस हुई। हालांकि उसे इसका एहसास नहीं था, फिर भी उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान थी।
‘सुबह दस बजे तक ठीक है, श्रीमती पीतांबर। सरकारी अधिकारियों के विपरीत, हमें अपना गुजारा चलाने के लिए जल्दी काम शुरू करना पड़ता है,’ रघु ने कहा। रघु को लगा जैसे वह हंस रही हों, लेकिन पूरी तरह से नहीं।
'मुझे श्रीमान सूर्या से एक अनुरोध करना है। क्या आप किसी को मुझे लेने के लिए भेज सकते हैं?'
‘मैं अपने मित्र श्री कृष्णा नायडू को आपको लेने के लिए भेज दूंगा। क्या यह ठीक रहेगा?’
'पक्का शुक्रिया।'
रघु के बगल में खड़े पोटी ने अपने बॉस को हैरानी भरी नजरों से देखा।
'क्या आपको यकीन है कि आप दोनों शादीशुदा नहीं हैं? मुझे यकीन है कि अभी-अभी आप दोनों के बीच घरेलू झगड़ा हुआ है,' उसने रूखेपन से टिप्पणी की।
‘वह महिला बिलकुल ही नामुमकिन है। खैर, मैंने उसे कल घर आने के लिए कहा है। आपको उसे लेने जाना होगा।’
'जी हां मेरे प्यारे बाबू गारू, मुझे पता है आपने ऐसा किया और मुझे आश्चर्य है कि आपने उसे घर क्यों बुलाया।'
रघु ने आंखें घुमाईं। ‘कल रात तो मेरा सबसे बुरा सपना सच हो गया, पोटी। मुझे अब भी नहीं पता कि मैं उस स्मारक हॉल में कैसे घुस गया, पी. ईश्वर कौन है और वो काली चीज़ क्या थी जो मेरा पीछा कर रही थी। इस समय औरतें मेरी प्राथमिकताओं की सूची में सबसे ऊपर नहीं हैं।’
पोटी ने सिर हिलाकर सहमति जताई, उसे इस बात का एहसास था कि उसने रघु को नाराज कर दिया है।

‘आपने कल रात कहा था कि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो कुछ समय से स्मारक कक्ष से जीवित बाहर निकला था। आपका इससे क्या मतलब था?’
पोटी ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'क्या आप वाकई इस बारे में बात करना चाहते हैं बाबू?'
'हां, मुझे पूरा यकीन है।'

अध्याय 18

वे विशाल भोजन कक्ष में थे। शाम के छह बज रहे थे। महल के चारों ओर मीलों तक फैले हरे-भरे खेतों पर हल्की धुंध छाई हुई थी। चांदी की थाली में गरमा गरम मिर्च के पकौड़े लाल मिर्च की चटनी के साथ परोसे गए। पोटी ने दो गिलासों में चिवस रीगल डाली। बर्फ नहीं डाली। उसने रघुराम को एक गिलास दिया, जो अपनी पसंदीदा कुर्सी पर बैठा था। पोटी आराम से बैठ गया और रघु के बगल वाली कुर्सी पर बैठने के इशारे को नज़रअंदाज़ कर दिया।

'मैं ज़मीन पर आराम से बैठा हूँ। मैं राजाओं के साथ नहीं बैठना चाहता। मुझे राजाओं जैसा व्यवहार करना नहीं आता,' उसने गुस्से से कहा।

'राजा तमीज़ से पेश नहीं आते; क्या तुम यह नहीं जानते? राजाओं के सामने तो सब लोग तमीज़ से पेश आते हैं,' रघुराम ने पलटवार करते हुए कहा, 'और उनके आदेशों का पूरी तरह पालन करते हैं।'

आप मुस्कुरा सकते हैं।

उन्होंने शराब की चुस्कियां लीं और उसके स्वाद का आनंद लिया। रघु ने मिर्च की चटनी में डूबी पकौड़ी को चबाकर खाया।

'ठीक है। तो बाबू, कहानी का जो हिस्सा मुझे पता है, वो ये है। उस मनहूस रात को तुम्हारे पिता, उनके खास आदमी गोपालम वलनेनी और उनके गार्ड रथैया स्मारक हॉल में गए थे।'

'क्यों?'

'मुझे नहीं पता, 1971 में मैं सिर्फ आठ साल का था। मुझे नहीं पता कि अभी क्या स्थिति है, लेकिन उस समय बड़े-बुजुर्ग अपने बच्चों के सामने गंभीर बातें नहीं करते थे।'

'क्या हुआ?'

'वे चार दिन तक स्मारक हॉल के अंदर थे, बाबू।'

'खाने-पीने का क्या हुआ? कोई न कोई तो सामान लेकर गया होगा। मेरे पिता एक बीमार व्यक्ति थे। उन्हें चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता थी।'

'वालनेनी छोटे-मोटे काम करता था। दवाइयां, खाना, पानी, वह सब कुछ संभालता था।'

'क्या कोई स्वेच्छा से अंदर जाने के लिए आगे नहीं आया? क्या ग्रामीणों ने मेरे पिता को छोड़ दिया?'

'पूरा गांव चार दिनों तक वहीं मौजूद था। आसपास के गांवों से भी कई लोग वहां आए हुए थे।'

तो फिर, क्या हुआ?

'हम स्मारक कक्ष के अंदर क्या हो रहा था, देख नहीं पा रहे थे। चौथी रात, जब उल्लू भी चुप हो गए और पूरा स्थान सन्नाटे में डूब गया, तभी स्मारक कक्ष के दरवाजे अचानक खुल गए। दरवाजों के दीवारों से टकराने की आवाज़ बिजली की गड़गड़ाहट जैसी थी। वह रथाया था। वह आग की लपटों में घिरा हुआ था। मानो जलती हुई मशाल हो। जानते हैं सबसे अजीब बात क्या थी? वह चिल्लाया नहीं। उसने आग बुझाने की

कोशिश भी नहीं की। वह बस वहीं खड़ा रहा, मानो उसे पता ही न हो कि वह आग की लपटों में घिरा हुआ है।'

रघु को पसीना आ गया। भला आग लगने पर कौन घबराता नहीं? रथाया को उसके दर्द का एहसास ही नहीं हो रहा था?

पोटी ने आगे कहा, 'रथया ने आसमान की ओर देखा और अंत में जोर से कुछ चिल्लाया।'

उसने क्या चिल्लाया?

'कोई समझ नहीं पाया। यह एक तरह से विरोध की चीख थी। मानो वह स्वयं भगवान पर मुट्ठी तान रहा हो। मानो उसके साथ किसी चीज का अन्याय हुआ हो।'

'और?'

'उसने दरवाज़े ज़ोर से बंद कर दिए। यह अमानवीय था, बाबू। उन दरवाज़ों का वज़न एक टन से भी ज़्यादा था। उसने उन्हें ऐसे बंद किया जैसे वे बाँस की टहनियों से बने हों। तभी वह घुटनों के बल गिर पड़ा। मैं अपने पिता के कंधों पर बैठा यह सब देख रहा था। गाँव वाले बाल्टियाँ भर पानी और कंबल लेकर आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े।'

रघु ने कहा, 'वह पूरी तरह से जलकर राख हो गया होगा।'

'हाँ। वह इंसान से ज़्यादा झुलसा हुआ था। अजीब बात यह थी कि उसमें पीड़ा का कोई लक्षण नहीं दिख रहा था। उसका चेहरा भावहीन था। उसकी आँखें डरावनी थीं। दोनों आँखों के आर-पार एक मोटी लाल रेखा थी, जैसे कोई कच्ची नस हो।'

रघु ने कुछ नहीं कहा।

'रथया ने तुम्हारे पिता का अंतिम फरमान सुनाया। उन्होंने कहा कि स्मारक कक्ष को पूरी तरह से सील कर दिया जाए और रात के समय कोई भी उसमें प्रवेश न करे। उन्होंने बार-बार यही बात दोहराई जब तक कि वे बेहोश नहीं हो गए।'

मुझे पता नहीं था...

'रथया के घाव तो पूरी तरह से ठीक हो गए! उन्हें ठीक होने में सिर्फ दो से तीन घंटे लगे। बाबू, वो प्रथम श्रेणी के जलने के घाव थे। वो बस ठीक हो गए। पुरानी त्वचा की जगह नई त्वचा आ गई। वो बिल्कुल नए जैसा हो गया। मैंने कोशिकाओं को इतनी तेजी से पुनर्जीवित होते नहीं देखा। मैंने तो ऐसी बात सुनी भी नहीं थी। ये एक चमत्कार था!'

रघु ने बस अपना सिर हिलाया। प्रथम श्रेणी के जलने के घाव घंटों की तो बात ही छोड़िए, महीनों में भी ठीक नहीं होते। यह तो परियों की कहानियों जैसा था। लेकिन, सुनने में यह परियों की कहानी जैसा नहीं लग रहा था। यह तो किसी डरावनी फिल्म जैसा था।

पोटी ने अपनी कहानी जारी रखी। 'गांव के बुज़ुर्गों ने उससे तुम्हारे पिता के बारे में पूछा, लेकिन उसने बस अपना सिर हिला दिया। इसके अलावा रथाया ने उस हॉल की दीवारों के भीतर जो कुछ हुआ था, उसके बारे

में एक शब्द भी नहीं कहा। उसने कहा कि उसे जो कुछ कहना है, वह सिर्फ तुम्हारे लिए है, और वह भी तब जब तुम उससे बात करने के लिए तैयार हो जाओ। यही एक शर्त थी।'

'मेरे पिता? क्या उन्होंने मेरे पिता के बारे में और कुछ नहीं कहा, कुछ भी नहीं?'

पोटी ने अपना सिर हिलाया।

'इन वर्षों में कई मूर्खों ने रात में स्मारक हॉल खोल दिया। कोई भी ज़िंदा वापस नहीं लौटा। इसलिए हमने ताक-झांक करने वालों को रोकने के लिए चौकीदार तैनात कर दिए। गोपालम वलनेनी के पोते ने कई बार हॉल में घुसने की कोशिश की। हम उसे बचाने में कामयाब रहे। वह मूर्ख खुद को धर्मयुद्ध का रक्षक समझता है, और सोचता है कि सूर्या परिवार ने उसके साथ अन्याय किया है।'

उनके पास ऐसा सोचने का हर कारण है।

पोटी ने स्कॉच का एक घूंट लेने के लिए फिर से विराम लिया। 'उस रात के बाद बहुत कुछ बदल गया। ज़मीन फिर से खेती योग्य हो गई, तुम्हारे दादा की मृत्यु के समय से लोगों को जकड़े हुए आतंक का उस रात अंत हो गया। अब न तो कोई गायब हो रहा था, न हत्याएं हो रही थीं, न ही कोई पागल हो रहा था। एक अंधकारमय युग का अंत हो गया था। तुम्हारे पिता ने जो कुछ भी किया, उससे गुडेम और उसके लोगों की जान बच गई। ग्रामीण इसके लिए हमेशा आभारी रहेंगे।'

'हॉल के अंदर आखिर क्या है? मेरे पिता ने क्या किया?'

पोटी ने गिलास भरने के लिए थोड़ी देर के लिए रुक गया।

"कल तुमने कहा था कि तुम अपने पिता के शुरू किए काम को पूरा करना चाहते हो। मुझे पता है तुम्हारा मतलब ज़मीन के बंटवारे और ट्रस्ट के प्रबंधन से था। लेकिन तुम्हारे पिता ने कुछ और ही किया, बाबू। उन्होंने एक राक्षस को रोका, एक असली राक्षस को जो इस गाँव को धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से तबाह कर रहा था। मेरे पास कोई जवाब नहीं है, बाबू। जवाब सिर्फ पिची रथैया के पास है। शायद तुम्हें उनसे मिलना चाहिए।"

रघु कुछ देर सोच में डूबा रहा। फिर उसने कहा, 'कल शीला पीतांबर से मिलने के बाद, चलो रथाया से मिलने चलते हैं। मैं चाहता हूं कि तुम भी साथ आओ।'

अध्याय 19

ज़ेनॉन सुबह दस बजे से कुछ मिनट पहले महल पहुँची। फीकी नीली जींस, सफेद कमीज़ और चप्पल पहने, बालों को ढीले से जूड़े में बाँधे शीला कार से उतरी। सुबह की ताज़ी धूप उसकी दमकती त्वचा पर पड़ रही थी।

जंग लगे पुराने लोहे के द्वार महल के अंदर ले जाते थे। पास से देखने पर इमारत दूर से देखने की तुलना में कहीं अधिक भव्य लग रही थी। यह महल जैसा कम और किलेबंद महल जैसा अधिक लग रहा था। शायद इसका कारण यह था कि इसके कुछ हिस्से उपयोग न होने के कारण सड़ रहे थे और दिसंबर की उमस भरी हवा में इसकी धुंधली सी धूसर सीमाएँ अस्पष्ट दिख रही थीं। उस स्थान पर एक गहरी उदासी छाई हुई थी, मानो वह शोक मना रहा हो।

‘क्या तुम कभी... महल की पेंटिंग नहीं बनाते?’ उसने पूछा।

पोटी ने इस तरह कंधे उचकाए मानो इससे उसे कोई फर्क ही न पड़ता हो कि ऐसा होता भी है या नहीं।

उन्होंने कहा, 'अपने समय में यह बहुत सुंदर रहा होगा।'

“हाँ, ऐसा ही था। वह बिल्कुल सफेद था और उसकी सारी लकड़ी गहरे हरे रंग की थी। वहाँ एक खूबसूरत गुलाब का बगीचा था,” उन्होंने एक तरफ उंगली से इशारा करते हुए कहा, “और वहाँ बड़े-बड़े पेड़ थे। वह मुर्गे की लड़ाई का अड्डा हुआ करता था। कहते हैं कि बाबू के परदादा को वह जगह बहुत पसंद थी। हम साल भर कोई न कोई त्योहार मनाते रहते थे। दरअसल, सत्तर के दशक तक, जब तक बाबू के पिता का देहांत नहीं हो गया, तब तक वह किला गाँव के मनोरंजन और आमदनी का सबसे बड़ा ज़रिया था।”

'क्या हुआ?'

'मांसपेशियों की कमजोरी! उनकी मांसपेशियों ने काम करना पूरी तरह से बंद कर दिया था।' उन्होंने उसे यह नहीं बताया कि सूर्य प्रसाद की मृत्यु इस बीमारी से नहीं हुई थी।

'बाबू की मां महज उन्नीस साल की थी, बेचारी, वह पूरी तरह टूट गई। बेशक, जब उसने उससे शादी की थी तब उसे पता था कि उसे यह बीमारी है। वह हमेशा सोचती थी कि वह ठीक हो सकता है।'

‘वह ठीक क्यों नहीं हो सका?’

'मांसपेशियों के अरोग्य का कोई इलाज नहीं है। राजा गारू ने तीस वर्ष की आयु तक जीवित रहकर उस समय के सभी चिकित्सा ज्ञान को गलत साबित कर दिया, जिसे लोग एक दुर्लभ मामला कहते थे। इतना ही नहीं, उन्होंने संतानोत्पत्ति भी की। उनके पुत्र रघु थे। राजा गारू की माता, रानी गारू, उनके निधन से व्याकुल हो गईं। उन्होंने सारी संपत्ति संभाल ली। लेकिन, वे इस स्थान को छोड़कर चले गए। यह बहुत दुख का समय था, महोदया। राजाओं का एक महान परिवार बिखर गया था। पीछे रह गई दोनों महिलाएं अपनी मां की गोद में लिपटे उस नन्हे बच्चे को उस मुसीबत से बचाना चाहती थीं जिसने उन्हें तबाह कर दिया था। बाबू सूर्य वंश के एकमात्र शेष उत्तराधिकारी हैं। वे कई बार वापस आए, लेकिन केवल आगंतुकों के रूप में,

पड़ोसी शहरों में अपनी संपत्तियों को बेचने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि महल की देखभाल की जाए। यह महल सूर्य वंश का अंतिम अवशेष है।'

'श्री सूर्या के चचेरे भाइयों के बारे में क्या?' शीला ने पूछा। उसने उन्हें देखा था, वे निश्चित रूप से परिवार का हिस्सा थे।

पोटी ने फिर से कंधे उचकाए, इस बार मानो उसे ज़रा भी परवाह न हो। 'वे बहुत पहले ही चले गए थे, जब उस पागल कमीने भरतराम ने बाबू के दादाजी की हत्या कर दी थी। उनकी पत्नी और बेटे बेइज्जती के साथ चले गए, हालांकि कहा जाता है कि बूढ़े ज़मींदार ने उनके नाम काफी संपत्ति कर दी थी। हमने उन्हें तब से नहीं देखा है, हालांकि मैंने सुना है कि उन्होंने हैदराबाद में खूब दौलत कमाई है।'

शीला महल के गम में डूबी हुई थी जब वह पोटी के पीछे-पीछे अंदर गई। उसकी निगाहें रघुराम को ढूंढ रही थीं तभी अचानक वह पारंपरिक कड़क और इस्त्री की हुई सफेद धोती और कुर्ते में प्रकट हुआ। शीला ने गौर किया कि वह एक लंबा-चौड़ा आदमी था। और बेहद भयावह दिख रहा था, किसी बड़े पिशाच जैसा।

'वह अपने पिता की तरह दिखता है,' पोटी ने उससे दबी आवाज में कहा।

'मिस पीतांबर, मेरे घर में आपका स्वागत है,' रघु ने मुस्कुराते हुए कहा, जिससे उसका चेहरा एक गंभीर पिशाच सरदार से एक शरारती लड़के जैसा दिखने लगा। अनजाने में ही शीला ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

'वाह,' उसने कहा। उसकी मुस्कान बेहद मनमोहक थी। मानो किसी घास के मैदान में खिले हुए चमकीले फूल हों।

'श्रीमान सूर्या, मुझसे मिलने के लिए धन्यवाद,' उसने जल्दी से कहा और शर्म से लाल हो रही अपनी शरम को छिपाने के लिए अपना सिर नीचे कर लिया।

रघु हँस पड़ा। 'अच्छा, तुमने तो मुझे धमकी ही दे दी थी कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो तुम मेरे खिलाफ कोर्ट जाओगे!'

'और मैं भी ऐसा ही करती,' उसने पलटकर जवाब दिया।

'ठीक है, आप दोनों अंदर आ जाइए, मुझे लगता है कि बहुत कुछ चर्चा करनी है,' पोटी ने आगे बढ़ते हुए कहा। दोनों उसके पीछे-पीछे चले गए।

XXX

उस दिन दिल्ली लौटते समय गोविंद चुप रहा। सूर्या बंधुओं को संभालना आसान था, लेकिन कोई और बात उसे परेशान कर रही थी जिसे वह ठीक से समझ नहीं पा रहा था। क्या यह शीला की कही कोई बात थी? उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था, फिर भी, इसने उसका पूरा दिन खराब कर दिया था। उसने शीला के मोबाइल पर फोन किया ताकि वह उसे फिर से सब कुछ बता सके। फोन या तो बंद था या नेटवर्क से बाहर

था। उसने जावाराम को फोन किया और उसे पता चला कि शीला कुछ देर पहले गेस्ट हाउस से चली गई थी, लगता है कोई उसे लेने आया था।

इससे उसका शक और बढ़ गया। ड्यूटी पर तैनात सरकारी गाड़ी ने तो उसके ठिकाने का पता लगा लिया होगा, आखिर वो कहाँ गई होगी? तब तक गोविंद को यकीन हो चुका था कि उसने उसे कुछ बताया होगा, किसी ऐसे यंत्र के बारे में जो पीड़ा के देवता को वश में कर सकता है। उसने ध्यान क्यों नहीं दिया? क्या पता वो खुद ही उस यंत्र का पता लगाने चली गई हो?

गोविंद ने मन ही मन खुद को कोसा। उसे ग्राम परिषद के साथ उसकी मुलाकात के बारे में पूरी जानकारी चाहिए थी, उसे पूरा यकीन था कि यही अहम सुराग है। कार चालक ऐसी जानकारी जरूर देगा। आखिर, चालक शेखर पुलिस का मुखबिर था।

गोविंद ने अपने सचिव को आवश्यक निर्देश दिए।

शाम ढलने तक गोविंद के सामने शीला पीतांबर की पूरी यात्रा का ब्यौरा रखा गया। अब उसे पता चल गया था कि उसे किस कार ने लिया था। वही कार उस दिन गांव के बुजुर्गों से उसकी मुलाकात के दौरान भी मौजूद थी और वह रघुराम सूर्या की थी, ड्राइवर ने इस बात पर ज़ोर दिया था। गोविंद मुस्कुराया, टकराव की स्थिति बन रही थी और उसे अच्छी तरह पता चल गया था कि शीला पीतांबर किस तरफ है। उसे सूत्रम पर नियंत्रण रखने और कुछ दखलंदाज़ों को हटाने के लिए अपनी योजनाओं को और बेहतर बनाना था।

अध्याय 20

रघु ने शीला को महल का निर्देशित दौरा कराया।

‘सचमुच, यह कोई महल नहीं है,’ उसने शीला से कहा। ‘यह एक तरह का किला है। हम इसमें महीनों तक खुद को बंद कर सकते हैं और कोई कुछ नहीं कर सकता।’

'आपको ऐसा क्यों करना होगा?'

‘ओह, कुछ भी हो सकता है, जैसे बाढ़। पुराने ज़माने में, अनाज भंडार भरे रहते थे, जानवर अंदर रखे जाते थे। सब्ज़ियाँ कम से कम एक महीने के लिए भंडारित की जाती थीं। पूरे गाँव का गुज़ारा हो सकता था, न केवल इस गाँव का बल्कि किले के आसपास के कुछ गाँवों का भी। पुराने ज़माने में हर दस गाँवों के पास ऐसा एक किला बना होता था। अगर आप ध्यान से देखें तो आज भी उनके अवशेष मिल सकते हैं।’

'गुडेम मूल रूप से एक जंगल था, एक विशाल जंगल। लगभग तीन सौ साल पहले, मेरे पूर्वजों ने शिकार करने के लिए इस किले का निर्माण किया था। यह मूल रूप से शिकारियों का एक गाँव था।'

शीला ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। महल की ओर जाते समय उसने जिन कृषि क्षेत्रों और ईंट भट्टों को देखा था, वे कभी एक विशाल जंगल का हिस्सा थे।

'अगर तुमने मुझे बताया न होता तो मैं कभी विश्वास नहीं करता।'

‘यह सच है। मुझे लगता है कि मैं परिवार में अकेला ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे शिकार करना पसंद नहीं है। हालाँकि मैं इसमें माहिर हूँ। मैं बाकी लोगों की तरह ही सटीक निशाना लगा सकता हूँ, लेकिन मुझे किसी ऐसे जानवर को गोली मारने में कोई मज़ा नहीं आता जो अपने काम से काम रख रहा हो। यहाँ के जंगल में पहले हिरण, जंगली भैंस, भालू और बड़ी बिल्लियाँ हुआ करती थीं। नीचे एक कमरा है जिसमें बहुत सारे जानवरों के सिर लटके हुए हैं। मुझे लगता है कि उनकी कीमत बहुत ज़्यादा होगी। मुझे बंदूकें पसंद हैं, बस मुझे उन्हें उन जानवरों पर इस्तेमाल करना पसंद नहीं है जो हमें नुकसान नहीं पहुँचाते।’

शीला हंस पड़ी। उसने कहा, 'मैं सहमत हूं,' और जानवरों के प्रति उसके दर्शन की प्रशंसा की।

अब वे पहली मंजिल के बरामदे में थे। रघुराम ने उसे अंबारी और अपील की घंटी के बारे में बताया। उसने उसे शयनकक्ष और चौंसठ कुर्सियों वाली भोजन-मेज दिखाई। शीला कुछ पल के लिए अवाक रह गई। तभी नौकर दोपहर का भोजन लेकर आए।

क्या आप मांसाहारी भोजन करते हैं?

'हा करता हु।'

'ओह अच्छा।'

'तो, मुझे अपने बारे में कुछ बताइए,' उन्होंने कहा जब उन्हें गरमा गरम तला हुआ मटन और मिश्रित सब्जी परोसी जा रही थी।

शीला ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मेरा जन्म मुंबई में रहने वाले एक मध्यमवर्गीय गुजराती परिवार में हुआ था। मेरे पिता ब्रिटिश राज के समय की एक पुरानी अंग्रेजी कंपनी में लेखाकार थे। वे रसद का काम करते थे। मेरी माँ गृहिणी थीं, एक साधारण सी महिला। वह मुझे पौराणिक कथाएँ सुनाया करती थीं और मेरे पिता मुझे संख्याओं से भर देते थे। बस, देखते ही देखते मैं क्वांटम भौतिक विज्ञानी बन गई, अगर ऐसी कोई चीज होती है तो। कॉलेज खत्म करने के तुरंत बाद मेरी शादी हो गई। आलोक एक प्रोफेसर और वैज्ञानिक थे, उनसे मेरी मुलाकात कॉलेज में हुई थी। वे अपने काम के प्रति बेहद समर्पित थे। उन्होंने मुझे क्वांटम यांत्रिकी में डॉक्टरेट करने के लिए प्रोत्साहित किया।'

आप अपने पति के बारे में भूतकाल में क्यों बात करती हैं?

शीला की आंखें उदासी से भरी हुई थीं, जबकि उसे लग रहा था कि उसकी बनाई हुई दीवार ढह रही है।

'आलोक मर चुका है। 2005 में मुंबई में आई बाढ़ के दौरान उसकी मौत हो गई थी। उसने मुझे बचाया था लेकिन...' रघु पलक झपकते ही अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

'मुझे बहुत खेद है, मेरा इरादा दखलंदाजी करने का नहीं था,' उसने उसका हाथ मजबूती से पकड़ते हुए कहा।

नहीं... मुझे लगता है, सब ठीक है।

'आपके माता-पिता और भाई-बहनों के बारे में क्या?'

उसने अपने होंठ दबाए और सिर हिलाया।

'मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। मेरे माता-पिता की हत्या कर दी गई थी,' उसने कहा।

'क्या?'

"वे मुंबई के विक्टोरिया स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ रहे थे। वे एक शादी के लिए अहमदाबाद जा रहे थे। यह 26 सितंबर 2008 की बात है। आतंकवादियों ने स्टेशन पर हमला कर दिया। बुजुर्ग दंपति को पता नहीं था, लेकिन वे सीधे कसाब के निशाने पर आ गए।"

मुझे बहुत खेद है। कृपया मेरी गहरी संवेदनाएं स्वीकार करें।

मुझे माफ़ करना... मुझे बहुत अफ़सोस है। बात बस इतनी है कि मुझे बात किए हुए बहुत समय हो गया है... कोई बात नहीं। मुझे माफ़ करना।

रघु उसकी कुर्सी के पास घुटनों के बल बैठ गया। 'कोई बात नहीं, हम सभी को कभी-कभी तनावमुक्त होने की जरूरत होती है।'

जैसे ही शीला अपनी टूटी हुई दीवार में वापस दाखिल हुई, उसमें एक सूक्ष्म बदलाव आया।

'मैं रघुराम सूर्या के बारे में सब जानती हूँ। क्या तुम लड़कियों को इसी तरह रिझाते हो?' उसने ठंडी आवाज़ में पूछा। 'तुम उन्हें अपने उत्तम शिष्टाचार से प्रभावित करते हो और फिर अपनी मनमानी करते हो।'

रघु खड़ा हो गया। काउंट ड्रैकुला इससे ज़्यादा भयावह नहीं दिख सकता था।

'लड़कियां आमतौर पर ज्यादा आसान होती हैं,' उसने ठंडे स्वर में कहा।

उस बयान में निहित अप्रत्यक्ष संकेत से आहत होकर शीला ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।
'मुझे खेद है कि आपके प्रयास व्यर्थ गए,' उसने गुस्से से कहा।
रघु चुप हो गया। उसने सोचा, 'वह तुम्हारे घर में मेहमान है। तुमने उससे उसके जीवन का सबसे दुखद हिस्सा बताने को कहा तो वह फूट-फूट कर रो पड़ी, और तुम्हारा अहंकार उसे इतनी छूट भी नहीं दे रहा। तुम क्या बन गए हो?'
उन्होंने कहा, 'मुझे माफ कर दीजिए, मेरा मतलब वो नहीं था। आप... उन लड़कियों में से नहीं हैं। मुझे लगता है कि मैं आपका सम्मान करता हूं।'
'क्या इसका मतलब यह है कि आप मुझे आकर्षक नहीं मानते?' यह कहते ही उसके चारों ओर की दीवार कांच की तरह टूट गई।
'तुमने अभी उससे क्या पूछा?'
रघु को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। 'मैं...'
'इसका जवाब मत दो, यह एक मूर्खतापूर्ण सवाल है,' उसने झट से कहा।
'हाँ। खाना ठंडा हो रहा है।' उसने अपने अंदर बढ़ती गर्मी को दबाने की पूरी कोशिश की।
वे चुपचाप खाना खा रहे थे। दोपहर के भोजन के बाद भी वे मेज पर ही बैठे रहे, दोनों ही उस पल के जादू को भंग नहीं करना चाहते थे। पोटी थोड़ी दूरी पर खड़ी थी। कुछ देर बाद रघु ने अपना गला साफ किया।
'शीला, सरकार मेरी संपत्ति के पीछे क्यों पड़ी है?'
उसने रघु को एक उदास नज़र से देखा। 'सुनो, अगर हमें साथ काम करना है, तो हम दोनों को एक-दूसरे के प्रति ईमानदार रहना होगा। मुझे यह मत बताओ कि तुम्हें अपने ही घर के नीचे क्या है, यह नहीं पता।'
रघु ने पलकें झपकाईं। 'मेरे घर के नीचे क्या है?'
शीला ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। 'क्या आप सचमुच मुझसे कह रहे हैं कि आप इस घटना के बारे में नहीं जानते?'
रघुराम ने उसे खाली निगाहों से देखा, 'अद्भुत घटना? क्या, सचिन तेंदुलकर यहाँ थे?'
वह अपनी कुर्सी पर आगे की ओर झुकी। 'कुछ हफ़्ते पहले मेरी टीम के एक सदस्य को कुछ ऐसा मिला जिस पर विश्वास करना बिल्कुल असंभव था। हमने सैटेलाइट से तस्वीरें लीं और हमें आपके स्मारक हॉल के ठीक नीचे बहुत अधिक विद्युतचुंबकीय उपस्थिति दिखाई दी।'
रघु और पोटी ने एक-दूसरे की ओर देखा।
'यह कैसी विद्युतचुंबकीय गतिविधि है? भगवान के लिए, क्या आप लोगों को लगता है कि हमारे पास कोई भूमिगत सुपर जनरेटर या ऐसी ही कोई चीज है?'
शीला ने कहा, 'कुछ ऐसा ही। यह लगभग दस फुटबॉल मैदानों के आकार का है। यह किसी प्रकार की गेंद है और रघु; इसके चारों ओर विद्युत चुम्बकीय गतिविधि असाधारण है। जैसा कि मैंने प्रधानमंत्री से कहा था,

यह लगभग दस हजार टेरावॉट विद्युत ऊर्जा उत्पन्न कर रहा है। क्या मुझे यह बताने की आवश्यकता है कि हमने अपने सिद्धांतों का परीक्षण हमारे पास मौजूद सबसे उन्नत तकनीक से किया है।'

'टेरावॉट आखिर होता क्या है?'

'एक टेरावॉट एक ट्रिलियन वॉट विद्युत ऊर्जा के बराबर होता है,' पोटी ने कहा। 'बाबू, यह असंभव है। मिस शीला, मैं एक विद्युत अभियंता हूँ। इतनी शक्ति को स्थिर करना कभी आसान नहीं होता, छुपाना तो दूर की बात है। भगवान के लिए, यह गुडेम को नष्ट कर देता और बाकी दुनिया को राख में बदल देता।'

शीला ने सहमति में सिर हिलाया। 'मैं आपसे सहमत हूँ श्रीमान पोटी, हमें यह भी नहीं पता कि अगर इस तरह की शक्ति सुपरनोवा में तब्दील हो जाए तो क्या होगा।'

'तो फिर यह सुपरनोवा क्यों नहीं बन गया?' रघु ने पूछा।

'कोई चीज़ इस शक्ति को रोक रही है। यह एक अदृश्य दीवार की तरह है जो स्मारक कक्ष की सीमाओं के भीतर से ऊर्जा को बाहर नहीं निकलने देती। मेरी समझ में इसका कोई और स्पष्टीकरण नहीं है। इसका प्रभाव इतना कमज़ोर है कि यह स्मारक कक्ष के आस-पास की चीज़ों को प्रभावित करता है।'

रघु ने पोटी से नजरें मिलाईं। क्या पापा ने यही किया? क्या उन्होंने हॉल में उस विद्युत चुम्बकीय यंत्र को गिरफ्तार कर लिया?

'आप हमें और क्या बता सकती हैं?' रघुराम ने उससे पूछा।

'यह चीज़ बढ़ती जा रही है। दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होती जा रही है। हमें एक ऐसे संगठन की ज़रूरत है जो इसे नियंत्रित करने और संभवतः इसकी शक्ति का उपयोग करने के लिए कदम उठा सके। मुझे लगता है कि सरकार सबसे अच्छा विकल्प है। अगर हम इस मामले को पूरी तरह से उजागर कर दें और अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करें, तो इसका सुरक्षित रूप से अध्ययन और विश्लेषण किया जा सकता है।'

पोटी ने असहमति में सिर हिलाया। 'मुझे लगता है कि हमें इसे नष्ट कर देना चाहिए। बाबू, आपको रथाया से मिलना चाहिए।'

रथाया का नाम सुनते ही शीला चौंक गई। 'मज़ेदार बात है कि तुमने उसका ज़िक्र किया। रथाया एक और रहस्य है जो मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा है। वह क्वांटम भौतिकी की बातें करता है और मेरे पास तो इसमें पीएचडी है। उसने परमाणुओं के आपस में संवाद करने की बात की, उसने कहा कि उप-परमाणु स्तर पर समय नहीं होता। उसने कहा कि हम वही छवियाँ देखते हैं जो हमारा दिमाग हमें दिखाता है और दुनिया एक बहुत बड़ा धोखा है, एक भ्रम है, जिसे उसने माया कहा। उसे पता था कि मैं तुमसे मिलने वाली हूँ, उसे पता था कि तुम यहाँ हो और उसने कहा कि तुम्हें उससे मिलना होगा और मुझे तुम्हें बताना होगा कि अग्निपुत्र का उपयोग करने का समय आ गया है।'

अध्याय 21

AGNIPUTR!

रघु के मन में कई तस्वीरें कौंध गईं।

प्रकाश। सर्वव्यापी। वीरता।

सफेद। शुद्ध। प्रेरित।

लाल धब्बा। एक घाव। संक्रामक रोग।

नीला। उपचार। रक्षा।

‘मुझे उम्मीद थी कि तुम मुझे बताओगी कि वह क्या है,’ उसने शीला से कहा।

मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है कि अग्निपुत्र क्या है।

‘बाबू, उसे पिछली रात की घटना के बारे में बताओ,’ पोटी ने रघुराम के पीछे से कहा।

रघुराम एक पल के लिए झिझका। किसी तरह, उसे लगा कि सामने बैठी महिला भरोसेमंद है। उसे बस इतना पता था। इसलिए उसने उसे बता दिया।

शीला ने जवाब दिया, 'मुझे यह पूछने के लिए खेद है, लेकिन क्या आपको यकीन है कि आपने यह सब सपना नहीं देखा था?'

रघु हँसा, लेकिन उसकी हँसी बनावटी थी। 'काश वो शीला होती, काश वो शीला होती। या तो हम सब उस रात सपना देख रहे थे या मैं सपना नहीं देख रहा था।'

‘यह तो अद्भुत है, बिलकुल किसी कहानी की किताब से निकला हुआ। और आप कहते हैं कि इस आदमी... पी. ईश्वर ने आपको अग्निपुत्र के बारे में बताया था।’

'खैर, अग्निपुत्र के बारे में नहीं, बस उन्हें उम्मीद थी कि मैं इसका इस्तेमाल करने के लिए तैयार हूँ।'

‘इन सबका क्या मतलब है?’ शीला ने पूछा।

‘मैं शीला को बिल्कुल नहीं जानती और मैं बेसब्री से जवाब ढूंढ रही हूं। मुझे उम्मीद थी कि आप मुझे उनमें से कुछ जवाब दे देंगी।’

“तो लीजिए, मैंने आपको वह सब बता दिया जो मुझे पता था।”

‘चलिए रथाया से मिलते हैं। मुझे लगता है हमने बहुत देर कर दी है, शायद उसके पास इन सब का जवाब हो और मैं इतने समय से यही सोचता रहा कि वह बेवकूफ है,’ रघु ने कहा।

अंधे व्यक्ति की फूस की छत वाली झोपड़ी तक पहुंचने में उन्हें लगभग एक घंटा लग गया। वहां दूर-दूर तक कोई भी इंसान नजर नहीं आया।

घर में सन्नाटा पसरा हुआ था, किसी तरह वह खाली-खाली सा लग रहा था।

कुछ गायब हो गया था।

एक बल।

एक ऊर्जा।

पोटी सबसे पहले कार से बाहर निकला। वह अंदर चला गया, उसके पीछे रघु और शीला भी आए। पोटी के हांफने की आवाज उन्होंने देखने से पहले ही सुन ली थी।

वह प्रसिद्ध प्रहरी, वह व्यक्ति जो तारों को निहारते हुए केवल परमाणुओं को ही देख पाता था, समय को नहीं जीत सका। पिची रथया की मृत्यु हो चुकी थी, कम से कम कुछ घंटों से। वह एक पुराने लकड़ी के पलंग पर लेटा हुआ था, उसकी सफेद आँखें खुली हुई थीं और उसके मुँह पर सूखे झाग की एक पतली परत जमी हुई थी।

देखने से ऐसा लग रहा था मानो उसकी मृत्यु शांतिपूर्ण हुई हो। उसकी दोनों आँखों पर उभरी लाल नसें गायब हो चुकी थीं। उसने एक गंदा कपड़ा पकड़ रखा था। उसे छुड़ाने में उन्हें कुछ देर लगी क्योंकि शरीर अकड़ चुका था। पोटी ने कपड़ा खोला, वह मैला और गंदा था, लेकिन फिर भी उस पर संस्कृत में लिखा एक वाक्य पढ़ा जा सका।

‘केवल अग्निर ही विजयी हो सकता है’

अध्याय 22

वह आदमी अपनी जांघों के दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए लगभग दो घंटे तक घुटनों के बल बैठा रहा। वह एक जासूस था, और पूरी ज़िंदगी जासूस ही रहा था। फ़ोर्स में भर्ती होने के समय से ही उसने जासूसी का प्रशिक्षण लिया था और वह इसमें माहिर था। साधारण कद-काठी का, औसत कद का, वह जो चाहे वो बन सकता था, कहीं भी घुलमिल सकता था, कुछ भी कर सकता था और किसी को पता भी नहीं चलता था। भाषा ही एकमात्र बाधा थी, जिसके कारण उसे अपनी जासूसी आंध्र प्रदेश राज्य तक ही सीमित रखनी पड़ती थी। उसका तेलुगु लहजा हर भाषा में झलक जाता था।

वह एलुरु रेलवे स्टेशन से उस लड़की और युवक का पीछा कर रहा था। ज़ाहिर है, उन्हें उसकी पहचान का ज़रा भी शक नहीं हुआ, आख़िरकार वह अपने काम में माहिर था। यह काफ़ी आसान था, लाल ज़ेनॉन पिकअप ट्रक दूर से ही आसानी से दिख जाता था। जैसे ही उसने उन्हें ट्रक में बैठते देखा, उसे पता चल गया कि उसे उनका पीछा करने की ज़रूरत नहीं है; उसे पता था कि वे कहाँ जा रहे हैं। उसे बस जितनी जल्दी हो सके, वहाँ पहुँचना था, हो सके तो उनसे पहले।

वह ऐसा नहीं कर सका। जिस पुरानी खस्ताहाल मिनी-ट्रक में उसने लिफ्ट ली थी, वह गुडेम जाते समय आधे रास्ते में ही खराब हो गई। सालों के प्रशिक्षण ने उसे सिखाया था कि घबराना नहीं चाहिए। उसने बस अगली ट्रक को रोका और उसमें बैठ गया। उसे ट्रक ड्राइवरों को ज़्यादा पैसे नहीं देने पड़ते थे और वह अपने मालिकों से खर्च किए गए पैसों से दुगुना वसूलने में माहिर था। उसे अब भी उम्मीद थी कि वह रात होने से पहले गुडेम पहुँच जाएगा।

उसकी सारी उम्मीदें तब टूट गईं जब ट्रक चालक ने उसे गुडेम से पंद्रह किलोमीटर दूर उतार दिया और रास्ते में मिलने वाली अपनी एक महिला को ट्रक में बिठा लिया। बहस करने का कोई फायदा नहीं था। जासूस जानता था कि अगर वह बहस करता भी तो उसे ट्रक से बाहर फेंक दिया जाता। वह पंद्रह किलोमीटर तक लगातार तेज़ कदमों से भागा। गुडेम पहुँचते-पहुँचते अंधेरा हो चुका था। जैसे-जैसे वह उस मनहूस गाँव के करीब पहुँचता गया, उसके पेट में एक अनजाना डर घर करने लगा।

अजीब बात यह थी कि किला किसी रत्न की तरह चमक रहा था। सारी फ्लडलाइटें जल रही थीं; उन्होंने गाँव के अधिकांश हिस्से को भी रोशन कर दिया था। छाया का नामोनिशान भी नहीं था। वह जानता था कि वह किले के पास भी नहीं पहुँच सकता, क्योंकि वहाँ हथियारबंद बंदूकधारी ऐसे घूम रहे थे जैसे मदमस्त लकड़बग्घे।

उसे आश्चर्य हुआ कि क्या गुडेम ने भारत पर युद्ध की घोषणा कर दी है। उसने किले से कुछ दूरी पर स्थित एक पेड़ की आड़ ली, जहाँ तेज रोशनी नहीं पहुँच रही थी, और एक नंबर डायल किया।

'सरू, वे यहाँ हैं, महल में,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति को उसकी तेलुगु लहजे वाली अंग्रेज़ी समझने में कठिनाई हो रही थी।

क्या आपको हिंदी आती है?
'यीशु सरू।'
'तो हिंदी में बोलो।' उस व्यक्ति ने अपनी बात हिंदी में दोहराई। अपनी रिपोर्ट देने के बाद, जासूस ने चुपचाप आगे के निर्देश लिए। थोड़ी देर बाद उसने फोन काट दिया।
'मुझे परवाह नहीं कि रात है या दिन,' उसने अपने साथ बात कर रहे व्यक्ति की नकल करते हुए कहा।
'अगर मुझे परवाह होती भी तो क्या होता? किसी को परवाह नहीं कि मुझे क्या परवाह है,' उसने तेलुगु में खुद से बुदबुदाया।
वह आदमी पेड़ के नीचे बैठ गया। वह इतनी घनी अंधेरे में था कि बंदूकधारियों की नज़र उस पर नहीं पड़ी। मजेदार बात यह थी कि उसे लगातार यह महसूस होता रहता था कि कोई उसे देख रहा है...।
और न ही किसी पुरुष द्वारा।
देखने वाला व्यक्ति कुछ और ही था।
उसने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। यह खौफ। अंधेरे में छिपे अज्ञात खतरे का डर। शायद इसलिए क्योंकि वह पहले कभी अपने से बड़े किसी शिकारी के सामने नहीं आया था।
वह हमेशा एक अदृश्य दर्शक हुआ करता था। अब, स्थिति उलट गई थी।
वह एक पर्यवेक्षक था।
उसे पता चल जाता था कि उस पर नजर रखी जा रही है।
जब वह खेल का मुख्य खिलाड़ी था।
शिकार किए जा रहे लोग।
सैबल पार्च को जासूस के खून की गंध आ रही थी।
पार्च के लिए, वह आदमी महज़ उसके शरीर के विभिन्न हिस्सों में बहता हुआ खून था। एक बहता हुआ, चलता-फिरता तरल पदार्थ। वह काफी समय से शिकार की तलाश में था, उस व्यक्ति का इंतज़ार कर रहा था जिसकी रगों में खून से कहीं ज़्यादा कुछ हो। बाकी लोगों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी; वे उसके लिए महज़ भोजन थे।
वह प्राणी धीरे-धीरे रेंगता हुआ आदमी के करीब आया। उसके भार से सूखे पत्ते चटकने लगे। जासूस तुरंत सतर्क हो गया। बिना किसी चेतावनी के उसने अपनी टॉर्च जलाई और उसकी रोशनी आवाज़ की दिशा में घुमा दी। एक गुर्राहट के साथ, वह प्राणी अंधेरी रात में वापस चला गया।
जासूस ने कुछ देखा। उसे इस बात का पूरा यकीन था। लेकिन वह ठीक क्या था, यह उसे नहीं पता था। वह क्रिस्टल की तरह चमकदार था और उसका आकार विकृत था। उसे यह भी पता था कि दुनिया में ऐसा कोई जानवर नहीं होता।

पलक झपकते ही वह उठ खड़ा हुआ और महल की ओर दौड़ने लगा। पार्च उसके पीछे भागा। उसने उसकी टांग को शिकंजे में जकड़ लिया, टखने के ऊपर की कोमल उपास्थि को कुचल दिया, जिससे जासूस चीख उठा।

किले से आती स्पॉटलाइट में वह आदमी ज़मीन पर बुरी तरह छटपटा रहा था। सैबल पार्च का कोई अता-पता नहीं था, बस उसकी मदद के लिए बेतरतीब चीखें सुनाई दे रही थीं, जिन्हें सुनकर कुछ हट्टे-कट्टे बंदूकधारी उसे घसीटकर किले के अंदर ले गए।

XXX

शीला चाहती थी कि उसकी टीम जावाराम के बजाय महल में रहे। वजह: उन्होंने अगले दिन गुप्त रूप से स्मारक हॉल का भ्रमण करने का फैसला किया था। विदुष और प्रियंका नरम सोफे पर आराम से बैठे थे, दोनों के हाथों में शराब का गिलास था। विदुष व्हिस्की की चुस्कियां ले रहा था, जबकि प्रियंका के हाथ में सफेद वाइन का गिलास था जिसे उसने छुआ तक नहीं था।

कॉरिडोर में रघुराम सूर्या फोन पर जोश भरी बातचीत कर रहे थे।

‘क्या आपको वे दस्तावेज़ मिल गए जो मैंने आज सुबह आपको भेजे थे?’

रघु ने सुना।

‘इसे अंतरिम आवेदन में सबूत के तौर पर पेश कर दीजिए। देखते हैं वे इस पर क्या कहते हैं। मुझे हैरानी है कि विजयवाड़ा में किसी ने मेरे खिलाफ उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए सहमति दे दी,’ उन्होंने बिना किसी अहंकार के कहा; यह तो बस एक सामान्य तथ्य था। उन्होंने कुछ और देर तक सुना।

जी हां, मुझे पता है कि मेरे चचेरे भाइयों ने मेरे खिलाफ केस दर्ज कराया है। मुझे पहले से ही पता था कि ऐसा होगा, इसीलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि आपको दस्तावेजों की प्रतियां मिल जाएं। धन्यवाद महोदय। मैं आपको कल वापस कॉल करूंगा।

उसने अपना मोबाइल फोन बंद किया और जेब में रख लिया। पोटी, जो थोड़ी दूरी पर खड़ा था, अब रघु के पास आया। लंबे कद के वकील को थोड़ा झुकना पड़ा ताकि पोटी उसके कान में फुसफुसा सके। उसने सिर हिलाकर सहमति दी।

‘क्या तुमने मेजर कांट को बताया था कि तुम महल जा रही हो?’ शीला ने प्रियंका से पूछा।

'नहीं महोदया, हमने उसे बताया था कि हम दिल्ली लौट रहे हैं। हमने कार को स्टेशन पर छोड़ने के लिए कहा था, जैसा आपने हमसे कहा था।'

'अच्छा।'

‘क्या हो रहा है मैडम? मुझे लगा था कि श्री सूर्या... दुश्मन हैं, हम उनके घर में शराब क्यों पी रहे हैं?’ प्रियंका ने फुसफुसाते हुए कहा।

शीला मुस्कुराई। प्रियंका ने शीला को कभी मुस्कुराते हुए नहीं देखा था।

‘चिंता मत करो, रघु तुम्हारा सिर नहीं खा जाएगा। बस... उससे दूरी बनाए रखना,’ उसने प्रियंका को चेतावनी दी। रघु के अपनी खूबसूरत सहायक की ओर आकर्षित होने के विचार से शीला बेवजह चिढ़ गई थी।

'जी हां, जरूर, महोदया, लेकिन हम यहां क्या कर रहे हैं?'

‘हम संस्कृत सीखने की कोशिश कर रहे हैं। हमें यह पता लगाना होगा कि किसी विशेष संस्कृत वाक्य का क्या अर्थ है। हमें अग्निपुत्र नामक यंत्र का उपयोग करना भी सीखना होगा और यह सब अपने गुरु, गृह मंत्री का ध्यान आकर्षित किए बिना करने के लिए हमें इस महल और रघु के आतिथ्य की आवश्यकता है।’

प्रियंका ने एक पल के लिए इन सब बातों पर विचार किया।

और हमें गृह मंत्री को क्यों नहीं बताना चाहिए?

क्योंकि अब तक वह जिस तरह से काम कर रहा है, वह पूरी तरह गलत है।

‘उसके इस काम में क्या गलत है, महोदया?’

'मैं कुछ भी साबित नहीं कर सकता, यह तो बस एक अंतर्ज्ञान है।'

‘मैंने सोचा था कि हम वैज्ञानिक हैं। हम तथ्यों और आंकड़ों पर काम करते हैं!’

शीला ने कहा, “सोचो, उसे इस घटना के बारे में रघु से सलाह-मशविरा करना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय उसने उसकी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया। वह इस बारे में किसी को भी कुछ नहीं बताना चाहता, यहाँ तक कि सरकार में अपने सहयोगियों को भी नहीं। उसने इस परियोजना को ऐसे चलाया है जैसे यह उसका निजी उद्यम हो। अभी कुछ दिन पहले ही वह रघु के चचेरे भाइयों से उसके खिलाफ लड़ने की बात कर रहा था। वह उनके पुराने पारिवारिक झगड़े का इस्तेमाल भाइयों को आपस में लड़ाने के लिए कर रहा है। इन सब से क्या फायदा होगा?”

महोदया, मैं पूरे आदर के साथ कहना चाहता हूँ कि शुरुआत में आप रघु को लेकर आशंकित थीं। मुझे मंत्री जी के इस कदम में कुछ भी गलत नहीं लगता। वे संभवतः किसी राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा कर रहे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि वे उचित समय पर इसका खुलासा करेंगे। उन्हें रघु को कुछ भी बताने की क्या ज़रूरत है?

‘प्रियंका, आपने सही बात कही...’ रघु ने बीच में टोकते हुए कहा, ‘बस एक-दो छोटी-मोटी बातें छूट गई हैं। इस परियोजना के लिए गठित कंपनी एक सार्वजनिक-निजी उद्यम है। अब, निजी साझेदार किरोमल इंडस्ट्रीज की सहायक कंपनी है। क्या आपको यह पता था?’

प्रियंका चौंक गईं और बोलीं, 'नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया।'

‘देखिए, मैं एक वकील हूँ, मैंने पूरी जाँच-पड़ताल की है। दूसरी बात, आपका कार चालक असल में कार चालक नहीं है। वह एक स्थानीय जासूस है, एक गुप्त एजेंट है। वह पुलिस निरीक्षक के पद पर है। वह इतने समय से आपके ड्राइवर की भूमिका निभा रहा था। उसे विशेष रूप से आप लोगों पर नज़र रखने का काम

सौंपा गया था। उसने आपको केवल एलुरु रेलवे स्टेशन पर नहीं छोड़ा। वह आपके पीछे-पीछे गुडेम तक आया। अब आप जानते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया होगा?'

प्रियंका अपने सोफे से उठीं।

'तुम्हें यह सब कैसे पता है?'

क्योंकि, अभी वह यहीं है।

'क्या?'

रघु ने कंधे उचकाए और सीधी पीठ वाली कुर्सी पर आराम से बैठ गया।

'तुमने उसे क्या बताया?'

वह मुस्कुराया, 'सच। एक महान वकील ने एक बार कहा था, सच बोलना मुश्किल हो सकता है, लेकिन अगर आप जानते हैं कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है तो यह एक बहुत शक्तिशाली हथियार है।'

'यह किसने कहा?' विदुष ने पूछा।

उनका नाम मोहनदास करमचंद गांधी था।

और आपने सच्चाई का इस्तेमाल कैसे किया?

रघु ने फिर कंधे उचका दिए। 'हमने उसे बताया कि किरोमल मेरी संपत्ति पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। हमने उससे बहुत ही प्यार से कहा कि जब तक हम उससे न कहें, तब तक वह आप दोनों के महल जाने या आगे की किसी भी घटना के बारे में किसी को कुछ न बताए।'

क्या यह दमन नहीं है?

'यह झूठ तो नहीं है, है ना?'

'अगर वे उससे पूछ लें तो क्या होगा?'

रघु ने सिर हिलाया। 'वह बस बीमारी की छुट्टी पर गया है।'

'तो फिर, अगर यह सच नहीं है, और पूरा सच नहीं है तो क्या है?' प्रियंका ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

नहीं, वह घायल है। उसकी नाक से खून बह रहा है क्योंकि वह जमीन पर काफी जोर से गिरा था और उसकी टखने की हड्डी टूट गई है।

शीला ने पूछा, 'यह कैसे हुआ?'

'पक्का नहीं कह सकता...लेकिन अगर मुझे उसकी व्याख्या माननी पड़े, तो आज रात के बाद सेबल पार्च से बच निकलने वाला मैं अकेला नहीं हूँ।'

शीला और प्रियंका ने रघु को घूरकर देखा। 'क्या तुम हमें सच बता रहे हो?'

रघु दिल खोलकर हँसा, 'तुम्हें क्या लगता है, मैंने उस आदमी की पिटाई करवाई और फिर उसे धमकी भी दी?'

'अच्छा, सामंती सरदारों का यही तो काम होता है, है ना? वो आदमी तुम्हारे घर में है, तुम्हारी जासूसी कर रहा है, जाहिर सी बात है!' प्रियंका ने टिप्पणी की।

रघु फिर हँसा, 'ऐसे में, उसे मेरी जासूसी करने के आरोप में हिरासत में लेना मेरे लिए जायज़ है। मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह एक पुलिसकर्मी है।'

'ठीक है, श्रीमान वकील। तो आपने क्या किया?'

मैंने पोटी से उससे बात करवाई। वह मेरे ही गाँव का रहने वाला है और वह कुछ घंटों के लिए ड्यूटी से छुट्टी लेने के लिए तैयार हो गया है, जब तक कि हम स्मारक हॉल में नहीं जाते। मैंने आपको समय दे दिया है। वह अभी खाना खा रहा है और जब तक वह यहाँ रहेगा, वह मेरा मेहमान रहेगा।

'आपका मतलब है, आपका कैदी?'

'प्रियंका, वो जब चाहे जाने के लिए स्वतंत्र है। उसे मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अपने ही किसी को नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी। वो एक पुलिसवाला है और किसी पुलिसवाले को उसकी मर्जी के खिलाफ नहीं रोका जा सकता, ये उनका अधिकार है। उसने बस टिप्पणी के लिए उपलब्ध न होने का विकल्प चुना है। इस समय उसके लिए सबसे सुरक्षित जगह जेल के अंदर ही है।'

प्रियंका संतुष्ट होने के बजाय ठेठ नजर आ रही थीं।

'मैं उसे देखना चाहता हूं।'

रघु ने पोटी को सिर हिलाकर अभिवादन किया।

'पोटी तुम्हें ले जाएगा।'

नहीं, तुम मुझे भी खत्म कर दोगे। मैं उसे इसी कमरे में चाहता हूँ।

'तब मुझे तुम सबको खत्म करना पड़ेगा। क्या बंदूकधारियों से भरे घर वाले आदमी के लिए यह मुश्किल है?'

प्रियंका ने निगल लिया।

रघु फिर हंस पड़ा।

'Bring Shekhar here,' he said to Poti.

'अग्निपुत्र आखिर होता क्या है?' विदुष ने अचानक पूछा। उसका व्हिस्की का गिलास लगभग खाली था और उसकी आँखें व्हिस्की के नशे से भरी हुई थीं।

'क्या उस बूढ़े सनकी आदमी ने भी यही बात कही थी? क्यों न हम जाकर उससे ही पूछ लें?'

'क्योंकि वह मर चुका है!' शीला ने याद दिलाया। टीम को पहले ही सारी जानकारी दे दी गई थी, लेकिन व्हिस्की के नशे में विदुष को याद दिलाना ज़रूरी था।

'ओह! हाँ, मैं यह भूल गया था, मृत्यु संचार में बाधा उत्पन्न कर सकती है,' विदुष ने सहमति जताई।

'बाबू गारू, आपने मुझे बुलाया था?' दागदार भूरी कमीज और गहरे रंग की पैंट पहने अधेड़ उम्र का आदमी दरवाजे पर खड़ा था। उसके पैर पर पट्टी बंधी हुई थी।

रघु ने प्रियंका को सिर हिलाकर सहमति दी। लड़की उस आदमी के पास गई।

'तो यह वाक्य क्या है?' विदुष ने शीला से पूछा।

क्या आपको संस्कृत आती है?
'एक शब्द भी नहीं, कसम से,' उसने झट से कहा।
शीला ने अपनी सहायक को गुस्से भरी नजरों से देखा।
हमें किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना होगा जो संस्कृत जानता हो।
'अगर आप चाहें तो मैं गांव के मंदिर से पुजारी को बुला सकता हूं,' पोटी ने पेशकश की।
'यह अच्छा विचार है, जाओ उसे बुला लाओ,' रघु ने अपनी कलाई झटकते हुए आदेश दिया।
'अब क्या?' शीला ने पूछा।
'ज़रूर, वो आएगा,' पोटी ने कहा। उसने अपने मोबाइल से एक नंबर डायल किया और धीमी आवाज़ में बात की। इसी बीच, प्रियंका चुपचाप कमरे में दाखिल हो गई।
'तो?' शीला ने उससे पूछा।
'श्री रघुराम ने झूठ नहीं बोला,' प्रियंका ने दबी हुई आवाज में कहा। उसने रघु की ओर शरमाते हुए देखा। 'मुझे माफ कर दीजिए... सचमुच।'
'कोई बात नहीं...कुछ घंटे पहले किसी ने मुझसे कहा था कि अगर हमें साथ काम करना है तो हमें एक-दूसरे के साथ खुलकर बात करनी होगी,' वकील ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।
लगभग बीस मिनट तक इंतजार करने के बाद, जिज्ञासु आँखों और दयालु स्वभाव वाला एक छोटा, गोल-मटोल आदमी हिचकिचाते हुए कमरे में दाखिल हुआ। उसने सफेद कुर्ता और धोती पहन रखी थी।
उन्होंने कहा, 'नमस्कारम बाबू गारू, आप मुझसे मिलना चाहते थे?'
रघु ने तेलुगु में कहा, 'नमस्कारम शास्त्री गारु, ये मेरे मित्र हैं। हमें संस्कृत से कुछ अनुवादित करवाना था।'
'बिल्कुल बाबू गारू, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी,' पुजारी ने धीमी आवाज में कहा।
पुजारी को पहली बार महल में बुलाया गया था और वह विस्मय में था। वह बरामदे की दीवार पर टंगे बाघ के स्टफ्ड मॉडल से लेकर आगंतुक कक्ष की दीवार पर टंगे हिरण के स्टफ्ड सिर तक को निहारता रहा, मानो बाघ किसी भी क्षण बिना किसी नुकसान की परवाह किए हिरण पर झपट पड़ेगा।
'कृपया बैठ जाइए,' रघु ने कहा। पुजारी इस तरह बैठ गया कि रघु उसके और घोड़े पर सवार बाघ के बीच में आ गया।
रघु ने शीला को सिर हिलाकर इशारा किया, जिसने रथाया का कपड़ा पुजारी को सौंप दिया।
शीला ने कहा, 'मुझे बस उम्मीद है कि जब तक हम इस घटना की जांच नहीं कर लेते, तब तक आप किरोमल को रोके रखने में सक्षम होंगे।'
रघु मुस्कुराया और बोला, 'मुझ पर भरोसा करो।'
शीला को पूरा यकीन था कि यह आसान है। हालांकि उसने यह बात कही नहीं।
पुजारी ने हल्की खांसी करके हस्तक्षेप किया।
उन्होंने तेलुगु में कहा, 'इस वाक्य का अर्थ है 'एक अक्षर वाली अग्नि ने वाणी पर विजय प्राप्त की'।'

'इसका क्या मतलब है?'
'बाबू गारु, यह काले यजुर्वेद में सफलता के मंत्रों में से पहला है।'
रघु ने समूह के लिए अनुवाद किया।
‘मुझे लगा था कि केवल चार ही वेद हैं,’ शीला ने कहा।
‘अम्मा गारु, दो यजुर्वेद हैं,’ पुजारी ने इस बार टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा। ‘एक को श्वेत यजुर्वेद के नाम से जाना जाता है और दूसरे को कृष्ण यजुर्वेद। कृष्ण का अर्थ है काला या गहरा। इसलिए इसे काला यजुर्वेद भी कहा जाता है।’
‘एक अक्षर वाले अग्नि शब्द ने भाषण को जीत लिया। वह अक्षर क्या है?’ शीला ने सीधे मुद्दे पर आते हुए पूछा।
उस धर्मगुरु ने सिर हिलाकर यह स्पष्ट कर दिया कि उसे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
‘हमें कौन बताएगा?’
'बाबू, हमने श्लोक पढ़ लिए हैं। लेकिन उनमें से कुछ हमारी समझ से परे हैं। उनके पीछे का ज्ञान खो गया है। केवल कुछ ही लोग हैं जो आपके लिए उनकी व्याख्या कर सकते हैं। ध्यान रहे, यह केवल व्याख्या होगी, सटीक अर्थ नहीं।'
क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो हमारी मदद कर सके?
‘आप तिरुपति, कालाहस्ती, रामेश्वरम या वाराणसी जा सकते हैं। इन महान स्थानों में विद्वान पुरुष हैं। साथ ही, वहां पुस्तकालय भी हैं।’
'शास्त्री गारू, आने के लिए धन्यवाद।'
पुजारी ने सभा में उपस्थित लोगों को नमस्कार किया और मुँह फेर लिया।
रघु ने कहा, 'हमें जितने ज्यादा जवाब मिलते हैं, उतने ही ज्यादा सवाल उठते हैं। उम्मीद है कि कल हमें कुछ जवाब मिल जाएंगे।'
‘बाबू, याद रखना, रथाया ने कहा था कि रात में किसी को भी स्मारक में प्रवेश नहीं करना चाहिए। हमें रात होने से पहले उस जगह से निकल जाना चाहिए,’ पोटी ने पीछे से कहा।
‘हम?’ शीला ने बीच में टोकते हुए कहा।
‘आपको सुरक्षा की ज़रूरत होगी। हमें नहीं पता कि उस जगह के अंदर क्या है। यह अजीब लगता है कि मुझे खुद नहीं पता कि मेरे अपने घर में क्या छिपा है,’ रघु ने थोड़ी उदासी से कहा। ‘इस बीच, देवियों और सज्जनों, भोजन परोसा जा रहा है।’
रात ढलते-ढलते शीला तकियों के सहारे गहरी सोच में डूबी हुई थी। रात की अपरिचित आवाज़ें, झींगुरों की चहचाहट, उल्लू की आवाज, खिड़की के बाहर जुगनुओं की भिनभिनाहट - ये सब उसकी नींद में खलल डाल रही थीं। वह शहर की लड़की थी, जिसे वातानुकूलित कमरों और साफ-सुथरे अपार्टमेंट में रहने की

आदत थी। सुनसान इलाके में एक विशाल पुरानी इमारत के अंधेरे कमरे में अकेले सोना उसके लिए थोड़ा अजीब था। खासकर इसलिए क्योंकि सेबल पार्च नाम का कोई जीव रात में घात लगाए बैठा था।
वह सोच रही थी कि क्या अगला दिन उसका आखिरी दिन होगा, या उस खौफनाक हॉल की बदनामी महज़ एक मिथक थी। रघुराम उसके दिमाग में छाया हुआ था, वह लंबा-चौड़ा वकील ज़्यादातर समय उसके विचारों पर हावी रहता था। क्या वह सचमुच ऐसा था? वह उससे क्या चाहता था? क्या वह उसके लिए महज़ एक और औरत थी? वह उसे पसंद करती थी। वह स्वभाव से रक्षक था। जन्मजात ही पुरुषों में राजा था। लेकिन उसमें मौजूद अनैतिकता का अंश उसे उलझन में डाल रहा था। यह उसके सीधे-सादे स्वभाव से बिलकुल विपरीत था। क्या वह सचमुच सीधा-सादा था या यह सब दिखावा था?
उसके दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। शीला बड़ी सहजता से बिस्तर से उठी, उसे उम्मीद थी कि शायद वही हो।
'यह कौन है?' उसने पूछा।
'चुप रहो... मुझे अंदर आने दो।'
उसने दरवाजा खोला और रघु वहां कुर्ते और पायजामे में खड़ा था।
'तुम क्या चाहते हो?' शीला ने पूछा। उसे उम्मीद थी कि वो वही होगा। अब जब वो उसके कमरे में खड़ा था, तो उसे अच्छा नहीं लग रहा था। अगर वो उसकी बातों में आ जाती, तो वो उसके बारे में क्या सोचेगा? वो नहीं चाहती थी कि वो उसके लिए सिर्फ एक और यौन शिकार बनकर रह जाए जिसे वो अगले दिन भूल जाए।
रघु भी उतना ही असहज लग रहा था। 'मैं... मुझे नींद नहीं आ रही थी, मैंने सोचा कि हम... कुछ... बातों के बारे में बात कर सकते हैं।'
'रघु, मैं तुम्हारी कोई चहेती लड़की नहीं हूँ,' उसने सख्ती से कहा, 'काश तुम यह सब करना बंद कर दो।'
वह चौंक गया।
'मैं नहीं चाहता था... मुझे माफ करना, मेरी गलती थी... शुभ रात्रि।'
वह मुँह फेरकर चला गया। शीला उसे रुकने के लिए बेताब थी। वह उसे अपने जीवन में और अपने बिस्तर में चाहती थी। उसे इस बात का पूरा यकीन था। लेकिन अभी नहीं। उसके जाने के बाद भी वह काफी देर तक वहीं खड़ी रही, यही कामना करती रही कि वह वापस आ जाए। उसे यह भी नहीं पता था कि वह उसे अपने जीवन में आने देगी या नहीं।

अध्याय 23

जब वे स्मारक भवन के द्वार पर एकत्रित हुए तब तक सुबह के आठ बज चुके थे। तीनों वैज्ञानिक एक अजीब सी उदासी में डूबे हुए थे, जबकि वे एक महत्वपूर्ण खोज के कगार पर थे। उनका नाश्ता लगभग बिना खाए ही पड़ा था और यह तथ्य कि शायद यह उनका आखिरी नाश्ता हो, उनकी भूख को और भी कम कर रहा था।

वे किसी तरह खुद को घसीटते हुए ज़ेनॉन में दाखिल हुए, जबकि वे स्मारक स्थल तक आधा किलोमीटर पैदल भी जा सकते थे। रघु उनके पीछे-पीछे चल रहा था, मानो भूख हड़ताल पर बैठा कोई पिशाच हो। पोटी और रामदास दोहरी बैरल वाली शॉटगन लिए दौड़ रहे थे। उनके सीने पर कारतूसों की दोहरी बेल्टें इस तरह बंधी थीं जैसे किसी पुरानी पश्चिमी फिल्म के मैक्सिकन डाकू हों। उनमें घबराहट का जरा सा भी निशान नहीं था, बल्कि उनके चेहरे भावहीन थे।

वे कुछ देर तक स्मारक भवन के दरवाजों को घूरते रहे, मानो किसी नफरत भरी जेल के बाहर कैदी हों, इससे पहले कि वे उसकी ठंडी दीवारों के भीतर अपना ठिकाना बना लें। रघुराम ने स्मारक भवन के लकड़ी के दरवाजों में से एक की ओर हाथ बढ़ाया और उसे धीरे से धक्का दिया; दरवाजा टस से मस नहीं हुआ। उसने और जोर से धक्का दिया, लेकिन नतीजा वही रहा।

वह पीछे हट गया और रामदास को अपनी किस्मत आजमाने का इशारा किया। मजबूत कद-काठी वाले गार्ड कमांडर ने दरवाजे पर ज़ोर से पैर मारा। दरवाजा धीरे से चरमराते हुए खुला और अंदर एक आयताकार, दिखने में खाली हॉल दिखाई दिया। हॉल के दोनों ओर बनी ऊंची खिड़कियों से भरपूर धूप अंदर आ रही थी। ज़मीन से लगभग पांच फीट ऊपर से शुरू होकर ये खिड़कियां छत से पांच फीट ऊपर तक फैली हुई थीं।

कमरे की लंबाई फर्श से छत तक लगभग पचास फीट रही होगी। कमरे के दूसरे छोर पर एक सपाट दीवार पर लकड़ी के दो दरवाजे थे। प्रत्येक आठ फीट लंबा दरवाजा कम से कम चार फीट चौड़ा था। एक तरफ, खिड़कियों के ठीक नीचे, एक धूल भरी मेज थी। दूसरी तरफ, कुछ टूटी हुई कुर्सियाँ थीं। इनके अलावा, हॉल खाली था। कमरे के लकड़ी के फर्श पर सूखे पत्ते, पुराने कागज और धूल की मोटी परत जमी हुई थी। वे जल्दी-जल्दी कमरे में दाखिल हुए। एक बंदूकधारी, रामदास, पहले दाखिल हुआ और दूसरा, पोटी, सबसे आखिर में।

वे दबे पांव चल रहे थे। धूल की मोटी परत के कारण हॉल में उनका प्रवेश बिना किसी आवाज के हुआ, हालांकि धूल उड़ रही थी। अगर उस कमरे में उन छह लोगों के अलावा कोई और था भी, तो वह अदृश्य था। धड़कते दिलों के साथ, वे हॉल में और आगे बढ़े, खतरे का पहला संकेत मिलते ही दरवाजे की ओर भागने को तैयार।

'दरवाजों के पीछे क्या है?' शीला ने रघुराम के कानों में फुसफुसाते हुए पूछा।

रघुराम ने उत्तर दिया, 'यह मेरे पूर्वजों का वास्तविक विश्राम स्थल है, इसमें समाधियाँ हैं।'
प्रियंका ने कंधे उचकाए। निराशा से भरी हुई, उसने पूछा, 'तो अब क्या?' 'हम टूटे-फूटे फर्नीचर और धूल भरे पुराने हॉल की जांच करने तो नहीं आए थे। यहाँ और कुछ नहीं है। फिर वो अनोखी बात कहाँ है?'
रघु ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'तुम ही बताओ, तुम ही तो हो जिन्होंने इस पर भरोसा जताया था।'
'आपके पिता को आखिरी बार इसी हॉल में देखा गया था। हम लगभग चालीस वर्षों में यहाँ आने वाले पहले आधिकारिक प्रतिभागी हैं।' शीला के चमेली के इत्र की खुशबू ने उसे भर दिया, जिससे गंभीर वातावरण के बावजूद उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।
'वास्तव में तैंतालीस।'
'चलो दूसरे हॉल में चलते हैं। शायद वहां कुछ सुराग मिलें,' प्रियंका ने इशारा किया।
'यह...बहुत बुरा विचार है, मुझे यह जगह पसंद नहीं है। चलो ऐसा नहीं करते,' विदुष ने आपत्ति जताई। वह स्तब्ध सा लग रहा था और बार-बार अपने माथे और गर्दन के पिछले हिस्से को छु रहा था।
'बकवास!' प्रियंका ने कहा, 'मैंने डर के मारे आधी रात तक जागकर सिर्फ एक खाली कमरे में घूमने के लिए ऐसा नहीं किया। यहाँ कुछ भी नहीं है, बगल वाले कमरे में भला क्या इतना बुरा हो सकता है?'
विदुष बहुत चिंतित लग रहा था। 'मुझे आवाजें सुनाई दे रही हैं... मेरे दिमाग में, छोटे बच्चों की आवाजें। वे भूखे हैं। वे हमें बुला रहे हैं। क्या आप लोगों को भी ये आवाजें सुनाई नहीं दे रही हैं? हम ही उनका भोजन हैं।'
प्रियंका हंसते हुए बोली, 'अगली बार तुम्हें मरे हुए लोग दिखेंगे। तुम बहुत तनाव में हो, यार।'

अध्याय 24

रामदास, जिसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, सीधे दूसरे हॉल के दरवाज़े तक चला गया। उसने उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया। पोटी, अपनी बंदूक तैयार रखे हुए, इधर-उधर चोरी-छिपे नज़रें घुमाता हुआ उनके पीछे दरवाज़े तक गया।

'बाबू गारू, आपका क्या कहना है?' रामदास ने रघु से पूछा।

रघु ने उसे कोई जवाब नहीं दिया; उसे प्रतिक्रिया देने का भी समय नहीं मिला। एक ज़ोरदार चीख के साथ, विदुष ने दरवाज़े आधे खोल दिए और ऐसे अंदर घुस गया जैसे उसके पैरों में आग लगी हो। अंदर जाते ही वह तुरंत अंधेरे में समा गया।

बाकी टीम ने अपनी टॉर्च निकालीं और घने अंधेरे में लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े। सबसे पहले उन्हें झुलसा देने वाली गर्मी और जली हुई ऑक्सीजन की गंध महसूस हुई। उनकी टॉर्च की रोशनी में विदुष हॉल में तेजी से दौड़ता हुआ दिखाई दिया, जहाँ जमीन की दरारों से भाप निकल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी ज्वालामुखी पर खड़े हों जो कभी भी फट सकता है।

रामदास ने दीवार पर टॉर्च की रोशनी डाली, जाहिर तौर पर वह कुछ खोज रहा था।

'आह!'

वह इधर-उधर फुदकते हुए दीवारों पर टंगी कुछ मशालें जलाने लगा। इतने वर्षों बाद, लपटें पहले धीमी और झनझनाती रहीं, फिर अनिश्चित रूप से जलने लगीं। आग की रोशनी में वे पुराने खंडहरों को हैरानी से देखते रहे। शीला को उस तबाह इमारत में कोई दिलचस्पी नहीं थी; वह और बाकी मंडली विदुष को घूर रही थी, जो तेजी से हॉल के दूसरे छोर की ओर बढ़ रहा था।

यह गलत था।

शीला यह सब देख रही थी, लेकिन उसका मन इस सच्चाई को स्वीकार करने से इनकार कर रहा था।

विदुष हॉल के दूसरे छोर की ओर नहीं दौड़ रहा था।

वह हवा में तैर रहा था। जैसे रस्सी पर लटका हुआ हीलियम का गुब्बारा।

वह जमीन से लगभग चार फीट ऊपर था। कम से कम पहली नजर में तो ऐसा ही लग रहा था।

रघु को ही इस बात का एहसास हुआ कि असल में क्या गड़बड़ थी।

विदुष को बांध दिया गया था।

जैसे किसी हुक पर लटका हुआ मांस।

उसकी सफेद कमीज के पिछले हिस्से पर लाल रंग के धब्बे लगे हुए थे।

भीषण गर्मी ने उन्हें इस कदर झुलसा दिया मानो वे किसी छोटे से सूरज के पास खड़े हों, जैसे नरक की गहराइयों में हों। अचानक, गर्म हवा के झोंकों से मशालें मोमबत्तियों की तरह बुझ गईं और पूरा समूह अंधेरे में डूब गया। उन्होंने अपनी टॉर्च जला लीं।

शीला चीख पड़ी, दर्द से ज़्यादा डर से, क्योंकि भीषण गर्मी से उसकी त्वचा झुलसने लगी थी। गर्मी की लहरों और टॉर्च की रोशनी में विदुष एक टिमटिमाते हुए मृग-तृष्णा से ज़्यादा कुछ नहीं दिख रहा था।

'मैं तुम्हारा खाना नहीं हूँ, मुझे अकेला छोड़ दो...' प्रियंका अचानक चिल्लाई। उसने गुस्से से अपने बाल खींचे और गोली की तरह विदुष के पीछे दौड़ पड़ी।

'यहाँ क्या हो रहा है?' शीला चीखी और उसने अपनी टॉर्च प्रियंका पर तान दी। वह अपनी सहायक के पीछे भागी। धुंधली, पानी से भरी आँखों से वह बस इतना ही देख पा रही थी कि हॉल का दूर का हिस्सा लगभग अदृश्य था, मानो वहाँ कोई दीवार ही न हो, बस गर्मी की अंतहीन लहरें हों।

रघु शीला के पीछे भागा। उसने उसका कंधा पकड़कर उसे घुमाया। शीला अपना संतुलन खो बैठी और रघु पर गिर पड़ी। अंधेरे में रघु को उसकी आँखों में घबराहट का भाव मुश्किल से ही दिखाई दिया। शीला को कसकर पकड़े हुए रघु ने भाग रहे दोनों वैज्ञानिकों को आवाज़ दी।

किसी कारणवश, रामदास ने अपनी बंदूक की दोनों नालें हवा में चला दीं, जिससे वे सब चौंक गए। धमाके की गूंज पूरे कमरे में सुनाई दी। भागता हुआ एक व्यक्ति रुका, यह पहचानना असंभव था कि वह कौन था। रघु ने शीला को पोटी की ओर धकेल दिया, जो उनके साथ आ गई थी, और उन दोनों के पीछे भागा। वह प्रियंका के पास पहुँचा, जो हाथ बांधे खड़ी थी। वह रो रही थी।

'पीछे हटो,' रघु उस पर चिल्लाया। हॉल में हवा इतनी घुटन भरी थी कि रघु को अपनी बात सुनाने के लिए सचमुच जोर से चिल्लाना पड़ा।

प्रियंका ने उसे दयनीय निगाहों से देखा। उसने मानो सम्मोहन में आकर अपना हाथ उठाया और किसी चीज़ की ओर इशारा किया, उसकी आँखें उसकी उंगली का पीछा करती रहीं और वह जम गया।

विदुष उससे लगभग पंद्रह फीट दूर, लगभग छह फीट हवा में लटका हुआ था। बड़ी मुश्किल से उस युवक ने अपना सिर रघु की ओर घुमाया। उसके होंठ बिना आवाज़ किए हिल रहे थे। वह कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। रघु समझ गया कि वह क्या कहना चाह रहा है।

'मैं यहाँ हूँ विदुष, मैं तुम्हें यहाँ से निकाल लूँगा,' वह चिल्लाया।

अचानक विदुष सूअर की तरह चीखने लगा। रघु उस युवक की ओर दौड़ा। टूटे हुए ग्रेनाइट पत्थरों पर दौड़ते हुए और चट्टानों को कूदते हुए वह तब तक भागता रहा जब तक कि वह युवक से लगभग एक हाथ की दूरी पर नहीं पहुँच गया। तभी उसने एक खाली जगह में कदम रखा।

'हे भगवान!' रघु चिल्लाया, उसे बहुत देर बाद एहसास हुआ कि विदुष सिर्फ एक मोहरा था। और कुछ नहीं।

रघु अचानक रुक गया। ऐसा नहीं था कि वह जानबूझकर रुका था। वह हॉल से भाग निकला था। उसका एक पैर उसके ठीक नीचे फैले एक खालीपन के ऊपर लटका हुआ था। नीचे कुछ था, बिजली कड़क रही थी। लेकिन रघु ने उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। उसे एहसास हो गया था कि चाहकर भी वह खाई में गिरने से नहीं रुक सकता था। उसकी गति उसे सीधे मौत की ओर ले जाती।

फिर भी, किसी चीज़ ने उसे पीछे खींच लिया। एक शक्ति। इतनी ताकत कि वह उसके चंगुल में महज़ एक खिलौना बन गया। उसकी साँसें रुक गईं और वह खाँसते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा, उसकी आँखें अब भी उस युवा वैज्ञानिक पर टिकी हुई थीं। उसी क्षण, उसकी आँखों के सामने, विदुष के टुकड़े-टुकड़े हो गए। जैसे कोई पटाखा फूट रहा हो।

वैज्ञानिक के शरीर के टुकड़े अंधेरे में गिर पड़े। तभी रघु की निगाह उसके नीचे के खालीपन पर पड़ी। उसके नीचे खाई चौड़ी होती जा रही थी। खाई के भीतर बिजली चमक रही थी, जो एक हरे रंग के गोले से निकल रही थी। वह बहुत विशाल था, उस पर विरल बालों जैसी संरचनाएं थीं जो बिजली के झटके पैदा कर रही थीं। क्या यह किसी का सिर था? क्या इतना बड़ा कोई जीव हो सकता है? क्या सिर पर बाल थे, या कोई यंत्र? क्या यह सचमुच बिजली उगल रहा था? रघुराम खाई में नीचे देखता रहा, जबकि ये अतार्किक और अटपटे सवाल उसके मन में कौंध रहे थे।

किसी का हाथ उसके कंधे पर पड़ा। रघु ने ऊपर देखा तो पाया कि पी. ईश्वर उसके सामने खड़े हैं। उनकी दोनों तलवारें दाहिनी कमर पर म्यान में थीं, एक के नीचे एक। उन्होंने किसी जानवर की खाल के दस्ताने पहने हुए थे। खाई से आती गर्म हवा में उनके बाल लहरा रहे थे।

‘तुम बहादुर हो, मैं तुम्हें बस इतना ही कह सकता हूँ,’ उसने शांत भाव से कहा। रघु लड़खड़ाते हुए उठा।

‘तुम्हारा दोस्त तो बस एक मोहरा था। अगर तुम मर गए, तो सूत्रम आज़ाद होकर घर लौट आएगा और हम ऐसा होने नहीं दे सकते, है ना? अब वो तुम सबको मारने की कोशिश करेगा। तुम्हें जाना ही होगा।’

‘ये क्या है...? ये क्या चीज है?’

“मेरे मित्र, यही तुम्हारा शत्रु है। सूर्य, इसके बारे में बहुत कुछ समझाना पड़ेगा, शायद ब्रह्मांड के रहस्यों के बारे में भी। अभी इसके लिए समय और स्थान नहीं है। आज तुमसे मिलते हैं...”

एक तीखी चीख ने ईश्वर की जान ले ली।

‘यह शुरू हो गया है। सूत्रम ने लंबे समय बाद पहली बार शारीरिक संबंध का अनुभव किया है। अब यह रुकने वाला नहीं है।’

वे चीख की ओर दौड़े।

‘ये क्या चीज है, मुझे...समझ ही नहीं आ रहा कि ये क्या है?’

ईश्वर ने कहा, 'एक विसंगति या कहें तो एक गलत माप। इसका उद्देश्य उपभोग करना है; अगर तुम्हारे पिता न होते तो यह अब तक पूरी दुनिया को निगल चुका होता। फिर भी... वह सफल नहीं हो पाए।'

क्या आप मेरे पिता को जानते थे?

हम अच्छे दोस्त थे।

‘कैसे? आप दोनों कहाँ मिले? मैं अपने पिता के सभी दोस्तों को जानता हूँ। उन्होंने कभी आपके बारे में कुछ नहीं बताया।’

‘वो कहानी किसी और दिन के लिए है। अभी यहाँ से निकलने पर ध्यान दो।’

तब तक वे प्रियंका तक पहुँच चुके थे। लड़की अब विदुष की तरह हवा में लटकी हुई थी।
गर्म हवा उनके पास से गुजरी। प्रियंका फिर चीखी। रघु को चिमटों की चुभन महसूस हो रही थी। उसकी त्वचा बुरी तरह जल रही थी, लेकिन किसी तरह चिमटे उसे जकड़ नहीं पा रहे थे। पोटी जमीन पर पड़ी छटपटा रही थी। तभी शीला चीखने लगी क्योंकि हुक उसकी त्वचा में चुभ रहे थे।
प्रियंका की त्वचा कागज की तरह फट गई और उसका खून रघु पर छिटक गया।
दो तलवारों ने अदृश्य डोरियों को काट डाला। ईश्वर के लंबे बाल उसके चेहरे पर आ गिरे, जिन्हें उसने झटक कर हटा दिया। प्रियंका ज़मीन पर ढेर हो गई। वह बुरी तरह घायल थी। रघु ने किसी के बुलावे का इंतज़ार नहीं किया; उसने घायल लड़की को उठाया और दरवाज़े की ओर भागा। पीछे से आती पदचाप ने उसे बताया कि बाकी लोग भी उसके पीछे आ रहे हैं। धातु जैसी किसी चीज़ पर स्टील की खनक से ईश्वर का संघर्ष जारी रहा, जिसे केवल वही देख सकता था।
प्रियंका को संभालना मुश्किल था, चारों तरफ इतना खून लगा हुआ था। उसने खून से लथपथ उसके कपड़ों को कसकर पकड़ा और उसे अपने कंधों पर उठाकर दौड़ता हुआ आगे बढ़ा। वह दरवाजे तक पहुंचा और धड़ाम से बाहर निकल गया।
सबसे पहले तो रघु को यह बात समझ में आई कि भीतरी हॉल की भीषण गर्मी बाहरी हॉल में बिलकुल गायब थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी वातानुकूलित कमरे में आ गया हो। दौड़ते हुए वह यही सोच रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है। खुले में पहुँचकर ही रघु ने पीछे मुड़कर देखा कि क्या वे सब सुरक्षित पहुँच गए हैं। खून से लथपथ शीला उसके ठीक पीछे थी और उसके पीछे पोटी। रामदास और पी. ईश्वर कहीं नज़र नहीं आ रहे थे।
ज़ेनॉन कुछ मीटर दूर सड़क किनारे खड़ी थी। पोटी दौड़ते हुए रास्ते पर आगे बढ़ा, खून से लथपथ उसके चेहरे को देखकर हैरान ग्रामीणों के बीच से गुज़रा। ज़ख्मों के बावजूद, पोटी सबसे तेज़ दौड़ा। उसने ज़ेनॉन का पिछला दरवाज़ा खोला और एक झटके में गाड़ी में कूद गया। पोटी ने रघु से बेहोश वैज्ञानिक को छीनकर गाड़ी में बिठाया, तभी शीला लड़खड़ाते हुए उनकी ओर आई। उसने आगे का दरवाज़ा खोला और यात्री सीट पर गिर पड़ी। रघुराम गाड़ी के चारों ओर भागा। ज़ेनॉन धूल उड़ाते हुए जावाराम की ओर तेज़ी से बढ़ी।

अध्याय 25

जावाराम में स्थित श्रीमती सुशीला रेड्डी स्पेशलिटी केयर अस्पताल अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त एक संस्थान था, जिसका निर्माण मोहन रेड्डी एस्क्वायर ने करवाया था, जो ग्रेनाइट खदान, ग्रेनाइट काटने और पॉलिश करने वाली फैक्ट्री के मालिक और जावाराम के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक थे। यह अस्पताल उनकी दिवंगत माता की स्मृति में बनवाया गया था, जिनकी मृत्यु तपेदिक से हुई थी।

रघुराम खून से लथपथ प्रियंका को अस्पताल ले गया, उसकी मदद के लिए चीखें अस्पताल के पॉलिश किए हुए ग्रेनाइट और संगमरमर के गलियारे में गूंज रही थीं। जैसे ही अस्पताल के कर्मचारियों ने खून से लथपथ व्यक्ति को रघुराम सूर्या के रूप में पहचाना, वे तुरंत सहयोग करने लगे। एक घंटे के भीतर मेजर कांत को सूचित किया गया, स्थानीय पुलिस ने जिज्ञासु जनता और पत्रकारों को अंदर आने से रोकने के लिए इलाके को घेर लिया और परिवार के सदस्यों को फोन किए गए।

मेजर कांत वर्दी में थे। उन्हें अच्छा लग रहा था। आम कपड़े भी ठीक थे, लेकिन उन्होंने अपनी वर्दी मेहनत से हासिल की थी और उन्हें इसे पहनना अच्छा लगता था। यही एक चीज़ थी जो उन्हें बाकी दुनिया से अलग करती थी। वे एक कुर्सी पर बैठे और रोशनी से जगमगाते परामर्श कक्ष में मेज पर अपनी टोपी धीरे से रख दी।

डॉक्टर को उनकी उपस्थिति में असहजता महसूस हो रही थी। उनका लोगों पर ऐसा ही प्रभाव था। यह उनके व्यक्तित्व का ही प्रभाव था। उन्होंने देश के लिए अनेक युद्ध और झड़पें लड़ी थीं। वे उनसे बुरी तरह प्रभावित हुए थे। उनके व्यक्तित्व में ही उन घावों की झलक थी। कांट उनके प्रभाव को बखूबी जानते थे।

टेबल पर ढेर सारी तस्वीरें फैली हुई थीं। डॉक्टर ने पेन स्टैंड से एक पेंसिल निकाली और खड़े हो गए।

‘मेजर गारू,’ उन्होंने कहा और अपनी पेंसिल को त्वचा पर सुई के निशानों की एक श्रृंखला पर रखते हुए कहा, ‘यह प्रियंका के चेहरे का क्लोज-अप शॉट है, असल में उसके गाल का। इसे बुरी तरह से फाड़ा गया है, चाकू या हुक से नहीं, बल्कि मेरे विचार से कम से कम सत्तर सुइयों या सुई जैसी पतली चिमटियों से। इन्हें उसकी त्वचा में अचानक से डाला गया है और उसे सचमुच मांस के टुकड़े की तरह हुक से लटका दिया गया था।’

कांत उस तस्वीर को एक अजीब सी उत्सुकता से घूर रहे थे। उन्होंने सियाचिन की चोटियों और कश्मीर की घाटियों में अपने जीवनकाल में कई भयानक दृश्य देखे थे। लेकिन उन्होंने अभी तक इतनी भयावह यातना नहीं देखी थी। उस युवती का चेहरा मानो कागज के टुकड़े की तरह फट गया था।

'उसके साथ ऐसा चिमटे के कारण नहीं हुआ। उसके शरीर के वजन के कारण हुआ। उसके चेहरे की त्वचा इतनी नाजुक थी कि वह उसके शरीर का वजन सहन नहीं कर पा रही थी,' डॉक्टर ने रूखेपन से समझाया।

‘शीला और उस छोटे आदमी, पोटी का क्या हुआ?’ कांट ने पूछा।

“वही बात, शायद कम तीव्रता के साथ। किसी ने उन्हें भी प्रियंका की तरह ही अलग किया होगा, बस फर्क इतना था कि ज्यादा नुकसान होने से पहले ही ऐसा कर दिया गया था। शीला कुछ दिनों में ठीक हो जाएगी, पोटी भी। प्रियंका का मामला बिल्कुल अलग है।”

'आपका क्या मतलब है?'

मेजर गारू, प्रियंका के शारीरिक घाव समय के साथ ठीक हो जाएंगे। आपको व्यापक प्लास्टिक सर्जरी पर विचार करना चाहिए। हम उनके चेहरे की कम से कम अस्सी प्रतिशत विशेषताओं को बहाल करने के लिए पुनर्निर्माण और सौंदर्य संबंधी प्रक्रियाओं की सलाह देते हैं। मुझे सबसे ज्यादा चिंता उनकी मानसिक स्थिति के पूरी तरह बिगड़ जाने की है। उनका दिमाग मानो बंद हो गया है। मानव मस्तिष्क एक सीमित सीमा तक ही आघात सहन कर सकता है। उसके बाद या तो वह असंतुलित हो जाता है या खुद को बंद कर लेता है। यह एक अंतर्निर्मित सुरक्षा तंत्र है। प्रियंका का दिमाग बंद हो गया है। सच तो यह है कि चिकित्सा विज्ञान अभी भी मानव मस्तिष्क की जटिलताओं को समझने के प्रारंभिक चरण में है, इसलिए स्पष्ट रूप से कहें तो, हम निश्चित नहीं कह सकते कि यह कब सक्रिय होगा, या क्या यह कभी सक्रिय होगा भी। मैं यह भी बता दूं कि यह केवल एक प्रारंभिक निदान है। हो सकता है कि आगे की जांच करने पर हमें कोई रास्ता मिल जाए। उन्हें आए हुए अभी केवल पांच घंटे ही हुए हैं और मेरी टीम अभी भी ऑपरेशन थिएटर में उनके साथ है। अभी के लिए, हम आपको बता सकते हैं कि प्रियंका जीवित रहेंगी, उनका अस्तित्व रहेगा... मुझे नहीं पता कि उन्हें कभी इसका एहसास होगा या नहीं।

किसी न किसी को तो कीमत चुकानी ही थी। कांट को इस बात का पूरा यकीन था। उन्हें अच्छी तरह पता था कि कौन कीमत चुकाएगा।

इसी बीच, एक हल्की बेहोशी की दवा ने यह सुनिश्चित किया कि उसी अस्पताल के एक निजी कमरे में भर्ती दो लोग हिस्टीरिया के दौरे में न पड़ें। पोटी, उदाहरण के लिए, इतना थका हुआ और घायल था कि वह हिस्टीरिया का दौरा करने की कोशिश भी नहीं कर सकता था, लेकिन वह बेहोशी की दवा से राहत महसूस कर रहा था।

बेहोशी की दवा ने शीला पीतांबर को अपने बेचैन दिल और अशांत मन को काबू में करने में मदद की। शीला को डर था कि उस दिन की भयावहता जीवन भर उसका पीछा नहीं छोड़ेगी। उसे अभी भी बेचारे विदुष को हुक से बांधकर मांस के टुकड़े की तरह कमरे में घसीटते हुए देखना याद था। प्रियंका की कोमल त्वचा के कागज की तरह फटने का दृश्य उसे कंपकंपा देता था। बेहोशी की दवा के बावजूद भी उसे अपने आँसू रोकने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

पोटी और शीला के बीच कुर्सी पर बैठे रघुराम सूर्या को बेहोशी की दवा की जरूरत नहीं थी। वह न केवल उस सुबह हुए जानलेवा हमले में घायल न होने वाले एकमात्र व्यक्ति थे, बल्कि सबसे शांत भी थे।

मेजर कांट कुछ कैडेटों के साथ कमरे में दाखिल हुए, जो तुरंत दरवाजे के दोनों ओर खड़े हो गए। कांट का सुंदर चेहरा नियंत्रित गुस्से से भरा हुआ था। उन्हें उन लोगों ने धोखा दिया था जिन्हें वे अपनी टीम का हिस्सा

समझते थे और वे किसी भी तरह से इसका बदला लेने के लिए दृढ़ थे। शीला ने उनके चेहरे की गंभीर रेखाओं से यह बात समझ ली। उसे एहसास हुआ कि किरोमल को अब तक उनकी इस नादानी की भनक लग गई होगी।

‘वहाँ आखिर हुआ क्या? तुम लोगों के साथ ऐसा किसने किया?’ उसने शीला की नाजुक हालत की परवाह किए बिना उस पर चिल्लाते हुए कहा।

उसने सिर हिलाते हुए कहा, ‘मुझे...पता नहीं मेजर। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं कि क्या हुआ। एक मिनट पहले हम हॉल के अंदर थे और अगले ही पल...’ शीला फूट-फूटकर रोने लगी। रघु तुरंत उसके पास पहुँच गया।

‘आराम से, आराम से,’ उसने कहा।

‘मुझसे दूर रहो, समझे? बस दूर रहो,’ वह उस पर चिल्लाई।

रघु उस उग्रता को देखकर स्तब्ध रह गया। 'शीला...' उसने कहना शुरू किया।

‘पीछे हट जाओ साहब... आपने महिला की बात सुन ली,’ कांत ने रघु पर गुर्राते हुए कहा।

‘सुनो, हम साथ में अंदर गए थे...’

और फिर भी, केवल आप ही हैं जिन्हें कोई चोट नहीं आई है। मामूली खरोंचों और चोटों के अलावा आप बिल्कुल ठीक हैं, प्रियंका के विपरीत जो शायद कभी ठीक ही न हो पाए। कोई भी यह नहीं समझा सकता कि आप पर 'हमला' क्यों नहीं हुआ, क्या आप समझा सकती हैं?

रघु असमंजस में पड़ गया, 'मुझे नहीं पता...'

‘तुम्हें नहीं पता। तुम्हें नहीं पता। बकवास! मैं तुम्हें तब तक गिरफ्तार रख रहा हूँ जब तक हम यह तय नहीं कर लेते कि तुम्हारे साथ क्या करना है,’ वह दहाड़ा।

रघु समझ गया कि गुडेम में जो कुछ भी हुआ था, उसका फायदा उठाकर वह उसे घेरने की कोशिश कर रहा था। गृह मंत्री के पास सदन में प्रवेश करने का यही एकमात्र मौका था। रघु उस पागल आदमी से लड़ने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ था। किरोमल उस चीज़ से कम नहीं था जिसने उन पर हमला किया था। वे मंत्री को सदन पर कब्ज़ा करने नहीं दे सकते थे। भगवान ही जानता था कि वह क्या करेगा।

‘अरे यार, उसने हम सबकी जान बचाई है। तुम उसे गिरफ्तार क्यों करना चाहते हो?’ पोटी ने विरोध जताया।

'इसका फैसला पुलिस करेगी, तुम छोटे बदमाश, और अगर तुम बीच में आए तो मैं तुम्हें भी हत्या के आरोप में गिरफ्तार करवा दूंगा।'

‘हत्या? मैंने किसी की हत्या नहीं की मेजर। मुझे...पता नहीं क्या हुआ।’ रघु ने कहा।

'हम उसके बारे में देखेंगे।'

एक पुलिस इंस्पेक्टर चुपके से कमरे में दाखिल हुआ। उसने सलीके से सलाम किया, कांट ने भी सलाम का जवाब दिया।

‘विदुष खेरवा की हत्या और प्रियंका कपूर की हत्या के प्रयास के आरोप में इस व्यक्ति को गिरफ्तार करो। मैं चाहता हूं कि तुम इसे अभी हिरासत में लो,’ उसने इंस्पेक्टर को रघुराम की ओर इशारा करते हुए आदेश दिया।

इंस्पेक्टर ने चतुराई से सिर हिलाया और अपनी लाठी से रघु को अपने पीछे आने का इशारा किया।

हताश रघु ने शीला की ओर मुड़कर कहा, 'शीला, तुम मुझसे मदद मांगने आई थीं, मैंने तुम्हारी मदद की। बदले में मुझे यही मिला? क्या तुम जानती हो कि मैं महिलाओं को गंभीरता से क्यों नहीं लेता? क्योंकि वे झंझट के लायक ही नहीं हैं।'

उसने जवाब का इंतजार नहीं किया, बल्कि इंस्पेक्टर के साथ बाहर निकल गया और कमजोर होने के बावजूद, पोटी अपने बिस्तर से उतरकर रघु के पीछे-पीछे चला गया।

शीला ने अपनी आंखों में भरे नए आंसुओं को पोंछा।

अध्याय 26

समुद्र तल से पच्चीस हजार फीट ऊपर, गोविंद रोमांचित था। सुबह की धूप में रत्न की तरह चमकता निजी जेट गृह मंत्री के उत्साहपूर्ण मनोदशा का प्रतीक था। गोविंद ने इतनी जल्दी हालात अपने पक्ष में बदलने की उम्मीद नहीं की थी। ऐसा नहीं था कि उसे इससे कोई दुख था, बल्कि इसके विपरीत, वह अपने सभी भाग्य के लिए आभारी था, चाहे वे ज्ञात हों या अज्ञात, पृथ्वी पर उनकी स्थिति चाहे जो भी हो।

ज्योतिषशास्त्र, जो भविष्य का निर्धारण करने के लिए तारों की स्थिति पर निर्भर करता था, एक ऐसी चीज थी जिसमें वह निजी जीवन में दृढ़ विश्वास रखते थे, हालांकि सार्वजनिक जीवन में उन्होंने इस अपूर्ण विज्ञान की सटीकता के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की।

दिल्ली के लिए रवाना होने के कुछ ही घंटों के भीतर रघुराम सूर्या को अपने शिकंजे में लेने की उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी; और वह भी कैसे! वकील ने खुद को ऐसी स्थिति में फंसा लिया था जहाँ से गोविंद चाहकर भी नहीं निकल सकता था। दुश्मन ने खुद अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली थी। उसने एक भगवान से पंगा लेने की कोशिश की और बुरी तरह असफल रहा।

परिणामस्वरूप, एक कनिष्ठ वैज्ञानिक की मृत्यु हो गई, एक अन्य प्रतिभाशाली व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि शीला, प्यारी शीला, जो इस पूरी योजना में इतनी महत्वपूर्ण थी, सूर्या के विरुद्ध हो गई थी। अब केवल एक ही काम बचा था, और वह था उस भ्रष्ट अदालत द्वारा जारी निषेधाज्ञा को रद्द करवाना। अब यह केवल औपचारिकता थी, एक मात्र प्रक्रिया जिसका पालन करना था। उसने अपनी बांह पर रखे ताबीज की शक्ति पर आश्चर्य व्यक्त किया और साथ ही अपने भाग्य को भी धन्यवाद दिया।

गृह मंत्री ने जरा भी उत्तेजना नहीं दिखाई, जिसे देखकर विमान में बैठा दूसरा व्यक्ति, जो खुद बेहद संयमी स्वभाव का था, एक साधारण व्यक्ति में इस तरह की उत्तेजना देखकर आश्चर्यचकित रह गया। तांत्रिक उत्तेजित और बेचैन था। उत्तेजित इसलिए क्योंकि अब उसे पक्का यकीन हो गया था कि पीड़ा का देवता सक्रिय है और उसी स्थान पर है जहाँ साठ साल पहले उसके प्रकट होने की बात कही जाती थी।

उन्हें सूत्रम के जन्म की ओर ले जाने वाली घटनाओं का क्रम याद आया। यह एक सौभाग्यपूर्ण संयोग था। तब वे युवा थे। उनमें अभी भी मानवीय भावना शेष थी। वे अपने काले जादू का अभ्यास करने के लिए देश के कोने-कोने में यात्रा करते थे, खासकर पैसे के लिए। अधिकतर बार यह पैसों के लिए होता था। कभी-कभी किसी ऐसी चीज के लिए जो उन्हें महज़ इंसान से कहीं अधिक बना देती।

जमींदार के पहले सुंदर पुत्र राजा रघुराम सूर्य को सब लोग प्यार करते थे। वे दो हजार गांवों के उत्तराधिकारी थे। जाहिर है, महिलाएं उन्हें पुरुषों से कहीं अधिक पसंद करती थीं। उनकी कई रखैलें थीं। उनमें से एक उनकी पत्नी बनना चाहती थी। लेकिन उस समय की परिस्थितियों और सामाजिक स्थिति को देखते हुए, यह इच्छा व्यर्थ थी।

राजा ने मद्रास नामक तत्कालीन प्रेसीडेंसी नगर के एक धनी और प्रभावशाली परिवार में विवाह किया। उन्होंने एक सुंदर और बलवान महिला को अपनी पत्नी के रूप में घर लाया। अपनी पत्नी के प्रेम में डूबे राजा ने अपनी सभी रखैलें त्याग दीं। उनकी रखैल राजा के इस कदम से बहुत दुखी थीं। न तो राजा ने उनसे विवाह किया था और न ही अब उन्हें उनकी सुंदरता में कोई रुचि थी। इतना ही नहीं, विवाह के एक वर्ष के भीतर ही उनकी पत्नी ने उन्हें एक पुत्र को जन्म दिया।

रखैल उसे सज़ा दिलाना चाहती थी। वह चाहती थी कि उसकी पत्नी भी उसी तरह कष्ट सहे जैसे वह सह रही थी। वह उसे मरवाना चाहती थी। उसने सही समय का इंतज़ार किया, यह जानते हुए कि गुडेम या उस इलाके के गांवों में कोई भी राजा रघुराम को नुकसान पहुंचाने की हिम्मत नहीं करेगा। यह काम किसी बाहरी व्यक्ति को ही करना था।

आठ साल बाद तांत्रिक गुडेम से गुज़र रहा था। यह महज़ एक संयोग था। एक दोस्त के दोस्त ने उसे उस रखैल से मिलवाया, जिसका इस्तेमाल वह अपनी सुख-सुविधाओं के लिए करता था। रखैल ने उसे अपने साथ हुए अन्याय का बदला लेने का ज़रिया समझा, जबकि तांत्रिक को मानव से परे कुछ बनने का रास्ता मिल गया। साथ ही, उसने उस महिला के साथ कई रातें बिना किसी शुल्क के बिताईं, और फिर उसकी विनती मान ली।

तांत्रिक की योजना बहुत सरल थी। उसे राजा को कुछ ऐसा खिलाना था जिसमें एक गुप्त तत्व मिलाया गया हो। एक काला नाखून! एक विशेष नाखून। युवराज की मृत्यु अत्यंत पीड़ादायक होगी। मृत्यु के बाद, उनके पेट में बालों का एक गुच्छा उगेगा, जो एक अंडे की तरह काम करेगा। जैसे ही वह अंडा फूटेगा, पीड़ा के देवता का जन्म होगा। एक ऐसी वस्तु जो तांत्रिक के अपने विचारों से बनी होगी। उसका सपना। उसका सूत्र। वह उसके आदेश पर पृथ्वी को जला देगा। वह एक देवता बन जाएगा, क्योंकि वह एक देवता को नियंत्रित कर सकता था।

तांत्रिक के लिए लोगों का विश्वास जीतना मुश्किल था। उस समय उनकी शक्ल-सूरत और स्वच्छता बेहद खराब थी। इसलिए उन्होंने अपने नवोदित शिष्य को यह काम सौंपा। शिष्य ने राजा रघुराम के भाई से दोस्ती कर ली, जो असुरक्षा और अपनी कमियों से ग्रस्त थे। भरतराम अपने प्यारे भाई को प्रभावित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। उन्हें यह कहकर लड्डू देना आसान था कि इसे किसी ऋषि ने आशीर्वाद दिया है। भरतराम ने लड्डू अपने भाई को दे दिया। राजा रघुराम अपने भाई से बहुत प्यार करते थे और उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था। उन्होंने बिना किसी संकोच के लड्डू खा लिया। यह पूरी प्रक्रिया शुरू से अंत तक छह महीने से भी कम समय में पूरी हो गई।

बाकी सब इतिहास बन गया।

उसने मान लिया था कि वर्षों पहले बोया गया बीज समय से पहले ही मर गया था, जबकि वास्तव में वह एक भरपूर फसल में तब्दील हो गया था। अब कटाई का समय था। उसकी शक्ति असीमित होगी।

उसकी उत्सुकता ने उसे इतना उत्तेजित कर दिया था कि उसकी धोती में हल्का सा उभार आ गया था।

तांत्रिक को कमीज़ और पतलून के बोझ से बेचैनी हो रही थी। अपने मुंडे हुए बालों के बिना वह खुद को नंगा महसूस कर रहा था। कई हफ़्तों तक जंगल में रहने के बाद, उसे अच्छी तरह से साफ़-सफ़ाई और स्नान कराया गया था। जब उसे पूरे कद के दर्पण के सामने लाया गया, तो वह खुद को ठीक से पहचान नहीं पाया।

वह चुपके से विमान के शौचालय में घुस गया और फिर से आईने में खुद को निहारा। उसने सोचा कि काले दांतों को छोड़कर वह उतना बुरा नहीं दिखता, ये दांत कच्चे बिच्छू और मेंढक खाने के दौरान मुंह में गिरे शरीर के अम्लीय पदार्थों के कारण हुए थे। बेशक, उसे यह नहीं पता था कि आईने में खुद को निहारते समय मन लोगों को धोखा देता है। वे असलियत से पांच गुना ज्यादा आकर्षक दिखाई देते हैं।

जब तांत्रिक उनके चेहरे की प्रशंसा करने में व्यस्त थे, गोविंद ने एक फाइल खोली जिस पर उन्हें ध्यान देना था - इलेक्ट्रॉनिक सेंसरों का एक अनुबंध। रक्षा सामग्री के स्वदेशीकरण की सरकारी नीति के तहत, कई स्थानीय इच्छुक कंपनियों ने बहुराष्ट्रीय रक्षा सामग्री कंपनियों के साथ साझेदारी के लिए आकर्षक प्रस्ताव रखे थे। सशस्त्र बलों के लिए, रक्षा विभाग द्वारा आवश्यक कार्रवाई की गई थी। हालांकि, आतंकवाद का खतरा मंडरा रहा था और पुलिस बल को सुसज्जित करना आवश्यक था। गृह मंत्री होने के नाते, आवश्यक निर्णय लेना उनका दायित्व था। उन्होंने फाइल में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखी, उसे एक लकड़ी के बक्से में डाला और दूसरा बक्सा खोला।

दिल्ली से गनावराम की दूरी जेट विमान से तीन घंटे में तय की गई। गोविंद का स्वागत धनी उद्योगपति काशी प्रसाद राव ने किया, जिन्होंने रनवे से लेकर बीएमडब्ल्यू तक पूरे रास्ते उनका हाथ थामे रखा। तांत्रिक गृह मंत्री के काफिले में थे, लेकिन एक अलग कार में। एक ही कार में होना उचित नहीं था। पहली बात तो यह थी कि गोविंद को उद्योगपति से जो कहना था वह निजी था और दूसरी बात यह थी कि अगर संयोगवश तांत्रिक की पहचान हो जाती, तो इससे मंत्री की छवि खराब हो जाती।

उद्योगपति गृह मंत्री को जावाराम स्थित उनके सरकारी गेस्ट हाउस तक ले जाने के लिए स्वयं हैदराबाद से आए थे। यह उनसे सलाह लेने का अच्छा मौका था। तीन घंटे बाद गाड़ी गेस्ट हाउस पहुंची।

गोविंद सीधे शीला के कमरे में पहुंचे, जहां वह स्वास्थ्य लाभ कर रही थीं। उन्होंने अपने बाकी साथियों को कमरे के बाहर इंतजार करने को कहा और जल्दी से शीला के बिस्तर के पास पहुंचे, लेकिन शीला के उठने के इशारे को उन्होंने ठुकरा दिया।

'मिस शीला, मुझे इस सब के लिए बहुत खेद है। मुझे और अधिक सावधानी बरतनी चाहिए थी,' उसने इतनी ईमानदारी से कहा कि शीला को लगभग उस पर विश्वास हो गया।

'कोई बात नहीं महोदय, मुझे आपको अपनी योजनाओं के बारे में बता देना चाहिए था,' उसने जवाब दिया।

"युवती, आपको ऐसा करना चाहिए था। वैसे भी कुछ खोया नहीं है, शुक्र है सब ठीक हो जाएगा। मुझे उम्मीद है कि श्रीमान सूर्या ठीक होंगे। हम नहीं चाहते कि उन्हें कुछ हो। आखिर, हमें उनसे कोई दुश्मनी नहीं है।"

उसने सिर हिलाते हुए अस्पष्ट जवाब दिया, 'मुझे यकीन है कि वह ठीक है।'
जी हां। मुझे लगता है कि प्रियंका को बचाकर उन्होंने बहादुरी का काम किया। मुझे बहुत दुख है कि उन्हें गिरफ्तार करना पड़ा। मैं जल्द से जल्द इस मामले की जांच करूंगा। वैसे प्रियंका कैसी हैं, डॉक्टरों का क्या कहना है?
डॉक्टरों का कहना है कि वह ठीक हो जाएगी...आखिरकार। उसे व्यापक प्लास्टिक सर्जरी की जरूरत है। जहां तक उसकी मानसिक स्थिति का सवाल है, फिलहाल उसे अपना नाम तक याद नहीं है।
“अत्यंत खेदजनक। मुझे बताया गया है कि वह बहुत प्रतिभाशाली थी। और वह युवक, विदुष। मुझे उसकी असमय मृत्यु का बहुत दुख है। यह बहुत दुखद है जब कोई इतना युवा और होनहार व्यक्ति इतनी हिंसक मौत मर जाता है। मेरा दिल टूट गया है,” मंत्री ने कहा।
विदुष का मुस्कुराता चेहरा उसके मन में कौंध गया और शीला ने सिर हिलाया, उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। उसके बेफिक्र लेकिन डरपोक सहकर्मी को ऐसी मौत नहीं मिलनी चाहिए थी।
गोविंद ईश्वर की शक्ति पर चकित था, जो जल्द ही उसकी होने वाली थी। उसे जीत का स्वाद चखने को मिल रहा था। जीत बस उसकी मुट्ठी में थी। उसे बस उसे मजबूती से थामना था। वह यह भी जानता था कि उसे बेहद सावधान रहना होगा। गोविंद जानता था कि उसने वकील को अपने काबू में कर लिया है और आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि उसे आज़ादी के बदले स्मारक भवन का कब्ज़ा सौंपने के लिए मजबूर किया जाए।
उन्होंने अनमने ढंग से कहा, 'आपको मुझे उस संस्था के बारे में बताना होगा, लेकिन अभी नहीं, मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि आप हमारे मन में जो योजना है उसके लिए पूरी तरह से तैयार हों।'
शीला ने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया। उसके मन में चारों ओर खतरे की घंटियाँ बजने लगीं। प्रियंका कोमा में थी, रामदास मर चुका था या लापता था, पोटी और रघु कभी कुछ नहीं बोलते थे और उसने हॉल के अंदर हुई उस भयानक घटना के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था।
तो फिर गृह मंत्री को उस ‘संस्था’ के बारे में कैसे पता चला?
जब तक कि... तलवारों वाले उस अजनबी ने किरोमल को उस प्राणी के बारे में न बताया हो। आखिर वह कौन था? वह कहाँ गायब हो गया?
'अब आप थक गए होंगे। मैं आपसे कल बात करूंगा। आपको जो भी जरूरत हो, पूछ सकते हैं,' गोविंद ने कहा।
'जी सर, वापस आने के लिए धन्यवाद और आपने जो कुछ भी किया उसके लिए धन्यवाद।'
गोविंद ने उदारतापूर्वक हाथ हिलाया और दृढ़ता से कमरे से बाहर निकल गया। शीला जानती थी कि गोविंद रघु पर टूट पड़ेगा और किरोमल की अनुमति के बिना वह जेल से बाहर नहीं निकल सकता था। वह जानती थी कि उनके बीच अच्छे संबंध नहीं थे, फिर भी शीला को उम्मीद थी कि रघु उसके इरादे समझ गया होगा। खैर, अब फोन करने का समय था, एकजुट होने और आगे की योजना बनाने का। वह जानती थी कि हालात

बिगड़ने से पहले उनके पास ज्यादा समय नहीं बचा था। उसने अपना फोन उठाया और पोटी के मोबाइल पर डायल किया।
पोटी की मधुर आवाज सुनकर उसने पूछा, 'वह कैसा है?'
‘वह ठीक हैं अम्मा गारू। क्या आप उनसे बात करना चाहती हैं?’
शीला हैरान थी। 'तुम उसके साथ हो?'
‘मैं और कहाँ अम्मा गारू हो सकती हूँ?’
‘तुम मुझे उस नाम से क्यों बुलाते हो?’
'क्या?'
लेकिन...किला!
‘यहाँ ऐसा करना सम्मान का प्रतीक है। तो क्या आप उनसे बात करना चाहेंगे?’
'जी कहिये।'
तभी उसकी दमदार, गहरी आवाज़ सुनाई दी। इससे उसके शरीर में एक सिहरन दौड़ गई, ठीक वैसे ही जैसे पहली बार हुई थी।
‘मुझे खेद है। मुझे लगता है कि मैंने कुछ ज्यादा ही आक्रामक रुख अपनाया। मुझे वो बातें नहीं कहनी चाहिए थीं,’ रघु ने गंभीर स्वर में कहा।
‘क्या तुम्हारा मतलब उनसे था?’ उसने धीरे से पूछा।
'एक शब्द भी नहीं, तुम्हें पता है।'
‘तो फिर माफी मांगने की क्या जरूरत है?’ उसने पूछा। ‘हालांकि इससे कांट भी भ्रमित हो गए थे। लेकिन एक पल के लिए मुझे लगा कि आप ये सब सच कह रहे हैं, ये बात मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती थी,’ उसने कहा।
'क्यों?'
शीला ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, 'क्या तुम्हें इसका कारण नहीं पता?'
‘क्या मैं?’ रघु ने उदास स्वर में पूछा।
'जी हां, तुम्हें करना होगा। ध्यान से सुनो। गोविंद किरोमल यहां है और जब तक तुम मुकदमा वापस नहीं लेते और उसकी शर्तें नहीं मानते, वह तुम्हें जेल से नहीं निकलने देगा। अब तुम क्या करोगे?'
‘हम्म... उस स्थिति में किसी को मुझे जमानत पर छुड़ाना होगा।’
'कौन?'
रघु ने टिप्पणी की, 'कुछ प्रभावशाली ग्रामीण और वकीलों का एक पूरा समूह।'
‘क्या तुम यह कर पाओगे?’ उसने पूछा, ‘तुम्हें यह जल्दी करना होगा।’
‘कितनी जल्दी?’
'बिल्कुल अभी।'

'परसों मेरी हिरासत के तीन घंटे बाद क्या हुआ था?'
‘क्या? तुमने ये कैसे कर दिखाया?’
इतना कहना ही काफी है कि उस दिन पुलिस इंस्पेक्टर ने कांट को सलाम नहीं किया। उसे बस मुझे छोड़ने का एक बहाना चाहिए था। न कोई एफआईआर है, न कोई चार्जशीट। अमेरिका में इसे स्ट्रीट जस्टिस कहते हैं, एक निर्दोष व्यक्ति को कानून की धीमी प्रक्रिया में उलझे बिना रिहा कर दिया जाता है। मज़े की बात यह है कि भारत में इसका कोई नाम नहीं है, बस इतना कहा जाता है कि यह पुलिस की विवेकाधीन शक्ति है। खैर, मैं कोई हत्यारा नहीं हूँ, बस एक प्यार में डूबा हुआ इंसान हूँ। फिर भी, इससे उचित कानूनी प्रक्रिया के बारे में एक बड़ा सवाल अनुत्तरित रह जाता है।
वह कुछ देर चुप रही, फिर बोली, 'क्या आपको यकीन है?'
रघु ने आह भरी। 'मैंने अपने पूरे जीवन में कभी भी इस बात से ज्यादा किसी और बात को लेकर इतना आश्वस्त नहीं रहा कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, शीला पीतांबर।'
‘मैं दोबारा अकेला नहीं रहना चाहता, रघु। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता।’
'तुम्हें अकेला छोड़ दूं? मेरे साथ एक महीने बाद तुम अकेले रहने की भीख मांगोगी। कसम से, पहले तीन सालों में पांच बच्चे, बस एक ही रियायत है कि तुम्हें जुड़वां बच्चे पैदा करने की इजाजत है।'
‘तुम्हारी यही इच्छा है,’ वह हंसते हुए बोली और फिर गंभीर स्वर में बोली, ‘ठीक है, तो अब तुम बाहर आ गए हो, लेकिन मामला अभी खत्म नहीं हुआ है। क्या ऐसी कोई संभावना है कि तुम्हें दोबारा गिरफ्तार किया जा सकता है?’
रघु ने गुडेम में कंधे उचकाते हुए कहा, 'ठीक है, राज्य मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज करके और मुझे औपचारिक रूप से गिरफ्तार करके शुरुआत कर सकता है। मैं इसे संभाल लूंगा, लेकिन मुझे चिंता इस बात की है कि इन सबके बीच हमारी शादी कैसे होगी?'
‘चिंता क्यों कर रहे हो? मेरा मतलब है...चुप रहो। रघु, मैं यहाँ गंभीर बात कर रहा हूँ।’
वह हँसा, शीला को उसकी हँसी की आवाज़ बहुत अच्छी लगी; उसे भी हँसने का मन हुआ। उसकी गंभीर स्वभाव वाली शख्सियत के बावजूद, शीला को उसमें छिपी हुई अनोखी हास्य भावना नज़र आने लगी।
रघु ने कहा, 'ठीक है... मेरा मतलब यह था कि हम हॉल में उस चीज़ को कैसे नष्ट करेंगे? सिवाय इसके कि वह मुझे नियमित अंतराल पर बचाता रहता है, मुझे यह भी नहीं पता कि श्री पी. ईश्वर कौन हैं या इस पूरे मामले में उनकी क्या भूमिका है। क्या पता, वह गृह मंत्री से भी बदतर हों। साथ ही, हम अग्निपुत्र के बारे में भी उतने ही अनभिज्ञ हैं जितने पहले थे।'
शीला कुछ देर चुप रही। उसने कहा, 'ईश्वर एक अनजान व्यक्ति है, यह तो आप जानते ही हैं। वह दोनों तरफ खेल रहा हो सकता है।'
'किस सिरे पर?'

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है। मुझे ऐसे लोग पसंद नहीं हैं जो संकटमोचक बनकर सामने आते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि इस सब के पीछे उनका असली मकसद क्या है।
‘चलिए, जो संभव नहीं है उस पर विचार न करें। यह समय की बर्बादी है,’ रघु ने कहा। ‘मैं अभी तक जो कुछ पता चला है उसे लिख लेता हूँ। शायद इससे हमें आगे क्या करना है इसका कुछ अंदाजा लग जाए।’
'सही।'
1. 'मेरे पारिवारिक स्मारक कक्ष में कुछ ऐसी चीजें हैं जो वहां बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए। ईश्वर ने एक को 'सूत्रम' और दूसरे को 'सैबल पार्च' कहा था।'
2. मेरे पिता ने बयालीस साल पहले सूत्रम को नष्ट करने की असफल कोशिश की थी। मुझे बिलकुल भी पता नहीं कि उन्होंने इसे कैसे नष्ट किया या क्या वे सेबल पार्च को नष्ट कर पाए थे। कोशिश करते-करते उनकी मृत्यु हो गई। शीला ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'रथया ने कहा था कि उन्हें धोखे से मार दिया गया था।' 'क्या?' 'उन्होंने यही कहा था।' 'हे भगवान! मुझे यह पता ही नहीं था। हमें इसकी तह तक जाना होगा।' 'हम जाएंगे। लेकिन अभी के लिए, अपनी सूची पूरी करो।' रघु ने आगे कहा।
3. ‘ईश्वर मेरे पिता का अच्छा दोस्त होने का दावा करता है।
4. मेरे पिता अग्निपुत्र का उपयोग करके सूत्रम् को नष्ट करने की प्रक्रिया में थे, चाहे वह कुछ भी हो।
5. ईश्वर के अलावा, हॉल में वास्तव में क्या हुआ था, इसके बारे में केवल रथाया को ही पता था; उसकी मृत्यु हो चुकी है।
6. रथया ने एक सुराग छोड़ा, 'वह एक अक्षर जिसने वाणी को विजय दिलाई'। माना जाता है कि यह 'ब्लैक यजुर्वेद' नामक ग्रंथ का विजय मंत्र है। गाँव के पुजारी ने हमें यह बताया। हालाँकि उन्हें स्वयं यह नहीं पता था कि वह एक अक्षर क्या था। किसी न किसी तरह, यह वाक्य हर चीज़ के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि रथया इसे अपनी अंतिम वसीयत के रूप में नहीं लिखते।
7. इन सब से हमें क्या समझ आता है?
शीला ने अपने मन में सूचनाओं को एक क्रमबद्ध तरीके से दर्ज कर लिया था। रघुराम द्वारा अपनी सूची पूरी करने तक शीला पहले ही एक निष्कर्ष पर पहुँच चुकी थी।
‘आगे बढ़ने के लिए हमें पीछे जाना होगा। मेरा मतलब है, हमें आपके पिता के पदचिह्नों का अनुसरण करना होगा। साथ ही, हमें पौराणिक कथाओं में कुछ शोध करना होगा ताकि यह पता चल सके कि तथाकथित ‘अपकेंद्री’ वाक्य का क्या अर्थ है। यह आसानी से संभव है क्योंकि यह सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है।’
‘मुझे भी यही लगा था! लेकिन फिर, हम खोज शुरू कहाँ से करें?’ रघु ने पूछा।
‘खैर, मुझे नहीं पता, लेकिन हम भौतिकविदों के पास हमेशा पूर्व शोध होते हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं। अरस्तू से लेकर स्टीफन हॉकिंग तक, हमारे पास निष्कर्षों की एक श्रृंखला है जिन पर हम काम करते हैं। ये किसी डायरी में अस्पष्ट टिप्पणियाँ हो सकती हैं या सार्वजनिक या कभी-कभी निजी डोमेन में

उपलब्ध पूर्ण शोध प्रबंध हो सकते हैं। फिर हम सिद्धांतों का विस्तार करने और भावी पीढ़ियों के लिए उसमें अपना योगदान जोड़ने का प्रयास करते हैं।'

रघु ने कहा, 'सूर्य से संबंधित सारा साहित्य, हमारे लोककथाओं के वृत्तांतों से लेकर डायरियों तक और एक पूरी लाइब्रेरी, अभिलेखागार में मौजूद है। इसकी शुरुआत लगभग तीन सौ साल पहले मेरे एक पूर्वज ने की थी, जिनके पास जाहिर तौर पर बहुत समय था, और तब से इसे पूरी निष्ठा से आगे बढ़ाया गया है। जाहिर है, मेरे पिता ने इसका खूब इस्तेमाल किया था। मेरी दादी ने यही कहा था...' रघु एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। ठीक उसी क्षण उसे यह बात समझ में आई कि उसकी दादी ने उसे बचपन में कहानियां नहीं सुनाई थीं। नहीं। उन्होंने उसे संकेत दिए थे। वह जानती थीं या कम से कम अनुमान लगा चुकी थीं कि उनका बेटा क्या करने की कोशिश कर रहा है। एक माँ जानती है।

'मैं कितना बड़ा मूर्ख हूँ,' उसने अचानक कहा।

शीला बिस्तर पर उठ बैठी, 'क्या बात है रघु?'

मेरी दादी ने मुझे मेरे दादा, शीला के बारे में कई कहानियां सुनाईं। उन्होंने मुझे शिकार, जंगली जानवरों और बदमाशों व चोरों से लड़ाई की कहानियां सुनाईं; जाहिर तौर पर, मेरे दादाजी बिना मुखौटे के इलाके के ज़ोरो थे। मेरे पिता के बारे में उन्होंने मुझे केवल एक ही कहानी सुनाई थी कि कैसे उन्होंने काल कोठरी में राक्षसों से लड़ाई की थी। उस कहानी में, वह हमेशा बताती थीं कि मेरे पिता ने अभिलेखागार में रखी किताबों से राक्षसों के बारे में अध्ययन और सीखा था।

बस, उसने तुम्हारे लिए एक सुराग छोड़ दिया है।

'खैर, वह मुझे अभिलेखागार में मेरे पिता के काम की तलाश करने के लिए भी कह सकती थी। यह सब गुप्त और रहस्यमयी बातें क्यों?'

'तुम एक छोटे लड़के थे। तुम्हारी दादी का इरादा कहानियों को सुराग के रूप में पेश करने का नहीं रहा होगा। शायद कहानियों का मकसद तुम्हारे मन में तुम्हारे पिता की बहादुरी या महानता की छाप छोड़ना था। शायद वह अपने बेटे के आखिरी दिनों को फिर से जी रही थीं। लेकिन इस समय, उनकी कहानियाँ उन सुरागों में से पहली साबित हुईं जिनकी हम तलाश कर रहे थे।'

'अभिलेखागार कहाँ हैं?' उसने थोड़ी देर बाद पूछा।

'ऑस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड में!'

'ऑस्ट्रेलिया में? क्या...? रघु! आखिरी बार कह रहा हूँ, थोड़ा गंभीर हो जाओ!'

फोन के दूसरी तरफ से आ रही हंसी की आवाज आखिरकार थम गई।

'ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करें। सूत्रम कोई मजाक नहीं है। अब और नहीं!'

'और तुम्हें तो हास्यबोध बिल्कुल भी नहीं है,' रघु ने लापरवाही से कहा।

'आखिरी बार फिर, अभिलेखागार कहाँ हैं?'

उसने आह भरी, 'वे तहखाने में हैं, सुश्री साइ-फाई; उम्मीद है कि वहां कोई राक्षस या पर्चे नहीं छिपे होंगे जो नाश्ते के लिए भीख मांग रहे हों।'

‘काश मैं तुम्हारे साथ होती। मुझे तुम पर भरोसा नहीं है कि तुम यह काम अकेले कर पाओगी,’ शीला ने शिकायत की।

'चिंता मत करो, तुम्हारे आने से पहले भी मैंने एक जिंदगी जी है। इतना ज्यादा नियंत्रण करने की कोशिश मत करो। मैं इसे संभाल सकती हूं।'

ठीक है, मैं आपको एक छोटी सी बात बताता हूँ जो शायद आपको थोड़ा गंभीर बना दे। गोविंद किरोमल को उस चीज़ के बारे में पता था, उस हॉल में मौजूद प्राणी के बारे में। मुझे शक है कि ईश्वर ने ही उसे बताया होगा।

उसे क्या पता है?

‘वह जानता था कि हॉल में कुछ है। वह इसे ‘वह सत्ता’ कहता था। सच कहूँ तो, वह जानता था कि अंदर कुछ हुआ है, मुझे लगता है कि वह हॉल के बारे में मुझसे या आपसे भी कहीं ज्यादा जानता है।’

‘क्या आपको सच में लगता है कि ईश्वर ने किरोमल को बताया था?’

मैं इस संभावना से इनकार नहीं कर रहा हूँ। इस पर विचार करो, अगर मुझे कुछ और पता चलता है तो मैं तुमसे संपर्क करूँगा। रघु...

'क्या?'

शीला ने गला साफ करते हुए कहा, 'सावधान रहना... मैंने अपनी आंखों के सामने दो युवकों को उस चीज से टुकड़े-टुकड़े होते देखा है। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें कुछ हो।'

'चिंता मत करो, साइंस-फाई, मुझे रोकने के लिए चिमटे काफी नहीं होंगे।'

अध्याय 27

सूर्य प्रसाद द्वारा साफ-सुथरे अक्षरों में लिखे पत्र में सूर्य ने कहा, 'मेरे बेटे, पिता आमतौर पर अपने बेटों के लिए विरासत छोड़ जाते हैं, कभी-कभी तो वसीयत भी, और कई बार कर्ज भी। मैं तुम्हारे लिए इनमें से कुछ छोड़ रहा हूँ, लेकिन साथ ही कुछ इससे भी कहीं बुरा। अगर तुम यह पत्र पढ़ रहे हो, तो मैं असफल हो गया हूँ।'

पत्र के पृष्ठ पर सूर्य वंश का प्रतीक चिन्ह था, जिसमें सूर्य पर धनुष ताने खड़ा था, साथ ही सूर्य प्रसाद का नाम और उनके एलुरु स्थित घर का पता भी लिखा था। रघु ने कागज के उस टुकड़े को नाक के पास लाया, उसमें से पुरानी कागज जैसी ही गंध आ रही थी। उसमें जो भी सुगंध थी, वह अब गायब हो चुकी थी। उसका दिल सीमेंट के ढेर की तरह भारी हो गया था। लेकिन उसे इस बात की खुशी भी थी कि उसके पिता ने उसे पत्र लिखा था; उस बेटे से संपर्क साधा था जिससे उसने कभी बात नहीं की थी।

यह पत्र ही एकमात्र ऐसा संदेश है जो तुमने मुझसे कभी सुना है और आगे कभी सुनोगे। मेरे बेटे, तुम मुझे नहीं जानते। इसलिए, इस पत्र को पढ़कर तुम्हें शायद लगे कि मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता। लेकिन सच्चाई इससे कोसों दूर है। मैं तुमसे उतना ही प्यार करता हूँ जितना कोई पिता अपने बेटे से करता है, बल्कि किसी भी पिता से ज़्यादा। तुम मुझे उन सभी चीज़ों की याद दिलाते हो जो मैंने बचपन में खो दी थीं। अगर मैंने भाग्य और समय के अस्तित्व पर सवाल न उठाया होता, तो मैं मान लेता कि भाग्य ने हमारे लिए कुछ और ही तय कर रखा है।

पिछले कुछ महीनों में बहुत सी ऐसी बातें घटी हैं जिन्हें मैं पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ। शायद इसीलिए मैं असफल हुआ हूँ, और इसीलिए तुम यह पत्र पढ़ रहे हो। मेरे बेटे, मैं तुम्हें जो बताने जा रहा हूँ, वह एक ऐसी बात है जो केवल तुम ही कर सकते हो, क्योंकि यह ज़िम्मेदारी मैंने तुम्हें सौंपी है। तुम मैं हो और मैं तुम हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि अगर तुम इसे पढ़ रहे हो, भले ही तुम मुझे देख न सको, मैं तुम्हारे साथ ही हूँ।

रघु का गला भर आया। उसने कांपते होंठों को दबाया, आँखों से आँसू पोंछे और उस पुराने, धुंधले पत्र को सावधानी से मेज पर रख दिया। उसने कमरे में चारों ओर देखा, इस उम्मीद में कि शायद उसके पिता वहीं हों, बस उन्हें देखने के लिए।

बस एक बार।

बस एक झलक।

यह कोई बहुत बड़ी मांग नहीं थी।

'पिताजी,' उसने पुकारा। कोई जवाब नहीं मिला।

फिर भी, अगर उसके घर में एक ऐसा राक्षस था जिसके सिर से रुक-रुक कर बिजली निकल रही थी और एक काला प्राणी था जो बेतरतीब ढंग से लोगों को मार रहा था, तो उसके पिता का भूत अब यहाँ क्यों नहीं हो सकता था? ऐसा क्यों था कि हमेशा बुरी से बुरी घटनाएँ ही घटित होती थीं? सामान्य परिस्थितियों में कुछ भी

अच्छा क्यों नहीं होता था? किस पागल भगवान ने ऐसी व्यवस्था बनाई है जो हमेशा गड़बड़ ही करती है? ऐसा लगता था मानो ब्रह्मांड की हर चीज़ खुद को नष्ट करने के लिए तैयार हो।

रघु ने दोबारा पत्र उठाया।

मुझे उम्मीद है कि आप मुझसे मिलना चाहेंगे। काश मैं आपको पूरी तरह से विकसित, सुंदर रूप में देख पाती।

अब काम की बात पर आते हैं। मुझे सूत्रम के बारे में पहली बार एक तांत्रिक से पता चला, जब मैं सात साल का था। वही मेरे पिता का हत्यारा था। उसने सूत्रम की रचना करने की बात कबूल की थी। हमें कभी पता नहीं चला कि वह अकेला काम कर रहा था या किसी और के साथ, हालांकि मुझे हमेशा शक था कि इस सब के पीछे कोई और भी है। खैर, मेरे पिता की मृत्यु के बाद उस मनहूस रात को गुडेम में आतंक शुरू हो गया। स्मारक कक्ष के अंदर कोई भयानक शक्ति जागृत हो गई थी। वह हमारे लोगों को मार रही थी। दूसरे लोग पागल हो रहे थे। डर और संदेह का माहौल था। सबसे बुरी बात यह थी कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं या किससे मदद मांगूं। हममें से किसी को भी नहीं पता था। मैं शुरू में बहुत छोटा था। लेकिन जैसे-जैसे साल बीतते गए, हालात और भी बदतर होते गए। गुडेम शैतानी ताकतों से भर गया। गुडेम की बुराई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। हम हताश हो गए।

संक्षेप में कहूँ तो, मैंने सूत्रम से लड़ने का तरीका पी. ईश्वर से सीखा। वे एक रहस्यमय व्यक्ति हैं, जिनमें ज़रा भी भावना और भय नहीं है। पहले तो मुझे आश्चर्य हुआ कि ईश्वर कौन हैं। अब मुझे पता है कि उनका इरादा अच्छा था। मुझे शुरू में ही उनकी सलाह मान लेनी चाहिए थी। शुरुआत में यह एक चुनौती थी जिसे मैं छोड़ नहीं पा रहा था और फिर यह अहंकार का मामला बन गया। अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे यह सब मूर्खतापूर्ण लगता है। मैं ही सबसे बड़ा मूर्ख हूँ!

मैं इस पत्र में सब कुछ नहीं समझा सकती, इसमें बहुत समय लगेगा और मेरे हाथ कमजोर हैं, जल्दी थक जाएंगे। इसके अलावा, हम कुछ ही समय में सूत्रम को अंतिम रूप देने के लिए स्मारक हॉल में जा रहे हैं। अगर हम ऐसा कर पाए, तो बहुत अच्छा! अगर मैं असफल रही, तो आप ही हमारी एकमात्र आशा हैं। इसलिए, हालांकि मैं लिखना जारी रखना चाहती हूं, आपको वह सब कुछ बताना चाहती हूं जो मैं कहना चाहती हूं, मैं नहीं कर सकती। मैं बस इतना ही कह सकती हूं कि मुझे खेद है और मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप ठीक वैसा ही करें जैसा मैं आपको बताती हूं।

रघु ने पढ़ना बंद कर दिया, उसने एक पल के लिए ऐसा नाटक किया जैसे उसके पिता कमरे में मौजूद हों। 'आपको अफ़सोस है? किसलिए? अपनी ज़मीनें दूसरों को दे देने के लिए, अपनी जान देकर लोगों की जान बचाने के लिए? नहीं पिताजी, अफ़सोस वह शब्द नहीं है जो आप सुनना चाहते हैं।'

कुछ घंटे पहले, शीला से फोन पर बात करने के तुरंत बाद जब वह पहली बार पुस्तकालय में दाखिल हुआ, तो वहाँ घोर अंधेरा था। उसका दिल मानो सीने से बाहर निकलकर गुड़गांव वापस भागने को बेताब था। रघु ने लाइट के स्विच चालू किए और पाया कि किसी कारणवश तहखाने में बिजली नहीं थी।

उसने सोचा कि ऐसा क्यों है।
दीवार के किनारे पाँच फुट ऊँचे संगमरमर के खंभों जैसे चबूतरे पर कई लालटेनें रखी थीं। उनमें अभी भी धुंधला सा ईंधन था, शायद तेल। उसने उन्हें एक-एक करके जलाया। अभिलेखागार अपनी पूरी चमक-दमक के साथ जीवंत हो उठा।
यह स्थान एक के बाद एक तीन कमरों में विभाजित था, तीसरा और सबसे भीतरी कमरा सूर्य परिवार का ज्ञान-संग्रह कक्ष था। इस कमरे में पाँच सौ वर्ष पुराने बड़े-बड़े ग्रंथ रखे थे। सभी ग्रंथ हवा बंद प्लास्टिक की बोरियों से ढके हुए थे, संभवतः यह उनके पिता का काम था।
दूसरे या बीच वाले कमरे में कई दस्तावेज़, प्राचीन फर्नीचर, चांदी और सोने की वस्तुएं जैसे मोमबत्ती स्टैंड और कुछ बक्से थे; रघु को बिल्कुल भी पता नहीं था कि उनमें क्या था। पहला कमरा पुस्तकालय था।
यह वह कमरा था जिससे होकर अभिलेखागार में प्रवेश होता था। पुस्तकालय में दीवार के सहारे लालटेनें कतार में लगी हुई थीं। सूर्या पुस्तकालय बेहद खूबसूरत था। दीवारें महोगनी की अलमारियों से ढकी हुई थीं। चारों दीवारें किताबों से भरी हुई थीं। कमरे को दो हिस्सों में बांटने वाली विशाल लकड़ी की अलमारियां थीं। दोनों तरफ हरे संगमरमर के शीर्ष वाली दो गोल मेजें और गद्देदार कुर्सियां थीं।
लेखांकन, ज्योतिष, गणित, कविता (तेलुगु और अंग्रेजी दोनों), विज्ञान, भारतीय और पश्चिमी साहित्य, प्राचीन राजाओं की रुचियों के अनुसार यहाँ अनेक पुस्तकें थीं। लालटेन की सुनहरी रोशनी और फर्नीचर और पुस्तकों से उड़ती धूल में, यह स्थान किसी फिल्मी सेट की तरह अलौकिक प्रतीत होता था।
सूर्य प्रसाद की मेज कमरे के एक कोने में थी। मेज पर बिखरी किताबें शायद उन तैंतालीस वर्षों से वहीं पड़ी थीं, जितने समय में रघु अभिलेखागार में दाखिल हुआ था। उसने एक किताब से धूल झाड़ी, धूल के गुबार से खांसा और उसका आवरण पढ़ा। यह आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत पर एक किताब थी। दूसरी अरस्तू पर थी और तीसरी में आइजैक न्यूटन की रचनाएँ थीं। मेज पर कोई किताब नहीं थी, बस एक लिफाफा था। रघु यह देखकर बुरी तरह चौंक गया कि यह संदेश किसे संबोधित किया गया था।
Rajah Raghuram Surya.
5 अक्टूबर 1971।
एक पल के लिए रघु को समझ नहीं आया कि उसके पिता ने पत्र उसके दादाजी को लिखा था या उसे, क्योंकि दोनों का नाम एक ही था। फिर रघु को एहसास हुआ कि यह पत्र उसके दादाजी को लिखा ही नहीं जा सकता था। उसके दादाजी का निधन 1940 के दशक में हो गया था। तभी उसने अपने पिता द्वारा उसे लिखा गया एकमात्र पत्र खोला।
रघु ने अपनी सूजी हुई आंखों को मलते हुए पन्ना पलटा।
अब, कहानी सुनिए; आपके जन्म से लगभग तीन महीने पहले, ईश्वर मेरे पास आया। एलुरु में सुहावनी बसंत की दोपहर थी; मैं क्रिकेट मैदान में था, कार से लड़कों को अभ्यास करते देख रहा था। (वैसे, मुझे उम्मीद है

कि मैंने जो क्रिकेट क्लब शुरू किया था, वह अभी भी मौजूद है और जब आप इसे पढ़ेंगे तब भी एलुरु में क्रिकेट खेला जा रहा होगा।)

रघु मुस्कुराया। 'नहीं पिताजी,' उसने ज़ोर से कहा, 'आपके तथाकथित दोस्तों में से एक ने आपका क्लब चुरा लिया और उसे अपने बेटे को ऐसे सौंप दिया जैसे वह उसका अपना हो। वे हर साल क्लब के वोट को राज्य क्रिकेट बोर्ड को बेचकर पैसे कमाते हैं। मुझे तो तब तक पता भी नहीं चला जब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैं उस धूर्त को मार डालना चाहता था, लेकिन वह तो मर चुका है, और नहीं, आपके सवाल का जवाब यह है कि क्लब के पास कोई टीम नहीं है, बस एक वोट है जिसे भुनाया जा सकता है। उन चापलूसों को आपके फेंके हुए टुकड़ों पर पलने दो, जब तक वे ऐसा कर सकते हैं। लेकिन व्यक्तिगत रूप से, मैं आपकी तरह क्षमाशील नहीं हूँ। मैं उन्हें नरक में सड़ते हुए देखूंगा।'

रघुराम सूर्या की आंखों में उन दीपों से एक पशुवत क्रोध झलक रहा था, जो उन लोगों के लिए था जिन्होंने उसके परिवार को धोखा दिया था।

वह पढ़ता रहा।

मुझे मस्कुलर डिस्ट्रॉफी है। मैं खेल नहीं खेल सकता। मुझे क्रिकेट से इतना प्यार है कि मैंने क्लब शुरू किया ताकि मैं लड़कों को उनके सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकूं और हम उनके विकास के लिए आर्थिक सहायता दे सकें। खैर, रथाया आमतौर पर मेरे साथ कार में होता था। वह चाय पीने के लिए बाहर गया होगा। मैं अकेला खेल का आनंद ले रहा था कि अचानक मुझे लगा कि पीछे की सीट पर कोई बैठा है। आमतौर पर लोग मेरी अनुमति के बिना कार में नहीं बैठते, इसलिए मैं चौंक गया। मैंने जितनी जल्दी हो सके पीछे मुड़कर देखा कि कौन है। ईश्वर ने मुझे देखकर मुस्कुराया नहीं, न ही उसने मुझे अभिवादन किया जैसा कि रिवाज है। उसने बस अपना परिचय दिया और मुझे वही बात बताई जो मैंने बचपन में एक मरते हुए आदमी के मुंह से सुनी थी।

अगले कुछ हफ्तों में, ईश्वर ने मुझे सूत्रम् को नष्ट करने का तरीका बताया। कम से कम, उन्होंने मुझे सही रास्ते पर तो पहुँचाया। सीधे शब्दों में कहें तो, मुझे अपना स्वयं का प्रतिरूप बनाना था और फिर उसके साथ एक हो जाना था। इस विलय से अग्निपुत्र का निर्माण होगा, जो सूत्रम् को नष्ट करने वाला एकमात्र तत्व है। कहना आसान था, करना मुश्किल। मैं आपकी उलझन समझ सकता हूँ; मैं भी पहले उलझन में था, जब तक मुझे इसका तरीका नहीं पता चला, जो सरल तो था, लेकिन कठिन भी।

पृष्ठ समाप्त हो गया।

रघु ने लिफाफा खोला। उसमें कुछ और पन्ने करीने से तह करके रखे हुए थे। उसने उन्हें धीरे से बाहर निकाला। जैसे ही उसकी उंगलियां कागजों को छूईं, वे उसके हाथों में चूर-चूर हो गए। एक पन्ने को छोड़कर बाकी सब। बयालीस साल की नमी और बदहाली ने अपना असर दिखाया था। घृणा से चीखते हुए रघु कुर्सी से उठा, खुद पर बहुत गुस्सा था। वह इधर-उधर घूमने लगा और अपनी कमीज की आस्तीनों से आंसू पोंछने लगा।

यह उसके पिता का उसे लिखा पत्र था। एकमात्र पत्र जो उन्होंने कभी लिखा था। वह नष्ट हो गया था। खो गया था। रघु कुर्सी पर बैठ गया। उसने बची हुई एकमात्र पट्टी खोली, इस उम्मीद में कि शायद उसमें कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हो।

इसमें लिखा था, 'यह शब्दांश मुझे प्रति-व्यक्ति से जोड़ देगा। क्कार्क इसका ख्याल रखेंगे। लेकिन अगर मैं इसे हासिल नहीं कर पाया... तो हम सबका भाग्य मृत्यु से भी बदतर होगा। मैं बस सफल होने की आशा कर सकता हूँ।'

मैंने तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम से परामर्श किया। एलुरु के रामया शास्त्री उनके आगामी पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्षों में से एक हैं। वे एक विद्वान व्यक्ति और अच्छे मित्र हैं। उन्होंने मेरी सहायता करने में कोई संकोच नहीं किया। उन्होंने मुझे बताया कि...

पन्ना खत्म हो गया था। रघु पिंजरे में बंद जानवर की तरह गुर्राया। उसने पन्ना पलट कर देखा कि उसके पिता ने कुछ लिखा है या नहीं। उस पर बस हाशिये में एक टिप्पणी थी। लिखावट से ज़्यादा कुछ उकेरा हुआ था।

'सूत्रम का ब्रह्मांड हमारे ब्रह्मांड से एक मायने में अलग है। उस ब्रह्मांड में समय उल्टी दिशा में चलता है। वह भविष्य देख सकता है, लेकिन पूरी तरह से नहीं, ठीक वैसे ही जैसे हम अपने अतीत की धुंधली यादों को याद कर पाते हैं। उसे अपने अतीत और उत्पत्ति का कोई स्मरण नहीं है। क्या यह कोई अलौकिक जीवन रूप है? मुझे नहीं लगता, यह महज़ एक संभावना है जिसमें विचार की इतनी शक्ति थी कि वह तांत्रिक की वास्तविकता का हिस्सा बन गई। उसने उसे ईश्वर समझा।'

रघु को लिखी हुई बातें ज़्यादा समझ नहीं आईं। उसे सब कुछ बेतुका लगा, मानो किसी पागल और व्याकुल मन की बड़बड़ाहट हो। फिर भी, पत्र का बाकी हिस्सा काफ़ी स्पष्ट था। या फिर यह सब किसी पागल के भ्रम थे?

अलग-अलग ब्रह्मांड, वास्तविकताएं, जादू-टोना, यह अंधविश्वास और विज्ञान कथा का मिश्रण था। फिर भी, अगर किसी ने उसे एक महीने पहले बताया होता कि उसके घर में एक विशालकाय अंडे के आकार का सिर है जिसके बालों से बिजली निकल रही है, तो वह दया भाव से उस बेचारे को गोल्फ क्लब से मार डालता।

रघु ने सोचा कि शायद शीला इसे समझ पाएगी; आखिर वह वैज्ञानिक थी। हालांकि काफी रात हो चुकी थी, रघु ने उसका नंबर डायल किया। उसने दूसरी घंटी बजते ही फोन उठा लिया।

'क्या सब ठीक है?' उसने बिना किसी भूमिका के दबी हुई आवाज में पूछा।

'शीला, मेरे पिता का एक पत्र है। यह अधूरा है, पत्र का कुछ हिस्सा... बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। उन्होंने इसमें कुछ बहुत ही अजीब बातें लिखी हैं। मुझे लगता है कि तुम्हें इसे देखना चाहिए।'

'तुम ठीक हो?'

'हां...हां, मैं ठीक हूं।'

'पत्र में क्या लिखा है?'

'किसी दूसरे ब्रह्मांड के बारे में कुछ, समय का उल्टा चलना, दर्पण प्रतिबिंब, मुझे यह सब समझ में नहीं आ रहा है। यह मुझे विज्ञान कथा जैसा लगता है।'
शीला कुछ देर तक चुप रही, हालांकि वह उसकी स्थिर सांसें सुन सकता था। 'मुझे इसे देखना चाहिए। आजकल सच्चाई और कल्पना के बीच की रेखा बहुत पतली है। शायद आप मुझे वह पत्र ला सकते हैं।'
मुझे नहीं पता कि मैं कर पाऊंगा या नहीं। मैं देखता हूं कि क्या मैं आपके लिए एक प्रति बना सकता हूं।
'ठीक है,' उसने कहा।
'रघु, मैं तुम्हें बताना भूल गया था...किरोमल के साथ एक और आदमी है, मुंडा हुआ, काले दाँतों वाला। मैंने उसे रात के खाने पर देखा था। उसमें कुछ अजीब सा है। वह अजीब हरकतें करता है।'
'तुम्हारे साथ?'
'नहीं, बेवकूफी भरी बात नहीं, बस मज़ाकिया... वो बार-बार अपने मुंडे हुए सिर को छूता रहता है, उसे खाने की मेज पर बैठने का तरीका नहीं पता, ऐसी ही कुछ बातें। वो किरोमल के कान में फुसफुसाता रहता है, वे प्रेमी-प्रेमिकाओं की तरह एक-दूसरे से बातें करते हैं। एक बार मैंने उन्हें मुझे घूरते हुए देख लिया, तो मुझे लगा जैसे मैं बलि का बकरा बन गई हूँ।'
क्या आप महल में आकर रहना चाहते हैं?
'क्या यह स्पष्ट नहीं होगा? हम बस आपस में लड़ने का दिखावा करेंगे, वरना मुझे भी हत्या के आरोप में जेल हो सकती है। मुझे नहीं लगता कि यह समझदारी भरा कदम है।'
'लेकिन आप मेडिकल लीव मांग सकते हैं, है ना?'
'हां, मैं ऐसा कर सकता हूं, दरअसल कांट चाहते हैं कि मैं कुछ समय के लिए छुट्टी ले लूं।'
तो किसी को यह प्रमाणित करना चाहिए कि आपको चिकित्सा अवकाश पर होना चाहिए। मुझे शायद इसके लिए सही व्यक्ति पता है। चलिए कल मिलते हैं। एलुरु के उस अस्पताल का पता लिख लीजिए जहाँ मैं चाहता हूँ कि आप आएँ।
'बोलो,' उसने कहा। उसने पता लिख लिया। शीला ने महसूस किया कि रघु का हमेशा वाला हास्य गायब था, उसकी जगह उसे कुछ और ही महसूस हुआ।
दुः ख।

अध्याय 28

मेजर कांट उस समय चौंक गए जब गृह मंत्री ने मेज पर एक फ़ोल्डर उनकी ओर फेंक दिया। पतली प्लास्टिक की वह फ़ाइल उनके मुँह के नीचे लगी और खुल गई, जिससे रिपोर्टें धीरे-धीरे ज़मीन पर गिर गईं। मेजर कांट ने मंत्री को ऐसी तीखी निगाहों से देखा जैसे वे दुश्मन सैनिकों को देखते हैं जो गोलियाँ खाने ही वाले होते हैं।

क्या तुम किसी काम के हो? अगर तुम अपनी गलतियों की मात्रा और गुणवत्ता को बढ़ाते रहोगे, तो मुझे तुम्हारा कोई फायदा नहीं दिखता। आखिर तुम क्या करना चाहते हो, अपनी ही मूर्खता से मुकाबला करना चाहते हो?

मेजर कांट एकदम सीधे खड़े हो गए और उनकी निगाहें गृह मंत्री के सिर के ऊपर की दीवार पर गड़ी हुई थीं।

क्या आपको बोली जाने वाली अंग्रेजी समझ आती है?

'जी जनाब,' कांट ने गरजते हुए कहा।

'तो मेरे सवाल का जवाब दीजिए। आपने रघुराम सूर्या को जेल से कैसे रिहा किया?'

कांत ने गहरी सांस ली, 'उसके खिलाफ कुछ भी नहीं था। दरअसल, मैंने सुना है कि पुलिस ने एफआईआर तक दर्ज नहीं की।'

'क्या आपने ऐसा किया? और आपने यह सुनिश्चित क्यों नहीं किया कि वे एफआईआर दर्ज कराएं? प्रथम सूचना रिपोर्ट एक रिकॉर्ड होता है। सूर्या को आपराधिक मामले, हत्या के मामले में आरोपी के रूप में दर्ज किया जाता।'

लेकिन महोदय, उस व्यक्ति ने हमारे एक वैज्ञानिक की जान बचाई। यह सच है कि हमारे वैज्ञानिकों ने उससे संपर्क किया और उसने उनकी मदद की।

'यह दूसरी बड़ी गलती है। पहले तो आपने शीला को बेलगाम होकर गांव वालों और बाकी सबसे बात करने की छूट दे दी। फिर आप चुपचाप बैठे रहे जब रघु ने उसे आपकी नाक के नीचे से उठाकर अपने महल में ले गया। वह वहां रात भर रुकी रही और आपको इसकी कोई जानकारी नहीं थी। दो और वैज्ञानिक उस जर्जर महल में घुस गए और आपको कुछ पता नहीं चला क्योंकि वे भी आपको चकमा देने में कामयाब रहे। अंत में, जब हम स्मारक कक्ष में प्रवेश पाने के लिए अदालत में जी-जान से लड़ रहे थे, तो वे बिना किसी सुरक्षा के और उससे भी बुरी बात, हमारी जानकारी के बिना ही उस कक्ष में चले गए। उनमें से एक की अब मौत हो चुकी है और दूसरा कोमा में है। आप इन सब के लिए क्या जवाब देंगे?'

'मुझे नहीं पता कि हॉल के अंदर क्या हुआ,' कांट ने टिप्पणी की।

'आपको क्या पता है? कृपया मुझे बताएं।'

कांट चुप रहे।

क्या आपको अस्थायी स्मृतिलोप भी है?
‘उन्होंने मुझसे यह बात नहीं बताई, महोदय, मुझे कैसे पता चलता...’
‘भरोसा करना? आपको क्या लगता है कि मुझे कैसे पता चलेगा कि शीला किससे और कब मिली थी?’
'वे हमारे हैं, हम उनका पीछा क्यों करेंगे...क्या आप भी मेरा पीछा कर रहे हैं?'
गोविंद चिढ़कर बोला, 'यह बात मायने नहीं रखती।'
'ओह, क्या ऐसा है? जी हाँ, मैंने अपनी टीम पर भरोसा किया था, लेकिन जाहिर तौर पर उन्होंने मुझे कभी टीम का हिस्सा नहीं माना। नतीजा यह हुआ कि हालात बेकाबू हो गए। अब मुझे पता है कि उन्हें कैसे संभालना है।'
गोविंद हँस पड़ा। ‘तुम किसे संभालोगे? एक मर चुका है, दूसरा कोमा में है और तीसरा घावों से उबर रहा है। कांत, तुम मेरे लिए बोझ हो, बेहतर होगा कि तुम यहाँ से चले जाओ। मैं सब संभाल लूँगा।’
कांत टस से मस नहीं हुए, 'महोदय, मैं जनरल सिंह से आदेश लेता हूँ, गृह मंत्रालय से नहीं। मैं तब तक यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक कि...'
अगर आप यही चाहते हैं तो।
मेजर गुस्से में कमरे से बाहर निकल गया। उसने देखा कि शीला लंगड़ाते हुए आंगन पार करके एक खड़ी कार में बैठ गई, जो अस्पताल जा रही थी। उसने कार को तेजी से जाते हुए देखा और मन ही मन मुस्कुराया।

XXX

डॉक्टर मुरली कृष्णा ने एक बड़े अस्पताल समूह में आकर्षक नौकरी स्वेच्छा से छोड़ दी क्योंकि उनका मानना था कि छोटे शहरों में चिकित्सा सेवाएं प्रदान करके वे स्वयं और अपने पेशे में एक बदलाव ला सकते हैं। डॉक्टरों के परिवार में जन्मे मुरली का हैदराबाद जैसे हलचल भरे महानगर से अपने गृहनगर एलुरु लौटने का निर्णय उनके माता-पिता ने न तो अपेक्षित समझा था और न ही स्वीकार किया था।
उन्होंने अपने बेटे पर काफी निवेश किया था और जब वे किसी धनी और योग्य लड़की से दहेज के रूप में उसकी योग्यता का लाभ उठा सकते थे, तभी वह लड़का गलत आदर्शों के प्रभाव में आकर एलुरु भाग गया। उसके पिता, जो एक बाल रोग विशेषज्ञ थे, ने मुरली से बात करने से इनकार कर दिया और उसकी माँ, जो एक सर्जन थीं, बेहद क्रोधित थीं।
मुरली ने स्थानीय जनरल अस्पताल में लगभग खाली हो चुके दवा भंडारों को फिर से भरने के लिए एलुरु स्थित सूर्या मेडिकल ट्रस्ट से धनराशि के लिए आवेदन किया था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ट्रस्ट ने लगभग तुरंत ही जवाब दे दिया। लेकिन जल्द ही उन्हें पता चला कि मामला बहुत गंभीर था। दवाइयां अवैध बाजार में छोटे क्लीनिकों और निजी अस्पतालों को उनकी लागत से लगभग तीन गुना अधिक कीमत पर बेची जा रही थीं।

दोषियों को पकड़ने के उनके प्रयास ज़्यादा सफल नहीं हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि चोरी की गई दवाइयों का सारा पैसा अस्पताल के शीर्ष प्रबंधन और स्थानीय प्रशासनिक तंत्र तक पहुँच गया। देखते ही देखते अस्पताल में अपने मरीज़ों के लिए दवाइयाँ खत्म हो गईं। अच्छी तनख्वाह पाने वाले दलाल, जिनमें से अधिकतर अस्पताल के कर्मचारी थे, असंतुष्ट मरीज़ों को निजी अस्पतालों की ओर मोड़ने लगे।

व्यवस्था से निराश और कोई दूसरा रास्ता न होने के कारण, उस युवा डॉक्टर ने एक कमरे का क्लिनिक खोला। पाँच वर्षों के भीतर ही उनका क्लिनिक एक साधारण लेकिन गुणवत्तापूर्ण अस्पताल में तब्दील हो गया। मरीज़ सामान्य अस्पताल के उदासीन रवैये और महंगे निजी चिकित्सकों की तुलना में उन्हें ज़्यादा पसंद करते थे।

नई चिकित्सा पद्धतियों को शुरू करने और महंगे उपकरण लाने के लिए धन जुटाने की उनकी कोशिश तब पूरी हुई जब उन्होंने सूर्या मेडिकल ट्रस्ट के सामने अपनी व्यावसायिक योजना प्रस्तुत की। ट्रस्ट ने उनका ऋण स्वीकृत कर दिया, जिससे उनका अस्पताल कई गांवों और कस्बों की विभिन्न चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करने वाली सुविधा में तब्दील हो गया। समय पर ऋण चुकाने के अलावा, ट्रस्ट की ओर से ऋण देने की एकमात्र शर्त एक विस्तृत कार्यान्वयन योजना और उसके विशेषज्ञों द्वारा आवधिक ऑडिट थी। मुरली ने सहर्ष सहमति दे दी।

एक तरह से मुरली ने अपने माता-पिता को भी संतुष्ट कर दिया। उनकी सफलता के कारण, उनके माता-पिता उनकी शादी एक धनी उद्योगपति की बेटी से करवा पाए, जो स्वयं एक दंत चिकित्सक थीं। उन्होंने अपने ससुर से अस्पताल में निवेश के रूप में या अपने लिए नकद जमा के रूप में पैसे लेने से इनकार कर दिया था, क्योंकि वे जानते थे कि इससे उनकी स्वतंत्रता सीमित हो जाएगी, जो एक बहुत बड़ी कीमत होगी। लेकिन यह उन कई चीजों में से एक थी जिसने उनकी पत्नी हेमा को उनके बारे में बेहद प्रभावित किया। हेमा उनके साथ अस्पताल में काम करती थीं। वे सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक अस्पताल में व्यस्त रहते थे, जिसके बाद नवविवाहित जोड़ा अपने लिए समय निकालता था।

बुधवार की सुबह काफी व्यस्त थी और मुरली पहले से ही काम में पूरी तरह डूबे हुए थे, तभी वार्ड बॉय ने उनकी नियुक्तियों से संबंधित आउट पेशेंट और कंसल्टिंग हिस्ट्री रिकॉर्ड्स का एक नया बंडल उनकी मेज पर रख दिया। डॉक्टर ने नामों पर ध्यान नहीं दिया। उनका ध्यान उस लंबे, सलीके से कपड़े पहने हुए व्यक्ति पर था जो वार्ड बॉय के पीछे-पीछे उनके परामर्श कक्ष में आया था। वह देखने में बिल्कुल स्वस्थ लग रहा था, लेकिन फिर भी, उसकी सेहत में कुछ भी खराबी हो सकती थी।

'जी हाँ... वीरभद्र राव... है ना? मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' मुरली ने ढेर के ऊपर रखे इतिहास कार्ड पर लिखे नाम को ध्यान से देखते हुए पूछा।

'डॉक्टर साहब, मैं आपसे एक मदद मांगने आया हूँ,' उस आदमी ने अंग्रेज़ी में कहा। यह बात हैरान करने वाली थी, क्योंकि इतिहास कार्ड के अनुसार वीरभद्र राव एक किसान थे। पुरानी पीढ़ी के ज़्यादातर किसान अर्ध-साक्षर होते थे। डॉक्टर साहब स्वाभाविक रूप से मदद मांगने आने वाले आदमियों पर शक करते थे।

या तो वह अपनी प्रेमिका या रखैल के लिए गर्भपात करवाना चाहते थे, या फिर अपने यौन रोग को ठीक होने तक परिवार से छुपाना चाहते थे। उस आदमी के हाव-भाव से लग रहा था कि मामला पहले वाला ही है।
'यह क्या है?'
मुझे कुछ मिनटों के लिए आपकी तरह बनना होगा। मुझे पता है यह अजीब लग सकता है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है।
मुरली हैरान रह गया। यह एक नई बात थी। वह व्यक्ति बहुत अच्छी तरह से बोलता था; वास्तव में उसकी अंग्रेजी उत्कृष्ट थी, किसी छोटे शहर के व्यक्ति जैसी बिल्कुल नहीं। डॉ. मुरली को लगा कि वह व्यक्ति मानसिक रूप से असंतुलित हो सकता है।
'तुम्हें क्या लगता है कि तुम मेरी तरह क्यों बनना चाहते हो...?' उस आदमी ने अपना विजिटिंग कार्ड इतिहास पत्र पर रख दिया। 'श्रीमान...सूर्या...' मुरली अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, 'रघुराम सूर्या...क्या आप वही हैं...?'
'जी डॉक्टर, मैं हूँ। क्षमा कीजिए, लेकिन...'
मुरली ने खुशी से हाथ आगे बढ़ाया। 'श्रीमान सूर्य, मुझे सच में खेद है कि मैं आपको पहचान नहीं पाया। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। मैंने उस घिनौनी घटना के बारे में सब कुछ सुना है जब आपने कुछ लोगों की जान बचाई और इसके लिए आपको जेल में डाल दिया गया। मैं तो स्तब्ध रह गया। महोदय, बताइए मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?'
रघु ने विस्मय से भरे चिकित्सक को आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी।
'डॉक्टर कृष्णा, बेहतर होगा कि आपको सारी भयावह जानकारी न हो। आज आपसे एक मरीज़ की मुलाक़ात होनी है, उनका नाम शीला पीतांबर है। वह उस दुर्घटना में शामिल वैज्ञानिकों में से एक हैं। मेरे लिए उनसे कुछ पल अकेले में बात करना बेहद ज़रूरी है। आप चाहें तो उपस्थित रह सकते हैं, हालाँकि मेरे द्वारा उनसे कही जाने वाली बातें सुनना आपके लिए उचित नहीं होगा...'
'...और आप नहीं चाहते कि किसी को इसके बारे में पता चले?' मुरली ने बात समाप्त की।
'हाँ, सही है। मुझे खेद है। यह गैरकानूनी नहीं है, बस असामान्य है। मैं आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकता... मेरा अनुरोध आपको बेतुका लग रहा होगा। अगर आप मना कर दें तो मुझे समझ आ जाएगा।'
डॉ. मुरली कृष्णा ने कुछ देर अपने कैलेंडर पर नज़र डाली और कहा, 'श्री सूर्या, उनका यहाँ डेढ़ बजे आने का समय निर्धारित है। यहाँ एक शौचालय है। आप उनके आने तक आराम कर सकते हैं। इससे मुझे आज दोपहर के भोजन पर आपकी मेज़बानी करने का भी मौका मिल जाएगा।'
रघु ने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए कहा, 'यह बहुत अच्छा होगा, डॉक्टर साहब।'

अध्याय 29

कांत शीला का पीछा करने के इरादे से अपनी जीप में सवार हो गया। चिकित्सा सहायता के लिए एलुरु की उसकी यात्रा जायज़ थी, लेकिन कुछ असामान्य भी थी। यह अजीब बात थी कि जावाराम में अत्याधुनिक अस्पताल होने के बावजूद, जहाँ स्मारक हॉल की घटना के बाद उसका प्रारंभिक उपचार हुआ था, शीला ने एलुरु जैसे आम लोगों के लिए बने अस्पताल में दूसरी राय लेने के लिए अस्पताल बदल लिया।

हालाँकि उन्होंने राजनेता से यह बात नहीं कही थी, लेकिन कांट उस धूर्त वैज्ञानिक के साथ और कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। उनकी सुरक्षा के लिए और उनके ठिकाने पर नज़र रखने के लिए दो जासूसों को उनकी निगरानी में लगाया गया था। इसके अलावा, कांट ने गृह मंत्री के आदेश का ठीक-ठीक पालन किया था, जब उन्होंने मंत्री और उनके शातिर साथी पर नज़र रखने के लिए एक अनुभवी रॉ एजेंट को नियुक्त किया था। अगर कांट का पीछा किया जा रहा था, तो उनका पीछा करने वालों के साथ भी वैसा ही बर्ताव करने में कोई बुराई नहीं थी।

मेजर शीला के पीछे-पीछे एलुरु गया क्योंकि वह गेस्ट हाउस से बाहर निकलना चाहता था। उसे वहाँ घुटन महसूस होने लगी थी, खासकर तब जब उसे अपना काम छोड़ने के लिए कहा गया...नहीं, आदेश दिया गया।

कांत जावाराम से कुछ ही घंटों में एलुरु पहुँच गया। शीला की गाड़ी, एक सेना की मारुति जीप, डॉ. मुरली कृष्णा के अस्पताल के छोटे से पार्किंग स्थल में खड़ी थी। उसने उपयुक्त पार्किंग स्थान खोजने के लिए परिसर का एक चक्कर लगाया। एलुरु, अन्य छोटे कस्बों की तरह, संकरी सीमेंट की सड़कों से भरा हुआ था, जिन पर समय के साथ खराब हुए हिस्सों को भरने के लिए पैच लगे हुए थे।

सड़क के दोनों ओर खुली नालियाँ थीं, जाहिर तौर पर स्थानीय अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था में काफी खामियाँ थीं। नालियों को कुछ जगहों पर खुरदरी पत्थर की पट्टियों से ढका गया था, हालांकि ज्यादातर जगहों पर पट्टियाँ गायब थीं। उसने कार को ब्लॉक के चारों ओर घुमाया और अस्पताल के ठीक पीछे पहुँच गया, तभी मेजर ने अचानक ब्रेक लगा दिया।

उन्हें टाटा ज़ेनॉन लिखा हुआ एक लाल पिकअप ट्रक दिखाई दिया। कांत जानता था कि यह किसका वाहन है, इस इलाके में अपनी तरह का इकलौता वाहन। मेजर ने जीप को एक खुले सेप्टिक टैंक के पास पार्क करने में कामयाबी हासिल की। उन्होंने दुर्गंध से बचने और खुद को सुरक्षित रखने के लिए अपने नाक और मुंह पर रुमाल रखा और अस्पताल की ओर तेज़ी से चलने लगे।

जब वह अस्पताल में दाखिल हुआ, तब घड़ी में एक बजकर पंद्रह मिनट हो रहे थे। वह लगभग शीला से टकरा ही गया, जो प्रतीक्षालय में आराम से बैठी एक मेडिकल पत्रिका में डूबी हुई थी। उसने उम्मीद की कि शीला ने उसे न देखा हो। उसके पर्स से जुड़ा अत्याधुनिक ट्रांसमीटर, जो पेंसिल की नोक से भी छोटा था,

उसकी किसी भी दिलचस्प बात को सुनने के लिए काफी था। उसने एक ऐसे उपकरण को अपने कान से लगा लिया जो देखने में ब्लूटूथ रिसीवर जैसा लग रहा था।
कुछ ही मिनटों में शीला परामर्श कक्ष में दाखिल हुई।
'शुभ दोपहर डॉक्टर,' उसने कहा। वह लड़खड़ाते हुए परामर्श मेज तक पहुंची और बड़ी मुश्किल से सीधी पीठ वाली कुर्सी पर बैठ गई।
'शुभ दोपहर शीला,' रघु ने धीरे से कहा। उसने शीला का हाथ अपने हाथ में लिया और हल्के से दबाया। उसने उससे पूछा, 'तुम कैसी हो?'
ठीक है। सुनो, मैंने अभी-अभी कांट को बाहर देखा। मुझे लगता है कि वह मेरे पीछे-पीछे यहाँ तक आ गया है, शायद मेरे पास ज्यादा समय नहीं है।'
प्रतीक्षा कक्ष में, कांट थोड़ा सहम गया। उसे आश्चर्य हुआ कि शीला ने उसके बारे में डॉक्टर को क्यों बताया। कहीं... डॉक्टर ने तो नहीं बताया। कांट ने उत्सुकता से सुनने वाले उपकरण को अपने कान से लगाया।
'तो फिर समय बर्बाद न करें,' रघु ने कहा। उसने अपने पिता के पत्र की फोटोकॉपी और कागज की पट्टी शीला को दे दी।
उसने चुपचाप पत्र पढ़ा। वह एकाग्र रहना चाहती थी, फिर भी उसके विचार भटक कर दूसरी बातों पर चले गए।
शीला को अपने माता-पिता की सुखद यादें तो आती थीं, लेकिन ज़्यादातर बार वे यादें उसके गले में दुख का एक गोला ही बना देती थीं। फिर भी, यही यादें इस बात का प्रमाण थीं कि वह उनसे प्यार करती थी। यादें ही उसके लिए किसी भी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अपनी भावनाओं को पुष्ट करने का ज़रिया थीं।
वह सोचती थी कि अगर उसे अपने माता-पिता की एक भी याद न होती तो कैसा होता। बस एक खाली दीवार। उसे कैसा महसूस होता? एक खोखलापन, एक खालीपन, किसी से जुड़ाव न होने का एहसास। एक अनजान दुनिया में भटकने का एहसास। रघु को नहीं पता था कि उसके पिता की आवाज़ कैसी थी, वे कैसे हँसते थे या वे कैसे दिखते थे। उसके पास कुछ भी नहीं था। बिलकुल शून्य।
शीला ने सोचा कि अगर वह रघु की जगह होती तो कम से कम यह तो पूछती कि ऐसा क्यों हुआ। लेकिन इस सवाल का जवाब देने वाला कोई नहीं था। यही रघु की पीड़ा थी। यही उसका दर्द था। यादें कितनी सरल चीज़ें होती हैं। फिर भी, वे पृथ्वी की महानतम संस्कृतियों का आधार होती हैं। यादों से वंचित रहना क्रूरता थी। एक सज़ा थी।
उसका हाथ रघु पर और भी मज़बूत हो गया। उसने एक पल के लिए रघु की ओर देखा और मुस्कुराई। थोड़ी देर बाद उसने रघु को पत्रों की फोटोकॉपी वापस दे दीं।
'आप क्या सोचते हैं?'
आपने कहा था कि वह कौन सी किताबें पढ़ रहा था?

‘आइजैक न्यूटन, आइंस्टीन, कुछ अन्य। कुछ ने सापेक्षता के सिद्धांत पर काम किया, कुछ ने क्वांटम यांत्रिकी पर, और यहां तक कि ‘ब्रह्मांड के रहस्य’ नामक एक पुस्तक भी थी।’
उसने कहा, 'रघु, यह मामला और भी पेचीदा हो गया है।'
‘क्या, हमें नई चुनौतियों की जरूरत है?’
1956 में, क्वांटम भौतिकी में एक सिद्धांत था कि हमारे ब्रह्मांड में समय एक विशेष दिशा में चलता है, जिससे हम अतीत को देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, रात के आकाश में कुछ तारे वास्तव में अब वहां नहीं हैं, वे प्रकाश वर्ष पहले वहां थे, शायद लाखों साल पहले। तारों से पृथ्वी तक प्रकाश पहुंचने में इतना समय लगता होगा। कौन जानता है, वर्तमान में, वे तारे सुपरनोवा बन गए हों, या ब्लैक होल या व्हाइट ड्वार्फ बन गए हों, इसलिए जब हम आकाश में तारों को देखते हैं, तो हम उन्हें वैसे ही देखते हैं जैसे वे लाखों साल पहले थे। दूसरे शब्दों में, हम सचमुच अतीत में देख सकते हैं। सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुंचने में लगभग आठ मिनट लगते हैं, जिसका अर्थ है कि जो प्रकाश हमें अभी मिल रहा है वह अतीत का है, वर्तमान का नहीं। यह आठ मिनट पुराना है। यदि सूर्य आज फट जाए और हम किसी तरह उस विस्फोट से सुरक्षित रहें, तो पृथ्वी पर उसका प्रभाव पड़ने से पहले हमें आठ मिनट तक प्रकाश मिलेगा।
‘तुम मुझे यह क्यों बता रहे हो?’
मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। हमारे ब्रह्मांड में समय-स्थान संबंध में समय इसी तरह बहता है। लेकिन अगर समय विपरीत दिशा में बह सकता, कम से कम सिद्धांत रूप में, तो हमारे लिए यह संभव हो जाता कि हम भविष्य में आकाश के तारों को देख पाते और शायद सूर्य के नष्ट होने से पहले ही उसे देख पाते। पूरी दुनिया अलग दिख सकती थी। हम न तो वैसे दिखते और न ही वैसे बूढ़े होते जैसे आज हैं; ब्रह्मांड स्वयं ही नियमों के एक अलग समूह पर काम करता।
रघु ने अचंभित होकर शीला को देखा और पूछा, 'इसका मेरे पिता से क्या लेना-देना है?'
‘आपके पिता के पत्र के अनुसार, सूत्रम उसी प्रकार के ब्रह्मांड से आया प्रतीत होता है।’
क्या अन्य ब्रह्मांड भी मौजूद हैं?
‘यह एक सिद्धांत है। विज्ञान सिद्धांतों से ही शुरू और खत्म होता है, कोई भी बात पूर्णतया निश्चित नहीं होती। खैर, मानव-विरोधी भावना के बारे में एक और सिद्धांत है।’
‘यह क्या है, जैसे कि एंटी-क्राइस्ट, या एंटी-गॉड, किसी प्रकार की परम बुराई?’
शीला ने मुस्कुराते हुए कहा, "नहीं, मूर्ख, विज्ञान में धर्म का कोई स्थान नहीं है, वास्तव में स्टीफन हॉकिंग कहते हैं कि सृष्टि में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं थी। मैं इस बात से सहमत हूँ। बेशक, कुछ हलकों में इसे ईशनिंदा माना जाता है। एक प्रति-व्यक्ति, व्यक्ति का दर्पण प्रतिबिंब होता है। आपके पिता ने अपने पत्र में क्वार्क्स का उल्लेख किया था। वे परमाणु के सबसे छोटे विभाज्य भाग हैं। सिद्धांत यह है कि ब्रह्मांड के प्रारंभिक जीवन में, शायद बिग बैंग के ठीक बाद, क्वार्क्स और प्रति-क्वार्क्स नामक कणों के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ था, जो क्वार्क्स के विपरीत होते हैं, एक तरह से बाइबिल के युद्धों में से एक। उन्होंने एक-दूसरे को

निरस्त कर दिया, लेकिन क्वार्क्स की संख्या प्रति-क्वार्क्स से अधिक थी, ऐसा क्यों हुआ, यह हम नहीं जानते। हॉकिंग के अनुसार, यह अच्छा ही हुआ क्योंकि सिद्धांत यह है कि 'युद्ध' के बाद बचे हुए क्वार्क्स ही जीवन के निर्माण खंड बन गए जैसा कि हम आज जानते हैं। इसीलिए वे दावा करते हैं कि सृष्टि में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं थी।" यह पूरी तरह से परमाणुओं से बना है।

'उनके लिए अच्छा है। मुझे अभी भी यह स्पष्ट नहीं है कि मेरे पिता का इन सब से क्या लेना-देना था।'

मैं यहाँ सिर्फ अनुमान लगा रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि सूत्रम को रोकने या नष्ट करने का एक ही तरीका है, बराबर संख्या में क्वार्क और एंटी-क्वार्क बनाकर उन्हें आपस में टकराने देना। पत्र से मुझे यही समझ आया है। इसे स्वयं का एक प्रतिरूप बनाने के रूप में भी समझा जा सकता है, क्योंकि हम मूल रूप से परमाणु हैं। इस प्रतिरूप को व्यक्ति के साथ मिलाने पर, इस मामले में, आपके पिता, परिणामी प्रतिक्रिया से व्यक्ति और प्रतिरूप दोनों ही नष्ट हो जाने चाहिए। हमें वास्तव में नहीं पता कि प्रयोगशाला की स्थितियों से बाहर इसका क्या परिणाम होगा या यह सूत्रम को कैसे नष्ट कर सकता है।

रघु ने थोड़ी देर सोचा। 'क्या इसका मतलब यह है कि मेरे पिता एक विरोधी व्यक्ति का निर्माण करने में असफल रहे?'

नहीं, हमें नहीं पता। आइए, हम उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करें जो हमें पता हैं।

'शीला, हमें यह जानने की जरूरत है कि शब्दांश क्या है, और हमें इसे अभी ढूंढना होगा।'

‘रघु ही क्यों? यह महत्वपूर्ण क्यों है?’

‘यह शब्दांश पूरी बात के लिए अपकेंद्रीय प्रतीत होता है।’

‘यह अपकेंद्री कैसे है? अगर हमें पता चल जाए कि शब्दांश क्या है तो क्या होगा?’

रघु ने जोर देकर कहा, 'मुझे नहीं पता। लेकिन आज का सुराग यही है और मुझे लगता है कि हमें इसी का पीछा करना चाहिए। उस आदमी का नाम क्या था, जिसने मेरे पिता को वह अक्षर बताया था?'

शीला ने 'तिरुपति से रामाया' नामक पत्र का जिक्र किया।

'शीला, अब बीमारी की छुट्टी मांगने का अच्छा समय है।'

उसने औपचारिकतावश सिर हिलाया।

'जब आप अपना फैसला पक्का कर लें तो आज बाद में मुझे फोन कर देना। मुझे लगता है कि तिरुपति के पवित्र पहाड़ों की यात्रा हमारे लिए बहुत फायदेमंद रहेगी।'

उसने सिर हिलाया, इस बात से खुश थी कि उसका हास्यबोध वापस आ गया था।

XXX

गोविंद और तांत्रिक गेस्ट हाउस में अकेले थे। शीला अस्पताल में थी और कांत आसपास नहीं था। वे गेस्ट हाउस के सुव्यवस्थित परिसर में टहल रहे थे। तांत्रिक ने गोविंद से कहा, 'उस सिपाही से सावधान रहना, मैं कहता हूँ, उससे सावधान रहना। उसका कोई फायदा नहीं है, फिर भी सितारे बताते हैं कि वह मुसीबत से

भी बड़ा खतरा बन सकता है। उससे तुम्हें खतरा है। जितनी जल्दी तुम उससे छुटकारा पाओगे, उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा। मैं कहता हूँ, उतना ही अच्छा।'

गोविंद ने सिर हिलाकर सलाह स्वीकार कर ली।

अब समय आ गया है कि हम ईश्वर पर विजय प्राप्त करें, क्योंकि यह शीघ्र ही अपने चरम पर पहुँच जाएगा और फिर कोई इसे रोक नहीं पाएगा। यह छल से उत्पन्न हुआ है और कपट से पोषित है। यदि हम इसे अपने वश में नहीं करते हैं, तो सूत्रम इस संसार को धूल और रोगों का पात्र बना देगा। मैं शक्ति का एक पतला पर्दा देख रहा हूँ जिसने ईश्वर को कुछ समय से अपनी कैद में रखा हुआ है। हमें उस शक्ति के पर्दे का उपयोग करके ईश्वर को नियंत्रित करना होगा, इससे पहले कि वह मुक्त हो जाए।

'कौन सी शक्ति, स्वामीजी?' गोविंद ने पूछा।

'यह नीले और हरे रंग की एक विचित्र शक्ति है। गोविंद, नीला और हरा बहुत शक्तिशाली रंग हैं। लाल को खतरे का रंग माना जाता है, अगर ऐसा है तो नीला जीवन की शक्ति है, मैं कहता हूँ कि यह स्वयं जीवन है। हरा इसका सहायक है, नीले का सेवक है, एक सहायक है। आवरण का रंग कहीं नीला है तो कहीं हरा, और किनारों पर यह लाल चमकता है, जहाँ मुझे लगता है कि यह ईश्वर के मवाद से लड़ रहा है। फिर भी, यह शक्ति कमजोर है और हमें तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है, मैं कहता हूँ कि बहुत तेजी से।'

'आपको ये सारे रंग आपस में लड़ते हुए कहाँ दिखाई देते हैं?'

तांत्रिक ने अपनी कनपटी को हल्के से थपथपाया।

'ठीक है। स्वामीजी, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? मैं भारत सरकार की सारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता हूँ, लेकिन एक तुच्छ न्यायिक मंच मुझे बंधक बनाए हुए है। अगर मैंने अदालत के आदेश को रद्द किए बिना कुछ भी किया, तो मेरे राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी इसका इस्तेमाल मुझे बर्बाद करने के लिए करेंगे। हमने रघुराम के चचेरे भाइयों के साथ मिलकर निषेधाज्ञा आदेश को रद्द करने के लिए याचिका दायर की है। सुनवाई कल के लिए निर्धारित है। अगर सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो हम कल रात तक स्मारक हॉल में प्रवेश कर सकते हैं।'

"और फिर भी, तुम्हारे पास ताबीज है, इसमें इतनी देरी नहीं होनी चाहिए थी। ताबीज को तुम्हारे लिए रास्ता खोलना चाहिए...जब तक कि..." तांत्रिक ने अपनी आँखें बंद कर लीं, अपने बाएं हाथ की तर्जनी और अंगूठे को अपनी नाक के पुल पर रखा और कुछ क्षणों के लिए स्थिर हो गया। अचानक, उसकी लाल आँखें खुल गईं।

'ऐसा हो ही नहीं सकता। यह मेरी नज़र से कैसे छूट गया?' वह अचानक बोल पड़ा। तांत्रिक छटपटाने लगा, मानो वह किसी सार्वजनिक शौचालय के बाहर लगी लंबी कतार के बिल्कुल आखिरी छोर पर खड़ा हो और अब और बर्दाश्त न कर सके।

'स्वामीजी, आपने क्या नहीं देखा?'

'My child, the Agniputr!'

'WHO?'

‘बहुत समय पहले विनाशक को यहाँ लाने का प्रयास किया गया था। हमने उस प्रयास को विफल कर दिया। हमने सूर्य प्रसाद सूर्य को पराजित किया। लेकिन इतने वर्षों तक मुझे सूत्रम की उपस्थिति का अहसास नहीं हुआ। मुझे लगा कि हम असफल हो गए हैं। अब, मुझे पता है कि हम असफल नहीं हुए। लेकिन तब... किसी चीज़ ने इसे छुपा रखा था। किसी चीज़ ने इतने वर्षों तक सूत्रम को मुझसे छिपाए रखा। मुझे अनुमान लगा लेना चाहिए था कि वह क्या था। मुझे आश्चर्य करना चाहिए था। मैं मूर्ख हूँ। मैं कहता हूँ, मैं एक दयनीय मूर्ख हूँ।’

‘भगवान के नाम पर, तुम ये क्या बकवास कर रहे हो?’ गोविंद गुस्से से चिल्लाया, उसका सब्र आखिरकार टूट गया था। काश करण यहाँ होता। उसके चाचा को पता होता कि इस बेवकूफ से कैसे निपटना है।

'धैर्य रखो मेरे बच्चे, धैर्य रखो। मैं तुम्हारे लिए रास्ता बनाऊंगा, मैं तुम्हारे साथ हूं।'

'मुझे यकीन है कि यह बहुत उत्साहजनक है, लेकिन जब मैं चीजों को समझता हूं तो मुझे वे बेहतर ढंग से समझ आती हैं,' गोविंद ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा।

'गुडेम नाम के छोटे से गाँव में जीवन और मृत्यु के बीच एक युद्ध छिड़ा था। जीवन हार गया, लेकिन इससे पहले उसने अपने जादू से मृत्यु को रोक दिया। जादू ने मृत्यु को फैलने से रोका और इससे जीवन को फिर से सक्रिय होने का मौका मिला, क्योंकि जीवन शाश्वत है तो वह कुछ भी नहीं है।'

गोविंद ने तिरस्कारपूर्वक सिर हिलाया। करण किरोमल अक्सर शिकायत करता था कि स्वामीजी उन चीजों के बारे में बड़बड़ाते और चिल्लाते रहते थे जिन्हें कोई वास्तव में समझ नहीं पाता था।

अंत में उसने पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिए?'

तांत्रिक ने उसे घूरकर देखा और कहा, 'सूर्य को मार डालो। मैं कहता हूँ, उसे मार डालो।'

यह तो स्पष्ट था, लेकिन अगर यह भी उस प्रलाप और गुस्से भरे भाषण का हिस्सा था, तो गोविंद को यकीन नहीं था।

‘हम उसे मारे बिना उस जगह तक पहुंच सकते हैं। हम लगभग पहुंच ही गए हैं।’

तांत्रिक ने अपनी क्रोधित, रक्तरंजित निगाहें गोविंद पर डालीं, जिससे मंत्री असहज हो गया।

‘मूर्ख, मैं कहता हूँ मूर्ख। न्यायालय तुम्हें हॉल में प्रवेश करने से नहीं रोक सकता, न ही सूर्य को। लेकिन अग्निपुत्र तुम्हें नष्ट कर सकता है। तुम्हारे चाचा जानते हैं कि अग्निपुत्र क्या कर सकता है। मैं कहता हूँ, तुम अभी बहुत छोटे हो। मुझसे मत लड़ो, मेरे साथ काम करो, मैं कहता हूँ, मेरे साथ काम करो। यह अनिवार्य है। यदि सूर्य इतने लंबे समय से भगवान का पीछा कर रहा है, तो मुझे डर है कि उसके पास इसे नष्ट करने के साधन पहले से ही मौजूद होंगे। नहीं, मैं कहता हूँ नहीं, तुम्हें सूर्य को मारना ही होगा।’

गोविंद अवाक खड़ा रहा, 'भगवान को नष्ट करने का क्या मतलब है, सूर्य ऐसा कैसे कर सकता है?'

‘मैं सब कुछ नहीं जान सकता। मुझे बस इतना पता है कि...सूर्य की मृत्यु की स्थिति गंभीर है।’

गोविंद ने पहले ही मन बना लिया था। उस कमीने को मार गिराना उसके लिए खुशी की बात होगी। 'ठीक है, स्वामीजी,' उसने छोटे स्वर में कहा।

गेस्ट हाउस की एक इमारत में सेना के बेस यूनिट के अंदर मौजूद आदमी होंठ पढ़कर बात समझने में माहिर था; उसे जासूसी प्रशिक्षण के दौरान होंठ पढ़ना सिखाया गया था। वह इलेक्ट्रॉनिक निगरानी में भी कुशल था। इसीलिए उसे गोविंद किरोमल और तांत्रिक की ओर लगे रिसीवर डिश की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। वह जासूस निराश था क्योंकि वह डिश काम नहीं कर रही थी। उससे सिर्फ़ स्टैटिक सिग्नल ही निकल रहा था, खासकर जब मुंडा हुआ तांत्रिक आस-पास होता था। संभवतः उसके पास किसी तरह का स्क्रैम्बलिंग डिवाइस था; यही एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण था।

जासूस की दूरबीन और होंठ पढ़ने की उसकी कुशलता दोनों ही उसके काम आईं। उसे स्वीकार करना पड़ा कि कही गई बातों में से उसे ज़्यादा कुछ समझ नहीं आया। उसे बस दो बातें समझ आईं: मंत्री जी रॉ एजेंसी को जल्द से जल्द बाहर निकालना चाहते थे और रघुराम सूर्या खतरे में थे। जासूस ने अपना छोटा सा काला मोबाइल फोन उठाया और एक नंबर डायल किया।

अध्याय 30

अमित ने पहली ही घंटी बजते ही फोन उठा लिया। वह हमेशा नीले फोन पर ऐसा ही करता था। यह नोकिया का एक पुराना मॉडल था, उसके लिए शुभ माना जाने वाला फोन। इस नंबर को कुछ ही लोग जानते थे, वे ग्राहक जिन्हें अमित सबसे ज़्यादा महत्व देता था। उसके काम का मूल नियम यह था कि वह अपने ग्राहकों के हितों के विरुद्ध कभी काम नहीं करता था, चाहे कुछ भी हो जाए। यही बात उसे इस क्षेत्र के अन्य लोगों से अलग करती थी। इसी वजह से वह थोड़ा कम खर्चीला भी था, लेकिन असल में जो लोग उसके लिए मायने रखते थे, उन्हें पैसे की परवाह नहीं होती थी, खासकर जब उनकी जान दांव पर लगी हो। अमित कभी असफल नहीं हुआ। कम से कम अब तक तो नहीं। उसके ग्राहक उसे अपने खिलाफ होने के बजाय अपने साथ रखना ज़्यादा पसंद करते थे। हालांकि, वह इतने ऊंचे और गोपनीय दायरे में काम करता था कि बहुत कम लोग उसे जानते थे।

किसी को भी उसका अंतिम नाम ठीक से पता नहीं था। दरअसल, उसने खुद को एक ही उपनाम तक सीमित नहीं रखा था। उसने कई उपनाम अपना लिए थे। उसे यही रास आता था। वह जो चाहे वो बन जाता था, खासकर मरे हुए लोगों का नाम। अमित उन लोगों के नाम चुनता था जिनकी कम उम्र में, शायद किसी दुर्घटना में, मृत्यु हो गई थी और जिनका अंतिम संस्कार कर दिया गया था। इस तरह, भारत में रिकॉर्ड बहुत अस्पष्ट थे, किसी की पहचान का पता लगाने में महीनों लग जाते और तब तक अमित उतनी ही आसानी से दूसरी पहचान अपना लेता।

सामान्य कद-काठी और बिना किसी विशिष्ट शारीरिक निशान वाले अमित के शांत गहरे भूरे बाल थे जो लंबे होने पर कानों के पास मुड़ जाते थे। हालांकि, उसकी आंखें तेज थीं, जो परिस्थितियों से संबंधित हर चीज को पकड़ लेती थीं।

अमित मुफ्त में किसी की हत्या नहीं करता था और न ही उसे इससे कोई आनंद मिलता था। बात सिर्फ इतनी थी कि किसी को तो यह करना ही था और उसने सोचा कि क्यों न वह खुद ही कर ले क्योंकि वह इसमें माहिर था।

कुछ लोगों ने असहमति जताई।

उन्होंने दावा किया कि वह सर्वश्रेष्ठ था।

अमित को पद या ओहदे की परवाह नहीं थी, उसके लिए सिर्फ़ पैसा मायने रखता था और उसने नकद और अन्य रूपों में बहुत सारा पैसा जमा कर लिया था। उसकी हर पहचान का अपना बैंक खाता था, उनमें से कुछ पर तो आयकर भी लगता था, वे दूसरे नामों से कारोबार करते थे और कर-भुगतान वाली आय अर्जित करते थे। अमित को लगता था कि उसे एक दिन तो सेवानिवृत्त होना ही पड़ेगा और जब वह गुमनामी में चला जाएगा, तो उसके कई हमशक्ल मर जाएंगे और वह बस कुछ ही लोगों को अपने पास रखेगा, पाँच से ज़्यादा नहीं, जिनमें से कुछ की आमदनी वैध होगी और कुछ के पास अवैध धन होगा।

‘हेलो?’ उसने फोन पर धीरे से पूछा।
‘जैकी, क्या तुम ऑनलाइन हो?’
'मैं रहूंगा।'
मैंने आपको एक तस्वीर और कुछ पृष्ठभूमि संबंधी जानकारी के साथ एक ईमेल भेजा है।
‘ठीक है...’ जैकी ने कहा।
पैसा पहले ही ट्रांसफर हो चुका है।
लाइन कट गई। अमित ने फोन को वापस उसके खास तौर पर बनवाए गए केवलर होल्स्टर में रख दिया; यह एक महत्वपूर्ण उपकरण था जिसे सुरक्षा की जरूरत थी।
उसने डेल लैपटॉप खोला और ब्राउज़र पर क्लिक किया। उसने एक समर्पित इंटरनेट लाइन के ज़रिए अपनी ईमेल सेवा में लॉग इन किया। इंटरनेट कनेक्शन उसके किसी दूसरे नाम से चल रहा था। अगर किसी ने भी कनेक्शन का पता लगा लिया, तो उसका दूसरा नाम गायब हो जाएगा। अमित ने मार्लबोरो सिगरेट जलाई। सिगरेट खत्म होते-होते फोटो डाउनलोड हो गई। यह एक स्कैन की हुई कॉपी थी, जिसके नीचे पते लिखे हुए थे।

Raghuram Surya.

गुड़गांव का पता और लक्ष्य का वर्तमान स्थान, गुडेम, पश्चिम गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश, जो जिला मुख्यालय एलुरु से छियालीस किलोमीटर दूर है। साथ ही एक दस्तावेज़ के रूप में एक संक्षिप्त नोट भी था। उसने उसे डाउनलोड किया और लक्ष्य का इतिहास पढ़ा। इतिहास जानना महत्वपूर्ण था, इससे उसे उस व्यक्ति, उसके जीवन, कार्यों और प्रतिक्रियाओं के बारे में पता चला। जाहिर तौर पर लक्ष्य खुद एक अच्छा निशानेबाज था और उसने हाथ से हाथ की लड़ाई (आइकिडो) का प्रशिक्षण भी लिया था। अमित को यह पढ़कर हंसी आई कि लक्ष्य की आंखें आकर्षक थीं और उसका यौन जीवन काफी सक्रिय था।
क्या उसका निशाना किसी बड़े रईस की पत्नी या बेटी के साथ संबंध बना रहा था? या इससे भी बुरा, क्या वह किसी प्रेमिका के साथ शारीरिक संबंध बना रहा था? अमित को ज़रा भी परवाह नहीं थी। ये सब तो बस उसके मन में आने वाले विचार थे। उसे अपने घर की गर्माहट और पत्नी की बाहों में रहना ज़्यादा पसंद था। उसके दो छद्म नाम खुशहाल शादीशुदा थे और जब भी समय मिलता, वह उन दोनों की तरह ज़िंदगी जीता था। यह अफ़सोस की बात थी कि जब उसका छद्म नाम मरेगा, तो उसकी एक पत्नी जल्द ही विधवा हो जाएगी।
जीवन ऐसा ही था।

XXX

शाम के छह बज रहे थे जब रघु का फोन बजा, डिस्प्ले पर 'साइ-फाई' लिखा था, जो शीला का उपनाम रघु ने उसे दिया था। रघु ने फोन उठाया, उसे शीला की आवाज सुनने की उम्मीद थी; लेकिन इसके बजाय एक पुरुष की धीमी, भारी आवाज सुनाई दी, 'क्या आप रघुराम सूर्या हैं?'
उन्होंने इसकी पुष्टि की।
'शीला इस समय मेरे साथ है और हमें आपसे बात करनी है।'
खतरे की घंटी बज उठी। 'क्या वह खतरे में है?'
'बिल्कुल नहीं, बस मुझे आपकी चिंता हो रही है।'
और आप कौन हैं?
दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया, ‘बेहतर होगा कि हम इस बारे में फोन पर बात न करें। निश्चिंत रहें, मेरा इरादा आपको नुकसान पहुंचाने का नहीं है।’
रघु ने यह याद करने के लिए बहुत दिमाग लगाया कि क्या वह उस आवाज को पहचानता है।
उन्होंने किया।
वह इसे समझ ही नहीं पा रहा था।
अभी तक।
‘ठीक है, आप कब और कहाँ मिलना चाहते हैं?’
‘तुरंत जाना अच्छा विचार हो सकता है,’ फोन करने वाले ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘एलुरु। होटल मनोरमा में एक बार है। वहाँ पहुँच जाइए। अपने साथ किसी को ले जाइए, हो सके तो हथियारबंद व्यक्ति को।’
'तुम्हारा इससे क्या मतलब है?'
फोन कट गया।
रघुराम ने शाम छह बजकर उनतालीस मिनट पर होटल मनोरमा से कुछ दूरी पर ज़ेनॉन कार खड़ी की। सफर किसी रोलर कोस्टर जैसा रहा था, यह बात पोटी के हैरान-परेशान होकर यात्री सीट से उतरने और अपनी पतलून में रखी पिस्तौल को ठीक करने के तरीके से साफ पता चल रही थी। रघु, पोटी के साथ, जो सड़क पार कर चुका था, रघु के थोड़ा पीछे-पीछे बार की ओर तेज़ी से चलने लगा। गुरुवार की रात थी और बार में सप्ताहांत से पहले ही काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। शराब और तले हुए मांस की महक पूरे कमरे में फैली हुई थी; बातचीत की गूंज ज़ोरदार हंसी के साथ घुलमिल रही थी।
रघु के बार में प्रवेश करते ही सन्नाटा छा गया। बार के मंद प्रकाश में भी उनकी लंबाई का स्पष्ट अंदाजा लग रहा था। कुछ कुर्सियाँ मेजों के पास सरक गईं, कुछ ग्राहक आधे खड़े होकर उनसे हाथ मिलाने लगे, कुछ ने पारंपरिक नमस्ते किया, जबकि कुछ अन्य सूर्या के वंशज द्वारा पहचाने जाने से बचने के लिए मुंह फेर लिया।
रघु ने उनके अभिवादन का जवाब दिया और बड़ी चतुराई से उन्हें घूरने से खुद को रोका। कमरे के सबसे दूर कोने में, एक हाथ लड़खड़ाते हुए उठा और जैसे ही रघु ने अपने हाथ से उस इशारे को समझा, वह तुरंत

नीचे गिर गया। वह सतर्क और कार्रवाई के लिए तैयार होकर मेज की ओर बढ़ा। वह लगभग बिना किसी घटना के मेज के पास पहुँच ही गया था कि तभी यह घटना घटित हुई।

‘तुम! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुम हम सबको मारने आए हो?’ नशे में धुत वक्ता अपनी कुर्सी से उठते हुए तेज और लड़खड़ाती आवाज में बोला।

रघु ने तुरंत पीछे मुड़कर देखा। उसने पाया कि एक लंबा-पतला व्यक्ति उसे घूर रहा है।

'क्या मैं आपको जानता हूं?'

‘मुझे जानते हो? मुझे जानते हो? तुमने... तुमने मुझे बर्बाद कर दिया। तुम्हारी वजह से मेरे परिवार का नाम कलंकित हो गया है। सब सोचते हैं कि हम शैतान की पूजा करते हैं।’

‘वैलानेनी, तुम्हारे सिवा कोई ऐसा नहीं सोचता, चुप रहो और उसे जाने दो,’ अर्धअंधेरे में कहीं से एक ऊबा हुआ स्वर सुनाई दिया। वैलानेनी ने कांपते हाथों से उस टिप्पणी को टाल दिया।

‘तुमने मेरी दोस्त को मार डाला। साथी की शादी होने वाली थी। S2 भी मर चुकी है, उसने आत्महत्या कर ली। वह बहुत दुखी थी। क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की वजह से कितने लोग मारे गए हैं?’

'क्या आप गोपालम वलनेनी के बेटे हैं?' रघु ने पूछा।

नहीं, मैं उसका पोता हूँ। मैं बदला लेने के लिए बहुत लंबे समय से इंतजार कर रहा हूँ, सूर्या कमीने!

पूरे बार रूम में सन्नाटा छा गया, किसी ने कुछ नहीं कहा; कोई एक इंच भी नहीं हिला।

'मुझे बहुत दुख है कि तुम्हारे दादाजी का निधन हो गया, दोस्त, मेरे पिता का भी उसी रात निधन हो गया था।'

वलानेनी ने ज़मीन पर थूका। 'किसे परवाह है? तुमसे हमें क्या मिला, ज़मीन का एक टुकड़ा और कुछ पैसे, बस इतना ही? क्या मेरे दादाजी के बलिदान की यही कीमत है? मुझे तुम्हारे इस घटिया पैसे का आधा हिस्सा मिलना चाहिए,' वह चिल्लाया।

रघु की मुस्कान देखकर वलानेनी स्तब्ध रह गया। अगर ड्रैकुला भी चाहता, तो भी वह इससे ज्यादा पिशाची चेहरा नहीं बना पाता।

'अगर मैं तुम्हें अभी पैसे दे दूं तो क्या तुम खुद पर तरस खाना बंद कर दोगे?'

वलनेनी ने कुछ अस्पष्ट बड़बड़ाया और रघुराम पर झपटा। फिर उस नशे में धुत आदमी की दुनिया उलट-पुलट हो गई। एक पल पहले वह सूर्या का गला था और अगले ही पल उसकी बांह में तेज दर्द होने लगा और वह कमरे में इधर-उधर उड़ता हुआ मेज पर सिर के बल जा गिरा। पलक झपकते ही उसका बदला लेने का पल खत्म हो गया। सब कुछ समाप्त हो गया। वलनेनी मेज के टूटे टुकड़ों के बीच धीरे-धीरे खर्राटे ले रहा था।

‘अब तो वो शिकायत नहीं कर सकता, उसे मौका मिल गया था,’ किसी ने कहा, कुछ लोग हंस पड़े। रघु ने उन सबको ऐसे घूरा जैसे वो अपना अगला शिकार चुनने ही वाला हो। भीड़ उससे दूर हट गई और हंसी अचानक ही रुक गई।

क्या ये सब आपके लिए मजाक है? वो आदमी लंबे समय से तकलीफ झेल रहा है और मुझे तो पता भी नहीं था कि वो है भी यार। उसके दादाजी ने मेरे पिता के लिए अपनी जान दे दी और आप लोग बस उस पर हंस रहे हैं? आपको उस आदमी का साथ देना चाहिए था, उसके साथ खड़ा होना चाहिए था, भगवान के लिए; वो आप में से ही एक है, हम में से ही एक है।

पूरे बार रूम में फिर से सन्नाटा छा गया।

‘ठीक है...सूर्या, अपने उपदेश बंद करो और अपने काम पर लग जाओ। तुम्हारा समय बीत चुका है। हमें तुम्हें सुनने की ज़रूरत नहीं है,’ किसी ने चिल्लाकर कहा।

‘यह किसने कहा?’ यह एक जोरदार आवाज थी।

पूरे बार में मौजूद लोग दरवाजे पर खड़े उस छोटे कद के आदमी को घूरने के लिए मुड़ गए।

टिकट पाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?

गालियां बेहद घिनौनी थीं। एलुरु के लिए भी। पोटी गुस्से से आग बबूला था। उसके हाथ में पकड़ी बंदूक एकदम स्थिर थी।

फिर सन्नाटा छा गया और फिर यह सब उतनी ही अचानक खत्म हो गया जितनी अचानक शुरू हुआ था। रघु कोने वाली मेज की ओर चला गया, पोटी ने अपना हथियार जेब में रखा और इतराते हुए अंदर आ गया। लोग अपने-अपने कामों में लग गए। फुसफुसाहट भरी बातचीत जारी रही, कुछ लोग चले गए और कुछ ने और ड्रिंक्स मंगवाए। रेस्टोरेंट का मैनेजर, जो किनारे से सब कुछ देख रहा था, उसका दिल बैठ गया।

अज्ञात कॉलर और उसका साथी मूर्ति की तरह स्थिर खड़े थे, मानो वे सारी घटना को देख रहे हों। उनमें से एक ने बेसबॉल कैप पहनी हुई थी। दूसरा बिना टोपी के था। रघु ने बिना टोपी वाले व्यक्ति को सेना के अधिकारी कांत के रूप में पहचान लिया। वह फोन पर मौजूद आवाज को सामने दिख रहे चेहरे से जोड़कर देख पा रहा था। टोपी पहने हुए व्यक्ति ने एक पल के लिए टोपी उतारी और फिर वापस पहन ली।

शीला!

रघु एक कुर्सी पर इस तरह बैठ गया कि वह शीला और उस फौजी के सामने आ गया। वह एक आकर्षक आदमी था, मजबूत जबड़ा, तीखी निगाहें और झुकी हुई नाक, जो महिलाओं को बेहद आकर्षक लगती थी। रघु के मन में ईर्ष्या की एक अनचाही लहर दौड़ गई। उसने कुछ पल तक उस आदमी को गुस्से से घूरा, तभी शीला ने दिलासा देते हुए अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

‘कोई बात नहीं रघु, चिंता मत करो। ये तो तुम्हारा दोस्त है।’

‘सच में? किसका?’

शीला ने अनिश्चितता से अपना हाथ पीछे खींच लिया, जिससे रघु और भी चिढ़ गया।

‘शीला का एक दोस्त, श्री सूर्या।’
'...और?'
और मैं आपको चेतावनी देने आया हूँ!
'हाँ? तुम अपनी चेतावनी अपने पिछवाड़े में डाल लो।'
‘रघु, शांत हो जाओ, वह तुम्हें धमकी नहीं दे रहा है, वह तुम्हें चेतावनी देने आया है, दोनों में फर्क है, तुम्हें क्या हो गया है?’
‘तुम उसके साथ क्या कर रही हो?’ रघु ने उससे तीखे स्वर में पूछा।
कांत ने अपनी मुस्कान दबा ली; बटुआ निकालते ही वह स्पष्ट रूप से तनावमुक्त हो गए। उन्होंने बटुआ खोला और रघु के करीब आ गए।
उन्होंने कहा, 'यह मेरी पत्नी कृतिका है, ये दोनों मेरे बेटे और बेटी हैं।'
शीला को तब यह बात समझ में आई, उसे यह नहीं पता था कि उसे खुश होना चाहिए या गुस्सा होना चाहिए।
उसने क्रोध को चुना।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?’ उसने अचानक कह दिया, हालांकि उसका मन ऐसा नहीं चाहता था।
रघु ने एक के बाद एक सबकी ओर देखा, लेकिन उसकी निगाहों से ड्रैकुला का लगभग सारा अंश गायब हो चुका था। उसने शीला की ओर देखकर शरमाते हुए मुस्कुराया।
उन्होंने कहा, 'मुझे...मुझे खेद है।'
‘तो अब बात पक्की हो गई; तुम ही वो आदमी हो जिसने बिल्ली के गले में घंटी बांधी,’ कांट ने हल्के स्वर में कहा।
‘इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आप पर इतना भरोसा करता हूँ कि आपके साथ मजाक कर सकूँ, मेजर। आप मुझसे किस बारे में बात करना चाहते थे और आपने उसे इस सब में क्यों शामिल किया है?’
‘क्योंकि, चाहे आपको पसंद हो या न हो, वकील साहब, मैं आपके साथ संबंध बनाना चाहती थी,’ शीला ने कहा। उसे इशारे का एहसास हुआ और उसने बात को संभालने की जल्दी से कहा, ‘मेरा मतलब है...’
कांट ने कहा, 'मैं तुम्हारी बात अच्छी तरह समझता हूँ। अब सुनो तुम दोनों, बहुत हो गया। चलो काम की बात करते हैं। मैं इस महिला के साथ चार घंटे से यहाँ बैठा हूँ और अब मैं जाना चाहता हूँ।'
रघु अचंभित रह गया, 'तुम इस आदमी के साथ चार घंटे से एक बार में बैठे हो?'
इससे तुम्हें क्या लेना-देना है?
मुझे इससे क्या लेना-देना? मैं अपने बच्चों की मां को इस तरह का काम नहीं करने दूंगा।
मैं तुम्हारे बच्चों की माँ नहीं हूँ।
'अभी तो नहीं, लेकिन जल्द ही हो जाओगे।'

कांट अब हंस रहे थे, 'और यही वो महान रघुराम सूर्य हैं जिनसे किरोमल इतना डरा हुआ है। सच में, ये तो एक निराशाजनक अंत है।'
रघु ने गहरी भौंहें चढ़ाईं।
कांट ने कहा, 'सरकार में बैठे लोग इतने शक्की हैं कि वे हर समय एक-दूसरे का पीछा करते हैं और एक-दूसरे की बातें सुनते रहते हैं। किरोमल चाहती थी कि मैं शीला का पीछा करूं, मैं उसके पीछे-पीछे डॉ. मुरली कृष्णा के पास गया और आपकी बातचीत सुनी।'
'एक मिनट रुको, तुम कमरे में नहीं थे,' रघु ने कहा।
'जी हां, उसके पर्स पर लगा ट्रांसमीटर ही काफी है।'
रघु ने कांट पर गुस्सा करते हुए कहा, 'आप हमें यह क्यों बता रहे हैं?'
'श्री सूर्या, मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए, अपने प्रश्न बाद के लिए बचाकर रखिए।'
रघु चुप रहा।
'आप लोग जो कुछ भी कह रहे थे, मुझे एक शब्द भी समझ नहीं आया। बस इतना समझ आया कि आप लोग जिसे सूत्रम कहते हैं, उसके बारे में बात कर रहे थे, उसमें आपके पिता का भी कुछ ज़िक्र था, और आप लोग कल तिरुपति जा रहे हैं। मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं है। मैं बस इसमें शामिल होना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि उस कमीने किरोमल की तुलना में आपके साथ मेरा ज़्यादा अच्छा मौका है।'
रघु को यकीन नहीं हुआ, उसने पूछा, 'ऐसा क्यों है?'
'उन्होंने शीला और उसके वैज्ञानिक मित्रों की वजह से मुझे अपना सामान पैक करके जाने के लिए कहा।'
'और?'
'और मैं भारतीय सेना को रिपोर्ट करता हूँ, किसी राजनेता को नहीं। श्रीमान सूर्या, यह तो बस शुरुआत है। चूंकि मैं सरकार के साथ काम कर रहा हूँ, तो मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी कुछ दखल दूं और किसी की बातें सुन लूँ, इसलिए मैंने एहतियात के तौर पर किरोमल को चुना। अंदाज़ा लगाइए मुझे क्या मिला?'
रघु ने आह भरी, 'मैं इंतजार कर रहा हूँ।'
'उसे सलाह दी गई है कि वह आपको जल्द से जल्द मार डाले, श्रीमान सूर्या।'
रघु कुर्सी पर पीछे झुक गया और अपने पैर फैला लिए। 'उसने ऐसा क्यों किया? उसे किसने सलाह दी?'
शीला ने कहा, 'कैंट ने मुझे बातचीत की प्रतिलिपि दी है। जाहिर है, वह अपने साथ किसी तरह का जादूगर लेकर आया है और...'
'क्या?'
'हमें नहीं पता, श्रीमान सूर्या,' कांत ने आगे कहा, 'इलेक्ट्रॉनिक निगरानी इस व्यक्ति पर काम नहीं करती और जासूस को यह प्रतिलेख निकालने के लिए होंठ पढ़ने का सहारा लेना पड़ा,' कांत ने कड़े स्वर में कहा।

शीला ने कहा, 'याद है, मैंने तुम्हें कल उस आदमी के बारे में बताया था जिसके साथ मंत्री जी थे, वो मुंडा हुआ सिर और काले दांत वाला आदमी। लगता है वो किसी तरह का वूडू या तांत्रिक है,' शीला ने बीच में टोकते हुए कहा।
'आपको कैसे मालूम?'
'खैर, किरोमल उन्हें स्वामीजी कहकर संबोधित करता रहा और मैं ऐसे बहुत कम धर्मगुरुओं को जानता हूं जो लोगों को मारने का आदेश देते फिरते हैं,' कांत ने समझाया।
'मुझे लगा था कि तुम उनमें विश्वास नहीं करती,' रघु ने शीला पर चिल्लाते हुए कहा।
मुझे आगे बढ़ने के लिए कुछ बातों की सूची बनानी होगी जिन पर मुझे विश्वास करना है। काश मैंने शाहरुख को वो छुट्टी न दी होती। उससे पहले जिंदगी बहुत आसान थी।
'हम्म... मुझे खुशी है कि आपने उसे छुट्टी दे दी,' रघु ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।
रघु, वो मर चुका है और अगर वो शराबी सच कह रहा था, तो उसकी प्रेमिका ने भी आत्महत्या कर ली होगी। विदुष मर चुका है और प्रियंका शायद कभी उबर न पाए। तुम्हारे गार्ड कमांडर रामदास भी उसी हॉल में मर गए। मुझे इन सब मौतों के साथ जीने की ज़रूरत नहीं है।
रघुराम चुप हो गया। उसने धुंधली मेज की बत्ती की रोशनी में प्रतिलिपि को आगे बढ़ाया। पढ़ने के बाद, उसने कांट की ओर रुख किया।
उन्होंने कहा, 'अब मुझे आपकी बात पर यकीन हो गया है।'
कांट ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
और वो जादूगर मुझे मारना चाहता था। वैसे मुझमें क्या खराबी है? क्या मुझमें कुछ ऐसा है जो उसे पसंद नहीं है?
'इसका अग्निपुत्र से कुछ लेना-देना है। यह प्रतिलेख का हिस्सा है।'
और किरोमल मुझे मारना चाहता है।
'आपको सुरक्षा की जरूरत है श्रीमान सूर्य...' कांत ने कहा।
मेरे दोस्त मुझे रघु कहकर बुलाते हैं...
'तुम्हें यह मानकर चलना होगा कि कोई हत्यारा बाहर तुम्हारा पीछा कर रहा है। रघु... मैं एक सैनिक हूँ। मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ। अगर तुम्हारे किले में मौजूद वह चीज इस देश के लिए खतरा है तो मुझे इसके बारे में जानना होगा, मैं मदद कर सकता हूँ।'
रघु ने एक पल सोचा और फिर हाथ बढ़ाते हुए कांट से कहा, 'भ्रम की इस गाड़ी में आपका स्वागत है।'
उन्होंने पोटी को भी साथ आने का इशारा करते हुए कहा, 'चलिए, मैं आपको अपने दूसरे साथी से मिलवाता हूँ।' कांट ने उस छोटे कद के आदमी के बारे में काफी जानकारी जुटा ली थी।
'मुझे लगता है कि वह प्रथम इंजीनियरिंग कोर के लेफ्टिनेंट कृष्णा नायडू थे,' कांत ने कहा।
पोटी ने अधिकारी को सलीके से सलाम किया और कहा, 'सर, मैं सेवानिवृत्त हूं।'

'तुम्हारे के लिए अच्छा है!'

अध्याय 31

चार्टर्ड विमान सुबह ठीक दस बजे तिरुपति में उतरा। हल्की पहाड़ी ठंड से बचने के लिए जींस और स्वेटशर्ट पहने पोटी सबसे पहले विमान से उतरे। उनके पीछे काले जींस, मैरून टी-शर्ट और काले चमड़े के जैकेट में रघु उतरे। शीला हल्के नीले जींस, चमकीले नीले पुलओवर में काफी सहज और आरामदेह लग रही थीं और उन्होंने ऊनी शॉल ओढ़ी हुई थी; कांत सबसे आखिर में उतरे, सफेद खुली गर्दन वाली टी-शर्ट और नीली जींस के ऊपर अपनी मिलिट्री जैकेट में काफी आरामदायक लग रहे थे। उनके पास सिर्फ हैंड बैगेज था; उन्हें तिरुपति में ज्यादा देर रुकने की उम्मीद नहीं थी।

पार्किंग में किराए पर ली गई चांदी की टोयोटा इनोवा एमयूवी के पास खड़ा आदमी पोटी के कार के कागजात पर हस्ताक्षर करते ही राहत की सांस लेने लगा। उसने उस आदमी से चाबियां छीन लीं और ड्राइवर की सीट पर बैठ गया, कांत उसके बगल वाली सीट पर बैठ गया। रघु और शीला पीछे की सीट पर बैठ गए। वे तिरुमाला पहाड़ियों की तलहटी में बसे मंदिर नगर तिरुपति की ओर चल पड़े। लगभग उसी समय रघु का फोन बजा। उसने धीरे से 'हैलो' कहा। पल भर में उसके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान आ गई, और फिर धन्यवाद कहकर उसने फोन काट दिया।

उन्होंने विजयी भाव से कहा, 'वह विजयवाड़ा से मेरे वकील थे। अदालत ने निषेधाज्ञा आदेश को रद्द करने के लिए सरकार द्वारा दायर याचिका को खारिज कर दिया है।'

'बधाई हो,' शीला ने जवाब दिया और उसका कंधा थपथपाया। पोटी ने खुलकर मुस्कुराया और कांट ने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया।

'तुमने यह सब कैसे किया?' उसने पूछा। वह किरोमल और रघु के चचेरे भाइयों के बीच रची गई साजिश और रघु के मामले को सबके सामने उजागर करने के उनके इरादे की गवाह थी।

रघु ने विनम्रता से कंधे उचकाते हुए कहा, 'देखिए,' उसने कहा, 'मेरे दादाजी की हत्या के बाद, स्वाभाविक रूप से, परिवार में दरार आ गई थी। मेरे परदादा ने संपत्ति को परिवार के सदस्यों के बीच बांट दिया था।'

'यह एक बुद्धिमानी भरा कदम है। इससे लोग अपनी नई-नई मिली दौलत की देखभाल में व्यस्त रहते हैं,' कांट ने टिप्पणी की।

'जी हां। तीन हिस्से थे; एक मेरे परदादा को मिला, बाकी दो उनके बेटों, यानी मेरे दादा और उनके भाई को। मेरे पिता, मेरे दिवंगत दादा के उत्तराधिकारी होने के नाते, उनके हिस्से के वारिस बने।'

'तो यह संपत्ति का एक तिहाई हिस्सा है जो आपको मिला,' कांट ने टिप्पणी की।

'सही है। मेरे दादाजी के भाई को समझौते के तहत संपत्ति नहीं मिली थी। उन्हें नकद राशि मिली थी, जो स्वतंत्रता से पहले के दिनों में भी सैकड़ों करोड़ रुपये थी। इसलिए, उन्होंने संपत्ति में अपना हिस्सा मेरे पिता को सौंप दिया। वे गुडेम छोड़कर हैदराबाद में बस गए। यह सब रिकॉर्ड और पंजीकृत है।'

'यह आपकी कुल संपत्तियों का दो तिहाई हिस्सा है।'

'मेरे परदादा ने एक उपहार विलेख के तहत अपना हिस्सा मेरे पिता को दे दिया। महल और स्मारक हॉल, सारी जमीनें और गांव, सब कुछ मेरे पिता के पूर्ण स्वामित्व में आ गया।'
कांट ने खुशी से ताली बजाई और कहा, 'यह सारी संपत्ति आपकी है।'
रघु ने सिर हिलाया। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसकी संपत्ति उसे भारत के सबसे अमीर लोगों में से एक बनाती है।
'मेरे पिता ने 1940 के दशक में जैसे ही हमारी लगभग सारी ग्रामीण जमीनें वापस मिलीं, उन्हें किसानों को दे दिया। उन्होंने महल, स्मारक हॉल और हमारी शहरी और अर्ध-शहरी जमीनें अपने पास रखीं। मेरे पिता के जीवनकाल के बाद, ये सारी जमीनें मुझे उनके इकलौते वारिस के रूप में मिलीं। मेरे चचेरे भाइयों को पता था कि उच्च न्यायालय में निषेधाज्ञा आदेश को रद्द करने के लिए याचिका दायर करते समय उनका इन संपत्तियों पर कोई अधिकार नहीं था। इसलिए, किरोमल के मामले को मजबूत करने के बजाय, इसने उसे और कमजोर कर दिया क्योंकि उनका दावा स्पष्ट रूप से निराधार था। उन्होंने सरकार को भी अपने साथ फंसा लिया।'
कांट ने कहा, 'एक मिनट रुकिए। मुझसे यहाँ क्या छूट रहा है? अगर आपके चचेरे भाई-बहन यह जानते थे, तो उन्होंने आपके खिलाफ लड़ाई क्यों लड़ी, जबकि उन्हें पता था कि आप जीतेंगे? इससे उनका कोई मकसद पूरा नहीं होता।'
'क्योंकि, यही योजना थी,' रघु ने कहा। 'मेरे दादाजी का भाई शायद पागल था और किसी पागल तांत्रिक के प्रभाव में था। सच तो यह है कि वह अपने बड़े भाई का आदर करता था। वह मेरे दादाजी से इतना प्यार करता था कि जानबूझकर उनकी हत्या नहीं कर सकता था। समय बीतने के साथ, हमें परिवार में झगड़े की निरर्थकता का एहसास हो गया है। भगवान के लिए, यह 21 वीं सदी है, हम अब सामंती सरदार नहीं हैं और न ही हम एक-दूसरे की संपत्ति चाहते हैं। हम खुशी-खुशी सह-अस्तित्व में हैं। तथाकथित झगड़ा केवल गुडेम के लोगों के दिमाग में है, हमारे बीच नहीं। जब किरोमल ने उनसे संपर्क किया, तो उन्होंने मुझसे संपर्क किया।'
'तुम शुरू से ही किरोमल के साथ खेल रहे थे और उसे जरा भी शक नहीं हुआ,' शीला ने कहा।
रघु ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'वह इतना बेताब था कि मेरे चचेरे भाइयों के पास चला गया। यही एक बात थी जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि किरोमल का इस पूरे मामले में निजी स्वार्थ था। मैंने और गहराई से छानबीन की और पता चला कि पूरी परियोजना उसके व्यापारिक साम्राज्य द्वारा नियंत्रित थी।'
'मैंने कभी सोचा नहीं था कि मुझे ऐसा कहना पड़ेगा, लेकिन शाबाश,' कांट ने कहा। वह कल्पना कर सकता था कि खबर सुनकर किरोमल के चेहरे पर क्या भाव होंगे। उसने सचमुच गलत परिवार से पंगा ले लिया था।
'बाबू, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; उन्होंने तुम्हारे पीछे एक हत्यारा लगा रखा है। असल में कुछ भी नहीं बदला है,' पोटी ने रघु को चेतावनी दी।

यह एक गंभीर विचार था जिसने कार में बैठे सभी लोगों का माहौल तुरंत बदल दिया। वे चुपचाप गाड़ी चलाते रहे। जल्द ही वे उस घाट मार्ग के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए जो तिरुमाला और दुनिया के दूसरे सबसे धनी मंदिर की ओर जाता था।

'यह मेरी तिरुमाला की पहली यात्रा है,' कांत ने कहा, 'मेरी पत्नी हमेशा से यहां आना चाहती थी, यह अजीब बात है कि तीर्थयात्रा इन परिस्थितियों में हो रही है।'

'जब सब कुछ समाप्त हो जाएगा, तो मैं व्यक्तिगत रूप से आपकी तीर्थयात्रा की व्यवस्था करूंगा, मेजर,' रघु ने कांत से वादा किया।

'धन्यवाद।'

घुमावदार पहाड़ी रास्तों से तिरुमाला पहुंचने में उन्हें आधा घंटा लग गया, और इस दौरान ठंड लगातार बढ़ती जा रही थी। मंदिर नगर में पहुंचते ही उन्होंने खुद को किराए की जीपों, बसों और लग्जरी कारों के साथ-साथ पैदल चलने वाले लोगों की भारी भीड़ में फंसा पाया।

'क्या तुम पहले भी यहाँ आ चुकी हो?' कांट ने शीला से पूछा।

उन्होंने कहा, 'एक समय था, जब मैं बच्ची थी, तब तिरुमाला में बहुमंजिला अपार्टमेंट और ट्रैफिक सिग्नल नहीं हुआ करते थे। अब यह बहुत अधिक व्यवसायीकरण हो गया है।'

रघु ने कहा, 'हमें देवस्थानम कार्यालय का पता लगाना होगा और रामया शास्त्री के बारे में जानकारी जुटानी होगी।'

शुरुआती पूछताछ के बाद, उन्हें मंदिर का प्रशासनिक कार्यालय मिल गया। इनोवा गाड़ी धीरे-धीरे पार्किंग में रुकी। एक नई कांच की इमारत पर लिखा था कि यह तिरुमाला तिरुपति श्रीवरु का कार्यालय है, मानो स्वयं भगवान बालाजी इस स्थान के अमर सीईओ हों और किसी भी क्षण अपने सुनहरे वैभव में हीरे जड़े स्मार्टफोन के साथ अंदर आ जाएँ। रघु ने शीला की बात से मन ही मन सहमति जताई। भगवान का व्यवसायीकरण कहना तो बहुत कम होगा।

वे संगमरमर के फर्श वाले स्वागत कक्ष में दाखिल हुए। हल्के पीले रंग के कुर्ते और धोती पहने एक युवक स्वागत डेस्क पर बैठा कीबोर्ड पर टाइप कर रहा था, उसकी निगाहें सामने लगी एलसीडी स्क्रीन पर टिकी हुई थीं। तिरुपति के पुरोहित वर्ग की प्रथा के अनुसार, उसके माथे के ऊपर से लेकर सिर के ऊपरी हिस्से तक के बाल आंशिक रूप से मुंडे हुए थे। बाकी के बाल लंबे थे और पीछे करीने से बंधे हुए थे। उसने माथे पर तीन खड़ी रेखाओं का तिलक लगाया हुआ था, दोनों ओर की दो रेखाएं सफेद रंग की थीं और बीच वाली लाल रंग की। यह भगवान बालाजी का चिन्ह था।

उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट अंग्रेजी में पूछा, 'मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं?'

रघु ने गला साफ किया। 'हम पश्चिम गोदावरी जिले के एलुरु से रामया शास्त्री की तलाश कर रहे हैं। मेरे पिता उन्हें जानते थे और मैं उनसे मिलने की उम्मीद कर रहा था।'

युवा पुजारी ने मुस्कुराते हुए अपने कीबोर्ड पर कुछ टाइप किया। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, 'हमारे पास उस नाम के तीन सौ पंडित हैं, उनमें से कोई भी एलुरु से नहीं है। आपके पिता उनसे कब मिले होंगे?' उन्होंने पूछा।

‘लगभग बयालीस साल पहले,’ रघु ने शरमाते हुए कहा।

पुजारी बिल्कुल भी घबराए हुए नहीं दिखे। बल्कि, वे मुस्कुराए। ‘मुझे अभिलेखों की जाँच करनी है। मुझे खेद है कि हम अब तक लगभग पच्चीस वर्षों के अभिलेखों को ही कम्प्यूटरीकृत कर पाए हैं। बाकी मुख्य अभिलेखों में हैं। इसमें कुछ समय लग सकता है, शायद कुछ घंटे। क्या आप शाम को वापस आ सकते हैं?’

रघु ने पुजारी को धन्यवाद दिया और उनसे उनका नाम पूछा।

‘रामाया शास्त्री,’ युवक ने उत्तर दिया और रघु को उसे हैरानी से देखते हुए छोड़कर अपने काम पर लौट गया।

‘अब हम क्या करें?’ कांट ने पूछा, ‘हमारे पास आधा दिन खाली है।’

रघु ने कहा, 'अब बस एक ही काम बचा है, चलिए दर्शन के लिए चलते हैं। चलिए सात पहाड़ियों के स्वामी के दर्शन करते हैं।'

अध्याय 32

भगवान बालाजी का स्वर्ण मंदिर वास्तव में सोने का नहीं बना था। इसके कुछ हिस्से, विशेष रूप से गुंबद, जटिल नक्काशी वाली सोने की प्लेटों से ढके हुए थे। मंदिर में प्रवेश के लिए लंबी कतार छोटे से कस्बे के एक अलग हिस्से से शुरू हुई। साल के किसी भी समय की तरह, यह मंदिर उत्साही और शोरगुल करने वाले श्रद्धालुओं से खचाखच भरा हुआ था। चार अप्रत्याशित तीर्थयात्रियों को धक्का-मुक्की और भीड़ में से होकर गर्भगृह में प्रवेश करने से पहले पूरे पांच घंटे लग गए।

गर्भगृह में प्रवेश करते ही एक बदलाव आया। सन्नाटा छा गया। शायद किसी ऐसी चीज के प्रति श्रद्धा के कारण जिसे वे सभी आदिम मानते थे। एक सीडी प्लेयर लगातार वैदिक मंत्रों का जाप कर रहा था। वायु कंडीशनर गर्भगृह को ठंडा रख रहे थे। अंदर बिजली की रोशनी नहीं थी, केवल विशाल तेल के दीपक थे जो उस संकरे गलियारे को रोशन कर रहे थे जो भगवान बालाजी की चौदह फुट ऊंची प्रतिमा के आंतरिक गर्भगृह तक जाता था, जिन्हें तिरुमाला में भगवान वेंकटेश्वर के नाम से जाना जाता था।

रघु तिरुपति की कई यात्राएँ कर चुके थे, फिर भी गर्भगृह में प्रवेश करने का वह जादुई अनुभव उनके मन से कभी नहीं मिटा। पहली बार तिरुपति आए कांत के लिए वह अनुभव बिल्कुल अलौकिक था। संकरी गलियारे में लोग देवता के दर्शन के लिए उमड़ते जा रहे थे।

तेल के दीपों की टिमटिमाती रोशनी हीरे जड़े जगमगाती मूर्ति की भव्यता पर नाच रही थी। चार फुट चौड़ा पीतल का विभाजक गर्भगृह में प्रवेश करने वाले तीर्थयात्रियों को सुनहरे द्वारों से बाहर निकलने वाले तीर्थयात्रियों से अलग करता था। लोग देवता की ओर मुख करके प्रवेश करते थे, वहीं गर्भगृह से बाहर निकलने वाले भी पीछे की ओर चलते हुए देवता की ओर ही मुख करते थे। चार घंटे की लंबी कतार के बाद तीर्थयात्रियों को गर्भगृह में केवल कुछ क्षणों के लिए ही प्रवेश की अनुमति थी, और वे उस समय का भरपूर लाभ उठाना चाहते थे।

देवता ने हीरे, माणिक, पन्ना और अन्य बहुमूल्य पत्थरों से जड़ा हुआ सोने का शंकु आकार का मुकुट धारण किया था। उनका कवच हीरे जड़े सोने का था और शुद्ध सोने और रत्नों से जड़ी कमरबंद में हीरे जड़ी मूठ वाली सोने की तलवार थी। देवता की भुजाएँ बहुमूल्य पत्थरों और सोने के सुरक्षात्मक दस्तानों से ढकी हुई थीं। देवता का निचला धड़ रेशम की एक समृद्ध धोती से लिपटा हुआ था।

देवता के चेहरे पर मुकुट के किनारे से लेकर आंखों के नीचे तक तिलक लगाने के लिए सफेद कपूर की मोटी पट्टियां बनाई जाती थीं, जिनके बीच में लाल रंग की एक रेखा होती थी। पौराणिक कथा के अनुसार, यदि उनकी आंखों को ठंडक पहुंचाने वाले इस कपूर को हटा दिया जाए, तो शांत बालाजी संसार में व्याप्त बुराई पर इतना क्रोधित हो जाएंगे कि उसे जला देंगे।

पंडितों ने निरंतर संस्कृत और तेलुगु भजनों का जाप किया, जबकि अन्य पंडितों ने कपूर की अग्नि से सजी आरती की थाली तैयार रखी थी। चंदन और गुलाबजल की मीठी कपूर की सुगंध से कमरा एक अलौकिक

खुशबू से भर गया था। वातावरण में कुछ ऐसा था कि तीर्थयात्रियों द्वारा भगवान बालाजी के अनेक नामों के उच्चारण पर सबसे कठोर संशयवादी भी असहमति की एक भी आवाज नहीं निकाल पा रहा था। 'गोविंदा', 'गोपाला' और 'वेंकटरमण' के नाम देवता की ओर जाने वाले संकरे हॉल में गूंज रहे थे।

कुछ ही मिनटों में चारों लोग गर्भगृह से बाहर आ गए। थोड़ी देर बाद, वे केले के पत्तों में लिपटे हुए चकरपोंगल से भरे प्याले लेकर मंदिर के द्वार से बाहर निकले। चकरपोंगल चावल, गुड़ और घी से बना एक मीठा व्यंजन होता है। उन्होंने इसे बड़ी भूख से खाया और खाली प्यालों को करीने से रखे कूड़ेदानों में से एक में डाल दिया।

शाम के छह बज रहे थे। पंद्रह मिनट बाद, वे फिर से देवस्थानम कार्यालयों के स्वागत कक्ष में थे। स्वागत कक्ष में एक अलग पुजारी बैठा था, जो दोपहर में बैठे पुजारी जितना ही युवा था, हालांकि पहले से काफी मोटा था।

सौम्य भाव से पूछे गए प्रश्न के जवाब में रघु ने कहा, 'मैं रामाया शास्त्री को ढूंढ रहा हूं।'

‘तुम उससे क्यों मिलना चाहते हो?’ युवक ने पूछा।

'हमने आज दोपहर उनसे कुछ आवश्यक जानकारी के बारे में पूछताछ की और उन्होंने हमें शाम को आने के लिए कहा।'

'ठीक है, कई पूछताछें हो रही हैं, क्या मैं जान सकता हूँ कि यह किस बारे में है?'

रघु ने युवा पुजारी को समझाया कि वह रामाया शास्त्री के बारे में जानना चाहता है। युवक ने रघु को संदेह भरी निगाहों से देखा।

'जी हां, महोदय। क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं या उनके बारे में जानना चाहते हैं?'

रघु ने धैर्यपूर्वक अपनी विनती दोहराई।

‘मैं बहरा नहीं हूँ महोदय, आपने मुझे बताया था कि आप रामाया शास्त्री से उनके बारे में बात करना चाहते हैं, मैं समझ सकता हूँ, कृपया मुझे कारण बताइए, क्या आप उन्हें भर्ती करने आए हैं? मैं आपको अपना बायोडाटा भी दे सकता हूँ।’

‘हम उन्हें भर्ती करने नहीं आए हैं। भला कोई पुजारी को क्यों भर्ती करना चाहेगा? हम रामाया शास्त्री के बारे में जानना चाहते थे, जो बहुत समय पहले इस जगह पर एक अधिकारी थे।’

‘अरे! एक पल रुकिए।’

दोपहर की बैठक से आया वह युवक थोड़ी देर बाद पहुंचा और गुस्से में भरे चारों लोगों को अपने साथ अपने कार्यालय में ले गया।

'सर, रामाया शास्त्री पूरी तरह से उपलब्ध हैं। वे जानना चाहेंगे कि कौन उनसे मिलना चाहता है।'

‘क्या वह यहाँ है?’ रघु ने पूछा।

मुझे खेद है कि नहीं, वह घर पर है।

'कृपया उन्हें बता दें कि रघुराम सूर्या उनसे कुछ क्षणों के लिए मिलना चाहते हैं।'

पुजारी ने एक बार फिर समझदारी से सिर हिलाया। उन्होंने अपनी मेज पर रखा मोबाइल फोन उठाया और एक नंबर डायल किया। उन्होंने तेज़ी से तेलुगु में बात की और कुछ ही देर में फोन काट दिया।
उन्होंने कहा कि वे आपसे जल्द से जल्द मिलेंगे, वे काफी उत्साहित लग रहे थे। ऐसा लगता है कि वे सूर्य प्रसाद सूर्य के बेटे से मिलने के लिए उत्सुक हैं, क्या वह आपके पिता हैं?
'क्या उसने अभी यही नहीं कहा? क्या आज मूर्खतापूर्ण सवाल पूछना शुभ है?'
'मुझे खेद है महोदय, मेरा इरादा आपको क्रोधित करने का नहीं था,' पुजारी ने धीमी आवाज में कहा।
रघु को बहुत बुरा लगा। 'मुझे माफ़ करना, बात बस इतनी है कि हम...थके हुए हैं और...मुझे माफ़ करना।'
पुजारी ने उनके लिए एक पता लिख दिया और उनका धन्यवाद स्वीकार किया।
क्या आप मुझे उसके घर का पता बता सकते हैं?
'मुझे खेद है कि मुझे उनके घर का पता नहीं है महोदय। मैं हैदराबाद से परिचित नहीं हूं। मैं स्वयं नेल्लोर से हूं।'
'वह हैदराबाद में है? वह वहां क्या कर रहा है?'
राज्यपाल के रूप में अपना कार्यकाल समाप्त करने के बाद, वे हैदराबाद में ही रहना जारी रखे रहे।
'गवर्नर? किस चीज़ के?'
'आंध्र प्रदेश राज्य का,' पुजारी ने थोड़ी हैरानी जताते हुए कहा।
वे अचंभित होकर उस युवा पादरी को घूरते रहे।
'तिरुपति का एक पुजारी आंध्र प्रदेश का राज्यपाल बन गया?' कांत ने घोर अविश्वास के साथ पूछा।
युवक जोर से हँसा, 'जब एक सैनिक भारत का प्रधानमंत्री बन सकता है, एक वकील वित्त मंत्री बन सकता है, एक वैज्ञानिक देश का राष्ट्रपति बन सकता है, और तो और एक से अधिक अभिनेता मुख्यमंत्री बन सकते हैं, तो एक पुजारी राज्यपाल क्यों नहीं बन सकता?'

अध्याय 33

तिरुमाला से उनकी वापसी की यात्रा खामोश रही। यात्री अपने-अपने विचारों में खोए हुए थे।

शीला ने मन ही मन सोचा, यह सच था कि कुछ पल के लिए जब वह पवित्र स्थान में थी, तो उसे एक अद्भुत शांति का अनुभव हुआ, हालांकि बाहर निकलते ही वह शांति ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। उसने सोचा, मानवीय भावनाएँ कितनी अनोखी होती हैं। यह अजीब बात थी कि मन कैसे चालें चलकर उसे किसी ऐसी चीज़ पर विश्वास दिला देता था जो शायद थी ही नहीं। इसे ही प्लेसबो इफ़ेक्ट कहते हैं।

वह ऐसे सिज़ोफ्रेनिक लोगों को जानती थी जो यह दावा करते हैं कि उन्होंने वास्तविक लोगों से बातचीत की है, जबकि असल में उनका दिमाग उन्हें धोखा दे रहा होता है। वास्तविकता क्या है, इस प्रश्न का वास्तव में कोई उत्तर नहीं है। यहां तक कि जो कुछ हम हर दिन देखते हैं, वह भी प्रकाश, छाया और यादों का एक अंतर्संबंध है।

रघु, जिसे वह कुछ महीने पहले तक जानती भी नहीं थी, अब उसके लिए इतना अनमोल हो गया था कि यह बात उसे अतार्किक लग रही थी, फिर भी सच थी। जब वह हँसता था तो उसे खुशी होती थी, उसे उसका हास्य बहुत पसंद था और वह किसी भी चीज़ से ज़्यादा उसके साथ रहना चाहती थी। उसे खोने के ख्याल से उसके पेट में एक भयानक खालीपन सा आ जाता था। रिश्तों में उसकी तथाकथित दीवारें और रुकावटें समुद्र में नमक की तरह घुल गई थीं, जिससे उसकी दुनिया फिर से खूबसूरत हो गई थी। उसने सुकून भरी साँस ली।

लेकिन... एक हत्यारा उसके प्रेमी को जान से मारने के लिए घात लगाए बैठा था। इस भयावह विचार ने उस सुखद क्षण पर गहरा घाव कर दिया। मान लीजिए कि वे हत्यारे से बच भी गए, तो भी सूत्रम उन पर सुनामी की लहर की तरह मंडरा रहा था, जिससे बचना नामुमकिन था। उन्हें उस खतरे का सामना करना ही था। मजबूरी थी। कोई विकल्प नहीं था। फिर गोविंद किरोमल अपने अजीब 'गुरु' के साथ उसका जीवन बर्बाद करने पर तुला हुआ था।

वह अचानक आगे झुकी, रघु के चारों ओर अपना हाथ लपेटा और उसकी गर्दन पर चुंबन किया। संध्याकाल में जब वे हवाई अड्डे की ओर चल पड़े, तो रघु ने अपना हाथ उसके हाथ में थाम लिया।

रघु के विचार कहीं और थे। विजयवाड़ा में मामला लगभग जीत लिया गया था, फिर भी गोविंद किरोमल ने उससे जीत छीन ली थी। उसने खेल को एक अलग ही स्तर पर पहुंचा दिया था। रघु ने कसम खाई कि शीला या उसके साथियों को कोई नुकसान पहुंचने से पहले वह हत्यारे को रोक देगा।

उसके विचार शीला की ओर चले गए, उस लड़की की ओर जिससे वह प्यार करता था। महल में उसे पहली बार देखते ही वह जान गया था कि वही उसकी जीवनसंगिनी है। उसकी मुस्कान ने ही उसे मोहित कर लिया था। और उसकी आँखों में जो दृढ़ता थी, उसने भी। वह एक सशक्त महिला थी, सबसे अलग, ऐसी जो कभी उसका साथ नहीं छोड़ेगी और जिसे वह जीवन भर प्यार कर सकता है। वह उससे दस साल छोटी थी और

तीस साल बाद की उसकी कल्पना से भी कहीं अधिक समझदार थी। उसे उसकी लंबी गर्दन, उसकी सीधी, कोमल कमर और चलते समय उसके कूल्हों का लहराना बहुत पसंद था। उसने महसूस किया कि शीला ने उसे बाहों में भर लिया है। शीला ने उसकी गर्दन चूमी। उसने चाहा कि यह पल हमेशा के लिए बना रहे।

कांत अब भी मंदिर के गर्भगृह की कल्पनाओं में खोए हुए थे। उन्होंने जीवन में काफी कुछ देख लिया था, या कम से कम उन्हें ऐसा ही लगता था, लेकिन बालाजी की एक झलक ने उनका नजरिया बदल दिया था। अब उनकी पहले से कहीं अधिक इच्छा थी कि कृतिका और बच्चे भी वहाँ होते।

उसने खुद से वादा किया कि वह एक दिन अपने परिवार के साथ मंदिर जरूर लौटेगा, भले ही यह उसका आखिरी काम हो।

वह और भी गंभीर विषयों पर सोचने लगा, जैसे किरोमल और उसका अब तक अज्ञात निजी मकसद। उसके साथ मौजूद जादूगर ने सूत्रम को भगवान कहा था, क्या वह सच में भगवान था? अगर हाँ, तो बालाजी कौन था? उसने सोचा। वे सूत्रम से क्या चाहते थे? क्या उन्हें लगता था कि वे इसे नियंत्रित कर सकते हैं? यही तो सवाल था, लेकिन किसलिए? ऐसी चीज़ से उन्हें क्या मिल सकता था? शक्ति, नियंत्रण, प्रभुत्व।

किरोमल एक राजनेता था; उसे किसी भी चीज़ से बढ़कर सत्ता पर नियंत्रण चाहिए था। ऐसा नहीं था कि उसे धन की लालसा थी, उसके पास तो ज़रूरत से ज़्यादा धन था। किरोमल सत्ता का भूखा था और यह खतरनाक था। उसे हर कीमत पर रोकना ज़रूरी था। कांत ने देखा कि शीला रघु को गले लगा रही है। उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें सब कुछ बयां कर रही थीं। रघु भी उतना ही परेशान था। वे सभी परेशान थे।

मेजर किशांत कांत को अचानक अहसास हुआ। उन्हें यहीं होना था। ठीक इसी क्षण। उन्हें उस राजनेता का सामना करना था। उनका सारा प्रशिक्षण, उनका पूरा जीवन भर का काम किसी उद्देश्य के लिए था। उन्हें किरोमल को रोकना ही था, चाहे इसके लिए उस राजनेता को मारना ही पड़े। यह काम उन्हें ही करना था। कांत को यह बात इतनी स्पष्टता से पता चली कि उनकी सांसें थम गईं।

पोटी का ध्यान कहीं और था। इसीलिए उसने उनका पीछा कर रही कार को देखा। गाड़ी की दो बातों ने उसका ध्यान खींचा। पहली बात, कार की एक हेडलाइट धुंधली थी। वह आसमान की ओर थोड़ी सी ऊपर की ओर झुकी हुई थी। दूसरी बात, कार हमेशा उनसे दो गाड़ियां पीछे चल रही थी। न पास, न दूर। बीच-बीच में वह धीरे से मुड़कर यह पक्का कर लेती थी कि वे अभी भी वहीं हैं।

क्या यह हत्यारा था या फिर किरोमल के जासूस उनका पीछा कर रहे थे? उसे पता नहीं था और इसलिए वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।

पोटी सड़क के बाईं ओर मुड़ा और साथ ही धीरे-धीरे अपनी गति कम करता गया। अचानक ही वह पूरी तरह बाईं ओर मुड़ा और सड़क के किनारे बने कच्चे रास्ते पर ब्रेक लगाकर रुक गया। उनके पीछे चल रहा ट्रक धीरे-धीरे आगे निकल गया, फिर दूसरा ट्रक और कार लगभग उनके पास पहुँच ही गई थी कि ड्राइवर को पोटी की चाल का एहसास हुआ। उसके पास उन्हें ओवरटेक करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

‘यह क्या है?’ कांट ने तुरंत सतर्क होकर पूछा।
'वह कार तेजी से भागती हुई दिख रही है? वह लगभग तीन घंटे से हमारा पीछा कर रही है,' पोटी ने कहा।
‘क्या आप निश्चित हैं? यह सिर्फ ट्रैफिक की वजह से भी हो सकता है,’ रघु ने पूछा।
पोटी ने रियर-व्यू मिरर से दिख रही चकाचौंध का फायदा उठाया। कार अब नज़र से ओझल हो चुकी थी और शायद थोड़ी दूर खड़ी थी ताकि वे उसे फिर से पार कर सकें। पोटी ने गियर लगाया और एमयूवी तेज़ी से आगे बढ़ी। पोटी सड़क से हटकर बाईं ओर चलता रहा। धूल के गुबार में उसने कुछ कारों को ओवरटेक किया, नाराज़ ड्राइवरों के विरोध की उसे कोई परवाह नहीं थी, जब तक कि उसकी नज़र खड़ी कार की टेल लाइट्स पर नहीं पड़ी। ड्राइवर ने अपनी ओर तेज़ी से आती एमयूवी को पहचान लिया और इंजन स्टार्ट किया। उसने हेडलाइट्स चालू कीं और पोटी को धुंधली हेडलाइट से आती रोशनी ऊपर की ओर जाती हुई दिखाई दी।
‘सीट बेल्ट लगा लो,’ पोटी ने आदेश दिया और कार को ऊंचे गियर में डाल दिया। उसने एक्सीलरेटर पैडल को पूरी तरह दबा दिया। गाड़ी किसी विशालकाय मशीन की तरह तेज़ी से आगे बढ़ी। दूसरी कार के ड्राइवर ने आने वाले खतरे को भांप लिया। जैसे ही उसने रफ्तार पकड़ने की कोशिश की, पहिए धूल के गुबार उड़ाते हुए घूमने लगे। पोटी लगभग दूसरी कार के पास पहुँच ही गया था कि उसने थोड़ा दाईं ओर मोड़ा और फिर तेज़ी से बाईं ओर मोड़कर छोटी कार के दाहिने पिछले दरवाजे पर ज़ोरदार टक्कर मार दी। ड्राइवर का नियंत्रण छूट गया, कार थोड़ी लड़खड़ा गई और कम से कम पंद्रह फीट नीचे एक तिरछी ढलान पर फिसल गई। हाईवे से सटे नए बिछाए गए धान के खेतों में जाकर वह बेतरतीब ढंग से रुक गई। टोयोटा इनोवा रात के अंधेरे में तेज़ी से निकल गई।
अमित स्विफ्ट से बाहर निकला और खुद का जायजा लिया। सिर पर एक खरोंच और कुछ चोटिल अंगों को छोड़कर, वह ठीक था। उसने अपने शरीर को फैलाकर अकड़न दूर की। उसने देखा कि कुछ कारें सड़क पर खड़ी थीं और लोग मदद के लिए बाहर निकले थे। वह किसी की नजर में नहीं आना चाहता था। वह तभी तक ठीक था जब तक वह गायब नहीं हो जाता। वह वापस क्षतिग्रस्त कार में कूदा और धान के खेतों से होते हुए तब तक गाड़ी चलाता रहा जब तक कि राजमार्ग की ढलान लगभग पाँच फीट कम नहीं हो गई। तेज़ी से गाड़ी चलाते हुए वह सड़क पर चढ़ गया। उसने कराहती हुई स्विफ्ट को हवाई अड्डे की ओर दौड़ाया। उसे एक विमान पकड़ना था और एक नई योजना बनानी थी।

अध्याय 34

हैदराबाद के बंजारा हिल्स स्थित आलीशान घर की सुरक्षा कड़ी थी। यहां तक कि पूर्व राज्यपाल को भी सुरक्षा की जरूरत होती थी। कार्यकाल समाप्त होने पर राज्य के रहस्य खत्म नहीं हो जाते। शाम ढल रही थी और शीत ऋतु की शुरुआत का आभास हो रहा था।

'बाबू गारू,' रामाया ने कहा, 'आप अपने पिता की तरह दिखते हैं। मुझे उनके साथ अच्छा समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।'

आंध्र प्रदेश के पूर्व राज्यपाल मुगल सम्राट का एक शानदार उदाहरण थे, संभवतः अकबर महान। रघु हाल ही में हिंदी क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम' की स्क्रीनिंग में गए थे। रामाया की शक्ल-सूरत और कद-काठी में उनकी समानता दिवंगत अभिनेता पृथ्वीराज कपूर से थी, जिन्होंने सम्राट अकबर का किरदार निभाया था। उनकी गहरी नाक से निकलने वाली आवाज, वालरस जैसी मूंछें, कंधे तक लंबे बर्फ जैसे सफेद लहराते बाल और राजसी चेहरा, ये सब देखकर रघु का मन हुआ कि उन्हें 'जहाँपनाह' कह दें। इसके अलावा, उनका अर्ध-औपचारिक पहनावा, एक लंबा, बहने वाला सफेद कढ़ाईदार कुर्ता और धोती, भी उन्हें प्रभावित कर रहा था। वे शान से चल रहे थे, मानो उन्हें अपनी शक्ति का पूरा एहसास हो और वे उसका प्रभाव कम दिखाना चाहते हों। उनके तीनों साथी भी रघु की तरह ही पूर्व राज्यपाल के करिश्मा से चकित थे।

'यह आदमी पुजारी बनकर क्या कर रहा था; यह तो जन्मजात राजनीतिज्ञ है!' पोटी ने कांट से फुसफुसाते हुए कहा। मेजर ने अपनी मुस्कान दबाई और सिर हिलाकर सहमति जताई।

रघु ने कहा, 'मुझे बहुत खुशी है कि आप हमसे मिलने के लिए सहमत हुए, महोदय। मुझे इस बात का भी गर्व है कि मेरे पिता ने इतनी प्रतिष्ठित हस्तियों की संगति की।'

'आप क्या कह रहे हैं? मैं...हम, जो भी आपके पिता से मिला, उनके आकर्षण से मुग्ध हो गया, बाबू। वे...इतने सुंदर थे, जितने सुंदर वे दिखने में थे, उतने ही सुंदर वेश में भी थे। लेकिन मुझे बताइए...तिरुपति के उस लड़के ने कहा कि आप किसी बात पर मुझसे मिलना चाहते हैं और मुझे आश्चर्य है कि मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ।'

रघु ने रामाया का अपने दोस्तों से परिचय कराया; रामाया ने भी रघु की तरह ही उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। जब वे विशाल और भव्य रूप से सुसज्जित बैठक कक्ष में आराम से बैठ गए और चाय परोसी गई, तो पूर्व राज्यपाल ने रघु को देखकर पिता तुल्य मुस्कुराया।

'बाबू, तुम मुझसे जो चाहो पूछो,' उसने कहा।

'सर, मेरे पिताजी अपनी मृत्यु से पहले किसी चीज़ पर प्रयोग कर रहे थे,' रघु ने हिचकिचाते हुए कहा। 'मुझे लगता है कि उन्होंने इस बारे में आपसे बात की थी और आपने उनकी मदद की थी।'

रमाया रघु को खाली निगाहों से देखती रही। 'मुझे नहीं पता कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो। उस घटना से लगभग तीन साल पहले तक मैं तुम्हारे पिता से नहीं मिली थी... मेरा मतलब है, उनके निधन से पहले।'
'लेकिन...सर,' शीला ने कहा, 'के अनुसार...'
'शीला यहाँ एक वैज्ञानिक हैं, महोदय,' रघु ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'वह गुडेम में एक परियोजना पर काम कर रही हैं और हमें कुछ जानकारी मिली है। किसी ने हमें बताया कि मेरे पिता आपसे मिले थे। मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या यह जानकारी महत्वपूर्ण है।' उन्होंने शीला को चेतावनी भरी नज़र से देखा, जिसे शीला ने स्वीकार कर लिया।
रमाया ने रघु की ओर से डाली गई उस नज़र को नज़रअंदाज़ नहीं किया। 'वह महिला कुछ कह रही थी, क्या बात है, मेरी बच्ची?'
शीला ने कहा, 'रघु, हमें राज्यपाल पर भरोसा करना चाहिए; आखिरकार वह तुम्हारे पिता का मित्र था।'
'एक मित्र? मैं तो एक विनम्र सेवक था,' रामाया ने उन्हें आश्वस्त किया।
"दरअसल बात ये है कि एक बूढ़े आदमी, पिची रथया ने बताया कि रघु के पिता आपसे मिले थे और आपने उन्हें कुछ अहम सलाह दी थी," शीला ने झूठ बोला। "जब उन्होंने ये बात कही तब वे अपनी मृत्यु शैया पर थे। हम उस आदमी के जोश से काफी प्रभावित हो गए थे। हम बस ये पता लगाना चाहते थे कि क्या ये कोई महत्वपूर्ण बात थी।"
रामाया ने गहरी आह भरी। उन्होंने गहरी भौंहें चढ़ाईं, मानो राजपूत वंशों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के फायदे-नुकसान का हिसाब लगा रहे हों। उन्होंने सोच-विचार करते हुए अपनी मूंछों के सिरों को मोड़ा। फिर उन्होंने दृढ़ता से सिर हिलाया। 'मुझे खेद है कि मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता,' उन्होंने कहा, 'मुझे याद नहीं कि आपके पिता के देहांत से पहले हमारी मुलाकात हुई थी या नहीं।'
'ठीक है...तो हमने आपका समय व्यर्थ कर दिया महोदय। आपके आतिथ्य सत्कार के लिए धन्यवाद,' रघु पहले ही उठकर दरवाजे की ओर चल पड़ा, इससे पहले कि बाकी लोग पूर्व राज्यपाल को शर्मिंदा होकर धन्यवाद कहें और उसके पीछे-पीछे जल्दी से चल दिए।
'बाबू, रुको!' पूर्व राज्यपाल उनके पीछे दौड़ पड़े।
रघु रुक गया। जब वह शान से घूमकर उस भारी-भरकम पूर्व राज्यपाल को घूरने लगा, तो ऐसा लग रहा था मानो वह उस बूढ़े आदमी को दांतों से काट खाने के लिए तैयार हो।
"यह सच है रघुराम; मैं तुम्हारे पिता से उनकी मृत्यु से पहले कभी नहीं मिला। उन्होंने मुझसे कोई महत्वपूर्ण बात नहीं की। हाँ, उन्होंने एक बार मुझे फोन किया था और मुझसे कुछ मामूली सी बात पूछी थी, और मैं उनकी मदद करने के लिए पूरी तरह से तैयार था।"
उन चारों ने एक साथ कहा, 'यह क्या था?'

आश्चर्यचकित पूर्व राज्यपाल एक पल के लिए स्थिर खड़े रहे। ‘उन्होंने मुझसे धर्मग्रंथ का एक विशेष शब्द पूछा। मैं...कृपया अंदर आइए मेरे बेटे। कृपया...आप सभी। मैं आपके पिता का ऋणी हूँ। मैं उनका सदा ऋणी रहूँगा। कृपया, एक बूढ़े व्यक्ति को और कष्ट न पहुँचाएँ।’

रघु का दिल पिघल गया। उसने बूढ़े आदमी के हाथों को अपने हाथों में थाम लिया। 'मुझे खेद है, श्रीमान,' उसने कहा।

पहली उच्च क्षमता वाली राइफल की गोली बैठक कक्ष की पिछली खिड़की तोड़कर सीधे कांट की पीठ को चीरती हुई निकली, उसके सभी आंतरिक महत्वपूर्ण अंगों को भेदते हुए उसके पेट से बाहर निकल गई। मेजर पत्थर की तरह जमीन पर गिर पड़ा। उसके शरीर के चारों ओर खून का एक बड़ा धब्बा बनने लगा।

‘बाबू नीचे, नीचे!’ पोटी चिल्लाया। वह अपनी बंदूक लेने दौड़ा, लेकिन फिर उसे याद आया कि वह उसे कार में ही छोड़ आया है। वे पूर्व राज्यपाल के घर पर थे। वहाँ हथियार ले जाना मना था।

दूसरी गोली पोटी के बाएं हाथ को छूते हुए निकल गई और एक मिट्टी का बर्तन चकनाचूर हो गया। वह पहले ही जमीन पर गिरने ही वाला था कि उसने रघु को शीला और पूर्व राज्यपाल को धक्का देकर जमीन पर गिराते देखा।

तीसरी गोली अंदर घुस आए सुरक्षा गार्ड के पेट में जा लगी। गार्ड चीखता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा, तभी कम से कम एक दर्जन सुरक्षाकर्मी दरवाज़े से अंदर आ गए। उन्होंने पूर्व राज्यपाल को घेर लिया और उन्हें उठाकर खड़ा किया। गार्ड उस बूढ़े आदमी के पीछे खड़े थे, उन्हें इस तरह पकड़े हुए थे कि वे पूरी तरह से उस खिड़की के सामने थे जहाँ से गोलियाँ बरस रही थीं। उन्होंने उनकी बाहों को कसकर पकड़ रखा था और रघु को लगा कि उन्होंने लगभग उन्हें चौथी गोली के लिए तैयार कर दिया था, जो रामाया शास्त्री के पेट को चीरते हुए निकल गई। पूर्व राज्यपाल धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़े। इसके बाद कोई और गोली नहीं चली। गार्ड अलग-अलग दिशाओं में भाग गए।

रामाया असमंजस में था। उसके दिमाग ने दर्द को सुन्न कर दिया था, लेकिन उसका खून बह रहा था, जिससे रिसाव हो रहा था। 'यह एक गलती है... मुझे मारने का कोई कारण नहीं है! मैंने तो बस मदद की, मैंने शुरू से ही वह सब किया जो मैं कर सकता था,' रामाया ने हांफते हुए कहा, और खून रोकने के लिए उसने अपना हाथ पेट पर रखा। रघुराम और शीला के अलावा किसी ने उसकी बात नहीं सुनी, जो पूर्व राज्यपाल के पास जमीन पर बैठे थे। शीला की कही कोई बात रघु को अचानक याद आ गई।

विश्वासघात।

पूर्व राज्यपाल के आवास पर अफरा-तफरी मच गई, लेकिन किसी ने रामाया पर ध्यान नहीं दिया। रघु रेंगते हुए उस जगह पहुंचा जहां पूर्व राज्यपाल अपने ही खून में लथपथ तड़प रहे थे।

‘कोई डॉक्टर को क्यों नहीं बुलाता?’ बूढ़े आदमी ने तीखी आवाज में चिल्लाकर कहा।

“क्योंकि, यही आदेश थे, बूढ़े आदमी। धोखेबाज खुद धोखा खा गया। तुमने उसे गलत शब्द दे दिए, है ना, कमीने? तुमने मेरे पिता को सूत्रम को नष्ट करने की अनुमति क्यों नहीं दी?”

बूढ़े आदमी ने खून की खांसी की, 'करण किरोमल...'
‘तूने मेरे पिता को क्या बताया, कमीने?’
मैंने कहा था कि वह अक्षर 'शांति' था!
‘वास्तविक शब्दांश क्या है?’
बूढ़े आदमी ने रघु को दयनीय निगाहों से देखा। उसने वकील को कॉलर से पकड़कर आगे की ओर खींच लिया।
‘बंदर...’ उसने रघु के कान में चीखते हुए थूक और खून के छींटे मारे। रामया ने फिल्मी अंदाज़ में दम तोड़ दिया। रघु ने अपना कान और गाल पोंछा और निर्जीव शरीर को उदास निगाहों से देखता रहा।
'क्या उसने मुझे अभी-अभी बंदर कहा या यही वह एक अक्षर है जिसने भाषण को जीत दिलाई?'
रघु ने जोर से हंसने की अपनी तीव्र इच्छा को दबा लिया।
वीआईपी के आवास पर हर समय तैनात रहने वाला डॉक्टर तुरंत अंदर आया। वह पूर्व राज्यपाल के शव के पास घुटनों के बल बैठा, उसकी जांच की और उसे मृत घोषित कर दिया।
वाह!
रघु उठ खड़ा हुआ। वह डॉक्टर के ऊपर हावी हो गया। उसने डॉक्टर को उसकी कमीज़ का कॉलर पकड़कर उठाया और दांत किटकिटाते हुए उसे हिलाया, फिर उसे कांत की ओर धकेल दिया।
'उसे बचाओ वरना कसम से, तुम उसके साथ नरक जाओगे,' उसने गुर्राते हुए कहा।

अध्याय 35

पहला दिन।

रामाया शास्त्री की मृत्यु पर एक आधिकारिक बयान जारी किया गया था।

तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की राजधानियों में नक्सली हमला। यह कहानी टॉलीवुड की कुछ फिल्मों से भी ज्यादा हास्यास्पद है।

कोई भी सही सवाल नहीं पूछ रहा था। पुलिस ने हमेशा की तरह संदिग्धों को गिरफ्तार कर लिया। अल्पसंख्यक दल आक्रोश से चिल्ला रहे थे। स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए गए।

हैदराबाद के लोग अराजकता के आदी हो चुके थे। उन्होंने एक नए राज्य के अराजक गठन को देखा था। पिछले कई वर्षों से उनके जीवन में अराजकता का बोलबाला था और एक ऐसे शहर को, जिसने कुछ समय पहले तक पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया था, घुटनों पर ला दिया था। लाभ केवल राजनेताओं को ही हुआ। आम आदमी की किसी को परवाह नहीं थी। शक्तिशाली और प्रभावशाली राजनीतिक आकाओं के लिए आम आदमी का कोई अस्तित्व ही नहीं था।

किसी को नहीं पता था कि अपराध के चार गवाह थे। इसका कहीं कोई ज़िक्र नहीं था। वे बिना किसी निशान के गायब हो गए। उनमें से तीन राज्य के अनौपचारिक मेहमान थे। उन्हें बंजारा हिल्स स्थित पुलिस कॉलोनी के एक अपार्टमेंट में छिपाकर रखा गया था। एक 'सुरक्षित ठिकाना'। चौथा गवाह, कांत, सेना के अस्पताल में था। सेना ने अपने लोगों का ख्याल रखा।

रघु को लगा कि यह नक्सली साजिश नहीं, बल्कि किरोमल की साजिश है। उसके जासूसों को पता चल गया होगा कि वे रामाया शास्त्री के पीछे पड़े हैं। रामाया शास्त्री के मारे जाने से रघुराम पर एक तरह का बोझ आ गया था और वह फिर से घिर गया।

दूसरा दिन।

शीला ने यह संभावना जताई कि हत्यारा जब चाहे तब आकर उन तीनों को मार सकता है। किरोमल इसे किसी अन्य आतंकवादी या नक्सली हमले जैसा दिखा सकता है। वे पुलिस स्टेशन में नहीं थे, कोई औपचारिक गिरफ्तारी नहीं हुई थी और परिणामस्वरूप, इस बात से पूरी तरह इनकार किया जा सकता था। व्यावहारिक रूप से वे धरती से गायब हो चुके थे। उनकी एकमात्र उम्मीद यही थी कि कांट समय रहते होश में आ जाए। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो उनका काम तमाम हो जाएगा।

रघु का प्रभाव सद्भावना पर आधारित था, जबकि उसके शत्रु देश के गृह मंत्री द्वारा संचालित राजनीतिक इच्छाशक्ति के तहत काम करते थे। रघु जानता था कि जब तक वह सहयोग करने का दिखावा नहीं करेगा, तब तक उसके लिए उनके चंगुल से निकलना असंभव था।

उन्होंने अपने बचे हुए दो साथियों को भी ऐसा ही करने की सलाह दी थी। उन्होंने पूर्व राज्यपाल के घर में होने के कारण के बारे में पुलिस द्वारा पूछे गए सभी सवालों के जवाब दिए। रामाया रघु के पिता के मित्र थे।

वे उनसे शिष्टाचार भेंट करने आए थे। उनकी उनसे मिलने की पहले से ही व्यवस्था थी। पूर्व राज्यपाल पर हुए हमले से उनका कोई लेना-देना नहीं था। गोलीबारी के दौरान उनके मित्र, भारतीय सेना के मेजर कांत, गंभीर रूप से घायल हो गए थे।
सहयोग करने पर भी उन्हें आजादी नहीं मिली। उन्हें चौबीसों घंटे सुरक्षा के बीच ताला लगाकर रखा गया।
तीसरा दिन।
एक अप्रत्याशित मेहमान आया था।

Aditya Prasad Surya.

दोनों चचेरे भाई एक साधारण से कमरे के बैठक कक्ष में आमने-सामने खड़े थे। रघु निश्चित रूप से लंबाई में बड़ा था, लेकिन आदित्य देखने में अधिक सुंदर था।
'अन्या, एनचेया मंटावु?' आदित्य ने पूछा।
‘भाई, तुम कुछ खास नहीं कर सकते। यह नामुमकिन है। लेकिन मुझे बताओ, तुमने मुझे कैसे ढूंढा?’
‘तुम्हारा पता लगाने के लिए मुझे बहुत सारे संपर्क साधने पड़े। फिर, कुछ और मजबूत संपर्कों और पैसों के एक बड़े बंडल ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया। भेड़िये बाहर घूम रहे हैं और उन्हें शाही खून की गंध आ गई है।’ रघु ने उपहासपूर्ण ढंग से हँसते हुए कहा।
‘वे तुम्हें यहीं मार डालेंगे, तुम जानते हो और मैं भी जानता हूँ। वे बस माहौल के थोड़ा शांत होने का इंतज़ार कर रहे हैं। उस कमीने किरोमल की नज़र तुम पर है।’
मुझे पता है। अगर मैं यहाँ से ज़िंदा बच भी गया, तो उसका कोई कातिल मेरा पीछा कर रहा होगा।
आदित्य ने अपने हाथ जेब में डाले और गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं। 'क्या मैं कुछ कर सकता हूँ? सोचो भाई, मैं मदद करना चाहता हूँ। अब समय आ गया है कि हमारे लोग मेरे दादाजी और हम सबको हत्यारा समझना बंद कर दें।'
रघु ने सिर हिलाया। अपने भाई के कंधे पर हाथ रखते हुए उसने कहा, 'तुम्हारे दादा हत्यारे नहीं हैं। तांत्रिक ने ही तुम्हारे दादा को ज़हर मिला लड्डू खिलाया था। वो उसे मेरे दादा को देने की बजाय खुद खा सकते थे। ये महज़ संयोग था। तुम्हारे दादा को लगा कि उन्होंने अपने भाई को मार डाला है और वे पागल हो गए। किसी को इस बात का एहसास नहीं हुआ।'
आदित्य ने सिर हिलाया। ‘दादाजी ने कभी खुद को माफ नहीं किया। उनकी मृत्यु बहुत दुखी होकर हुई। राजा रघुराम का नाम ही उन्होंने आखिरी बार लिया था। खैर, जो हो गया सो हो गया। मैं उसे बदल नहीं सकता। मैं तुम्हें यहाँ से कैसे निकालूँ?’
ठीक है, ये रही मेरी योजना। आपको दिल्ली स्थित मेरी कंपनी को फोन करना है। आपके पास उनके नंबर हैं। आपको उन्हें बताना है कि मैं कहाँ हूँ और उनसे कहना है कि वे आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर करें। उन्हें पता होगा कि आगे क्या करना है।
'करूंगा।'

‘आपको एक और काम करना होगा। किरोमल को हराने के लिए, हमें एक राजनेता की तरह काम करना होगा। आप शायद इसमें मेरी मदद कर सकें।’
‘बस मुझे बता दो कि तुम क्या चाहते हो,’ आदित्य ने कहा।
‘मैं नहीं, दो हज़ार गाँव!’ रघु ने कहा। आदित्य की आँखें सिकुड़ गईं और फिर चमक उठीं।
‘काश, मैं वकील बनने की पढ़ाई कर लेता,’ उसने कहा। चचेरे भाई-बहनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और आदित्य चला गया। जब रघु वापस बेडरूम में आया, तो शीला और पोटी ने जिज्ञासा भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।
उन्होंने कहा, 'अब हम इंतजार करते हैं।'
उनके रात के खाने में इंस्टेंट नूडल्स और एक-एक अंडा था, जबकि फ्रिज में हर तरह की खाने-पीने की चीजें भरपूर मात्रा में मौजूद थीं। वे जहर खाकर मरना नहीं चाहते थे। पोटी बैठक में, रघु एक शयनकक्ष में और शीला दूसरे शयनकक्ष में सोईं।
देर रात रघु के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। उसने दरवाजा खोला और शीला अंदर आ गई। शीला ने दोनों बाहें रघु के चारों ओर लपेट लीं और उसे कसकर गले लगा लिया। रघु के हाथ शीला के स्तनों को सहला रहे थे और उसके होंठ शीला के होंठों को खोज रहे थे। शुरू में उन्होंने कुछ नहीं कहा। फिर उन्होंने बेताबी से प्रेम किया, एक-दूसरे को हल्के से काटा और खरोंचा, और फिर धीरे से, सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्हें एक-दूसरे के करीब रहने की जरूरत थी। बाद में रघु पीठ के बल लेटा हुआ छत को घूर रहा था और शीला उसकी बाहों में सिमटी हुई थी, उसके हाथ रघु की छाती को सहला रहे थे।
‘तुम क्या सोच रहे हो?’ उसने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘बंदर!’ उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया।
'क्या?'
‘रामाय ने मरने से ठीक पहले यही कहा था। उन्होंने ब...अ...ब...ओ...ओ...न कहा था, बिल्कुल ऐसे।’
'इसका क्या मतलब है?'
मुझे लगता है कि वह मेरी तारीफ कर रहा था। साइंस फिक्शन, आपको क्या लगता है?
'मुझे नहीं लगता कि वह तुम्हें गाली दे रहा था, बेवकूफ। मुझे लगता है कि वह तुम्हें कुछ बता रहा था।'
'क्या?'
मुझे नहीं पता क्या। हम इस बारे में विचार-विमर्श कर सकते हैं, लेकिन अभी नहीं।
'कब?'
'जब तुम मुझे दोबारा करोगे।'
‘ये लड़की बेहद आकर्षक है,’ रघु ने कहा। वह उसके ऊपर लेट गया और अपने होंठों से उसके होंठों को चूमने लगा।

अध्याय 36

क्वांटम भौतिकी में "प्रेक्षक प्रभाव" की अवधारणा यह कहती है कि अवलोकन किसी घटना को बदल देता है। एक अन्य सिद्धांत यह है कि वास्तविकता तब तक अस्तित्व में नहीं होती जब तक उसका मापन न किया जाए। ये दोनों सिद्धांत एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अगर आप इसे देखें, तो अवलोकन के बिना कोई अस्तित्व नहीं है, कोई प्रमाण नहीं है कि कोई चीज कभी अस्तित्व में थी। परमाणु-निम्न स्तर पर कोई वस्तु नहीं होती, केवल उनके बीच संबंध होते हैं। वहां न तो स्थानिकता है और न ही समय। अगर आपके पास ऐसा चश्मा होता जो आपको सब कुछ आणविक अवस्था में दिखा सकता, तो आप इस कमरे में केवल परमाणु ही देखते, न तो मेरा अस्तित्व है और न ही आपका।

'यह तो काफी डरावना है, है ना?' रघु ने पूछा। वे बिस्तर पर लेटे हुए थे। उसका सिर रघु के कंधे पर था और उसके बाल रघु के चेहरे पर बिखरे हुए थे।

दरअसल, यह मुक्तिदायक है। हम जो कुछ भी देखते हैं, वह सचेत चिंतन का परिणाम है, बस इतना ही। पिची रथया ने ही कहा था कि प्राचीन हिंदू इसे माया, भ्रम कहते थे।

रघु ने पूछा, 'अगर जो हम देख रहे हैं वह सच नहीं है, तो फिर सच क्या है?'

'अच्छा प्रश्न है। सत्य क्या है, जो आप देखते हैं या जो आप सोचते हैं? मेरे जैसे वैज्ञानिक के लिए, विचारक ही वास्तविक है। दार्शनिक के लिए, विचारक ही ईश्वर है। इसलिए, हिंदू शिक्षा कि ईश्वर ही एकमात्र वास्तविकता है और बाकी सब भ्रम है, एक तार्किक कथन है, धार्मिक नहीं।'

क्या आप मुझसे यह कह रहे हैं कि आप तार्किक रूप से ईश्वर में विश्वास करते हैं?

शीला ने अपना सिर हिलाया, उसके बाल रघुराम को गुदगुदी कर रहे थे।

एक वैज्ञानिक किसी भी बात पर पूर्णतः विश्वास नहीं करता। मैं एक सिद्धांत पर विश्वास करता हूँ, उसकी जाँच करता हूँ, उसे समझता हूँ और फिर उसे गलत साबित करने का प्रयास करता हूँ। यदि मैं उसे गलत साबित कर देता हूँ तो मैं एक कदम आगे बढ़ जाता हूँ, और यदि मैं उसे गलत साबित नहीं कर पाता तो भी मैं एक कदम आगे बढ़ जाता हूँ क्योंकि तब तक मुझे इतना ज्ञान प्राप्त हो चुका होता है कि मैं यह देख सकूँ कि सिद्धांत को गलत साबित नहीं किया जा सकता। दोनों ही स्थितियों में, मुझे ज्ञान प्राप्त होता है।

'देखा? इसीलिए मैं तुम्हें साइंस-फिक्शन कहता हूँ। मुझे तुम्हारी आधी बातें समझ नहीं आतीं, लेकिन सुनने में बहुत अच्छी लगती हैं।'

शीला हंस पड़ी।

अब, यहाँ पेचीदा बात यह है कि हम जिस वास्तविकता को जानते हैं, वह केवल वही है जो हमारा मस्तिष्क निर्मित करता है क्योंकि वही हमारी विचार फैक्ट्री है। यह यादों के आधार पर वास्तविकता का निर्माण करता है, इसलिए हम जो देखते हैं वह वास्तव में वही होता है जो मस्तिष्क हमें दिखाता है।

'हम्म... मुझे बहुत सी नई चीजें दिख रही हैं जिनसे मेरा दिमाग परिचित नहीं है। मैं इन्हें कैसे पहचानूँ?'

'आपका क्या मतलब है?'
उदाहरण के लिए, मैं किसी पहाड़ी को देखते ही पहचान लूंगा, भले ही मैंने उससे पहले कभी कोई पहाड़ी न देखी हो।
'यह तो बहुत आसान है, किसी ने आपको पहाड़ी के बारे में बताया होगा। आपने शायद इसके बारे में पढ़ा होगा, कोई तस्वीर देखी होगी। आप शब्द की ध्वनि को छवि से जोड़ पाएंगे। अन्यथा, आप पहाड़ी और रेत के टीले में अंतर नहीं कर पाएंगे।'
वह बिस्तर के अपने हिस्से की ओर लुढ़क गई, तकियों को सहारा देकर खड़ी हो गई और अपने ऊपर रजाई ओढ़कर आराम से लेट गई।
'बहुत समय पहले, पदार्थ आपस में जुड़े हुए थे,' शीला ने कहा। 'ब्रह्मांड एक परमाणु के आकार का था। यह फट गया या अलग हो गया, हम वास्तव में नहीं जानते कि क्या हुआ, और फैलना शुरू हो गया। यदि आप पूरे ब्रह्मांड को संकुचित कर दें, तो यह एक परमाणु के आकार का हो सकता है। सिद्धांत यह है कि, क्योंकि यह एक बार जुड़ा हुआ था, इसलिए यह हमेशा के लिए जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, जुड़वाँ बच्चों की तरह। वे सामान्य भाई-बहनों की तुलना में एक-दूसरे से अधिक जुड़े होते हैं क्योंकि वे जन्म से ही जुड़े हुए होते हैं। वे एक-दूसरे की भावनाओं को लगभग सहज रूप से जानते हैं। सब कुछ एक दूसरे से जुड़ा हुआ है...'
'...और यह उन सभी चीजों को याद रख सकता है जिन्हें बाकी सब देखता है, क्या यही बात है?' रघु ने निष्कर्ष निकाला।
'कुछ हद तक, शायद। यह सिर्फ एक सिद्धांत है।'
'यह बात समझ में आती है... मेरी दादी कहा करती थीं कि हम आत्म स्वरूप हैं, परम आत्मा, सर्वोच्च चेतना से जुड़ी चेतना के प्रतिबिंब हैं।' रघु ने कहा।
कुछ प्रख्यात क्वांटम भौतिकविदों का कहना है कि मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं है, जीवन एक सपना है और हम खुद को कल्पना कर रहे हैं। हम परमाणु हैं। यह केवल इसलिए वास्तविक प्रतीत होता है क्योंकि हमने खुद को यह विश्वास दिला दिया है कि यह वास्तविक है।
रघु मुस्कुराया, "मेरी दादी...इस चर्चा के लिए वही मेरी एकमात्र संदर्भ-स्रोत हैं...उन्होंने कहा था कि जो व्यक्ति किसी विशेष देवता की आराधना करता है, वह उस देवता के धाम पहुँच जाता है। इसलिए शिव भक्त कैलाश पहुँचते हैं, विष्णु भक्त वैकुंठ पहुँचते हैं, इत्यादि, ये सभी स्वर्ग के ही रूप हैं। दृढ़ विश्वास ही इसे वास्तविकता बनाता है। इसलिए आस्थावान व्यक्ति के पास कुछ ऐसा होता है जिस पर वह भरोसा कर सके, जिससे उसका जीवन सार्थक प्रतीत हो।"
शीला अचानक उठ बैठी। उसने रघु की ओर उंगली उठाई, उसका दिमाग तेज़ी से काम कर रहा था। 'इसका मतलब है कि जिस तांत्रिक ने सूत्रम का आह्वान किया, वह किसी प्रकार की शक्ति में विश्वास करता था। एक उजाड़, अंधकारमय, हत्यारी शक्ति। उसने उस शक्ति को हमारी वास्तविकता में ला दिया।'

रघुराम ने कहा, ‘वह उस शक्ति को नियंत्रित नहीं कर सका क्योंकि स्वभाव से वह शक्ति उसी की तरह पागल थी। उसकी इच्छा उस पर हावी हो गई और सूत्रम की विनाश करने की इच्छा ने भी उसे प्रभावित किया। ईश्वर ने इसे गलत माप, एक विसंगति कहा था,’ रघु ने याद किया।

‘इसका काम बस इतना ही है कि यह जिसे भी पकड़ सके, उसकी जान चूस ले?’ शीला ने पूछा।

‘यह मौसमी शुभकामनाएँ नहीं भेजता। मुझे सूत्रम से कभी कोई शुभकामना नहीं मिली। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि अगर इसे मौका दिया जाए तो यह पृथ्वी पर हर किसी और हर चीज से जीवित यीशु को सोख लेगा।’

तो फिर...इसे क्या रोक रहा है? यह उस खाई में क्यों फंसा हुआ है?

'बस, मुझे कुछ पता नहीं है। मैं बस इतना ही अनुमान लगा सकता हूँ कि मेरे पिता ने कुछ ऐसा किया जिससे यह रुक गया।'

‘जब मैं उनसे मिली, तो रथाया ने कहा कि उन्होंने समय हासिल करने के लिए उस भयावह जीव को काबू में कर लिया है। उन्होंने यह भी कहा कि हम समय गंवा रहे हैं,’ शीला ने याद करते हुए बताया।

‘फिर मेरे पिता ने उस चीज को रोकने के लिए कुछ किया।’

‘या शायद यह प्रकृति ही थी,’ शीला ने कहा। ‘प्रकृति सबसे अच्छा रास्ता चुनती है, जरूरी नहीं कि सबसे आसान। मुझे लगता है कि हो सकता है कि प्रकृति ने ही सूत्रम को रोक दिया हो।’

‘क्या प्रकृति ऐसा कर सकती है?’

'हां। प्रकृति स्वयं को संरक्षित करने के लिए कार्य कर सकती है और करेगी, वह प्राकृतिक नियंत्रण और संतुलन स्थापित कर सकती है जो किसी भी असंतुलन को दूर कर सके।'

'कैसे?'

‘प्राकृतिक आपदाएँ, विलुप्ति के स्तर की घटनाएँ। हिमयुग इसका एक उदाहरण है। डायनासोरों की पूरी प्रजाति विलुप्त हो गई। हमें यह भी नहीं पता कि ऐसा क्यों हुआ। लेकिन यह निश्चित रूप से प्रकृति का ही काम था।’

‘तो फिर कुछ गड़बड़ हो गई है। प्रकृति सूत्रम को समाहित करने में विफल हो रही है। हमें कुछ और करने की जरूरत है। लेकिन शीला, मुझे आश्चर्य है कि क्या?’

'आपके पिता के पत्र से हमें सुराग मिलते हैं, उन्होंने क्वार्क का जिक्र किया था।'

और आपने कहा था कि क्वार्क और एंटी-क्वार्क परमाणु के कण हैं...

‘परमाणु के नाभिक के सबसे छोटे विभाज्य कण...’ शीला ने बात काटते हुए कहा।

रघु ने आगे कहा, ‘...और ब्रह्मांड के प्रारंभिक जीवन के दौरान वे आपस में निरस्त हो गए और शेष क्वार्क जीवन के निर्माण खंड बन गए।’

'जी हां, बिल्कुल सही। स्टीफन हॉकिंग और कई अन्य क्वांटम वैज्ञानिकों के अनुसार, प्रारंभिक ब्रह्मांड क्वार्क और एंटी-क्वार्क का एक दलदल था। किसी अज्ञात कारण से, क्वार्क की संख्या एंटी-क्वार्क से अधिक थी।

क्वार्क और एंटी-क्वार्क के टकराव में, क्वार्क बच गए। इसी से ब्रह्मांड का निर्माण हुआ जैसा कि हम आज जानते हैं। हमने उस समय यह सिद्धांत दिया था कि आपके पिता किसी तरह उसी प्रकार के टकराव का अनुकरण करना चाहते थे, जिसके परिणामस्वरूप होने वाला संलयन सूत्रम को नष्ट कर देगा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि सूत्रम एंटी-मैटर से बना है और इसलिए, कणों और एंटी-कणों के बीच टकराव किसी तरह गलत माप को ठीक कर देगा। लेकिन महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि... उन्हें यह कैसे पता चला कि क्या करना है?'

रघु ने कहा, 'ईश्वर ने उसे बताया था। याद है, यह मेरे पिता के पत्र में था। मेरे पिता ने एक विरोधी व्यक्ति का निर्माण किया। आप एक विरोधी व्यक्ति का निर्माण कैसे कर सकते हैं? आखिर विरोधी व्यक्ति क्या होता है?'

'क्या कोई प्राणी एंटी-क्वार्क से बना है?' शीला ने सोचा।

'यह चीज़ आप कहाँ से और किससे बनाते हैं?'

'मुझे लगता है कि हम यह सवाल सिर्फ आपके पिता से ही पूछ सकते हैं।'

'और ऐसा होने वाला नहीं है,' रघु ने स्पष्ट रूप से कहा।

नहीं, ऐसा नहीं है। तो अभी इसके बारे में भूल जाइए। आपके पिता के पत्र में लिखा है कि उन्हें स्वयं को, यानी उस व्यक्ति को, प्रति-व्यक्ति के साथ मिलाना होगा और किसी तरह, इससे सूत्रम की मृत्यु हो जाएगी, शायद। लेकिन फिर यह संभव नहीं है।

'क्यों नहीं?' रघु ने पूछा।

'हम किसी भी प्रयोगशाला में क्वार्क और एंटी-क्वार्क के टकराव का अनुकरण कर सकते हैं। हम इसे हर समय करते हैं।' शीला उत्साहित हो गई जब उसके मन में एक विचार आया। 'पता है मुझे क्या लगता है, प्रारंभिक ब्रह्मांड में क्वार्क और एंटी-क्वार्क के टकराव के दौरान कुछ और भी हुआ होगा। कुछ ऐसा जिसने संतुलन को क्वार्क के पक्ष में झुका दिया होगा।'

'आपका क्या मतलब है?'

'मुझे लगता है कि यह शब्दांश जो भी दर्शाता है, वह संलयन को एक अलग ही स्तर पर ले जाता है। यह क्वार्क या एंटी-क्वार्क को इस तरह बदल देता है कि वे कुछ बिल्कुल अलग ही काम करने लगते हैं। शायद इसने एक ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न की हो जिसे प्राचीन लोग 'अग्निपुत्र' कहते थे। आखिर अग्निपुत्र का अर्थ ही है 'अग्नि का पुत्र' या 'अग्नि द्वारा निर्मित'! यह एक ऐसी प्रतिक्रिया हो सकती है जो हमारी वास्तविकता में गलत मापों को ठीक करती है। या...' शीला कांप उठी जब उसके मन में एक और विचार आया। 'एक ऐसी प्रतिक्रिया जो ब्रह्मांडों का निर्माण करती है,' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

रघु असमंजस में दिख रहा था, 'मुझे समझ नहीं आ रहा।'

मुझे भी नहीं पता। मेरे मन में तो बस सवाल ही सवाल हैं। क्या प्रारंभिक ब्रह्मांड में क्वार्कों को सशक्त बनाने या उनकी संख्या बढ़ाने का कोई सचेत प्रयास किया गया था ताकि वे जीवित रह सकें या एंटी-क्वार्कों से

अधिक हो सकें? यदि हाँ, तो किसने किया? क्या कोई भिन्न प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए उनमें किसी अन्य तत्व को मिलाना आवश्यक था? वह तत्व क्या था?

वे दोनों चुप हो गए। शीला ब्रह्मांड के रहस्यों पर विचार कर रही थी, वहीं रघु पूरी तरह से असमंजस में था। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। जवाब बहुत दूर लग रहे थे और अगर मिलने भी थे, तो वह पहले से भी ज्यादा उलझन में था।

शीला को लगने लगा था कि उसका ज्ञान ही उसके लिए बोझ बन रहा है। वह लीक से हटकर सोचना चाहती थी। पारंपरिक ज्ञान उसके लिए कुछ खास उपयोगी साबित नहीं हो रहा था।

वह कुछ देर तक चुपचाप रघु को देखती रही, और उसके बिस्तर के फ्रेम पर उंगलियों की थपथपाहट की आवाज़ सुनते हुए अपने मन को शांत करने की कोशिश करती रही। यह हल्की-सी आवाज़ उसे सुकून दे रही थी।

उसे धीरे-धीरे समझ आने लगा। एक विचार दूसरे को जन्म देता गया। एक सिद्धांत दूसरे से जुड़ता चला गया। ऐसा लगा जैसे किसी ने किसी विशाल, अद्भुत चीज़ का द्वार खोल दिया हो। इसकी सादगी ने इसे और भी गहरा बना दिया। उसने रघु की जांघ पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। 'हे भगवान रघु... तुमने कर दिखाया!'

'मैंने क्या किया है?' उसने अपनी जांघ को कोमलता से सहलाते हुए उससे पूछा।

'संगीत।'

'क्या आपको अभी संगीत चाहिए?'

'नहीं, मूर्ख। मुझे इसका जवाब दो, अगर तुम्हें संगीत बनाना है तो तुम्हें क्या चाहिए?'

रघु ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'एक वाद्य यंत्र, एक ऑर्केस्ट्रा, एक संगीतकार? आप क्यों पूछ रहे हैं?'

'हां...हां, आपके पास सब कुछ है, आपको और क्या चाहिए?'

'ऑडिटोरियम नहीं...अगर जरूरत पड़े तो मैं अपने कमरे में भी संगीत बना सकता हूँ...'

'बिल्कुल, तो चाहे वह सभागार हो या कमरा, संगीत बनाने के लिए क्या महत्वपूर्ण है?'

'वाद्य यंत्र, एक धुन, संगीतकारों का एक समूह?'

शीला ने अधीरता से सिर हिलाते हुए कहा, 'क्या आप रेलवे स्टेशन पर, या हवाई अड्डे पर, या ज़ेबरा क्रॉसिंग के बीच में संगीत की कल्पना कर सकते हैं और उसे बना सकते हैं?'

मेरा मन मुक्त होना चाहिए, ध्यान भटकाने वाली चीजों से मुक्त होना चाहिए।

'बिल्कुल, और इसके लिए आपको क्या चाहिए?'

रघु ने कहा, 'एकांत, शांति, नहीं रुको... मौन।'

'अगर मौन न हो तो ध्वनि का कोई अर्थ नहीं, है ना?'

'हां, मुझे लगता है ऐसा ही होगा।'

'अगर मौन नहीं है, तो ध्वनि का कोई अर्थ नहीं हो सकता, क्या मैं सही कह रहा हूँ? न तो ध्वनि हो सकती है, न संगीत, न वाणी; यह सब हर जगह से आने वाले शोरगुल का हिस्सा होगा।'

‘मुझे लगता है ऐसा ही है,’ रघु ने कहा, उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि बातचीत किस दिशा में जाएगी।
'क्या तुम नहीं देखते? शुरुआत में सन्नाटा था, इतना सन्नाटा कि शायद उसका वजन किसी भी वस्तु के बराबर था।'
‘साइंस फिक्शन, तुमने तो मेरा ध्यान ही भटका दिया,’ रघु ने सोच-विचार करते हुए कहा। लेकिन शीला उसकी बात सुनने के मूड में नहीं थी। वह पूरे जोश में थी।
संगीत मौन को चीरकर मधुरता प्रदान करता है। ध्वनि मौन को चीरती है। यह सुप्त स्थान को खोल देती है, एक नई संगीतमय वास्तविकता, एक ब्रह्मांड का द्वार खोल देती है।
‘इसका क्वार्क और एंटी-क्वार्क से क्या लेना-देना है?’
‘अंतरिक्ष में हवा नहीं है, इसलिए वहां ध्वनि भी नहीं है,’ शीला ने कहा। ‘लेकिन ध्वनि तरंगें तो होती हैं! विद्युतचुंबकीय कंपन।’
रघु ने कुछ पल के लिए शीला को खाली निगाहों से देखा, फिर अचानक उसे एक विचार आया। 'शानदार!' वह चिल्लाया।
'मैं केवल एक सिद्धांत दे रही हूँ, लेकिन बिग बैंग उस ध्वनि का परिणाम था जिसने उससे पहले के सन्नाटे को भंग कर दिया, जिससे दबाव के कारण ब्रह्मांड अग्निमय जीवन में विस्फोटित हो गया। ब्रह्मांड ही अग्निपुत्र है,' शीला ने कहा।
मुझे पूरा यकीन है कि आप सही हैं।
'शायद मौन के भार ने ही एक ऐसी दरार पैदा कर दी जिससे ध्वनि उत्पन्न हुई।'
'यह तो घोर सन्नाटा है।'
शीला ने आगे कहा, 'वह ध्वनि जिसने सन्नाटे को चीर दिया। बिग बैंग से उत्पन्न ध्वनि कंपन ने क्वार्कों को अलग तरह से प्रतिक्रिया करने की शक्ति दी होगी, संभवतः उन्हें एंटी-क्वार्कों से अधिक शक्तिशाली बना दिया होगा। यदि हम क्वार्कों और एंटी-क्वार्कों के संलयन के दौरान उन्हीं कंपनों को उत्पन्न करें, तो प्रतिक्रिया प्रयोगशाला परिस्थितियों में अब तक हमने जो देखा है, उसके विपरीत हो सकती है।'
‘लेकिन मंत्र यह है कि एक शब्दांश ने वाणी को विजय दिलाई,’ रघु ने कहा, ‘हमें ध्वनि नहीं चाहिए, हमें एक शब्द की तलाश है। एक विशिष्ट शब्दांश जिसने वाणी को विजय दिलाई।’
‘वो एक अक्षर जिसने वाणी को जीत दिलाई,’ शीला ने मन ही मन सोचा। उसने अपने होंठ दबाए। उसकी भौंहें तन गईं। ‘बेशक, कंपन उसी एक अक्षर के कारण ही उत्पन्न होना चाहिए था,’ उसने अंत में कहा।
“एक मिनट रुकिए। ज़रा ठहरिए। आपने अभी कहा कि बिग बैंग से उत्पन्न कंपन के कारण क्वार्क अलग तरह से व्यवहार कर सकते थे। अब आप कह रहे हैं कि यह शब्दांश से उत्पन्न कंपन के कारण है। क्या आपको यकीन है कि आप क्या कह रहे हैं?”
‘क्या मुझे पता है कि मैं क्या कह रहा हूँ? ऐसा हो ही नहीं सकता कि मुझे पक्का पता हो। क्या मेरे पास सारे जवाब हैं? रघु, मुझे तो ये भी नहीं पता कि मुझे कौन-कौन से सवाल पूछने चाहिए।’

‘ठीक है,’ रघु ने कहा। वह जानता था कि शीला पूरी कोशिश कर रही थी, उससे कहीं ज़्यादा, क्योंकि यह उसका विशेषज्ञता का क्षेत्र था। वह जानता था कि वह जवाब तक पहुँचने के लिए अपने ज्ञान का हर एक अंश निचोड़ रही थी। इस वजह से रघु का प्यार उसके लिए और भी बढ़ गया था। चाहे यह कितना भी अजीब लगे, रघु ने शीला से सवालों की बौछार करने का फैसला किया। यही एकमात्र तरीका था जिससे वह उस उलझन से बाहर निकल सकती थी जिसमें वे फँसे हुए थे। इसलिए उसने अपना अगला सवाल पूछा।
‘तो फिर एक विशिष्ट कंपन कैसे उत्पन्न किया जा सकता था? वहां ऐसा करने वाला कोई था ही नहीं।’
शीला ने ज़ोर से सिर हिलाया। 'बोलना तभी संभव है जब विचार हो, है ना? क्या होगा अगर पहला विचार ही एक अक्षर से निकला हो?'
वे कुछ देर तक एक-दूसरे को देखते रहे।
रघु अचानक गंभीर हो गया। 'क्या अब आप यह कह रहे हैं कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक विचार से हुई? क्या यह खतरनाक रूप से सृजनवाद के विचार जैसा नहीं है? मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन क्या आपका वैज्ञानिक समुदाय आपसे असहमत नहीं होगा?'
शीला ने कहा, 'विकासवाद बनाम सृजनवाद के बारे में हम बाद में सोचेंगे। मुझे अभी किसी वैज्ञानिक समिति को अपने सिद्धांतों के बारे में समझाने की जरूरत नहीं है।'
'काफी उचित।'
शीला आश्चर्य से भर उठी और बोली, 'एक विचार ने एक अक्षर को जन्म दिया, जिसने क्वार्कों को सशक्त बनाकर या एंटी-क्वार्कों को कमजोर करके एक ब्रह्मांड को जन्म दिया। वाह! इसके बारे में सोचना अद्भुत है।'
‘तो सवाल यह है कि विचारक कौन था?’ रघु ने हमेशा की तरह वकील की तरह सोचते हुए कहा।
'मेरा अनुमान है कि यह अग्नि है, हालांकि मुझे यकीन नहीं है कि यह सचमुच आग है या अग्नि देवता।'
रघु ने कहा, 'कोई जानकारी नहीं। हालांकि श्लोक में यह जरूर लिखा है कि अग्नि ने एक अक्षर से ही वाणी प्राप्त कर ली। क्या प्राचीन लोग किसी प्रक्रिया को मानवीकरण कर रहे थे?'
शीला एक ऐसी दुनिया में खो गई थी जहाँ विज्ञान कल्पना के साथ घुलमिल गया था। 'पहला शब्द क्या था?' उसने स्वप्निल भाव से स्वयं से पूछा।
रघु ने उदास स्वर में कहा, ‘दिवंगत रामाया शास्त्री ने ‘बबून’ शब्द का प्रयोग किया था। शायद वही पहला अक्षर था, जिससे ब्रह्मांड में ‘बबून’ की उत्पत्ति हुई और पहले बंदर का जन्म हुआ!’
शीला ने कुछ पल रघु को घूरकर देखा, फिर वह जोर से हंस पड़ी।
इसके जवाब में रघु का हाथ चादर के नीचे चला गया।
शीला हांफने लगी।
बाद में, एक-दूसरे की बाहों में, रघु ने कहा, 'मान लीजिए कि हमें असली अक्षर मिल जाता है, तो हम उसका क्या करेंगे? हम उसका उपयोग कैसे करेंगे? हमें कैसे पता चलेगा कि वह सब कुछ नष्ट नहीं कर देगा?'

'चुप रहो और मुझे गले लगाओ, दुनिया के विनाश के बारे में हम कल सोचेंगे,' शीला ने नींद में डूबी हुई आवाज में अपने प्रेमी को फटकारा।

अध्याय 37

रघु की नींद तेज़ गड़गड़ाहट से खुली। या तो उसके कान हिल रहे थे या फिर रात में उनका कमरा किसी तरह समुद्र के किनारे खिसक गया था। हैदराबाद दक्कन पठार में स्थित है, यह तो वाकई एक अविश्वसनीय घटना होगी, उसने सोचा। उसका बिस्तर खाली था। शीला भी कमरे में नहीं थी। उसने जल्दी से कपड़े पहने और दरवाज़ा खोला तो देखा कि पोटी चौंककर दरवाज़े पर खड़ा है, उसकी ज़ख्मी बांह पर नई पट्टी बंधी हुई है।

'मैं बस दरवाजा खटखटाने ही वाला था,' पोटी ने बताया।

'यह क्या है? शीला कहाँ है?'

'तुम्हें जल्दी यहाँ आना चाहिए,' उसने बैठक कक्ष से कहा।

रघु पोटी के पास से निकलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पोटी ने उसका रास्ता रोक दिया।

'क्या?'

पोटी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे जोर से हिलाया।

'वह किसलिए था?'

'मैं खुश हूँ...' उसने उत्साह से कहा और अपने कपड़ों की ओर इशारा करते हुए बोला, 'वह एक अच्छा विकल्प है बाबू।'

रघु ने शरमाते हुए मुस्कुराया।

'उसे जाने मत दो, जितनी जल्दी हो सके उससे शादी कर लो। वह एक अच्छी रानी गारू बनेगी।'

जैसे ही यह सब खत्म हो जाएगा।

वे बैठक कक्ष में दाखिल हुए। शीला नहा चुकी थी और उसने सफेद कमीज और फीकी नीली जींस पहन रखी थी; वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। वह खिड़की के पास खड़ी नीचे सड़क को देख रही थी। उसने खुशी से आह भरी और उसके पीछे खड़ा हो गया। उसने भी शीला की निगाहों का पीछा करते हुए नीचे सड़क को देखा।

सड़क पर हर उम्र के लोग ट्रैक्टरों, कारों और ट्रकों में सवार होकर भारी भीड़ जमा कर चुके थे। हर कोई अपने छोटे से अपार्टमेंट की ओर देख रहा था। यातायात ठप्प हो गया था। गाड़ियों के हॉर्न ज़ोर-ज़ोर से बज रहे थे। लोग चीख-चिल्ला रहे थे। कुछ पुलिसकर्मी नाराज़गी से हाथ हिलाते नज़र आए।

'क्या हो रहा है रघु, ये सब लोग कौन हैं?' शीला ने उससे पूछा।

'पुराने दोस्त। वे हमें बाहर निकालने के लिए यहाँ आए हैं। आदित्य आखिरकार ऐसा करने में कामयाब रहा। मुझे चिंता थी कि वे उसकी बात पर ध्यान नहीं देंगे।'

'तुम्हारे बहुत सारे दोस्त हैं,' शीला ने टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा।

'ओह, वे तो केवल उनकी ताकत का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें से कुछ जावाराम में हैं, कुछ एलुरु में हैं और अगर मैं गलत नहीं हूं तो कुछ आज निश्चित रूप से उच्च न्यायालय में होंगे।'

'उच्च न्यायालय में क्यों?'

'क्योंकि, हे इस जगत की देवी और ब्रह्मांड की खोजी, मेरी फर्म ने मुझे अदालत में पेश करने के लिए बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की होगी।'

'यह क्या है?' शीला ने पूछा।

अब रघु की बारी थी शिक्षक बनने की। उन्होंने कहा, 'एक नागरिक के मौलिक अधिकार उसे राज्य द्वारा गैरकानूनी हिरासत से बचाते हैं। जब भी किसी व्यक्ति को राज्य तंत्र द्वारा गैरकानूनी रूप से हिरासत में लिया जाता है, तो उसके निकटतम मित्र को उच्च न्यायालय में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर करने का अधिकार होता है ताकि उस व्यक्ति को न्यायालय में पेश किया जा सके। यदि न्यायालय यह निर्धारित करता है कि हिरासत गैरकानूनी थी, तो वह उसे रिहा कर देगा। किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को विधिवत कानूनी प्रक्रिया के अलावा प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता।'

'बाबू, खबर देख लीजिए,' पोटी ने कहा। वह टेलीविजन के पास बैठा था और चैनलों पर पश्चिम गोदावरी जिले के ग्रामीणों के पलायन की खबरें छाई हुई थीं, जो अभी भी हैदराबाद की ओर उमड़ रहे थे।

समाचार चैनल ने उच्च न्यायालय और सचिवालय को लोगों से खचाखच भरा हुआ दिखाया, जबकि स्क्रीन के नीचे स्क्रॉल हो रही खबरों की पट्टियों में जावाराम और एलुरु में भी इसी तरह की भीड़ की घोषणा की गई। रघु, शीला और पोटी के नाम बार-बार दोहराए जा रहे थे। कैमरे ने चुपचाप सचिवालय और उच्च न्यायालय में प्रवेश करते पुलिस अधिकारियों को दिखाया।

'अब क्या?' शीला ने पूछा।

खैर, मुझे एक भव्य बचाव अभियान की उम्मीद है... अगर किरोमल अपनी प्रतिष्ठा बचाना चाहते हैं। वे कुछ हज़ार मतदाताओं के मजबूत संभावित वोट बैंक को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते; खासकर तब जब उनकी पार्टी ने पिछली बार तटीय आंध्र में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था।'

दिन बीतता गया। कुछ देर तक कुछ नहीं हुआ। हाई कोर्ट के बाहर तैनात विभिन्न क्षेत्रीय चैनलों के टेलीविजन एंकर बढ़ती भीड़ को कवर कर रहे थे और यहाँ तक कि अचानक साक्षात्कार भी ले रहे थे। तभी पुलिस सायरन की आवाज़ ने उन तीनों का ध्यान खींचा। उन्होंने अपनी खिड़की से देखा कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का एक दल नीचे सड़क पर उतर आया। वे भीड़ को चीरते हुए पुलिस क्वार्टर की ओर बढ़ रहे थे।

कुछ देर बाद एक मर्सिडीज बेंज गाड़ी रुकी और किरोमल उससे उतरे। उन्होंने उदारतापूर्वक भीड़ का अभिवादन किया और कुछ शब्द कहे, फिर पुलिस द्वारा उनके लिए बनाए गए रास्ते से होते हुए पुलिस क्वार्टर की ओर चल दिए। सफेद कुर्ते और पैंट में, और सफेद-काले बालों पर नेहरू टोपी पहने, वे किसी

रत्न की तरह चमक रहे थे। फोटोग्राफर और रिपोर्टर अपने कैमरामैन के साथ निडर होकर उनके पीछे-पीछे छोटे से अपार्टमेंट की ओर चल पड़े।
राजनेताओं और पत्रकारों के दल को सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं, अपार्टमेंट में लिफ्ट नहीं थी।
वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का अग्रिम दल, जो तब तक अपार्टमेंट तक पहुँच चुका था, ने दबे स्वर में दरवाजा खटखटाया। जब पोटी ने दरवाजा खोला, तो वे हाँफते और चिंतित लग रहे थे।
उन्होंने पूछा, 'श्रीमान सूर्य?'
'मैं नहीं, वह अंदर है,' पोटी ने उद्दंडता से कहा।
वे उस छोटे कद के आदमी के पास से गुज़रे और रघु और शीला को अंगरक्षकों की तरह घेर लिया। किरोमल मेज़ानाइन लैंडिंग से तीसरी मंज़िल तक सीढ़ियाँ चढ़ी और बड़े ही सख़्त अंदाज़ और मुस्कान के साथ अपार्टमेंट में दाखिल हुई।
'आह! आखिरकार हम मिल ही गए,' उसने पोटी का हाथ ज़ोर से हिलाते हुए कहा। 'मैंने सोचा था कि तुम काफी लंबे और जवान होगे।'
'यह कैसे?' पोटी ने संदेह भरी निगाहों से उससे पूछा।
'मुझे यह बात रघुराम सूर्या को जानने वाले हर व्यक्ति ने बताई।'
और इससे मेरा क्या लेना-देना है?
किरोमल की मुस्कान हैरानी में बदल गई।
'अरे... महोदय, यह श्री सूर्या नहीं हैं...' उनके सचिव ने उनके कान में फुसफुसाते हुए कहा।
'अरे! कोई बात नहीं, कोई बात नहीं...कुछ नहीं खोया, आज मुझे एक और दोस्त मिल गया,' उसने कहा।
'तो तुम यही कह रहे हो,' पोटी ने संदेह भरी आवाज में कहा।
पोटी को नज़रअंदाज़ करते हुए, किरोमल आत्मविश्वास से अपार्टमेंट में दाखिल हुआ। वह बैठक कक्ष में आकर रुका, जहाँ पुलिसकर्मी रघु और उसके साथियों के चारों ओर जमा थे। 'श्रीमान सूर्य, आपसे मिलकर खुशी हुई,' किरोमल ने धीरे से कहा और अपना हाथ बढ़ाया। रघु ने उससे हाथ मिलाया। फिर वह शीला की ओर मुड़ा और बोला, 'लो, तुम यहाँ हो, मैं सोच रहा था कि कहाँ चली गई थी। उन्होंने कहा था कि तुम छुट्टी पर हो। उम्मीद है अब सब ठीक है, तुम पूरी तरह से स्वस्थ हो गई हो।'
'जी सर, मैंने देखा है,' शीला ने शरमाते हुए स्वीकार किया।
अच्छा, अब इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले के बारे में। मैं श्री सूर्या से इस बारे में बात करना चाहता हूँ। क्या मैं आपको रघु कह सकता हूँ?
'मंत्री जी, मुझे वर्तमान स्थिति से कोई आपत्ति नहीं है। आप मुझसे किस बारे में बात करना चाहते हैं?'
'चीजें,' गोविंद ने कहा, उसकी मुस्कान जरा भी कम नहीं हुई थी और न ही उसकी आंखों तक पहुंची थी।
'जैसे क्या?' रघु ने गोविंद की आँखों में टकटकी लगाए पूछा।
'मुझे आपके साथ कुछ पल अकेले बिताने की जरूरत है, श्रीमान सूर्या।'

‘तुम्हारे पास तीन दिन थे!’
गोविंद को ड्रैकुल की स्थिर निगाहों और तीखे जवाबों से तकलीफ होने लगी।
'जी हां, और मैं अभी आपसे बात करना चाहता हूं।'
'मेरी राय में, मंत्री जी, चुनाव मेरा है। अगर मैं इनकार कर दूं तो क्या होगा?'
मैं आपको ऐसा न करने की सलाह देता हूं, आपसे बात करवाने के एक से अधिक तरीके हैं।
‘जैसे क्या? मुझे अंदाज़ा लगाने दो...’
'क्या आप अब भी अनुमान लगा रहे हैं, श्रीमान सूर्या?' गोविंद ने तीखे लहजे में पूछा।
‘एक अलंकारिक भाषा।’
'आप मेरा समय बर्बाद कर रहे हैं, श्रीमान सूर्या, मैं अपने समय की कद्र करता हूँ।'
बिलकुल नहीं, मैं नहीं हूँ। मैंने आपको यहाँ आने के लिए नहीं कहा था और मुझे आपके साथ एक ही कमरे में रहने की ज़रा भी इच्छा नहीं है। इसलिए, मंत्री जी, मैं आपसे सहमत हूँ कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि आप मेरा समय बर्बाद कर रहे हैं।
गोविंद ने रघु को घृणा भरी नजरों से देखा।
उन्होंने कहा, ‘मेरे गुरुजी चाहते हैं कि मैं तुम्हारे साथ कुछ ऐसा करूं जो मैं वास्तव में नहीं करना चाहता, जब तक कि मेरे पास कोई और चारा न हो। हम इस मामले को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा सकते हैं और अपने-अपने रास्ते जा सकते हैं।’
'हाँ? अच्छा, क्या तुम्हारा यह गुरु मरे हुए लोगों को देख सकता है?'
पोटी ने भयावह मुस्कान के साथ जवाब दिया।
गोविंद ने फुफकारते हुए कहा, 'मुझे उसके बारे में तो नहीं पता, लेकिन मैं अभी एक को देख रहा हूँ।'
इस बयान से शीला की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई और उसने अनायास ही रघु का हाथ पकड़ लिया।
‘हाँ, ठीक है, मैं भी वैसा ही हूँ, किरोमल,’ रघु ने कहा। काउंट ड्रैकुला इससे ज़्यादा भयावह नहीं हो सकता था।
गोविंद की निगाहें शीला पर पड़ीं और फिर वापस शीला पर। उनके दिमाग में महत्वपूर्ण जानकारी दर्ज हो गई। उनका व्यवहार गिरगिट की तरह रंग बदलने लगा। वे एक स्नेही पिता की तरह मुस्कुराए।
‘श्री सूर्या, मुझे दिख रहा है कि सब कुछ अच्छा हो रहा है। इसे बिगाड़िए मत, सुखी जीवन जिएं। मैं वादा करता हूं, मैं आपको परेशान नहीं करूंगा। मुझे बस आपका यह आश्वासन चाहिए कि आप मुझे हॉल में प्रवेश करने देंगे। हम विजयवाड़ा में मामले को सुलझाकर यहीं समाप्त कर सकते हैं, हाथ मिला सकते हैं और अपने-अपने रास्ते जा सकते हैं। यह मामला बहुत लंबा खिंच चुका है।’
‘जब समय आएगा, तो किराए का कुत्ता तुम्हें गोली मार देगा, बाबू,’ पोटी ने कहा।
गोविंद ने पूरी ईमानदारी से कहा, 'आपको मेरा वचन है।'
'इसका मतलब है कि कोई भाड़े का हत्यारा आसपास मंडरा रहा है,' पोटी ने दोहराया।

दरवाजे पर अचानक हुई हलचल ने उनका ध्यान भटका दिया। रघु की लॉ फर्म केबी एंड वाई की हैदराबाद शाखा के वरिष्ठ पार्टनर दशरथ, कोर्ट बेलीफ, एक एडवोकेट कमिश्नर और वकीलों के एक दल के साथ दरवाजे पर खड़े थे और उनके हाथ में एक कागज का टुकड़ा था जिसे वे रोकने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति को लहरा रहे थे।

'लगता है मंत्री जी, आपका खेल खत्म हो गया है, मेरा आदमी अदालत के आदेश के साथ आ गया है।'

गोविंद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और चुप रहा।

‘Raghu, let’s go,’ Dasarath said.

रघु और उसके साथी वहां से जाने लगे तभी पुलिस आयुक्त ने उन्हें रोक दिया।

'मुझे खेद है श्रीमान सूर्या, यह आदेश आपके लिए है, आपके साथियों के लिए नहीं।'

गोविंद मुस्कुराया।

रघु ने दशरथ से आदेश छीन लिया और उसे पढ़ने के बाद गुस्से में उसे पटक दिया।

‘लेकिन रघु...’ दशरथ ने कहना शुरू किया।

रघु ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

‘क्या तुम बात करना चाहते हो?’ रघु ने गोविंद से पूछा।

'हां, मैं बात करना चाहता हूं।'

दोनों आदमी शयनकक्ष में दाखिल हुए। गोविंद ने उनके पीछे धीरे से दरवाजा बंद कर दिया। बैठक में शीला सोफे पर बैठ गई, जबकि पोटी उसके आसपास मंडरा रही थी। उसे लग रहा था कि उसने रघु को निराश किया है; यह एक शानदार योजना थी जिसे उसने पूरी कुशलता से अंजाम दिया था, फिर भी उसकी वजह से रघु हार गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए।

इस समय तक दशरथ ने अदालत के मुड़े हुए आदेश को उठा लिया था, उसे सीधा किया था और पूरी तरह से भ्रमित होकर उन सभी को देख रहा था।

‘मुझे रघु के बारे में सिर्फ इतना ही बताया गया था...अगर मैंने ऐसा किया होता...’ उसने कहना शुरू किया।

‘इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। चिंता मत करो, मुझे उस पर पूरा भरोसा है। हम यहाँ से निकल जाएंगे,’ शीला ने उसे आश्वस्त किया।

एक घंटा बीत गया, फिर बेडरूम के दरवाजे दोबारा खुले। गोविंद किरोमल विजयी भाव से बाहर आया। रघु सदमे में बिस्तर पर सिर हाथों में लिए बैठा था।

‘श्रीमती शीला, हमारा समझौता हो गया है, और यह एक बेहद संतोषजनक समझौता है। चिंता मत कीजिए, सब ठीक हो जाएगा,’ किरोमल ने कहा। ‘आप सब जाने के लिए स्वतंत्र हैं। आप गुडेम वापस जाइए, जहाँ श्री सूर्या अपना सामान पैक करके एक महीने के लिए चले जाएँगे। उसके बाद, यदि वे चाहें तो वापस आ सकते हैं। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।’

वह शान से घूमा और पुलिसकर्मियों के अपने दल के साथ अपार्टमेंट से बाहर निकल गया। अचानक, दशरथ और दरबारी अधिकारियों के अलावा तीनों ही अकेले रह गए।
रघु बैठक कक्ष में बाहर आया। 'दशरथ, बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका वापस ले लो। मैं अदालत में पेश होकर समय बर्बाद नहीं कर सकता,' रघु ने आदेश दिया।
लेकिन रघु...
'कृपया मुझे बताएं कि क्या यह संभव है। अदालत के अधिकारी यहां मौजूद हैं। वे रिपोर्ट कर सकते हैं कि मुझे रिहा कर दिया गया है।'
'मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा,' दशरथ ने कहा।
'धन्यवाद,' रघु ने कहा। 'हमें निकलना होगा,' उसने पोटी और शीला से कहा। 'मैं रास्ते में आपको जानकारी दूंगा। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।'
'तुम्हारा क्या मतलब है?' शीला ने पूछा।
कोई जवाब नहीं मिला। रघुराम पहले ही जा चुका था।
वे दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर गए। आदित्य प्रसाद सूर्या की कृपा से एक ऑडी ए 6 उनका इंतज़ार कर रही थी। कार में बैठने से पहले रघु ने उन लोगों से बात की, जो उसके कहने पर सुबह से ही अपार्टमेंट में डेरा डाले हुए थे। उसने बड़ों से धीमी आवाज़ में बात की, उनके प्यार और उसकी पुकार सुनने के लिए धन्यवाद दिया। उसने उनसे एक मदद भी माँगी।
कार में उसने शीला और पोटी को सारी बात बताई। 'गोविंद किरोमल को इतना यकीन था कि उसने मुझे अपने वश में कर लिया है कि उसने मेरी हर बात पर विश्वास कर लिया। वह मुझसे बार-बार स्मारक हॉल में जाने के लिए कह रहा था और मैं एक के बाद एक बहाने बनाता रहा। बेशक, मुझे एहसास था कि जब तक मैं उसकी बात नहीं मान लेता, तब तक तुम दोनों को उस अपार्टमेंट से बाहर निकालने का कोई रास्ता नहीं था।'
'मुझे खेद है,' शीला ने कहा।
रघु ने सिर हिलाकर उसे बताया कि उसे किसी भी बात के लिए माफी मांगने की जरूरत नहीं है। 'किरोमल ने कहा कि उसके पास मुझे अपनी मांगें मनवाने के एक से अधिक तरीके हैं। मेरे पास भी उसकी बात न मानने के एक से अधिक तरीके हैं।'
'तुम क्या सोच रहे हो?' पोटी ने पूछा।
'उसने मुझे बहुत ही चालाकी से धमकी दी, उसने कहा कि वह तुम दोनों को मार डालेगा, मेरी लॉ फर्म को खत्म कर देगा, मेरी सभी पूर्व प्रेमिकाओं को मार डालेगा, जो चाहे। मैंने उससे स्मारक हॉल में दफन खजानों, अपने पूर्वजों की हड्डियों, ग्रामीणों की भावनाओं, सूर्या की विरासत और यहां तक कि अपनी काल्पनिक पेट की समस्याओं के बारे में भी बात की, जब तक कि आखिरकार मेरे पास कोई बहाना नहीं बचा और मैंने उसकी शर्तें मान लीं।'

‘तुमने उसकी शर्तें क्यों मान लीं? क्या तुम्हें पता है कि अगर वह हॉल में आ गया तो क्या होगा? क्या तुम्हें लगता है कि वह तुम्हें यूं ही जाने देगा?’
रघु ने शीला का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'कल रात तुम बहुत शानदार थीं। अब हमें एहसास हो गया है कि अग्निपुत्र स्वयं ब्रह्मांड की रचना की प्रक्रिया है। हम जानते हैं कि हमें उस प्रक्रिया को दोहराना होगा। हम लगभग जानते हैं कि अक्षर का क्या कार्य है। किरोमल के पीछे पड़े होने और अपार्टमेंट में कैद होने के बावजूद, तुम्हें क्या लगता है कि हम इसे खोजने में कितनी दूर तक जा सकते थे? दूसरी बात, यह समझौता करने का सही समय है। हमें जनता का भारी समर्थन प्राप्त है, उच्च न्यायालय का आदेश है और एक न्यायालय अधिकारी हमारी कैद का गवाह बनने के लिए मौजूद है। अगर मैं तुम दोनों को पीछे छोड़ देता, तो किरोमल तुम्हारा इस्तेमाल करके मुझसे अपनी मनचाही बातें मनवा लेता। मेरे पास अभी जो ताकत है, वह तब नहीं होती। तीसरी बात, मेरे पास किरोमल को रोकने की योजना है, लेकिन हमें जल्दी काम करना होगा।'
पोटी ने कहा, 'हम क्या करने वाले हैं?'
रघु ने कहा, 'तुम विजयवाड़ा जाओ, जबकि मैं और शीला राजस्थान चलते हैं।'
मुझे विजयवाड़ा में क्या करना चाहिए?
रघु ने उसे बताया।
‘हम राजस्थान क्यों जा रहे हैं?’ शीला ने पूछा।
'शब्दांश के बारे में पता लगाने के दो तरीके हैं। एक तरीका है विस्तृत शोध करना। इसमें एक दिन, कई सप्ताह या यहां तक कि महीने भी लग सकते हैं और मुझे लगता है कि हमारे पास इतना समय नहीं है।'
'आपका क्या मतलब है?'
रघु ने कहा, 'मैं किरोमल के साथ एक घंटे से अधिक समय तक था। वह व्यक्ति बहुत जल्दी में था। जितना मैं समझ पाया, उसे अपना इरादा कुछ ही दिनों में पूरा करना है।'
'तो, अगर शोध में समय लगेगा और हमारे पास वह समय नहीं है, तो आप यह कैसे पता लगा सकते हैं कि वह शब्द क्या है?' शीला ने पूछा।
‘एक तेज़ रास्ता है। मैंने इसे तब पता लगाया जब किरोमल उस कमरे में मेरी जान और आजादी को खतरा पहुँचाने में व्यस्त था। अगर रामाया शास्त्री को उस अक्षर का नाम पता होता, तो वह गोविंद के चाचा करण किरोमल को बता देते।’
'आप यह कैसे जानते हैं?'
‘करण किरोमल के कहने पर रामाया ने जानबूझकर मेरे पिता को गलत अक्षर बता दिया। इसका इनाम उन्हें राज्यपाल पद के रूप में मिला। संभावना का नियम कहता है कि उन्हें सही अक्षर पता था और उन्होंने उसे करण किरोमल के साथ साझा किया। हालांकि, यह सिर्फ मेरा अनुमान है। अगर मेरा अनुमान सही है,

तो करण किरोमल को सही अक्षर पता होगा और शायद मैं उनसे वह अक्षर निकलवा सकूँ। अगर हम तेज़ी से काम करें, तो हम मंत्री को रोकने के लिए समय रहते सही अक्षर लेकर गुडेम वापस पहुँच सकते हैं।'

'अगर आप गलत हुए तो क्या होगा?'

'ठीक है, हम किरोमल के गुलाम बन जाएंगे।'

'और आप करण किरोमल से वह अक्षर कैसे प्राप्त करने का प्रस्ताव रखते हैं?' शीला ने पूछा।

'मेरे पास एक विस्तृत योजना है। मुझे दफ्तर में फोन करना होगा। हमें जल्द से जल्द गहन शोध करवाना होगा। हर कवच में आमतौर पर कोई न कोई कमजोरी होती है। गोविंद किरोमल ने मेरी उस कमजोरी का फायदा उठा लिया है। अब देखते हैं कि उसकी कमजोरी क्या है।'

अध्याय 38

पोटी हैदराबाद से विजयवाड़ा के लिए हवाई जहाज से रवाना हुए। वहां से वे एलुरु गए और पंचायत प्रमुख चेलापति राजू से मुलाकात की, जहां उन्होंने विजयवाड़ा की अदालत के आदेश की एक प्रति उन्हें सौंपी। रात के लगभग आठ बज रहे थे। पंचायत प्रमुख अपनी एनफील्ड मोटरसाइकिल पर जावाराम के लिए रवाना हुए, जबकि पोटी तेजी से गुडेम की ओर बढ़े। उनका इरादा गोविंद किरोमल का शानदार स्वागत करना था।

सुबह तीन बजे तक गुडेम रोशनी से जगमगा रहा था। वह तेजी से लोगों से भर रहा था। वे स्मारक हॉल में मौजूद अज्ञात खतरे के करीब होने से भयभीत थे, फिर भी वे वहां मौजूद थे। हर ट्रैक्टर, ट्रक और कार का इंजन चालू था और हेडलाइट्स जल रही थीं, जो अंधेरे में रोशनी बिखेर रही थीं। वलानेनी एक वाहन चला रहा था।

XXX

आदित्य प्रसाद का घर बहुत बड़ा था। यह एक पहाड़ी की तलहटी से शुरू होकर चोटी तक फैला हुआ था। पूरी पहाड़ी। इसमें एक दर्जन से ज़्यादा लिफ्ट, कुछ एस्केलेटर और वॉकेलेटर भी थे। पूरा घर संगमरमर और सोने का बना था। यहाँ तक कि पानी के नल भी। घर में चार अमीर वयस्क और पाँच अमीर बच्चे, साथ ही घरेलू नौकरों की एक पूरी फौज रहती थी। दो मेहमान भी थे। रघुराम और शीला। रघु अपने फोन पर व्यस्त था।

‘केबी एंड वाई एसोसिएट्स, मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?’

‘आप किरण या जोहान को लाइन पर लगा सकते हैं,’ रघु ने कहा। एक पल के लिए लाइन पर सन्नाटा छा गया। जब वापस कॉल आया, तो आवाज़ दबी हुई रहस्यमयी फुसफुसाहट थी।

‘श्री सूर्या, क्या आप ही हैं?’

'हां जूलिया, मैं ही हूं। कैसी हो?'

‘हे भगवान! आप कैसे हैं, महोदय? आप खबरों में छाए हुए हैं; मैं अभी स्क्रीन पर आपकी तस्वीर देख रहा हूँ...क्या आप ठीक हैं?’

रघु खिलखिलाकर हँसा, 'हाँ, मैं ठीक हूँ... धन्यवाद।'

‘एक पल रुकिए सर, मैं अभी आपको कनेक्ट करता हूँ... आपकी आवाज़ सुनकर अच्छा लगा सर। आशा है जल्द ही आपसे मुलाकात होगी।’

‘मेरी भी यही राय है, जूलिया।’

किरण ने अपने केबिन में फोन उठाया। कुछ पल हंसी-मजाक के बाद रघु ने अपने सबसे खास सहायक को बताया कि उसे क्या चाहिए। किरण ने वादा किया कि वह काम पर लग जाएगा और जितनी जल्दी हो सके उसे जवाब देगा। फोन पर पूरे दो घंटे बात हुई।

उन्होंने शाम आदित्य और उसकी पत्नी के साथ बिताई। कुछ ड्रिंक्स और घर के बने खाने के साथ जश्न का समापन हुआ। सुबह एक बजे रघु को किरण का मैसेज आया कि वह अपना मेल चेक करे। उसने अपने ईमेल अकाउंट में लॉग इन किया और अपनी टीम द्वारा उसके लिए इकट्ठा की गई जानकारी डाउनलोड की। उसने बाकी की रात उसे पढ़ने में बिताई। शीला सो रही थी।

सुबह पांच बजे तक, जब गुडेम में निगरानी पूरे जोरों पर थी, रघु ने जयपुर के लिए अपनी फ्लाइट टिकट ऑनलाइन बुक कर ली थी। एयरपोर्ट जाने से पहले उन्होंने एक और फोन किया। सुबह सात बजे तक शीला और रघु विमान में सवार थे। उड़ान के दौरान शीला रघु से कुछ भी नहीं पूछ पाईं क्योंकि वह गहरी नींद में सो रहे थे। शीला ने अपना हाथ रघु के कंधे पर रखा और अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया, उस पल से वह बेहद खुश थीं।

जयपुर का आमेर किला दिसंबर की धुंध में किसी काल्पनिक दुनिया के महल की तरह लग रहा था। इसकी प्राचीरें, जिन्हें चीन की छोटी दीवार कहा जाता है, जयपुर के पुराने शहर आमेर की रक्षा के लिए कई पहाड़ियों पर ऊपर-नीचे फैली हुई थीं। रघु और शीला को ले जा रही कार किले के पास से तेज़ी से गुज़रते हुए नए शहर में प्रवेश कर गई। उनके होटल के रास्ते में पड़ने वाला झील महल, मानो किसी अकेली राजकुमारी की तरह अपने बिछड़े राजकुमार का इंतज़ार कर रहा हो। थोड़ी ही देर में टैक्सी ताज जयपुर होटल पहुँच गई। दंपति ने चेक-इन किया। कुछ देर बाद रघु ने शीला को होटल में ही रुकने का निर्देश देकर प्रस्थान किया, ताकि वह उससे संपर्क होने तक वहीं रुकी रहे।

लगभग दो घंटे बाद शीला के मोबाइल की घंटी बजी। उसने स्क्रीन पर देखा, जिस पर 'सनशाइन' लिखा था। आखिर सूर्य का अर्थ सूर्य ही होता है और रामायण कथा के अयोध्या के पौराणिक राजा रघुराम सूर्यवंशी थे। वह मुस्कुराई, यह सोचकर कि रघुराम इस पर क्या कहेंगे। उसने फोन उठाया।

‘होटल से बाहर निकलो और सड़क पार करो। वहाँ एक ऑटो रिक्शा है, उसके लाइसेंस नंबर के आखिरी चार अंक 8736 हैं। उसी ओर जाओ। जल्दी करो, साइ-फाई,’ रघु ने उसे निर्देश दिया।

पांच मिनट में शीला ने अपने बाल संवारे, अपने लाल और सफेद सलवार सूट को जितना हो सके ठीक किया और धीरे-धीरे सड़क पर कदम रखा। वह ऑटो रिक्शा तक पहुँचने के लिए सड़क पार कर गई।

उसने गाड़ी के अंदर झाँका और तुरंत स्तब्ध होकर पीछे हट गई। गाड़ी के अंदर भगवा वस्त्र पहने एक साधु बैठा था। उसने दोबारा नंबर देखा। नंबर 8736 था। वह रघु को सड़क पर ढूँढ रही थी कि तभी किसी ने लोहे जैसी मज़बूत पकड़ से उसे जकड़ लिया। बेहद लंबा साधु उसके पास खड़ा था। वह डर के मारे लगभग बेहोश हो गई।

‘ऑटोरिक्शा में बैठ जाओ, साइ-फाई,’ साधु ने फुसफुसाते हुए कहा। शीला ने पहचानते हुए हल्की सी चीख मारी। रघु के चेहरे पर राख लगी हुई थी, उसने असली जैसी दाढ़ी-मूंछें बना रखी थीं और नाक की नोक से लेकर माथे तक गहरा लाल तिलक लगाया हुआ था। उसके कंधे तक गंदे बालों की लटें एक मैली पगड़ी के नीचे लटक रही थीं।

‘अंदर आ जाओ, हम समय बर्बाद नहीं कर सकते।’

‘यह क्या है? क्या हो रहा है?’ शीला ने अचानक पूछा।

‘We’re going to be introduced to Kiran Kiromal as Sadhu Lambhodarnathji and his assistant, Sadhvi Kushlamba.’

'कौन?'

‘मैं रास्ते में समझा दूंगा।’ दस मिनट बाद वे सिटी म्यूजियम के बाहर थे। उन्होंने ऑटो रिक्शा छोड़कर एक मैरून मर्सिडीज में सवार हो गए।

'वाह, बढ़िया गाड़ी है, किसकी है?'

रघु मुस्कुराया और बोला, 'यह मेरी है, मैं इसे गुड़गांव से यहाँ तक गाड़ी चलाकर लाया था।'

'मुझे इसकी आदत पड़ सकती है,' शीला ने एक शरारती मुस्कान के साथ कहा।

'हां, मुझे तुम्हारी आदत हो चुकी है।'

'हां, बेहतर होगा कि आप मेरी आदत डाल लें, मैं कुछ समय तक यहीं रहने वाली हूं,' उसने सख्ती से कहा।

‘अंततः, हास्यबोध के कुछ धुंधले निशान तो दिखाई दिए।’

'चुप रहो, हर बार आखिरी बात कहने का तुम्हें अधिकार नहीं है।'

‘इस कागज को ध्यान से पढ़ो, अगले डेढ़ घंटे तक यही तुम्हारा काम है,’ रघु ने उसे एक प्लास्टिक का पैकेट पकड़ाते हुए कहा। उसने पैकेट खोला तो उसमें एक केसरिया साड़ी, ब्लाउज, लकड़ी की चप्पलें और एक कागज का टुकड़ा मिला।

शीला ने उस सूची को देखा जिसमें साध्वी कुशलंबा के रूप में उनके कर्तव्यों और उनके गुरु लंबोधरनाथजी के प्रति उनके कर्तव्यों का उल्लेख था।

‘तुम्हारे ये नाम कहाँ से आए? ऐसा नाम क्यों नहीं है जिसे मैं बोल सकूँ?’ वह गुस्से से बोली।

‘इसमें मज़ा क्या है? हम भी बस एक और संत और उनके सहायक बनकर रह जाएंगे।’

‘अरे नहीं, मैं एक साध्वी हूँ, मैं स्वयं एक संत हूँ। मैं गुरु क्यों नहीं बन सकती और आप सहायक क्यों नहीं बन सकते?’ उसने पूछा।

‘और फिर लोग सोचेंगे कि साध्वी कितनी भाग्यशाली है कि उसे इतना आकर्षक सहायक मिला है। लोग तुम्हें शक की नजरों से देखेंगे,’ रघु ने समझाया।

‘इसका मतलब यह है कि आपको नहीं लगता कि आपकी सहायक एक खूबसूरत लड़की है?’

‘मैं अब साधु हूं, मैं उन बातों पर नहीं सोचता,’ रघु ने तर्कसंगत स्वर में समझाया।

'यह पुरुषों की दुनिया है,' शीला ने अपने कपड़े बदलते हुए सोच-विचार करते हुए कहा।
'वाह, क्या बात है!' रघुराम ने नजारे की तारीफ करते हुए सहमति जताई।
'पीछे मुड़ो, मुझे घूरना बंद करो वरना मैं तुम्हारे नापाक मंसूबों का पर्दाफाश कर दूंगी, साधु,' शीला ने रूठते हुए उसे धमकी दी।
'क्या मैं अपनी सहायक के साथ यौन संबंध बना रहा हूँ?'
'आजकल इसमें बुराई क्या है? क्या तुमने उस बाबा के बारे में नहीं सुना जिसे यौन अपराधों के आरोप में गिरफ्तार किया गया था?' उसने पूछा। कुछ ही मिनटों में वह तैयार हो गई और रघु को मानना पड़ा कि वह बेहद खूबसूरत साध्वी लग रही थी।
'क्या हम थोड़ी देर के लिए विजी, विजी, वू, वू कर सकते हैं?' उसने जोश से पूछा।
'तुम जो भी प्यार-मोहब्बत करोगे, वो सिर्फ करण किरोमल के साथ करोगे, दोस्त। इस बात को समझ लो,' शीला ने निर्णायक लहजे में चेतावनी दी।
रघु ने मुंह बनाया और सफर के लिए बैठ गया। ड्राइवर गाड़ी में बैठ गया और मर्सिडीज चल पड़ी।
'हम कहाँ जा रहे हैं?' शीला ने पूछा।
किरोमल हवेली को। लगता है कि करण किरोमल की तबीयत कुछ ठीक नहीं है। स्वर्ग की राह आसान करने के लिए वे जब भी संभव हो साधुओं से मिलना पसंद करते हैं। जयपुर में मेरे एक प्रभावशाली ग्राहक ने, जो मेरा एहसानमंद है, हमें हिमालय के एक शक्तिशाली साधु और साध्वी के रूप में मिलवाया है। किरोमल इस प्रस्ताव को ठुकरा नहीं सके।
वह मुस्कुराई। उसने कहा, 'जब उसे पता चलेगा कि यह सब परमाणुओं से बना है, तब देखना क्या होगा।'
रघु जोर से हँस पड़ा। 'हास्यबोध का इतना तेजी से विकास होना, कितनी अच्छी किस्मत की बात है!'
उसे बांह पर एक घूंसा लगा।
कार एक संकरी, बजरी वाली सड़क पर मुड़ी। उन्होंने काली खिड़कियाँ नीचे कर लीं। सड़क सीधे खुले फाटकों के एक समूह और एक सुव्यवस्थित आंगन की ओर जाती थी, जिसके ठीक बीच में एक फव्वारा था। फव्वारे के पीछे एक हवेली दिखाई दे रही थी। यह रघु के महल से काफी छोटी थी, हालांकि उसी युग की बनी हुई थी। ड्राइवर ने कार को बजरी पर रोकने से पहले फव्वारे के चारों ओर घुमाया।
दंपति विनम्रतापूर्वक उतरे और धीरे-धीरे सीमेंट के रास्ते पर चलने लगे। राजस्थानी पारंपरिक पोशाक पहने एक सामान्य कद-काठी के व्यक्ति ने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया और उन्हें हवेली के मुख्य सभा कक्ष तक ले गए। हॉल विशाल और हवादार था। इसे चमकीले रंगों से रंगा गया था। प्रत्येक दीवार के साथ लगे भार वहन करने वाले स्तंभों की पंक्ति पर पारंपरिक शैली में हाथियों द्वारा लोगों को ले जाने और रंग-बिरंगे वस्त्र पहने नृत्य करती लड़कियों के जटिल चित्र बने हुए थे।
हॉल में दोनों ओर कुछ अन्य साधु हुक्का पीते हुए बैठे थे। जब लंबे साधु और उनकी सुंदर साथी हॉल में दाखिल हुए तो वे उन्हें हैरानी से देखने लगे। हॉल के दूसरे छोर पर एक बूढ़ा व्यक्ति, जिसका चेहरा उदास

था, दीवान पर बैठा था। उसके सारे बाल सफेद थे और लंबी सफेद मूंछें थीं। उसने अपनी जगह से साधु लंबोधरनाथजी महाराज को प्रणाम किया।

रघु ने अधिकारपूर्वक कहा, "मेरे पुत्र... मेरे शिष्य आमतौर पर मेरा अभिवादन करने के लिए खड़े होते हैं..." किरोमल सीनियर को उठने के लिए कहा गया।

'...लेकिन मैं इसे नजरअंदाज कर देता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि तीन महीने पहले शनि आपके अनुकूल नहीं था और न ही राहु और केतु। आपकी कुंडली में आगे आने वाला समय कठिन लग रहा है। अग्निपरीक्षाओं का समय। आपके स्वास्थ्य का घर कमजोर है, इसलिए आपके अंग कमजोरी और थकान से ग्रस्त हो गए हैं। यद्यपि आप अपने बाएं हाथ की छोटी उंगली में चांदी से बंधी गोमेदक अंगूठी पहनते हैं, राहु की अंगूठी वास्तव में आपके दाहिने हाथ की तीसरी उंगली में पहननी चाहिए, फिर भी, यह संकट की इस घड़ी में आपको सहारा देने के लिए पर्याप्त नहीं है।'

किरोमल भविष्यवाणी सुनकर स्तब्ध रह गया। फिर भी वह लड़खड़ाते और कमजोर होकर उठा। उसने साधु और उसके सहायक का स्वागत किया और उन्हें अपने दीवान के पास रखे मुलायम सूती गद्दे की ओर ले गया।

शीला ने अधिकारपूर्वक आगे कदम बढ़ाया।

'कीलों का बिस्तर हटवा दो। भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त कोई भी वस्तु मेरे गुरुजी को कष्ट देती है। वे उसी हिरण की खाल पर बैठना पसंद करेंगे जिसका उपयोग वे पिछले सौ वर्षों से हिमालय में करते आ रहे हैं।'

अन्य साधुओं ने एक-दूसरे की ओर देखा। सौ वर्ष का साधु जो चालीस वर्ष से अधिक का न दिखने वाला लग रहा था, एक दुर्लभ घटना थी... या फिर वह नकली था।

'सौ साल? स्वामीजी, ऐसा कैसे हो सकता है कि हममें से किसी ने भी आपके बारे में नहीं सुना?' साधुओं में से एक ने पूछा।

रघु ने उस आदमी को अनसुना कर दिया। उसने किरोमल से कहा, "एक-दो दिन में एक बहुत महत्वपूर्ण घटना घटित होने वाली है। पीड़ा का देवता जागृत होगा। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ! मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ! पाताल काल के कारण तुम्हारे सगे-संबंधियों के लिए मुझे एक गंभीर खतरा दिखाई दे रहा है," वह दहाड़ा।

शीला ने अपने हाथों को कसकर पकड़ लिया और ऐसा लग रहा था जैसे वह रोने ही वाली हो। किरोमल साधु को स्तब्ध होकर देखती रह गई।

'महाराज,' उसने विलाप करते हुए कहा, वह अपने दीवान से बड़ी मुश्किल से उठा, 'मैं क्या कर सकता हूँ?'

रघु जोर से हंस पड़ा।

‘तुम? तुम कुछ नहीं कर सकते, तुम कुछ भी नहीं हो। तुम कौन हो जो स्वयं ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध खड़े हो सकते हो? मूर्ख बच्चे, कोई कुछ नहीं कर सकता। मैं इस शापितों के घर में एक पल भी नहीं रुकूँगा, सिवाय इसके कि मैं तुम्हें वह चेतावनी दे दूँ जो मुझे तुम्हें देनी थी।’

किरोमल का चेहरा भय से विकृत हो गया। रघुराम हिरण की खाल से बने अपने आसन से एक दैत्य की तरह उठा और दरवाजे की ओर चल पड़ा।

‘महाराज,’ किरोमल ने गुस्से से चीखते हुए कहा, ‘कृपया, मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे बताइए कि मैं क्या कर सकती हूँ। वह मेरे बेटे जैसा है, मेरा इकलौता बेटा, वही मेरा सब कुछ है। मैंने ही उसे इस रास्ते पर डाला है और अब मुझे ही उसकी मदद करनी होगी।’

रघु जोर से हँस पड़ा। ‘हे मूर्ख, सर्वशक्तिमान तुम्हारे इरादों को नहीं पहचानता, न ही तुम्हें पहचानता है। वह केवल अक्षर को पहचानता है। अपनी मूर्खता में तुमने उसका असली अर्थ निगल लिया है।’

करण किरोमल व्याकुल होकर जमीन पर गिर पड़ा। वह फर्श पर जोर-जोर से रो रहा था, तभी अचानक उसके नौकर प्रकट हुए और उसे उठाकर खड़ा कर दिया।

‘मुझे छोड़ दो, निकल जाओ तुम सूअरों, मुझे संत से बात करनी है,’ करण ने दांत भींचते हुए फुफकारा। वे जल्दी से पीछे हट गए।

‘हे दिव्य स्वामीजी, यह मेरी गलती है, मैं पूरी तरह सहमत हूँ। इसे सुधारने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?’

रघु एकदम से घूम गया। उसका राख जैसा चेहरा भयानक लग रहा था। उसकी आँखें जलते हुए कोयले की तरह लाल थीं। उसने कोने में सिसकते हुए बेचारे बूढ़े आदमी को घूर कर देखा।

‘मृत्यु के इस हॉल को उन धोखेबाजों से मुक्त किया जाए जो इसे अपवित्र करते हैं,’ उसने गरजते हुए कहा।

एक साधु क्रोधित होकर उठा और बोला, 'अब यहाँ देखो...'

‘चुप रहो तुम झूठे कमीनों। तुम यहाँ बैठकर मेरा खाना खाते हो और मेरी गांजा पीते हो, फिर भी तुमने वो बात नहीं बताई जो इस महान आत्मा के पास है। दफ़ा हो जाओ,’ किरोमल गुस्से से बोला।

साधु को अन्य भिक्षुओं के साथ बिना किसी औपचारिकता के हॉल से बाहर निकाल दिया गया।

रघु ने कहा, 'अपने सेवकों को तुम्हें छोड़कर जाने दो, क्योंकि अब तुम मेरे आशीर्वाद के अधीन हो, यदि तुम स्वयं को मेरी शक्ति के अधीन रखना चाहते हो।'

बूढ़े आदमी की एक नजर पड़ते ही नौकर गायब हो गए, हालांकि रघु को पूरा यकीन था कि वे हॉल में लगे कई पर्दों की तहों के पीछे छिपे होंगे।

वह लंबे-लंबे, दृढ़ कदमों से बूढ़े व्यक्ति के पास गया, बड़े किरोमल का चेहरा धीरे से ऊपर उठाया और उसे अपनी पूरी ताकत से ड्रैकुलन जैसी खौफनाक निगाहों से देखा। किरोमल उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटाने लगा।

‘मेरे बच्चे, तुम्हें अक्षर का प्रयोग करना होगा,’ उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा।

‘स्वामीजी, इसका इस्तेमाल कैसे करें?’

‘वह सबसे भयभीत देवता की गुफा में प्रवेश करने का साहस करता है। वह देवता अनुसृष्टि हैं, जो कभी तृप्त नहीं होते। उन्हें नियंत्रित करने वाला कोई नहीं है सिवाय...’

‘...वह ताबीज जिसे धिगंबर महाराज ने गोविंद की बांह पर बांधा था,’ किरोमल ने अपनी बात समाप्त की।

शीला लगभग खिलखिलाकर हंस पड़ी, वाकई अनुसृष्टि! हिंदी में 'अनु' का अर्थ परमाणु होता है और 'सृष्टि' का अर्थ सृष्टि या ब्रह्मांड होता है।

‘यह सही है...लेकिन वह शक्तिशाली उपकरण भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि अक्षर का उच्चारण करना आवश्यक है!’ रघु ने घोषणा की।

‘पुराने समय के पुजारी ने तुम्हें पवित्र शब्द का ज्ञान दिया था। मैं जानता हूँ। मैं सब कुछ देखता हूँ। अब वह मर चुका है। विश्वासघात के कारण मारा गया। वह अपने भाग्य का पात्र था। फिर भी, उसने तुम्हें पवित्र शब्द का ज्ञान देकर तुम्हारा भला किया।’

लेकिन महाराज, यह अक्षर पीड़ा के देवता का नाश कर देगा!

रघु ने गुस्से से सिर हिलाया। 'केवल सूर्य द्वारा ही इसका प्रयोग किया जा सकता है। तुम सूर्य नहीं हो; तुम कभी सूर्य बनने की आशा भी नहीं कर सकते। यदि तुम इसका उच्चारण करोगे, तो इस अक्षर का विपरीत प्रभाव पड़ेगा। यह पीड़ा के देवता को और भी शक्तिशाली बना देगा।'

किरोमल चकित रह गया। वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

रघु ने उसे आदेश दिया, ‘जाप करना शुरू करो। हर साठ मिनट में सौ बार। जोर से शुरू करो और सौवें जाप तक गुनगुनाते हुए कुछ क्षणों के लिए विश्राम करो, अपने सूखे गले को गंगाजल की तीन बूंदों से गीला करो और फिर से शुरू करो। ऐसा तब तक करते रहो जब तक तुम्हारा रक्त सूर्यों के कक्ष से सुरक्षित बाहर न निकल जाए।’

'महाराज, आप ही मेरे लिए इसकी शुरुआत करें,' किरोमल ने कांपती हुई भयभीत आवाज में कहा।

‘अपराध! घोर अपराध! तुम उस पर हुक्म चलाने की हिम्मत कैसे करते हो जो केवल स्वयं शीला के आदेशों का पालन करती है, विज्ञान की देवी, ब्रह्मांडों की खोजी, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?’

शीला इतनी सदमे में थी कि वह कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाई। उसके चेहरे पर दिख रही भयभीत अभिव्यक्ति ने रघु के गुस्से को और भी बढ़ा दिया।

‘Kshamapan, Swamiji,’ Kiromal whimpered his apologies.

रघु ने दयालुता से मुस्कुराते हुए, एक उदार हृदय वाले भिक्षु ने भोले-भाले भक्त की गलती को क्षमा करने की इच्छा जताई। रघु ने गरजते हुए कहा, 'कृपापूर्वक अपनी तपस्या प्रारंभ कीजिए, अपने प्रिय भतीजे की रक्षा के लिए, जिसे आप पुत्र के समान प्रेम करने का दावा करते हैं। मैं तुरंत हिमालय की शांति में प्रस्थान करूंगा ताकि इस स्थान के दुख और पीड़ा को अपनी आत्मा से दूर कर सकूं। यदि आप मेरे जाने से पहले एक बार भी वह अक्षर बोल दें, तो मैं उसकी गूंज ईश्वर तक पहुंचा दूंगा।'

किरोमल ने ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया। अपनी पूरी ताकत से उसने वो एक शब्द बोला जिससे उसे बोलने की शक्ति मिल गई। रघु को वो मिल गया जो वो चाहता था। उस शब्द ने उसे झकझोर दिया। अब उसे समझ आया कि रामाया शास्त्री ने अपनी अंतिम साँस में क्या कहा था। वो शीला को साथ लेकर लगभग दौड़ पड़ा।

जैसे ही वह हॉल से बाहर निकल रहा था, अंदर से कहीं से फोन की तीखी घंटी की आवाज़ गूंजी। नौकरों के इमारत की ओर दौड़ने से पहले ही रघु और शीला मर्सिडीज में बैठ चुके थे। जब घंटी बजने लगी, तब तक उसकी कार परिसर के बाहर पहुँच चुकी थी। रघुराम को नहीं पता था कि यह मातम की घंटी है या किरोमल परिवार में कई पीढ़ियों से यह घंटी केवल परिवार के मुखिया की मृत्यु पर ही बजती थी। उसे यह भी नहीं पता था कि करण किरोमल का अभी-अभी निधन हुआ है।

करण ने अभी-अभी गोविंद से बात की थी और उसके भतीजे ने उसे बताया था कि मानवों की एक दीवार उसे हॉल में प्रवेश करने से रोक रही है और यह रघुराम सूर्या का काम है। करण किरोमल एक चतुर व्यक्ति था, भले ही वह असाधारण रूप से बुद्धिमान न हो। उसे समझ आ गया कि साधु को उनके गुप्त प्रोजेक्ट के बारे में इतनी जानकारी कैसे थी और साधु की सुंदर सहायिका कौन थी। उसे एहसास हुआ कि उसने अनजाने में ही वह रहस्य उजागर कर दिया था जिसे उसने वर्षों से छिपा रखा था।

वह अपनी ही मूर्खता में घुट गया। अपनी दुर्बल अवस्था में, करण के लिए यह सब सहन करना असहनीय था। वह जमीन पर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

रघु के लिए सौभाग्य की बात यह थी कि करण के पास मरने से पहले अपने भतीजे को घटी हुई बातें बताने का समय नहीं था। एक नौकर ने फोन उठाया और गोविंद को सूचना दी कि उसके चाचा का निधन हो गया है। गोविंद ने गुडेम को गले लगाया। वह अपने चाचा को दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता था। यहाँ तक कि अपने बेटे से भी ज़्यादा। उसे जयपुर लौटना था। गुडेम को करण किरोमल के अंतिम संस्कार पूरे होने तक इंतज़ार करना पड़ा।

खंड-डी

AGNIPUTR

अध्याय 39

जयपुर से हैदराबाद जाने वाली फ्लाइट में देरी हो गई। इसका कारण खराब मौसम बताया गया। फ्लाइट निर्धारित समय से तीन घंटे देरी से रवाना हुई। एयरपोर्ट के वीआईपी लाउंज में मौजूद अनुभवी वेटर ने देखा कि दंपति एक-दूसरे के बेहद करीब बैठे थे। वे आपस में बिल्कुल बात नहीं कर रहे थे। बल्कि, महिला पुरुष से सटकर बैठी थी। पुरुष ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा हुआ था। वे एयरपोर्ट की पहली मंजिल पर स्थित रेस्टोरेंट के एक अंधेरे कोने में थे। पुरुष ने स्कॉच व्हिस्की और सोडा का ऑर्डर दिया था और महिला ने एक पाइंट बीयर का। वे बीच-बीच में अपने ड्रिंक्स की चुस्कियां ले रहे थे और मुफ्त में दिए गए आलू के वेफर्स को कुतर रहे थे। अंधेरे कोने में वे लगभग अदृश्य से लग रहे थे।

तीन घंटे की देरी के बाद हैदराबाद जाने वाली फ्लाइट की घोषणा हुई। पुरुष और महिला अपनी सीट से उठे, मेज पर पैसे रखे और चले गए। उनके पास कोई सामान नहीं था, जो वेटर को भी अजीब लगा। आमतौर पर कोई जोड़ा बिना सामान के यात्रा नहीं करता। उसने मन ही मन सोचा। एयरपोर्ट से हर तरह के अजीब लोग आते-जाते रहते हैं।

हैदराबाद जाते समय विमान लगभग खाली था, सिवाय उन कुछ यात्रियों के जिन्होंने अपनी उड़ान रद्द नहीं की थी।

‘रघु, हमें शब्दांश के बारे में बात करने की जरूरत है,’ शीला ने कहा।

'साइंस फिक्शन के बारे में बात करने के लिए क्या है? यह तो शब्द का ही खेल है, हमें अब इसका इस्तेमाल करने का तरीका ढूंढना होगा।'

‘आखिर आप इसका इस्तेमाल किसलिए करने वाले हैं? क्या हम इसके परिणामों को पूरी तरह समझे बिना जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठा रहे हैं? क्या पता यह सूत्रम से भी बदतर साबित हो?’

‘खैर, मैं हैदराबाद में इस बारे में बात करना चाहता था।’ रघु ने आह भरी, ‘पता नहीं इसका इस्तेमाल किस काम में करना पड़ेगा। हमें यह मिल गया है और अब हमें यह तय करना है कि आगे क्या करना है, इसलिए मूलतः हम दोनों एक ही बात पर सहमत हैं।’

‘भगवान ही जाने!’ शीला ने हैरानी से कहा।

रघु धीरे से हँसा, 'यह बात तो वह कह रहा है जिसने कहा था कि सृष्टि में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है।'

'जी हां, यह सृजन नहीं है, यह बिल्कुल कुछ और है,' उसने तर्क दिया।

'यह है कि।'

सीट बेल्ट का संकेत बंद हो गया और केबिन क्रू ने घोषणा की कि थोड़ी देर में खाना परोसा जाएगा।

‘मुझे शौचालय जाना है,’ शीला ने कहा।

कुछ मिनट बाद जब वह अपनी सीट पर लौटी, तो उसने देखा कि रघु एक लंबे बालों वाले, गहरे रंग के ओवरकोट पहने हुए व्यक्ति से गहरी बातचीत कर रहा था। वह व्यक्ति उसे जाना-पहचाना लगा। वह व्यक्ति

उसकी सीट पर बैठा था। रघु फिर उठा और दूसरा व्यक्ति भी। वह खाली खिड़की वाली सीट पर चला गया और शीला उन दोनों पुरुषों के बीच वाली सीट पर बैठ गई।

‘शीला, मुझे नहीं लगता कि आप दोनों की औपचारिक रूप से मुलाकात हुई है। मैं चाहती हूं कि आप श्री पी. ईश्वर से मिलें।’

शीला आश्चर्य से पीछे मुड़ी। 'श्रीमान ईश्वर! आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। मुझे लगता है कि पिछली बार मैंने आपको बस एक झलक ही देखा था और उन परिस्थितियों में औपचारिक रूप से परिचय करना संभव नहीं था।'

ईश्वर ने शीला का बढ़ाया हुआ हाथ थाम लिया, न तो वह मुस्कुराया और न ही उसका चेहरा किसी भी तरह से शत्रुतापूर्ण था। शीला को उसका हाथ पकड़ते ही एक झनझनाहट महसूस हुई। मानो उसने किसी बिजली के तार को पकड़ रखा हो।

उन्होंने मधुर स्वर में कहा, 'यह मेरे लिए खुशी की बात है।'

उन्होंने कहा, 'यह आश्चर्य की बात है कि आप भी हमारे साथ एक ही विमान में हैं।'

ईश्वर ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'शीला, मैं हमेशा तुमसे दो कदम पीछे रहा हूँ। मुझे लगा कि अब समय आ गया है कि मैं थोड़ा और सीधे तौर पर इसमें शामिल हो जाऊं।'

‘और इस मामले में आपकी दिलचस्पी किस बात में है, आप कौन हैं?’

ईश्वर ने कहा, 'फिलहाल, मेरे हित और आपके हित सूत्रम को नष्ट करने से मेल खाते हैं। इसलिए मुझे अपना सहयोगी समझें। सूत्रम के विषय में किरोमल से मेरी और मेरी टीम की राय अलग है; हमारा मानना है कि इसे नष्ट किया जाना चाहिए।'

‘आपकी टीम?’

आपको जल्द ही इनके बारे में पता चल जाएगा, चिंता मत करो।

रघु ने बीच में ही सवाल पूछ लिया। 'जब हम पहली बार मिले थे, तब आपने मुझे सेबल पार्च से बचाया था। आपने कहा था कि मेरे लिए अभी उसका सामना करना जल्दबाजी होगी। आपका क्या मतलब था?'

ईश्वर कुछ देर तक चुप रहा, मानो अपने विचारों को समेट रहा हो। शीला और रघु ने एक-दूसरे को चोरी-छिपे देखा।

‘उस रात, पर्च जब चाहे तुम्हें मार सकता था, सूर्या, फिर भी उसने ऐसा नहीं किया। क्या तुम जानते हो क्यों?’

'आप मुझे बताएं।'

यह किसी चीज की तलाश कर रहा है।

रघु ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। यह क्या खोज रहा है?'

ईश्वर ने कहा, 'मुझे शुरुआत से शुरू करना होगा और मैं यथासंभव संक्षिप्त रहने की कोशिश करूंगा।'

उन्होंने जवाब का इंतजार नहीं किया।

‘तुम्हारे पिता और मैंने सूत्रम को बंद करने का फैसला किया है।’
‘सूत्रम क्या है?’
‘एक विसंगति, एक ऐसी चीज़ जो कभी नहीं होनी चाहिए थी। यह इस ब्रह्मांड के सभी नियमों के विरुद्ध है, यहाँ तक कि भौतिकी के नियमों के भी,’ ईश्वर ने शीला पर एक नज़र डाली। ‘यह अनेक संभावनाओं में से एक है। ऐसी दुर्घटनाएँ सबसे सुनियोजित योजनाओं में भी घटित हो जाती हैं और अंततः, ब्रह्मांड, या अनेक ब्रह्मांड, यादृच्छिक हैं..., है ना शीला?’
उसने दृढ़ता से सिर हिलाया।
‘तो हम, तुम्हारे पिता और मैं, इसे नष्ट करने का एक तरीका सोचने में जुट गए। हमें एक ऐसा उपकरण मिल गया जो कारगर साबित हो सकता था।’
‘फ्यूजन, है ना?’ उसने पूछा।
'बिल्कुल सही। बस यही पता लगाना था कि वह शब्दांश क्या था।'
रघु ने पूछा, 'तुम्हें इस शब्दांश के बारे में कैसे पता चला?'
'खैर, मुझे बहुत सी बातें पता हैं। उनमें से एक यह है कि ब्रह्मांड की रचना में ध्वनि एक उत्प्रेरक थी। मैं इस लिहाज से एक वैज्ञानिक हूं। मैंने अपने जीवन में काफी प्रयोग किए हैं।'
शीला ने कहा, 'यह थोड़ा अस्पष्ट नहीं लगता?'
ईश्वर ने कंधे उचकाए, अपनी कोट की जेब से एक कागज़ का टुकड़ा और एक सस्ता पेन निकाला। उसने उस पर कुछ सेकंड के लिए गणितीय समीकरण जैसे दिखने वाले वाक्य लिखे और फिर वह सूत्र शीला को देते हुए बोला, 'यह सूत्र को नष्ट करने का सूत्र है।'
शीला ने समीकरण का अध्ययन किया। सूत्र की बार-बार जाँच करने पर उसका प्रारंभिक संदेह पूर्ण आश्चर्य में बदल गया, इस दौरान दोनों पुरुष चुपचाप बैठे रहे। अंत में, उसने कहा, 'कंपन, सटीक अनुनाद, कैसे...'
‘शीला, हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। अभी मैं चाहता हूँ कि तुम सामने वाले काम पर ध्यान दो। क्या तुम संतुष्ट हो कि यह तरीका कारगर होगा?’
‘जी हाँ... सर,’ उसने कहा, ‘बशर्ते हमारे पास अक्षर हो। अब मुझे समझ में आया कि अक्षर कितना महत्वपूर्ण है।’
‘जी हां,’ ईश्वर ने कहा।
‘क्या मैं यह फॉर्मूला रख सकता हूँ?’
'जी हां, बिल्कुल,' उसने कहा। उसने कागज के पीछे कुछ लिखा और उसे वापस उसे दे दिया।
शीला ने कागज को अपने पर्स में रखते हुए उसे एक सवालिया नजर से देखा।
‘अच्छा,’ ईश्वर ने कहा। ‘अब इस विलय को शुरू करने का एकमात्र तरीका उस एक अक्षर को खोजना था जो बोलने में विजयी हो। अब तक आप वाक्य का अर्थ और वह अक्षर जान चुके होंगे। मैंने आपके पिता को वह अक्षर बताने की पेशकश की थी। उन्होंने मेरी मदद लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि वे खुद

ही पता लगाना चाहते हैं। उन्हें कई बातों के बारे में खुद को आश्वस्त करना था और साथ ही उन मान्यताओं से भी छुटकारा पाना था जो उस समय तक उनके मन में थीं।'

'तो आपको शुरू से ही उस शब्दांश के बारे में पता था। आपने मुझे क्यों नहीं बताया?'

'तुम्हें वह अक्षर तो पता है ना? इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुम्हें वह कैसे पता चला? क्या इस बात से कि तुमने इसके लिए इतनी कठिनाइयाँ झेली हैं, तुम्हें इस पूरे मामले को अंजाम तक पहुँचाने की प्रेरणा नहीं मिलती? अगर मैंने तुम्हें वह अक्षर बताया होता, तो तुम उस पर भी वैसे ही संदेह करते जैसे तुमने मुझ पर किया है।'

'आपको कैसे पता चला कि हमने आप पर शक किया?' शीला ने अपराधबोध से भरी एक लहर के साथ पूछा।

'आपकी जगह पर कोई भी होता तो किसी अजनबी पर भरोसा नहीं करता। यह बिल्कुल स्वाभाविक है,' ईश्वर ने कहा।

'ठीक है...' रघु ने हिचकिचाते हुए कहा। उसे सचमुच समझ नहीं आ रहा था कि ईश्वर के विचारों का जवाब कैसे दे। 'मेरे पिताजी कुछ बातों की पुष्टि करना चाहते थे। वे क्या थीं?'

'अगर मैं वही होता जो मैं होने का दावा करता हूं।'

'और आप कौन है?'

बाद में। इतना कहना ही काफी है कि मुझे पूरा यकीन था कि तुम्हारे पिता यह कर सकते थे, ठीक वैसे ही जैसे अब मुझे पूरा यकीन है कि तुम कर सकते हो। वास्तव में, तुम अपने पिता से कहीं अधिक साधन संपन्न हो।

'धन्यवाद।'

'एक सवाल। अगर आप यह शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं, तो आपने खुद ही फ्यूजन क्यों नहीं किया?' शीला ने पूछा।

पी. ईश्वर ने कहा, 'मैं नहीं कर सकता। यह केवल सूर्य ही कर सकता है। देखिए, सूत्रम स्वयं एक सूर्य है...'

'तुम क्या कह रहे हो?' रघुराम चौंककर चिल्लाया।

'सूत्रम के मूल में आपके दादाजी का रक्त और आंतरिक अंग समाहित हैं। इसीलिए तांत्रिक ने उन्हें विष दिया था।'

'मेरे दादाजी ही क्यों?'

'दरअसल, यह महज़ बदकिस्मती थी। यह कहीं भी या किसी के साथ भी हो सकता था। उस समय तांत्रिक गुडेम में था। तुम्हारे दादाजी की रखैल उन्हें मरवाना चाहती थी। उसने तांत्रिक को बुलाया और उसने तुम्हारे दादाजी के खून का इस्तेमाल करके एक ऐसी असामान्य स्थिति पैदा की जिसके ज़रिए वह कई चीज़ें हासिल करना चाहता था, जिनमें से एक अमरता भी थी,' ईश्वर ने कहा।

'बस इतना ही आसान है, है ना?'

‘हां,’ पी. ईश्वर ने कहा।
'जारी रखना।'
मैं व्यापारिक सिलसिले में कहीं और गया हुआ था। मुझे लगा था कि आपके पिता सब कुछ खुद ही संभाल लेंगे। मैं गलत नहीं था; बस मुझे इस बात का अंदाजा नहीं था कि कोई इतना करीबी व्यक्ति... आपके पिता के साथ ऐसा धोखा कर सकता है।
रघु ने frowning करते हुए पूछा, 'आप रामाया शास्त्री को जानते थे, है ना?'
‘वह कुछ समय तक मेरे लिए काम कर रहा था। खैर, शास्त्री ने तुम्हारे पिता को गलत शब्द कह दिया। संलयन तो हुआ, जो विधि मैंने उसे सिखाई थी, वह कारगर साबित हुई। उसने अपना ही एक प्रतिरूप बना लिया। ये दो विपरीत शक्तियाँ हैं जो एक-दूसरे को नष्ट करने पर तुली हुई हैं। जैसे दिन और रात या जीवन और मृत्यु। चाल यह है कि शब्दांश का प्रयोग ठीक उसी समय किया जाए जब वे टकराएँ। लेकिन जब सूर्य प्रसाद ने इसका प्रयोग किया, तो प्रयोग विफल हो गया। क्वार्क्स को शक्ति नहीं मिली और उस प्रतिरूप ने तुम्हारे पिता को नष्ट कर दिया।’
रघु ने अपना सिर झुका लिया। 'वह भाग भी नहीं सकता था। वह बेबस था।'
‘हां,’ ईश्वर ने कहा। ‘उनके एक सेवक, वलनेनी, ने उनकी रक्षा करने की कोशिश में अपनी जान गंवा दी।’
‘क्या उसे बहुत ज्यादा दर्द हुआ?’ रघु ने कांपती हुई आवाज में पूछा।
'ज्यादा देर तक नहीं, लेकिन यह काफी तीव्र रहा होगा,' ईश्वर ने स्वीकार किया।
‘क्या तुम मदद नहीं कर सकते थे?’ उसने ईश्वर से आरोप लगाते हुए पूछा।
‘जैसे ही मुझे कुछ गड़बड़ का एहसास हुआ, मैं तुरंत वहाँ पहुँच गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैं टीम के केवल तीसरे सदस्य, रथाया को ही बचा पाया। वह जीवित तो रहा, लेकिन उसके सुप्त मस्तिष्क के कुछ हिस्से सक्रिय हो गए। यह एक वरदान भी था और अभिशाप भी। उस दिन से उसे न तो दर्द महसूस हुआ और न ही भूख, लेकिन एकमात्र समस्या यह थी कि वह ऐसी चीजें देख पाता था जो उसके साथी मनुष्य नहीं समझ सकते थे। वह ब्रह्मांड के रहस्य देख पाता था।’
‘तुम उसकी मदद भी नहीं कर सके?’ रघु ने उग्र स्वर में पूछा।
‘मदद? रथया अपने वर्तमान स्वरूप से खुश था। वह अपने पुराने जीवन में वापस नहीं जाना चाहता था।’
‘तो प्रयोग विफल हो गया। मेरे पिता की मृत्यु हो गई और रथाया सुपरनोवा बन गई और हॉल में मौजूद वह चीज बच गई।’
‘प्रयोग भले ही असफल रहा हो, लेकिन यह आधी असफलता ही थी। वह सूत्रम को कैद करने में कामयाब रहा। यह संलयन से पहले मौजूद सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सका। इसे पूरी तरह नष्ट करने के लिए अग्निपुत्र की आवश्यकता है,’ ईश्वर ने समझाया।
एयरहोस्टेस उनके पास खाने की गाड़ी खींचते हुए पहुंची।
‘मैडम, सर, डिनर?’ एयर होस्टेस ने अपने चेहरे पर बनावटी मुस्कान चिपकाए हुए उनसे पूछा।

‘नहीं, धन्यवाद,’ रघु ने कहा। शीला ने मना कर दिया। एयरहोस्टेस अपनी पहियों वाली गाड़ी को खींचकर ले गई, उसके चेहरे पर बनावटी मुस्कान अभी भी बरकरार थी।

‘मेरी समझ से, सूत्रम का अस्तित्व सर्वप्रथम उन्नीस सौ चालीस के दशक में आया, जब मेरे पिता बालक थे। तांत्रिक उन्नीस सौ इकहत्तर से पहले कभी भी सूत्रम पर नियंत्रण कर सकते थे, जब मेरे पिता ने इसे नष्ट करने का निश्चय किया। उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया?’ रघु ने ईश्वर से पूछा।

उन्नीस सौ चालीस के दशक में सूत्रम महज एक बीज था। इसे विकसित होना था, तांत्रिक के उपयोग के लिए पर्याप्त शक्ति प्राप्त करनी थी। आपके पिता ने इसे ठीक उसी समय नष्ट करने का प्रयास किया जब यह पूरी तरह से तैयार था। इसलिए उन्होंने उनकी हत्या कर दी।

‘तो अब सूत्रम को नियंत्रित करने का समय आ गया है, क्या यही बात है?’

‘मुझे डर है कि अब यह बहुत शक्तिशाली हो गया है। इसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता। कुछ समय के लिए, आपके पिता सूत्रम को कैद करने में सफल हो गए होंगे। लेकिन, उन्होंने इसे नष्ट नहीं किया। वे बस एक खुले घाव पर पट्टी बांधने में कामयाब हुए। तांत्रिक को लगा कि प्रयोग विफल हो गया क्योंकि पट्टी ने सूत्रम को उनसे छिपा दिया था। इतने समय बाद, सूत्रम मुक्त होने में कामयाब हो गया है क्योंकि यह अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है। आप जानते हैं, त्वरित समाधान समस्याओं का समाधान नहीं करते। इस प्रकार, तांत्रिक अपनी रचना को पुनः प्राप्त करने में सक्षम हुए। मुझे लगता है कि उन्होंने गोविंद को सूत्रम को वश में करने के लिए प्रेरित किया। गोविंद की सत्ता की लालसा उसे एक बहुत ही खतरनाक स्थिति में ले जा रही है।’

‘मुझे परवाह नहीं कि मंत्री जी नरक में सड़ें। वह तांत्रिक कौन था जिसने मेरे पिता को पुराने समय में सूत्रम के बारे में चेतावनी दी थी?’

'एक शिष्य, एक नौसिखिया जिसे उसके गुरु ने बलि का बकरा बनाया।'

‘आपने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?’

‘तुम तैयार नहीं थे। अब तुम सच जानने के लिए तैयार हो।’

‘मैं समझ गया। एक बात जो मुझे परेशान कर रही है, वह यह है कि इन सबमें आपकी क्या दिलचस्पी है?’ रघु ने तीखे लहजे में पूछा।

ईश्वर ने कहा, ‘मैं और मेरी टीम सूत्रम को नष्ट करना चाहते हैं। इसके पीछे हमारे कुछ कारण हैं जिन्हें मैं अभी प्रकट नहीं कर सकता। निश्चिंत रहें, हमारा आपको कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं है। हम जानते हैं कि इसे केवल संलयन से ही नष्ट किया जा सकता है, और किसी चीज़ से नहीं। आपको स्मारक कक्ष में अवश्य जाना चाहिए, इस बार रात में। आपको अपने सवालों के जवाब वहीं मिलेंगे।’

विमान के डेक से एक घोषणा की गई जिसमें सभी यात्रियों से अपनी सीट बेल्ट बांधने का अनुरोध किया गया क्योंकि विमान हैदराबाद में उतरना शुरू कर चुका था।

ईश्वर उठे, उन्हें सिर हिलाकर अभिवादन किया और कहा, 'मुझे अपनी सीट पर बैठना होगा, हम संपर्क में रहेंगे।'

शीला ने अचानक गुस्से से अपना सिर हिलाया, 'नहीं, कोई और रास्ता होना चाहिए। हम सेबल पार्च और सुत्रम को खुलेआम घूमते हुए वहाँ नहीं जाएँगे,' उसने घोषणा की; उसके हाथ रघुराम के चारों ओर इस तरह कसकर लिपटे हुए थे मानो ईश्वर उसे उससे छीनकर हवाई जहाज से स्मारक कक्ष में फेंक सकता हो।

ईश्वर दंपति की ओर झुका, उसने रघु की आंखों में देखा और सच कहें तो रघु उस आदमी से नजरें मिलाने में असमर्थ था।

‘तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है, सूर्य,’ उसने कहा, ‘आखिरकार, सेबल पार्च ही तुम्हारा पिता है।’

इससे पहले कि सदमे में डूबा दंपति कुछ कह पाता, ईश्वर वहां से जा चुका था।

‘मेरे पिता...’

‘व्यक्ति-विरोधी...’ शीला ने हिचकिचाते हुए फुसफुसाया।

‘यह मेरे पिता की जटिल दर्पण छवि है।’

अध्याय 40

हैदराबाद में विमान से उतरते ही दंपति ने टर्मिनल पर पी. ईश्वर नाम के व्यक्ति को ढूँढा। वह वहाँ नहीं था। हमेशा की तरह। या तो वह उनसे पहले ही विमान से उतर गया था या फिर अभी भी विमान में ही था। प्रस्थान लाउंज में, शोक संतप्त गृह मंत्री और तांत्रिक को वीआईपी सुविधा दी गई। उन्हें हवाई अड्डे की गाड़ी से उस विमान तक ले जाया गया जो जयपुर लौटने के लिए तैयार था।

रघु और शीला हवाई अड्डे पर टेलीविजन पर ब्रेकिंग न्यूज़ देख रहे थे। प्रसिद्ध राजनेता, उद्योगपति और गृह मंत्री के चाचा, करण किरोमल का 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया, उनके 80 वें जन्मदिन से ठीक एक महीने पहले। फुटेज में किरोमल हवेली और दिवंगत नेता को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए उमड़ते लोग दिखाए गए। इनमें प्रधानमंत्री, विभिन्न मुख्यमंत्री, उद्योगपति और अन्य प्रमुख हस्तियां शामिल थीं।

रघु ने मन ही मन सोचा, 'अचानक एक अप्रत्याशित मोड़ आ गया।' दंपति विजयवाड़ा के लिए अगली फ्लाइट में सवार हो गए।

जब वे देर रात गुडेम पहुँचे, तो गोविंद और उसके तांत्रिक से स्मारक कक्ष की रक्षा के लिए पहरा जारी था। रघु के निर्देश पर, पोटी ने भीड़ का धन्यवाद किया और उन्हें तितर-बितर होने का आदेश दिया। उस रात मंत्री के गुडेम लौटने का कोई खतरा नहीं था। इसके अलावा, किले का स्वामी लौट चुका था।

अगली सुबह, जब रघु और शीला गुडेम के महल में गहरी नींद में सो रहे थे, तब गोविंद किरोमल जयपुर में अपने चाचा के अंतिम संस्कार में लोगों से गंभीर भाव से मिल रहे थे। गृह मंत्री थके-हारे और कमजोर दिख रहे थे। रात भर में घर के नौकरों ने उन्हें सारी घटना बता दी थी। यह समझना मुश्किल नहीं था कि वे लंबे साधु और साध्वी कौन थे।

'चालाक वकील को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।'

उस बूढ़े आदमी की मौत कैसे हुई?

तांत्रिक पूरी रात एक एकांत कमरे में साधना में लगा रहा। उसके मुंह से एक भी आवाज नहीं निकली। ऐसा लग रहा था मानो वह मर चुका हो। उसी क्षण तांत्रिक गोविंद के पास पहुंचा। उसने गोविंद को उसकी पत्नी और बेटे से दूर एक कोने में खींच लिया।

'आपने क्या पाया?'

'मैंने अपना काम कर दिया, मेरे बेटे। यह सब उस दखलंदाज़ आदमी, सूर्या, और उसकी वेश्या, मैं कहता हूँ, उसकी वेश्या की वजह से हुआ।'

गोविंद ने आंखें घुमाते हुए कहा, 'इतना तो मैं खुद ही समझ सकता हूं, धन्यवाद। आपको और क्या पता चला?'

तांत्रिक ने घोषणा की, 'वे जानते हैं।'

'कृपा करके मुझे स्पष्ट शब्दों में बताओ, अपने इस दुख भरे जीवन में एक बार तो बताओ, वे क्या जानते हैं?'

तांत्रिक भड़क उठा लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। 'वे अक्षर जानते हैं। मैं कहता हूँ, तुम्हारे चाचा ने ही उन्हें यह सिखाया है। समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है। हमें अभी गुडेम जाना चाहिए।'
'सूर्य भेस बदलकर यहाँ कैसे आ गया और इस तरह की जानकारी लेकर कैसे बच निकला? चाचा कोई मूर्ख नहीं थे।'
तांत्रिक ने व्यंग्यपूर्वक सिर हिलाते हुए कहा, 'बूढ़े मूर्ख जैसा कोई मूर्ख नहीं होता। उसने सोचा होगा कि वह तुम्हारी रक्षा कर रहा है।'
गोविंद की आँखों में आँसू भर आए। 'और जब चाचा जी को पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ है, तो उन्होंने अंतिम सांस ली। क्या गजब के इंसान थे! एक नेक और मासूम दिल। एक सरल इंसान। मुझे उनकी बहुत याद आएगी। सूर्या को इस अपवित्रता का हिसाब देना होगा। मैं उससे बदला लूँगा।'
'मेरे बेटे, यह बदला लेने का नहीं, बल्कि कार्रवाई करने का समय है। मैं कहता हूँ, यह कार्रवाई का समय है। हमें तुरंत निकलना होगा।'
'अंतिम संस्कार बारह बजे है, अब से तीन घंटे बाद। मैं दोपहर बाद तक वहां से निकलना चाहता हूं।'
तांत्रिक ने सिर हिलाते हुए कहा, 'बहुत देर हो चुकी है, हमें अभी निकलना होगा। क्या पता, सूर्य अभी भी स्मारक कक्ष में भगवान की मूर्ति नष्ट कर रहा हो। तुम्हारे चाचा हमेशा के लिए चले गए हैं, लेकिन उनका सपना जीवित रहना चाहिए। तुम्हें उस सपने को साकार करने के लिए काम करना होगा।'
गोविंद को यह मानना पड़ा कि इसमें कुछ सच्चाई तो थी। उन्होंने अपने एक सहायक को बुलाया। 'मेरे लिए एक चार्टर्ड विमान तैयार करवाओ। यह राष्ट्रीय आपातकाल का मामला है। मुझे सूर्यास्त से पहले एलुरु पहुंचना है। यह अत्यंत आवश्यक है।'
गोविंद ने अपने फोन पर एक नंबर डायल किया। उसके भाई सूरजमल किरोमल ने फोन उठाया।
'भाई... मुझे अब जाना होगा। बहुत जरूरी काम है, मेरा दिल टूट रहा है लेकिन चाचाजी की अंतिम इच्छा पूरी करनी है। आप अंतिम संस्कार संपन्न करा दीजिए। ध्यान रखिए कि प्रेस को मेरे ठिकाने की खबर न लगे।'
लेकिन... चाचाजी तो चाहते थे कि तुम इन्हें करो, मैं ये कैसे कर सकता हूँ...?
'सूरजमल, परिवार और परंपरा से भी ज़्यादा ज़रूरी चीज़ें होती हैं। तुम इस पर ध्यान दो। मेरा बेटा मेरा प्रतिनिधित्व करेगा। मेरा जीवन एक महान उद्देश्य के लिए समर्पित है। चाचा समझ जाएंगे... असल में अगर वो यहाँ होते तो मुझे जाने के लिए कहते,' गोविंद ने कहा, 'सब कुछ संभाल लो।' उसने फोन काट दिया।
सूरजमल मन ही मन मुस्कुराया, 'अगर चाचा जी यहाँ होते,' उसने सोचा, 'तो फिर अंतिम संस्कार की नौबत ही नहीं आती।'
गोविंद घर के पिछले दरवाजे से निकला, जहाँ उसका काफिला पहले से ही इंतज़ार कर रहा था। वह जैसे-तैसे अपनी कार में बैठा और तांत्रिक अभी उसमें कूद ही रहा था कि गाड़ी तेज़ी से आगे बढ़ गई। ठीक बीस मिनट में वह फ्लाइट में था और कुछ ही देर बाद वे हवा में थे। किराए का हत्यारा कहाँ गया? गोविंद गुस्से से

उबल रहा था। सूर्या हर तरफ उत्पात मचा रहा था और भारत का तथाकथित सबसे बेहतरीन हत्यारा कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

अध्याय 41

काले वस्त्रों में लिपटा हुआ वह व्यक्ति परछाइयों में समाया हुआ था। धुंधलके में, जब परछाइयाँ चमकते नारंगी सूरज को ढक रही थीं, तब भी वह खुलेआम छुपने में कामयाब रहा।

हत्यारा बड़ी आसानी से किले की दीवार फांदकर विशाल खिड़कियों में से एक से भोजन कक्ष में घुस गया। खुरदुरे ग्रेनाइट स्लैब पर उसके क्रेप सोल वाले जूतों से हल्की सी आवाज़ आ रही थी, जैसे ही वह एक खंभे से दूसरे खंभे पर सरक रहा था। उसने कुछ आवाज़ें सुनीं, सूर्या की और एक महिला की। उसे उसे भी मारना होगा, क्योंकि वह भी एक तरह से नुकसान का शिकार हो जाएगी। उसके काम में यह बात उसे ज़्यादा प्रभावित नहीं करती थी, बस उसकी यही इच्छा थी कि उसे उसके लिए भी पैसे मिल जाते। हर गोली की कीमत चुकानी पड़ती है। कोई गोली मुफ्त नहीं मिलती।

उसने आवाज़ों का पता लगाते हुए शयनकक्ष तक पहुँचा। शयनकक्ष तक पहुँचने के लिए उसे भोजन कक्ष से होते हुए बैठक कक्ष में जाना पड़ा। वह दीवार से सटकर चल रहा था ताकि कभी-कभार आने-जाने वाले कर्मचारी उसे देख न लें, जो शाम के ढलने का इंतज़ार कर रहे थे। उसे ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा।

अमित की कुंग-फू ट्रेनिंग और जोखिम भरी जिंदगी ने उसकी इंद्रियों को इतना तेज कर दिया था कि वह खतरे के संकेतों को तुरंत भांप लेता था। लेकिन फिलहाल उसकी सहज प्रवृत्ति ने उसे खतरे का आभास नहीं दिया। वह फुर्ती से लिविंग रूम में गया और सोफे के पीछे छिप गया। उसने सोफे के पैरों के नीचे से झाँक कर देखा कि कहीं उसे किसी ने देख तो नहीं लिया। दो मिनट बाद उसे लगा कि उसे किसी ने नहीं देखा है।

अमित ने बिना कोई आवाज़ किए चुपके से खुद को उठाया। फिर वह बिजली की गति से आगे बढ़ा। पल भर में वह शयनकक्ष के दरवाजे के सामने था। उसने दरवाजे का हैंडल पकड़ा हुआ था, हाथ में साइलेंसर लगी बंदूक थी, और वह दरवाजा खोलकर दो गोलियां दागने के लिए तैयार था ताकि लक्ष्य को मार गिराकर भाग सके।

बैठक कक्ष प्रकाश से जगमगा उठा।

अमित घबराया नहीं। वह कभी घबराता ही नहीं था।

हाथ में बंदूक लिए वह खतरे से निपटने के लिए तेज़ी से मुड़ा। चाय की थाली लिए हैरान पोटी बस हमलावर को घूरता रहा। पोटी ने थाली गिराकर बंदूक उठाने की कोशिश की, उसी पल अमित ने उसे गोली मार दी। गोली पोटी की छाती के दाहिनी ओर लगी और वह कांच के टॉप वाली मेज से जा टकराया।

चायदानी और कांच के ढक्कन के टूटने की आवाज़ पहली मंज़िल पर गूंज उठी। रघुराम ने बेडरूम का दरवाज़ा ज़ोर से खोला जो अमित के बंदूक वाले हाथ से टकराया। हथियार उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा।

घूमकर उसने चाकू निकाल लिया। शीला चीखती हुई खून से लथपथ पोटी की ओर भागी। रघु ने कमरे का जायजा लिया, गिरी हुई पोटी, शीला की चीख - सब कुछ उसके दिमाग में कहीं न कहीं दर्ज हो गया था। उसकी निगाहें हत्यारे पर टिकी थीं। रघुराम ने आइकिडो की पारंपरिक मुद्रा अपनाई। पैर फैलाए, बाहें मुड़ी हुई, हथेलियाँ खुली और उंगलियाँ सख्त और अलग-अलग, जैसे कोई कटाना तलवार पकड़े हो, उसकी निगाहें सिर्फ अपने प्रतिद्वंद्वी पर थीं। अमित बिजली की तरह फुर्तीला हुआ, रघु की बांह पर वार किया और उसके सफेद कुर्ते पर एक लाल निशान बन गया।

रघु ने इसे अनदेखा कर दिया। अगर वह दाईं ओर न खिसकता, तो चाकू उसके दिल में जा लगता। उसने धीरे-धीरे अपनी चप्पलें उतारीं और लगातार अमित के चारों ओर चक्कर लगाता रहा।

हत्यारा फिर से हरकत में आया और एक और बिजली की तरह तेज़ हमला करने के लिए आगे बढ़ा।

रघु हत्यारे से लगभग एक फुट लंबा था, उसकी पहुँच कहीं बेहतर थी। उसने अपना पैर आगे बढ़ाया और हत्यारे के बाएँ घुटने पर ज़ोरदार लात मारी। अमित को आहट का अंदाज़ा था, लेकिन उसकी अपनी गति उसके खिलाफ़ चली गई। रघु का पैर उसकी घुटने की हड्डी पर ज़ोर से लगा और उसे तोड़ दिया। अमित दर्द से कराह उठा। वह पीछे गिर गया और तुरंत अपनी बंदूक खोजने लगा।

'शीला, बंदूक उठाओ,' रघु ने कहा।

अमित ने उस पर झपट्टा मारा। रघु ने फिर से अपने पैर का इस्तेमाल किया। उसका पैर ज़ोरदार प्रहार था। प्रहार की शक्ति से घुटने की हड्डी और जोड़ चकनाचूर हो गए, और हत्यारे का दूसरा पैर भी टूट गया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा। अमित अपने टूटे हुए पैरों पर उठा और रघु पर चाकू लहराया। इसी बीच शीला ने बंदूक उठा ली और रघु को सौंप दी। रघु ने मैगज़ीन निकालकर फेंक दी। उसने चैंबर में फंसी गोली को बाहर निकाला और बंदूक को हत्यारे की पहुँच से दूर फेंक दिया।

उन्होंने कहा, 'देखते हैं तुम कितने मजबूत हो।'

अमित ने एक और चाकू निकाला, जो घुमावदार था। उसने दोनों चाकू ऊपर उठाकर रघु पर झपट्टा मारा। रघु अमित के हमले से बचने के लिए एक तरफ हट गया, उसने हमलावर की कलाई पकड़ ली और उसे एक खतरनाक लॉक में जकड़ लिया।

रघु अमित की ओर तिरछे बढ़ा और हत्यारे की हथेली को अंदर की ओर मोड़ दिया। उसने अपनी गति का इस्तेमाल करते हुए, न कि बल प्रयोग करते हुए, अमित की हथेली को पूरी तरह नीचे धकेल दिया। पैर उसे सहारा देने में असमर्थ थे, इसलिए हत्यारा कलाई के इस वार का जवाब नहीं दे सका। उसकी कलाई एक टहनी की तरह टूट गई। हत्यारे की बांह को सीधा करते हुए, रघु ने उसकी कोहनी पर जोरदार प्रहार किया। हड्डी त्वचा को चीरते हुए बाहर आ गई और हाथ एक विकृत कोण पर मुड़ गया।

इस बार अमित चीख उठा। उसके दोनों चाकू ज़मीन पर पड़े थे।

उसने रघुराम से खुद को छुड़ाने की पूरी कोशिश की। तब तक अधिकांश कर्मचारी इकट्ठा हो चुके थे। वे पोटी को उठाकर बेडरूम में ले गए।

‘वह आदमी जीवन भर मेरे साथ रहा। वह मेरा दोस्त है, मेरा मार्गदर्शक है,’ रघु ने दांत भींचते हुए अमित से कहा।

हत्यारे ने कहा, 'काश वो नरक में सड़ जाए।' वह टूटे हुए पैरों पर लड़खड़ाते हुए खड़ा था। रघु बेपरवाही से आगे बढ़ा। उसने अपने कंधे और कूल्हे का इस्तेमाल करते हुए, अपनी पूरी ताकत से हत्यारे के पेट पर ज़ोरदार मुक्का मारा।

उस प्रहार से अमित के फेफड़ों से लगभग सारी हवा निकल गई। वह घुटनों के बल गिर पड़ा। रघु क्रोध से आग बबूला था। उसके सामंती पूर्वजों का खून उसके भीतर खौल रहा था। उसने अमित के इकलौते सही हाथ की कलाई तोड़ दी, फिर उसकी उंगलियां और अंत में उसकी कोहनी। अमित दर्द से चीख उठा। उसने अपने जीवन में कभी इस तरह की पीड़ा नहीं झेली थी। बेबसी और घबराहट का भाव उस पर हावी हो गया। उसने अपने होश खो दिए, उसका मूत्राशय फट गया और उसने बैठक कक्ष को अपवित्र कर दिया।

रघुराम सूर्या ने हत्यारे के बाल पकड़े और हथेली के किनारे से तलवार की तरह वार किया। अमित की नाक धंस गई। उसकी उपास्थि मस्तिष्क में घुस गई। उसकी तुरंत मृत्यु हो गई।

जैसे ही शीला बाहर निकली, रघु बेडरूम की ओर मुड़ गया।

'वह कैसे?'

‘वह जीवित है। हमने खून बहना रोक दिया है, लेकिन हमें उसे अस्पताल ले जाना होगा।’

‘गोली?’ उसने पूछा।

‘यह अभी भी उसकी छाती के अंदर है।’

आधे घंटे बाद, शाम के आठ बजते ही वे जावारम के अस्पताल पहुंचे। उन्होंने बेहोश पोटी को स्ट्रेचर पर लिटाकर ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर के कमरे में पहुंचाया, जहां एक युवा चिकित्सक और कुछ नर्सों ने घाव की जांच की।

‘सर, यह पुलिस का मामला है...’ उपस्थित चिकित्सक ने बात शुरू की।

‘I am Raghuram Surya!’

यह एक शेर की दहाड़ थी। एक शिकारी जानवर की।

अस्पताल के प्रशासक अन्य ड्यूटी पर तैनात डॉक्टरों के पीछे-पीछे तेजी से बाहर निकल आए।

एक बुजुर्ग चिकित्सक ने कहा, 'मुझे खेद है बाबू गारू, मैं घायल व्यक्ति को तुरंत देखूंगा।'

बेहोश पोटी को आपातकालीन ऑपरेशन कक्ष में ले जाया गया।

अध्याय 42

वापसी के रास्ते में रघुराम गंभीर था जबकि शीला चुपचाप रो रही थी। गुडेम के पास पहुँचते ही उन्होंने स्मारक हॉल के बाहर भारी भीड़ देखी। रघु ने अचानक ब्रेक लगाकर गाड़ी रोक दी।

‘क्या हुआ?’ वह सड़क पर दौड़ते हुए चिल्लाया। कार अपने आप रुक गई थी।

‘बाबू गारू, क्या आपको यह दिखाई नहीं देता?’

स्मारक कक्ष से एक भयानक कराह उठी, मानो किसी फ़नल से हवा निकल रही हो। ईश्वर ने उनसे रात में साहसपूर्वक स्मारक कक्ष में प्रवेश करने को कहा था। रघु को सेबल पर्च की चिंता नहीं थी। वह इसके लिए तैयार था। उसकी चिंता सूत्रम को लेकर थी। तभी उसने रात के आकाश में वह अद्भुत दृश्य देखा। वह एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। मानव मन ऐसी छवियों को समझ नहीं पाता जो उसकी प्रशिक्षित इंद्रिय-बोध से पूरी तरह से मेल नहीं खातीं। वह प्रभाव को कम करने की कोशिश करता है, किसी और चीज़ से ज़्यादा खुद को बचाने के लिए। इस प्रकार, दंपति पूरी तरह से अवाक होकर रात के अंधेरे में देखते रह गए।

लोग हवा में तैर रहे थे, चांद की रोशनी में उनकी परछाइयां साफ दिखाई दे रही थीं। बिलकुल विदुष और प्रियंका की तरह। फर्क सिर्फ इतना था कि यह सब खुले आसमान के नीचे हो रहा था। इसका सिर्फ एक ही मतलब हो सकता था। सूत्रम ने अपने बंधन तोड़ दिए थे।

विनाश।

सबके लिए।

‘यहाँ आखिर हो क्या रहा है?’ एक जानी-पहचानी आवाज़ आई। मेजर कांट पट्टी बंधे सीने पर कमीज़ पहने खड़े थे। कमर पर बंदूक की बेल्ट बंधी थी। ‘उन लोगों को वहाँ किसने लटकाया है?’

‘सूत्रम मुक्त हो रहा है। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। मुझे हॉल में जाना होगा वरना और लोग मर जाएंगे। दुनिया खत्म हो जाएगी।’

कांट ने घोषणा की, 'मेरे बिना तुम दुनिया को बचा ही नहीं पाओगे।'

‘कांत, मूर्ख, तुम्हें पता नहीं कि तुम किस मुसीबत में पड़ रहे हो। स्मारक कक्ष से दूर रहो। मैं अभी अंदर जा रहा हूँ। तुम दोनों यहीं रहो।’

‘नहीं!’ शीला चिल्लाई। ‘अगर तुम अंदर जा रही हो तो यह स्पष्ट कर दो कि मैं भी तुम्हारे साथ ही अंदर जाऊंगी।’

‘साइंस फिक्शन...’

'मैं शीला हूं, ग्रह की देवी और ब्रह्मांड की खोजकर्ता, और तुम मेरी बात मानोगे,' उसने घोषणा की और हॉल की ओर चल पड़ी।

कांट ने कहा था, 'मैं कुछ दिनों के लिए अनुपस्थित रहता हूँ और लोग खुद को बहुत महान समझने लगते हैं।'

वह शीला के पीछे-पीछे तेज़ी से चलने लगा। रघु उनके पीछे चल पड़ा।
‘मेरे साथ यही होना चाहिए था,’ उसने शीला से मिलते ही कहा। ‘तुम्हें पता है ना कि शायद हम जिंदा वापस न लौट पाएं?’
'मैं तुमसे प्यार करती हूँ, जानम, क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें अकेले अंदर जाने दूँगी? और वैसे भी, यह हमारे युग की सबसे बड़ी वैज्ञानिक खोज हो सकती है,' उसने बनावटी हास्य के साथ कहा।
वे लगभग दरवाज़ों के पास ही पहुँचे थे कि पीछे से आती चीखों ने उनका ध्यान खींचा। स्मारक हॉल के आसपास आसमान में लटके शवों को देखने के लिए जमा हुए कुछ ग्रामीण इधर-उधर भागने लगे। उनका पीछा अजीबोगरीब, दुबले-पतले जीव कर रहे थे।
रघुराम ने सोचा, 'हे भगवान, ये तो एक आम ज़ोंबी फिल्म है।'
यह गुडेम था, शिकारियों का गांव, रघुराम जानता था कि वे अपनी रक्षा खुद कर सकते हैं।
वह कांट और शीला को साथ लेकर स्मारक भवन के द्वार की ओर दौड़ा। जब उन्होंने द्वार खोला, तब तक कांट ने अपना बायां हाथ बाहर निकाल लिया था।
रघु घोर अंधेरे में भागा। बिजली की एक तेज़ चमक उस दरवाजे पर गिरी जिसे उन्होंने अभी-अभी धक्का देकर खोला था, और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। गोविंद किरोमल और तांत्रिक हॉल की ओर भाग रहे थे।
‘अब तो यह एक दौड़ बन गई है,’ रघु ने सोचा।
तांत्रिक ने कुछ चीखा। धरती एक बार हिल उठी। उसमें दरार पड़ गई और उसमें से और भी लंबे-पतले जीव बाहर निकल आए। रघु को फिल्म 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' के भूत सैनिकों की याद आ गई।
उनके भूतिया चेहरों पर विकृत भाव थे, मानो वे किसी भी तरह से इस ग्रह पर वापस आना नहीं चाहते थे।
‘क्या इसमें कोई भविष्यवाणी भी शामिल है? शायद यही सही समय है,’ रघु दौड़ते हुए मन ही मन बुदबुदाया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सचमुच बाहर मौजूद राक्षसों से खुद को बचाने के लिए हॉल में भाग रहा है।
‘भगवान के नाम पर, आप किसी...जो भी वह चीज है, उसे कैसे मार सकते हैं?’ कांट ने जोर से पूछा।
रघु चिल्लाया, 'इसे शूट करने की कोशिश करो, कुछ सोचो, तुम तो सिपाही हो।'
राक्षस उन तीनों मनुष्यों का पीछा करते हुए हॉल में घुस गए।
वे दूसरे छोर पर स्थित दरवाजे तक पहुँच गए थे, लेकिन वहाँ सेबल पार्च नहीं था। वे साँस लेने के लिए दरवाजे से टिक गए। कांट ने दो-तीन गोलियाँ चलाईं। या तो गोली उन्हें बिल्कुल नहीं लगी, या फिर गोलियों का उन जीवों पर कोई असर नहीं हुआ।
अचानक ईश्वर उनके बीच आ गया। वह वहीं प्रकट हुआ। उसने काले रंग का कवच पहना हुआ था, दो तलवारें एक के ऊपर एक म्यान में रखी थीं, धोती और घुटनों तक के जूते पहने हुए था। उसने अपनी दोनों तलवारें निकाल लीं।
‘गोली चलाते रहो,’ उसने कांट पर चिल्लाते हुए कहा।

'आखिर आप हैं कौन?'

'P. Eshwar.'

वह आदमी दोनों तलवारें खींचे हुए स्मारक हॉल में दाखिल हो रहे प्राणियों की ओर दौड़ा। कांत ने अपनी बंदूक चलाई, फिर से भरी और दोबारा चलाई। वह एक घुटने पर बैठा था, दोनों हाथ आगे करके, पिशाचों को ऐसे निशाना बना रहा था जैसे वे निशाने पर हों। वे नौ पिनों की तरह गिरते चले गए। ईश्वर इतना फुर्तीला था कि ऐसा लग रहा था मानो वह हर जगह मौजूद हो। पिशाचों के बीच से दौड़ते हुए उसकी तलवारें धुंधली सी दिखाई दे रही थीं।

रघु को सेबल पार्च के उसकी दृष्टि के परिधीय दायरे से थोड़ा आगे निकलने से पहले ही उसकी उपस्थिति का एहसास हो गया था। रात के समान काला, उसकी चमकदार क्रिस्टलीय त्वचा मंद प्रकाश में जगमगा रही थी।

रघु ने पर्च से कहा, "मेरी पत्नी," और शीला की ओर इशारा किया। यह पूरी तरह सच नहीं था, लेकिन काफी हद तक सच था।

वह उसी क्षण एक तरफ घूमी जब पर्च उसकी दिशा में बढ़ा। कम से कम उसे लगा कि अंधेरा उसकी ओर मुड़ गया है। फिर वह रघु की ओर वापस मुड़ गया।

अचानक कुछ निकला। एकदम काले रंग की एक धार।

रघु कमरे में इधर-उधर भागा।

शीला चीखी और रघु की ओर दौड़ने लगी। तभी रघु ने उसे उठाकर ज़मीन पर पटक दिया। उसने सामने फैले घने अंधेरे में ऊपर देखा।

'तुमने उसे क्यों मारा?'

पार्च ने उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

'पिताजी...' रघु लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा।

पीड़ा की एक लहर ने वकील को जकड़ लिया। वह तांत्रिक के ऊपर गिर पड़ा। 'मरने का समय आ गया है, मैं कहता हूँ, तुम मरोगे,' उसने रघु से कहा।

हलचल का एक धुंधला सा दृश्य दिखाई दिया।

'मैं कहता हूँ, वह नहीं जीतेगा,' ईश्वर के तलवार के ब्लेड हवा में लहराए। मुंडा हुआ आदमी कराहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी पीठ पर दो आड़ी-तिरछी चोटें थीं।

रघुराम सम्मोहन की अवस्था में उठा और सेबल पार्च की ओर लड़खड़ाया। पार्च ने उस पर फिर से प्रहार किया। रघु ज़मीन पर गिर पड़ा। वह हिल नहीं पाया।

शीला चीख पड़ी।

गोविंद किरोमल ने पीछे से उसका गला पकड़ रखा था, उसे अपने शरीर से चिपकाकर भीतरी कक्ष में धकेल रहा था। यह सूत्रम का अड्डा था।

‘मुझे जाने दो... कमीने,’ वह चीखी।
‘चुप रहो, चुप रहो वरना मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ दूंगी, कमीनी वेश्या,’ किरोमल ने थूकते हुए कहा। ‘तूने मेरे चाचा को मारा है, मैं तुझे और उस हरामखोर सूर्या को तड़पते हुए देखूंगी, मैं वादा करती हूं।’
शीला ने कांट द्वारा प्रशिक्षण के शुरुआती दिनों में सिखाई गई सभी तकनीकों को याद करने की कोशिश की। किरोमल के जकड़े हुए आलिंगन से खुद को छुड़ाने के लिए वह आगे की ओर झुकी और जितना हो सके उससे दूरी बनाने की कोशिश करते हुए उसने अपना पैर ज़ोर से उठाया। उसकी एड़ी किरोमल की पिंडली से ज़ोर से टकराई।
गोविंद दर्द से चीख उठा, लेकिन उसने शीला को नहीं छोड़ा। इसके बजाय, उसने उसे घुमाया और इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि वह ज़मीन पर गिर पड़ी। उसके बाल पकड़कर मंत्री उस बेसुध महिला को घसीटते हुए हॉल की ओर ले गया।
काले रंग का वह काला पर्च अनिश्चित प्रतीत हो रहा था। वह हॉल के दरवाजे की ओर देख रहा था जहाँ तांत्रिक गोविंद के पीछे भाग रहा था।
‘रघु...मेरी मदद करो, रघु...’ शीला ने दयनीय स्वर में चीख मारी।
कांट उसके पीछे-पीछे भीतरी हॉल में दौड़ गया।
ईश्वर ने आखिरी पिशाच को भी चूर-चूर कर दिया।
तांत्रिक ने अपने हाथ आगे बढ़ाए और अगर कांत उसकी तरफ न कूदता, तो बिजली का एक झटका उसे लगकर मार डालता। वह लुढ़कते हुए ज़मीन पर गिरा और उसी गति का इस्तेमाल करके फिर से खड़ा हो गया। तांत्रिक ने एक और बिजली का झटका ईश्वर पर फेंका, जिसने अपनी तलवार के सपाट हिस्से से बिजली को आसानी से दूर कर दिया और तांत्रिक के पीछे भाग गया। तब तक गोविंद भीतरी हॉल में कई कदम आगे बढ़ चुका था। भीतर से आती झुलसा देने वाली गर्म हवा की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे।
जैसे नरक के द्वार खोल दिए हों।
जैसे किसी आदिम शिकारी की उपस्थिति में होना।
गोविंद ने पहली बार सूत्रम के ठिकाने को देखा था। उसे इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। हॉल बौने बिजली के तूफानों से भरा हुआ था। हॉल के बाहर उसने जो कराहने की आवाज़ सुनी थी, वह अब कान फाड़ देने वाली चीख में बदल गई थी।
गृह मंत्री ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। उन्होंने ऐसी उम्मीद नहीं की थी। फिर भी, यह करना ही था। वे यहाँ तक आ चुके थे। उन्हें विश्व विजय की अपनी यात्रा पूरी करनी थी। अब पीछे मुड़ने का कोई फायदा नहीं था।

गोविंद चीखती हुई शीला को उसके बालों से घसीटते हुए हॉल में गायब हो गया। तांत्रिक हिचकिचाते हुए दरवाजे से भीतरी हॉल में दाखिल हुआ। वह मंत्रों का जाप करते हुए उस अफरा-तफरी में घुस गया। कांत ने पलक झपकाए बिना उनके पीछे-पीछे अंदर चला गया।

रघु फर्श पर बेहोश पड़ा था।

सैबल पार्च ने नीचे उसकी ओर देखा।

अध्याय 43

बिजली की कड़क और तेज़ हवाओं के शोर के बीच गोविंद ने शीला से चिल्लाते हुए कहा, “पीड़ा के देवता के लिए कुंवारी लड़की ही सबसे अच्छा भेंट है। क्या तुम्हें पता है कुंवारी लड़की से भी बेहतर क्या है? एक गर्भवती महिला!”

उसने चिल्लाकर जवाब दिया, 'मैं गर्भवती नहीं हूं।'

'जी हां, आप सही हैं। सूर्य के बीज पर संदेह न करें।'

‘मैं नहीं हूँ, कसम से। मुझे पता है सूत्रम क्या कर सकता है। जब तक मौका है, निकल जाओ।’

'चुप रहो वेश्या, तुम गर्भवती हो, तुम्हें अभी तक पता नहीं चला है,' गोविंद कर्कश आवाज में चिल्लाया।

ईश्वर ने तांत्रिक का पीछा किया और उसकी पीठ पर सटीक लात मारकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तांत्रिक आगे की ओर झपटा और ज़मीन पर गिर पड़ता, अगर ज़मीन से निकले पारदर्शी हाथों ने उसे सहारा न दिया होता। वह ईश्वर की ओर मुड़ा, उसका चेहरा उन्माद से लाल था। एक मंत्र का जाप करते हुए उसने जादू किया। कुछ नहीं हुआ। ईश्वर तांत्रिक के पास गया और दो झटकों में उसकी भुजाएँ काट दीं। तांत्रिक भयानक चीख उठा।

उसके कटे हुए हाथों की जगह उसके कंधों से काले, धुएँ जैसे हाथ बाहर निकले हुए थे। क्रोध और भय से उसका चेहरा भयानक रूप से विकृत हो गया था, और तांत्रिक ईश्वर के पीछे चल पड़ा।

बिजली की भीषण चमक और झुलसा देने वाली गर्म हवाओं का सामना करते हुए गोविंद खाई की कगार पर खड़ा था। शीला को बस इतना ही एहसास था कि उसे घसीटकर उस खाई के केंद्र में ले जाया जा रहा है।

‘मुझे जाने दो,’ उसने अचानक कहा।

‘चुप रहो, वेश्या,’ किरोमल ने दोहराया, हालांकि उसके शब्दों में कोई कड़वाहट नहीं थी। वह अपने कैदी की तरह ही थका हुआ था।

‘किरोमल, उसे जाने दो, वरना मैं तुम्हें गोली मार दूंगा,’ कांट चिल्लाया। उसके पेट के खुले घाव से ताजा खून बह रहा था, फिर भी बंदूक पकड़े उसका हाथ जरा भी नहीं डगमगाया।

‘अरे चुप रहो, कांट। दफा हो जाओ।’

शोरगुल में गोली की आवाज सुनाई नहीं दी, लेकिन गोली चली और गोविंद की छाती पर एक साफ छेद हो गया। मंत्री ने देखा कि उसका खून नल से पानी की तरह बह रहा है। उसने शीला को छोड़ दिया और नाटकीय ढंग से अपने दोनों हाथ अपनी छाती पर रख लिए। वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

तांत्रिक का ध्यान घायल गोविंद किरोमल की ओर गया। उसने अपने नए पारदर्शी हाथ फैलाए और अपना काला जादू चलाया। एक कठपुतली की तरह, गोविंद झटके से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। उसकी बांह पर लगा ताबीज उसकी त्वचा को जला रहा था। वह घूमा, तांत्रिक को घूरा और चिल्लाया, 'गुरुजी, बहुत दर्द हो रहा है।'

तांत्रिक ने बेचारे राजनेता को जवाब देने की जहमत तक नहीं उठाई। वह अपनी कलाइयों को ऐसे हिला रहा था मानो किसी ऑर्केस्ट्रा का उस्ताद हो। गोविंद मन ही मन सिसक रहा था, मानो उसका मन शरीर पर से अपना नियंत्रण खो बैठा हो। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी ताबूत में फंसा हो। वह एक शब्द तक नहीं बोल पा रहा था। उसे बस इतना पता था कि वह हिल रहा है, क्योंकि उसने खुद को खाई के करीब जाते देखा था।

अब उसे समझ आ गया था कि तांत्रिक का उसके लिए क्या इरादा था। गोविंद को बढ़ते डर के साथ एहसास हुआ कि शीला कभी बलि का बकरा नहीं थी। असल में, उसे ही बलि के लिए तैयार किया गया था, तब तक पाला-पोसा गया था जब तक कि अंतिम क्षण में तांत्रिक उसे और अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए बलि के रूप में इस्तेमाल नहीं करने वाला था। यह सब तांत्रिक के बारे में ही था। वह तो बस एक मोहरा था। वह ताबीज तांत्रिक का रिमोट कंट्रोल था। और अब वह उसका इस्तेमाल कर रहा था।

गोविंद ने संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। गृह मंत्री को एहसास हुआ कि उसके नियंत्रण में केवल उसके विचार ही थे। उनका कोई महत्व नहीं था। ज़रा भी नहीं। वह अपनी पत्नी शांति के बारे में सोच रहा था, जिसके साथ उसने इतना अन्याय किया था। वह उसे बताना चाहता था कि उसे कितना अफ़सोस है। सत्ता के लिए उसका संघर्ष व्यर्थ ही व्यर्थ साबित हुआ था। वह उससे और भी प्यार कर सकता था। उसकी देखभाल कर सकता था। वह उसे कम से कम एक बार तो मुस्कुराने का मौका दे सकता था। इतना ही काफ़ी होता। इस क्षण, जब सब कुछ समाप्त हो रहा था, गोविंद किरोमल को एहसास हुआ कि वह अब तक कितना बड़ा मूर्ख रहा था।

वह एक अलग जीवन जी सकता था।

एक सुखद अनुभव।

उसने अपने बेटे के बारे में सोचा। शक्ति को नाटक और संगीत में रुचि थी। गोविंद हमेशा से अपने बेटे को निराशा का कारण मानता था। शक्ति गोविंद से कहीं अधिक समझदार निकला। राजनेता का मानना था कि शक्ति अपनी माँ जैसा है। अच्छी बात है। वह लड़के के लिए केवल शुभकामनाएं देता था। काश उसने ये बात शक्ति के सामने कही होती। बहुत देर हो चुकी थी। ये एक ऐसी बाधा थी जो उसने खुद अपने लिए खड़ी की थी। गोविंद जानता था कि हर बाधा में खुद से निकलने का रास्ता होता है। बिल्कुल। यहाँ तक कि जिस बाधा में वह फंसा था, उसमें भी एक समाधान छिपा था। बस, वो समाधान वो नहीं था जो वह चाहता था।

उसने अपने मूर्ख चाचा के बारे में सोचा। जीवन भर वह सत्ता के पीछे भागता रहा। उसने गलत लोगों पर भरोसा किया। उसने गोविंद में अपना पागलपन भर दिया था। करण किरोमल सोचता था कि सब कुछ खरीदा जा सकता है, यहाँ तक कि भगवान भी। लेकिन गोविंद ने अपने नीचे जो देखा, वह भगवान नहीं था। वह बुराई थी। शुद्ध बुराई। और, वह उसका इंतज़ार कर रही थी।

मूर्ख!

आप इसके हकदार हैं।
इसे खत्म होने दो।
गोविंद खुद को खाई के बिल्कुल किनारे पर पाया। नीचे के भयानक मंजर को देखकर वह मन ही मन कांप उठा। जो कुछ उसने देखा, उससे उसका खून जम गया। खाई के भीतर गहरे हरे-भूरे गुंबद से बिजली का तूफान उठ रहा था, और उससे भूरे बालों की लटें धीरे-धीरे निकल रही थीं। अचानक, वे लटें कठोर छड़ों में बदल गईं और उसकी ओर बढ़ने लगीं।
वह गोला एक विशाल मधुमक्खी के छत्ते की तरह भिनभिना रहा था।
आश्चर्यजनक रूप से, गोविंद ने देखा कि उसके अंदर पतले सुनहरे रंग के जीव थे जो मेंढक के बच्चों जैसे दिखते थे। वे गुब्बारे जैसे सिर के अंदर विद्युत ऊर्जा में तैरते हुए प्रतीत हो रहे थे। कभी-कभी वे बाहर निकलने की कोशिश करते, लेकिन ऊर्जा का एक क्षेत्र भड़क उठता और उन्हें वापस अपने भीतर खींच लेता।
लताएँ पलक झपकते ही गोविंद की ओर तेज़ी से बढ़ीं, उसके शरीर में घुस गईं और उसे असहनीय पीड़ा से जकड़ लिया, जिसके बाद वह बेहोश हो गया। गोविंद को पता नहीं था कि लताएँ उसे सूत्रम की ओर ले जा रही हैं, उसे यह भी नहीं पता था कि नीचे जाते समय उसका शरीर अंदर से बाहर की ओर खिंचता जा रहा है। जब तक वह सूत्रम पहुँचा, गोविंद किरोमल न केवल मर चुका था, बल्कि केवल हड्डियों का ढाँचा रह गया था। शव गोले पर गिरा और तुरंत जलकर राख हो गया। ताबीज एक पल के लिए चमका और फिर सब कुछ तहस-नहस हो गया।

अध्याय 44

मान लीजिए एक काल्पनिक यात्री गुडेम से गुज़र रहा है। वह जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से वापस लौट जाता। उसकी अंतरात्मा उसे वापस लौटने के लिए उकसाती क्योंकि उस रात वह जगह बेहद घिनौनी लग रही थी। मानो औद्योगिक कचरे से दूषित कोई गंदा नाला हो। अगर इसके बावजूद वह पागल यात्री आगे बढ़ने का फैसला करता, तो उसे एक और भयानक दृश्य देखने को मिलता।
चांदनी रात में, यात्री ने लोगों के एक बड़े समूह को मृत मछलियों की तरह हवा में बेसुध तैरते हुए देखा होगा, उनके चेहरे ऊपर की ओर थे। वे ज़मीन से कम से कम बीस फीट ऊपर, शरीर के अंगों को लटकाए, पूर्णिमा के चांद की रोशनी में उनकी परछाईं दिखाई दे रही थी। उस समय, यात्री उस भयावह जगह से वापस लौटना चाहता। लेकिन ऐसा संभव नहीं था। वह वापसी के असंभव बिंदु को पार कर चुका था और ग्रामीणों के साथ उनकी रक्तरंजित अवस्था में पहुँच गया था, उसका सारा रस सूत्रम को खिलाने के लिए चूसा जा रहा था।

XXX

उसकी दुनिया सफेद रंग से भरी हुई थी। रघु ने देखा कि सफेद रंग में कुछ दरारें पड़ गई थीं। सड़न सफेद रंग को वैसे ही खा रही थी जैसे कपड़े पर तेजाब। सफेद रंग में मौजूद कण चमकदार नीले रंग से चमक रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे सर्दियों की साफ सुबह का आसमान, एक ही समय में मोहक और नाजुक।
नीला रंग उसे जितना आकर्षित कर रहा था, लाल रंग उसे उतना ही प्रेरित कर रहा था। उसने पहली ध्वनि के अंतिम अंश को सुनने से कहीं अधिक महसूस किया। एक शब्द का समापन। मानो उसके चारों ओर एक गहरी गूंज हो। एक ऐसी प्रतिध्वनि जो उसके शरीर में स्पंदित हो रही थी। यह सफेद रंग में गूंज रही थी। हर जगह। हालांकि उसने केवल कंपन महसूस किया, फिर भी वह जानता था कि यह क्या है।
ब्रह्मांड की ध्वनि।
उस एक अक्षर का प्रभाव जिसने स्वयं वाणी पर विजय प्राप्त कर ली।
आदिम वाणी की एक प्रतिध्वनि। महज़ एक प्रतिध्वनि। एक स्मृति।
इसने उसे बताया कि क्या करना है।
सेबल पार्च उसे नीचे से देख रहा था। उसने देखा कि सफेद पृष्ठभूमि में वह चमकदार और क्रिस्टलीय लग रहा था। वह बड़ा और मजबूत था। समय आ गया था। वह मुस्कुराया। पार्च ने अपना अंधकार उसमें समा लिया। उसका पेट चीरते हुए। उसकी आँतें बाहर निकालते हुए। रघु चीखा। उसने सेबल पार्च को कसकर पकड़ लिया। उसने वह शब्द नहीं बोला जो रामया शास्त्री ने उसके मुँह से कहा था। रघु ने उसे गलत सुना था। वह जानता था कि रामया का क्या मतलब था। वह 'बबून' नहीं था। उसके आखिरी शब्द थे, बाबू...
'ओह!'

यह प्रथम विचार से उत्पन्न एक सरल शब्दांश था। ब्रह्मांड की भाषा। इसकी प्रतिध्वनि आज भी अंतरिक्ष की विशालता में विद्युत चुम्बकीय स्पंदन के रूप में गूंज रही है।
'के बारे में।'
वह एक अक्षर जिसने भाषण को जीत दिलाई।
उन्होंने तीसरी बार फिर कहा, 'ओम'।
उनका काम पूरा हो गया था। उनका उद्देश्य पूरा हो गया था।

XXX

ईश्वर तांत्रिक और शीला के बीच खड़ा था। लेकिन वह तांत्रिक की ओर मुँह करके नहीं खड़ा था; वह बस शीला के ऊपर खड़ा था। ऐसा लग रहा था मानो वह उसके पेट का अध्ययन कर रहा हो। तांत्रिक ने अपने जादुई हाथों से धुएँ से भरे राक्षस भेजे जिनके सिर छिपकली जैसे और पूंछ धुएँ में समाप्त होती थी। वे वहाँ तक नहीं पहुँच पाए। वे गायब हो गए। ईश्वर ने अपनी कलाई घुमाई। बाईं कलाई घड़ी की विपरीत दिशा में और दाईं कलाई घड़ी की दिशा में। उसकी दोनों तलवारें उसके हाथों से निकलीं और तांत्रिक को दो टुकड़ों में काट दिया।
वह अभी भी जीवित था, मूर्खतापूर्ण ढंग से मुस्कुरा रहा था जबकि उसका निचला धड़ हठपूर्वक उसके बगल में छटपटा रहा था।
शीला को गोद में लिए तांत्रिक के पास से गुजरते हुए पी. ईश्वर ने कहा, 'अगर हो सके तो एक नया पेट बनवा लो।'
‘उस कमीने का क्या हुआ?’ कांट ने पूछा।
ईश्वर ने कहा, 'उसका समय समाप्त हो गया है, अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो मेरे साथ रहो।'
‘क्या सूत्रम जीत गया है, क्या बहुत देर हो चुकी है?’
ईश्वर ने सिर हिलाते हुए कहा, 'इसके विपरीत, अग्निपुत्र यहाँ मौजूद हैं।'

XXX

ठीक उसी क्षण, भीतरी हॉल के दरवाजे फट गए। कांट ने उस आदिम ध्वनि का पहला भाग सुना। 'ऊऊऊऊ...' फिर सब कुछ सफेद हो गया।
The tantrik saw the Agniputr rising. He screamed his anguish.
सूत्रम के भीतर मौजूद मेंढक के बच्चे जैसे जीव मुक्त हो गए। अब वे बड़े सुनहरे भौंरों जैसे दिख रहे थे, जो कुछ क्षणों तक लगातार भिनभिनाते रहे, फिर अलग-अलग दिशाओं में उड़ गए। हर कोई अपने जैसे और जीवों को जन्म देने, सूत्रम जितना बड़ा होने और उसे खाने के लिए घोंसला खोज रहा था। सूत्रम नामक ऊर्जा का गोला एक खाली बोरी की तरह शिथिल हो गया था।

सुनहरी भौंरों ने सफेद रंग की उस नदी को पहचान लिया जो तेजी से उनकी ओर बढ़ रही थी। यही उनका दुश्मन था। सोने की एक शानदार लहर की तरह, वे खाई में वापस मुड़ गईं। वे काली चट्टान की सतह पर तेजी से नीचे उतर गईं, जो कुछ देर पहले तक बिजली की लकीरों से कड़कड़ा रही थी।

वे खाली हो चुके थैले की ओर बढ़ रहे थे। उसमें अब ऊर्जा नहीं बची थी। उसने अपनी सारी शक्ति मधुमक्खियों को दे दी थी। उन्हें घोंसले बनाने थे। उन्हें अपनी प्रजाति की और मधुमक्खियाँ लानी थीं। वे ही भविष्य थीं, हर एक मधुमक्खी सूत्रम जितनी बड़ी हो सकती थी। हर एक मधुमक्खी अपनी प्रजाति के लाखों जीव पैदा कर सकती थी, जब तक कि पूरा ग्रह उसमें समा न जाए।

सूत्रम ने उस भविष्य को बहुत पहले ही देख लिया था। उसमें मौजूद विद्युत ऊर्जा की अंतिम चिंगारी बुझने तक वह स्मृति उसके भीतर संजोए रही।

सुनहरी मधुमक्खियाँ उस सुरक्षात्मक आवरण में प्रवेश करने के लिए बेताब थीं, जिसकी उन्हें इतनी आदत थी। लेकिन ऐसा संभव नहीं था। उनका इनक्यूबेटर नष्ट हो चुका था। उन्हें एहसास हुआ कि वे अकेली हैं। अगर वे सफेद मधुमक्खियों के इस सागर से बच निकलतीं, तो पूरी दुनिया उनकी मुट्ठी में होती।

वे हवा में चक्कर लगाते और घूमते रहे। वे एक-दूसरे से टकरा गए। देखने वाले को ऐसा लग रहा था मानो वे बिल्कुल पागल हों।

धातुई चटकने की आवाज़ के साथ वे आपस में जुड़ते चले गए, मानो सोने की एक लंबी चोटी बन गई हो। चोटी सफेद नदी पर प्रहार करती हुई आगे बढ़ी। जहाँ भी चोटी उसे छूती, सफेद चूर-चूर हो जाता। मानो आग से कोई सेल्युलाइड जल रहा हो। फिर सफेद झाग बनकर जलने के घावों को बुझाता और साथ ही मधुमक्खियों को खाई में धकेल देता। सुनहरी चोटी खाई में और भी गहराई तक समाती चली गई।

जब तक वे दिखना बंद नहीं हो गए।

जब तक कि केवल अग्निपुत्र की सफेदी ही शेष नहीं रह गई।

एक संभावना समाप्त हो गई।

XXX

अपने सपने में शीला ने सूत्रम के विनाश को देखा। वह जीवन की उत्पत्ति का एक वास्तविक दृश्य देख रही थी। अग्निपुत्र की सफेदी तबाह हुए कमरे में फैल गई, उसने स्मारक कक्ष को भर दिया। उसने गुडेम को भी भर दिया। वह क्षितिज पर फैलती चली गई, जब तक कि चारों ओर केवल सफेदी ही नहीं रह गई। सपने में भी वह इसकी भव्यता पर आश्चर्यचकित थी। क्या वह एक नए ब्रह्मांड के जन्म की साक्षी बन रही थी?

अचानक उसने खुद को गुडेम के महल की पहली मंजिल के बरामदे पर खड़ा पाया। रघु नीचे मैदान में था। वह अपनी चमचमाती लाल ऑफ-रोडर गाड़ी में बैठने ही वाला था। गाड़ी की यात्री सीट पर एक और आदमी बैठा था। गाड़ी की छत से उसका पूरा शरीर ढका हुआ था, सिवाय उसके पैरों के। उसके पैर बेजान

और शिथिल थे। रघु मुड़ा और उसे देखकर मुस्कुराया। उसने अपने प्रिय व्यक्ति को निहारा। उसे जाते देखकर उसका दिल दुख से भर गया।
'हाय साइ-फाई, फिर मिलेंगे,' रघु ने शीला से उसके सपने में कहा।
'रघु,' उसने स्तब्ध होकर कहा, 'तुम कहाँ जा रहे हो?'
रघु ने कहा, 'एक बिलकुल नई दुनिया में।'
'क्या तुम रात के खाने के लिए घर वापस आ जाओगे?' उसने पूछा।
उसने उसकी तरफ मुस्कुराया। वह मनमोहक, शरारती मुस्कान जो उसे एक लड़के में बदल देती थी।
'मत जाओ,' उसने विरोध किया, 'तुमने वादा किया था।'
'चिंता मत करो,' रघुराम सूर्या ने कहा। फिर वह उसके सपने से गायब हो गया। जैसे धुआँ छंट जाता है। जैसे कोई भूत।

XXX

जब शीला की नींद खुली तो उजाला हो चुका था। कम से कम उसे तो ऐसा ही लग रहा था। चारों ओर चमकीला सफेद रंग था। पी. ईश्वर उसके बगल में चमकीले नीले रंग के टीले पर एक पैर दूसरे पर रखकर बैठे थे। उनकी दोनों तलवारें उनके बगल में थीं। आसपास कोई नहीं था सिवाय बेहोश पड़े कांट के, जिनके शरीर पर एक खरोंच भी नहीं थी। शीला उठ बैठी।
'कहाँ है वह?'
'उसने अपना रास्ता खुद चुना। वह तुम्हारे साथ इन सब से दूर जा सकता था।'
मुझे आप पर विश्वास नहीं है। आपने हमें इस जाल में फंसाया है।
ईश्वर ने कहा, 'तुम दोनों एक दूसरे से इसी वजह से मिले।'
शीला को यह मानना ही पड़ा कि यह सच है, अन्यथा वह रघु से कभी नहीं मिलती, कभी उससे प्यार नहीं करती।
'कृपया, यह कौन सी जगह है, मैं कहाँ हूँ?'
'आप जहां भी जाना चाहें, जा सकते हैं। सही चुनाव करने का यही सही समय है, सोच समझकर चुनें।'
'तुम्हारा क्या मतलब है?' उसने उलझन में कहा।
ईश्वर ने झुंझलाहट में अपने हाथ ऊपर उठा लिए। 'कभी-कभी मुझे वैज्ञानिक समझ नहीं आते। वे अपनी भलाई के लिए ज़रूरत से ज़्यादा सवाल पूछते हैं और कभी भी जल्दी फैसले नहीं ले पाते,' उसने शिकायत की, लेकिन उसका लहजा नरम था। उसकी आँखों में पहली बार हास्य की चमक थी।
शीला को एहसास हुआ कि उसे बेहद थका हुआ होना चाहिए था। रघु अब वहां नहीं था, वह चला गया था, अग्निपुत्र के सूत्र का एक हिस्सा।
उसे यह बात पता थी।

उसने फॉर्मूला देखा था। बस उसे तब यह एहसास नहीं हुआ था कि रघु भी इसका हिस्सा है।
‘बहुत अच्छा, मेरी यही कामना है...’
‘रुको,’ ईश्वर ने कहा, ‘तुमने मौका गंवा दिया है, अब फैसला करने का अधिकार तुम्हारे पास नहीं है।’
तो फिर यह किसकी पसंद है, आपकी?
उसने सहमति में सिर हिलाया।
और मेरे फैसले लेने वाले तुम कौन होते हो?
‘तुम मुझे क्या समझते हो?’ उसने पूछा।
आप ही बताइए। आप अपनी मर्जी से आते-जाते हैं, जब सब कुछ विफल हो जाता है तो आप हमेशा मौजूद रहते हैं। आप सफल, साधन संपन्न और स्पष्ट रूप से शक्तिशाली हैं। आप जरूर कोई प्रभावशाली व्यक्ति होंगे जो अपने काम करवाने के लिए बहुत से प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं। क्या आप सरकार के लिए काम करते हैं? क्या आप किसी विदेशी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं? आप कौन हैं?
मैं इनमें से कोई भी नहीं हूँ।
मुझे पूछने में लगभग डर लग रहा है, क्या आप... एक अलौकिक प्राणी हैं? यही बात है, है ना? आप एक एलियन हैं। होना ही चाहिए। एक बुद्धिमान जीवन रूप जो हमें हमारी अपनी मूर्खताओं से बचाने के लिए यहाँ आया है।'
ईश्वर ने कुछ देर तक उसके सवालों पर विचार किया।
‘जब भी तुमने मेरी मदद के लिए पुकारा, मैं आया। सोचो, मैं कौन हूँ?’ उसने पूछा।
'आप मुझे बताएं।'
‘ठीक है, सवाल तो मैं ही हूँ।’
यह किस तरह का जवाब है?
‘क्या, किसी व्यक्ति को अपनी पसंद का जवाब देने का कोई अधिकार नहीं है?’
तो मुझे कैसे पता चलेगा कि आप कौन हैं? आपकी टीम कहां है? आपने कहा था कि मैं उनसे मिल सकता हूं।
ईश्वर ने एक मासूम दस वर्षीय बच्चे की तरह कंधे उचका दिए।
‘तुम मेरी टीम हो। कांत मेरी टीम है। पोटी मेरी टीम है। सूर्या मेरी टीम में था। जहाँ तक मेरी पहचान जानने की बात है, कोशिश करते रहो। तुम अभी भी ब्रह्मांड के सार को समझने की कोशिश कर रहे हो। तुमने अभी-अभी खुद से यह पूछना शुरू किया है कि यह अस्तित्व में क्यों है। अंततः, तुम्हें जवाब मिल जाएंगे, या कम से कम उनमें से कुछ तो मिल ही जाएंगे।’
‘क्या आप वैज्ञानिक हैं? मुझे याद है आपने मुझे बताया था कि आपने अपने समय में बहुत सारे प्रयोग किए हैं।’

ईश्वर ने एक पल के लिए फिर से उसके सवाल पर विचार किया। 'अगर आप इसे उस नज़रिए से देखना चाहें तो मैं एक वैज्ञानिक हूँ, हाँ, मुझे लगता है कि मैं हूँ।'
आपने किस तरह के प्रयोग किए, आपको क्या परिणाम मिले?
उन्होंने कहा, 'मैं खुद।'
शीला हंसते हुए बोली, 'अच्छा, यह एक अच्छी शुरुआत है।'
'हां...यही है। एक अच्छी शुरुआत! दरअसल, इसी से सब कुछ शुरू हुआ।'
'तो अगर आप ही सवाल हैं, तो जवाब क्या है?'
'मैं वही हूँ, जब तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।' ईश्वर हँस पड़ा। शीला ने अब तक की सबसे सुखद बात सुनी थी। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि तिरुमाला तिरुपति के गर्भगृह में उसे ऐसा ही अनुभव हुआ था।
'तुम ही प्रश्न हो और तुम ही उत्तर हो, ऐसा कैसे हो सकता है?'
उन्होंने कहा, 'इसका हल निकालो।'
'कृपया, रघु कहाँ है?' उसने विनती की। 'क्या वह कभी वापस आएगा?'
क्या तुम्हें मुझमें उसकी झलक नहीं दिखती?
उसने सिर हिलाकर सहमति जताई। यह सच था। 'हाँ, मैं करती हूँ,' उसने कहा।
'तो फिर आप क्वांटम भौतिक विज्ञानी शीला से क्यों पूछ रहे हैं?' ईश्वर ने प्रश्न किया।
इन सबका अर्थ क्या है?
'यह एक ऐसा सवाल है जो हर कोई पूछ रहा है। जैसा कि मैंने कहा, इसका हल निकालो। अपना समय लो।'
'अगर...अगर...आप...आप जानते हैं...जिनके बारे में मैं सोच रही हूँ, तो आपने सूत्रम को क्यों नहीं रोका?' उसने पूछा।
'तुम्हें क्या लगता है कि इसे किसने रोका?' ईश्वर ने उससे पलटकर पूछा।
'तुमने नहीं किया। रघु और उसके पिता ने इसे रोका...'
मुझे किसी न किसी चीज या किसी व्यक्ति का इस्तेमाल करना होगा। मैं सिर्फ हाथ हिलाकर सब कुछ ठीक नहीं कर सकता, आप जानते हैं।'
अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं यह सब कैसे समझाऊँ?
'तुम्हारे भीतर जीवन है और वह बढ़ रहा है। उसे उस दुनिया से बेहतर दुनिया दो जो तुम्हें मिली है। यह करना तुम्हारा काम है। तुम जो परिभाषित करते हो, उस पर तुम्हारा नियंत्रण है। मैं तो बस एक बैकअप प्लान हूँ, जिस पर सब दोष मढ़ते हैं। सबसे मज़ेदार बात यह है कि जब उन्हें सूट करता है, तो लोग सोचते हैं कि मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। असल में, यह सब परमाणुओं का खेल है। यह दोहरी मार है। करो तो भी मुसीबत, न करो तो भी मुसीबत।'

शीला ने ईश्वर की आँखों में गौर किया। उसे समझ आ गया कि वह कौन है। बेशक, उसे समझ आ गया होगा। ठीक वैसे ही जैसे सूर्य प्रसाद को वर्षों पहले समझ आ गया होगा। लेकिन वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। ऐसा हो ही नहीं सकता था। यह विज्ञान के हर उस सिद्धांत के खिलाफ था जिस पर वह विश्वास करती थी।

'मुझे खुशी है कि आपने मुझे पहचान लिया। मेरा काम यहाँ पूरा हो गया है। मैं अब जा रहा हूँ। मुझे कुछ और काम निपटाने हैं।'

'रुको...जाओ मत...कृपया...मुझे तुमसे बहुत कुछ पूछना है…'

अध्याय 45

...इंतज़ार!'

शीला एकदम से उठ बैठी। वह एक रोशन कमरे में बिस्तर पर लेटी हुई थी। कमरे में तरह-तरह के उपकरण थे। कुछ उपकरण उससे जुड़े हुए थे। निगरानी उपकरण। नसों में इंजेक्शन लगाने वाली ट्यूबें। उसके मुंह का स्वाद रसायनों जैसा था। उसकी जीभ इतनी सूखी थी कि रेत जैसी लग रही थी।

प्यासा।

पानी।

बारिश की बूँदें खिड़की के शीशे पर पड़ रही थीं। आसमान घने बादलों से भरा हुआ था। गरज की आवाज़ से खिड़कियाँ हिल रही थीं। बारिश के कारण उसे पानी पीने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

शीला को अपने पेट में एक अजीब सी गर्माहट महसूस हुई। यह जानी-पहचानी सी थी। एक सुखद अनुभूति ने उसे घेर लिया। उसने अपना हाथ अपने पेट पर फेरा और उसे एक जानी-पहचानी सी उभार महसूस हुई।

बिजली की एक चमक ने धुंधले आसमान को रोशन कर दिया। शीला ने हल्की सी चीख मारी। एक पल के लिए, वह खुद को स्मारक कक्ष में पाती है, जहाँ किरोमल उसे सूत्रम की ओर खींचकर ले जा रहा होता है।

'यह खत्म हो गया। हम जीत गए। सूत्रम नष्ट हो गया।'

वह खुद को यही बात बार-बार कहती रहती थी।

दरवाजा अचानक खुल गया। दरवाजे पर एक आकृति खड़ी थी।

शीला ने उस आकृति को पहचान लिया। यह सहज था। जैसे सांस लेना। उसे न पहचानना नामुमकिन था। लेकिन उसका यहाँ और अभी होना नामुमकिन था।

वह मृत है।

यह कैसे हो सकता है?

वह मृत है।

वह फिर से चीखी और आगे बढ़ते हुए आदमी से दूर हटने लगी।

यह एक भयानक सपना था। उसे जागना ही पड़ा!

'हे स्वीटी, मैं हूँ। सब ठीक है। अब तुम सुरक्षित हो,' उसने कहा।

जानी-पहचानी आवाज़। लंबे घुंघराले बाल। उसकी आँखों में जिज्ञासा भरी नज़र। यह मुमकिन नहीं था।

वह मृत है!

वह मृत है!

'तुम कौन हो? तुम मेरे मृत पति जैसे क्यों दिखते हो? तुम कौन हो?'

'पति मर गया? मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा,' उसने हंसते हुए कहा। 'मैं हूं, स्वीटी। मैं आलोक हूं।'

'आलोक?'

‘हे शीलू बेबी। जब मैंने तुम्हें उस मैनहोल से बाहर निकाला था, तो मुझे लगा था कि मैंने तुम्हें खो दिया है। तुम तो सांस भी नहीं ले रही थी।’
‘मैं सांस नहीं ले रही थी? नहीं, यह सच नहीं है। मैं पूरी तरह जाग रही थी। मेरे बाद तुम दूसरे लोगों के पास गए। मैंने तुम्हारे बाहर आने का इंतजार किया। तुम कभी बाहर नहीं आए। तुम...मर गए!’
आलोक ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और अपने करीब कर लिया। उसे आलोक से ओल्ड स्पाइस की खुशबू आ रही थी। उसने भी अपनी बाहें उसके चारों ओर लपेट लीं।
‘यह सब किस वास्तविकता में हुआ?’ आलोक ने पूछा। ‘तुम बेहोश थे। तुमने बहुत सारा पानी पी लिया था। सबसे बुरा तो यह हुआ कि मैनहोल के लोहे के किनारे से टकराने पर तुम्हारे सिर पर बुरी तरह चोट लग गई। उन्हें टांके लगाने पड़े। तुम एक हफ्ते से बेहोश थे, प्यारे। उन्होंने कहा कि तुम कोमा में थे। यह एक चमत्कार है कि तुम फिर से होश में आ गए हो।’
उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। उसका चेहरा, उसके हाथ, उसके बाल।
‘आलोक?’
'हां, मेरे जीवन का प्यार।'
‘कौन सा साल है?’
‘वर्ष? 2005, बिल्कुल।’
'माँ और पिताजी?'
आलोक ने बिस्तर के पास रखी घंटी बजाई। दरवाजा खुल गया। डॉक्टर और नर्स दौड़ते हुए अंदर आए। उसके माता-पिता भी डॉक्टरों के पीछे कमरे में दाखिल हुए। दोनों के चेहरे पर खुशी की बड़ी मुस्कान थी। शीला हंसी भी और रोई भी। उसने कहा, 'जब वह कुछ लेता है, तो बदले में बहुत कुछ देता है।'
'कौन?'
‘उसे भी जीवित होना चाहिए था...’
आलोक उसे घूरने लगा... 'तुम क्या बात कर रही हो?'
उसने उसकी ओर देखा... 'अरे? ओह! आलोक! एक सपना, नहीं... एक बुरा सपना, एक भयानक बुरा सपना... यह इतना असली लग रहा था।'

XXX

जैसे-जैसे दिन महीनों में बदलते गए, शीला के लिए गुडेम की यादें धुंधली पड़ने लगीं, मानो वे कभी थीं ही नहीं। उसे रघु का चेहरा भी याद नहीं आ रहा था, न ही उसकी आवाज़। कुछ समय तक उसे कांत और पोटी के नाम भी मुश्किल से याद थे, फिर वे भी धीरे-धीरे गायब हो गए।
शीला ने अपने उभरे हुए पेट पर हाथ फेरा। अपने भीतर पल रही जान को देखकर वह प्यार से मुस्कुराई। प्रसव कुछ ही महीनों में होने वाला था। आलोक ने बच्चे का कमरा पहले ही तैयार कर लिया था। उसमें एक

पालना, एक छोटा सा बिस्तर, ढेर सारे खिलौने थे और कमरा गुलाबी रंग से रंगा हुआ था। आलोक को पूरा यकीन था कि बच्ची होगी। शीला को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह उसकी बच्ची थी। वह अपनी बच्ची को किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करती थी।

उसी क्षण आलोक बैठक कक्ष में दाखिल हुआ। उसने हमेशा की तरह गहरे नीले रंग की सूती पैंट और सफेद सूती कमीज पहनी हुई थी।

'शीलू प्यारी, मुझे डॉक्टर का पर्चा दे दो। मैं फार्मेसी वाले चाचा से दवाइयां भिजवा दूंगी।'

'यह मेरे पर्स में है,' उसने अनमने ढंग से कहा।

वह खिड़की से बाहर देखने के लिए मुड़ी। आसमान का रंग गहरा नीला था और रूई जैसे सफेद बादल उसमें दिशाहीन रूप से तैर रहे थे। मुंबई की गर्मियाँ उमस भरी होती हैं, लेकिन उस दिन समुद्र की ठंडी हवा जल्दी ही चलने लगी थी।

आलोक उसका पर्स लेकर आया।

'अरे, रहने दो। यह तो बिल्कुल अंदर है। क्या तुम इसे सहन नहीं कर सकते?' उसने थोड़ी झुंझलाहट के साथ पूछा।

'क्या? क्या तुम पागल हो? यह एक महिला का पर्स है। कभी-कभी, आधी रात को, इसके अंदर चीजें हिलने लगती हैं। मैं इसमें अपना हाथ नहीं डालूंगा।'

शीला हंस रही थी। उसने उसके लिए कागज का टुकड़ा निकाला।

आलोक चला गया, और शीलू को अपने धुंधले सपनों में खो जाने दिया। थोड़ी देर बाद वह वापस आ गया।

'यह ठीक नहीं है, शीलू,' उसने पर्ची वापस देते हुए कहा। वह नाराज़ लग रहा था।

शीला ने उत्सुकता से कागज का टुकड़ा खोला।

उस पल मानो दुनिया बिखर गई। वह एक सांस भी नहीं ले पा रही थी। उसकी आंखों से आंसू और पसीना बहने लगा।

'नहीं,' वह हांफते हुए बोली। 'यह सच नहीं हो सकता। नहीं, नहीं, नहीं।'

आलोक तुरंत उसके पास पहुँच गया। 'शीलू, हे! क्या सच है? हे, क्या तुम ठीक हो?'

वह उससे लिपट गई, अपना चेहरा उसकी छाती में छिपाकर बच्चे की तरह रोने लगी। आलोक ने उससे कागज़ ले लिया। उस पर कुछ समीकरण लिखे हुए थे। उसे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या हैं।

शीला ने अपने पति से अग्निपुत्र का फार्मूला वापस ले लिया।

पन्ना पलट दिया।

कागज पर लिखे हुए वाक्य को पढ़ें।

'हमारे साथ बिताए पलों को याद रखना।'

-Parameshwar.

इसके नीचे, काले यजुर्वेद का एक शिलालेख है।
‘केवल अग्निर ही विजयी हो सकता है’
शीला हंसने लगी। उसकी हंसी बेकाबू और कर्कश थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। गर्दन की नसें तनाव से तन गई थीं। उसकी आंखें किसी घायल घोड़े की तरह बेकाबू थीं।
आलोक ने शीलू को कंधों से पकड़कर जोर से झकझोरा। 'शीलू, होश में आओ। तुम्हें क्या हो गया है?'
शीला ने नीली स्याही पर अपनी उंगलियां फिराईं। यादें उमड़ पड़ीं। धुंधली हो चुकी यादें। वे क्रोधित समुद्री लहरों की तरह उसके मन में उमड़ रही थीं। गोविंद किरोमल। तांत्रिक। गुडेम का किला। स्मारक भवन। पोटी। कांत। रथाया। सबसे ज़्यादा, उसे गोविंद किरोमल याद आया।
उसका आवाज़।
उसकी हंसी।
उनका बलिदान।
उसके कांपते होठों से उसका नाम फुसफुसाहट की तरह निकला।
शीला अब जान चुकी थी कि वह किसका बच्चा गर्भ में लिए हुए है। इसमें कोई शक नहीं था। यह निश्चित रूप से उसी का बच्चा होना चाहिए था। पी. ईश्वर ने उसे बच्चे के साथ चुपके से कहीं छिपा दिया था। मानो अतीत में लौट गए हों। उसने आलोक की ओर देखा। उसने अपना सिर तेज़ी से घुमाया। वह गणित की बुनियादी बातें समझाते हुए एक व्याख्याता की तरह शांत स्वर में बोली, 'यह अग्निपुत्र बनाने का सूत्र है।' उसने आलोक के प्रश्न के उत्तर में कहा।
'आप क्या कहना चाहते है?'
वह मुस्कुराई। 'इसका मतलब है कि ईश्वर है। उनका नाम पी. ईश्वर है। वे अपने तरीके से हम पर नजर रख रहे हैं।'
आलोक ने कुछ पल उसे निहारा, फिर खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसने उसके माथे पर चुंबन किया। 'मुझे देर हो रही है। चलो आज रात फिल्म देखने चलें?' उसने कहा।
उसने सिर हिलाया। 'मुझे नहीं लगता कि यह संभव है।' आलोक को लगा कि उसकी पत्नी के चेहरे पर एक अजीब भाव है। मानो वह युद्ध में जाने वाली हो। उसका हाथ धीरे से लेकिन मजबूती से उसके पेट पर था, मानो वह बच्चे की रक्षा कर रही हो।
'क्यों नहीं?'
‘क्योंकि मैं व्यस्त रहूंगी आलोक... मुझे अपनी बेटी के लिए एक कहानी लिखनी है। यह महलों और राक्षसों के बारे में है और कैसे उसके पिता ने एक खाई के अंदर एक राक्षस से लड़ाई की और दुनिया को बचाया।’
'सच में? तुम्हारी कहानी का नाम क्या होगा?'
Sheila said, ‘Agniputr!’

आलोक ने दयालुता से मुस्कुराते हुए कहा, 'अभी ही क्यों लिखना है? शायद आज रात हम फिल्म देखने जा सकते हैं। तुम कल से लिखना शुरू कर सकते हो।'
मेरी याददाश्त हिल गई है। मुझे नहीं पता कि मैं इसे कब तक बरकरार रख पाऊंगा। मेरे पास समय नहीं है।
'यकीनन ठीक।'
शीला ने कहा, 'यह कहानी जरूर सुनाई जानी चाहिए। यह सूर्या रानियों के समय से चली आ रही एक विरासत है, जो मुझ तक पहुंची है। अब मेरी बारी है कि मैं इस विरासत को अपनी बेटी को सौंपूं।'
आलोक ने सोचा, शीला ने 'बेटी' कहा था। यह अच्छी बात थी। वह एक बेटी चाहता था। उसे लगा कि शीला का व्यवहार गर्भावस्था से जुड़ा है। डॉक्टरों ने उसे बताया था कि कभी-कभी गर्भावस्था का महिलाओं पर अजीब असर होता है। इसके अलावा, कुछ महीने पहले उसकी गर्भवती पत्नी कोमा में चली गई थी, यह एक बड़ा सदमा था। वह शीला के व्यवहार को समझ नहीं पा रहा था, लेकिन आलोक इतना तो जानता था कि शीला को उसकी निजता देनी चाहिए। उसे यकीन था कि वह ठीक हो जाएगी।
'ठीक है,' उसने धीरे से कहा और फिर से उसके माथे पर प्यार से चुंबन किया। उसने उसके पर्स से पर्ची निकाली। बाहर जाते समय उसने धीरे से दरवाजा बंद कर दिया।
शीला को एहसास हुआ कि उसके पति को लग रहा था कि वह पागल हो रही है या तेज़ी से पागलों की ओर बढ़ रही है। उसने उसे दोष नहीं दिया। आलोक की जगह होती तो वह भी यही सोचती। यह पागलपन की हद थी। शीला को ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी विज्ञान कथा की किताब का किरदार हो, बस फर्क इतना था कि यह सब सच था। इतना सच। इतना भयावह सच कि वह बुरी तरह डर गई।
अचानक शीला के मन में एक विचार आया। एक भयानक विचार। यह एक ऐसे प्रश्न में तब्दील हो गया जिसका उत्तर उसे पता था कि बेहद भयावह ही होगा।
'क्यों?' उसने ऊँचे स्वर में पूछा। 'प्राकृतिक व्यवस्था को बदलने की इतनी मेहनत क्यों? मुझे और मेरे बच्चे को बचाने के लिए समय को पीछे क्यों धकेलना? इस बार मेरे लिए क्या योजना बना रखी है?'
शीला ने अपना सिर आकाश की ओर उठाया। 'आप मुझसे और क्या चाहते हैं?'
कोई जवाब नहीं मिला।
इससे वह मूर्ख नहीं बनी।

लेखक के बारे में

कानूनी अनुपालन के लिए वकील और सलाहकार के रूप में दो दशकों से अधिक का अनुभव रखने वाले वधान ने कुछ साल पहले लेखन की ओर रुख किया। वे पेशे से वकील हैं, साथ ही उद्यमी और स्वप्नद्रष्टा भी हैं। उनकी पहली पुस्तक, शत्रु, जो क्रॉनिकल्स श्रृंखला का हिस्सा है, को खूब सराहा गया और समीक्षकों ने इसे भारत के सर्वश्रेष्ठ फंतासी उपन्यासों में से एक बताया।

वधान विवाहित हैं और उनके दो बच्चे हैं। उनकी बेटी ऑस्ट्रेलिया में मार्केटिंग में पोस्टग्रेजुएशन कर रही है, जबकि उनका बेटा भारत में कानून की पढ़ाई कर रहा है। वह एक दिन राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक बनना चाहता है। वधान की पत्नी एक कलाकार और मोमबत्ती निर्माता हैं। वह अपना खुद का व्यवसाय चलाती हैं।

वधान अपनी पत्नी के साथ भारत के न्यू गुड़गांव में रहते हैं।

******* समाप्त *******

sjcet